नया तीर्थ खुद ही बन जाता, होता जहाँ गमन है।
वात्सल्य रत्नाकर विमल सिन्धु को, सौ--सौ बार नमन है।

गुरुवर आचार्य विमलसागर महाराज श्री के चरणों मे कोटि-कोटि प्रणाम
धर्म रक्षा में अग्रसर भारत की जैन समाज की प्राचीन गौरवशाली संस्था

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सोनिया इन्टरनेशनल
सोनिया टैक्सटाइल्स लिमिटेड
मिडलैन्ड सर्विसेज लिमिटेड

94, आर्केडिया, नरीमन पॉइन्ट, मुम्बई
फोन : 2876169, 2833216
फैक्स : 91-22-2876091

प्रधान सम्पादक
श्यामसुन्दरलाल शास्त्री
सदर बाजार, फिरोजाबाद
फोन: (०५६१२) ४७४०५
सम्पादक
नरेन्द्र प्रकाश जैन
१०४, नई बस्ती, फिरोजाबाद
फोन: (०५६१२) ४६१४६
सह—सम्पादक
चेतन प्रकाश पाटनी, जोधपुर
मल्लीनाथ शास्त्री, मद्रास
डा. ब्रह्मचारिणी प्रमिला जैन
(संघस्थ – आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माता जी)
सुल्तानसिंह जैन, बुलन्दशहर
कपूरचन्द जैन पाटनी, गुवाहाटी
भरत कुमार काला, मुंबई
सदस्यता शुल्क
वार्षिक : १००/रू०
आजीवन : ११००/रू०
संरक्षक : २५०१/रू०
परम संरक्षक : ५१०१/रू०
इस अंक की कीमत एक प्रति : ६०/रू०
विज्ञापन शुल्क
पूरा एक पृष्ठ : २५००/रू०
आधा पृष्ठ : १५००/रू०
चौथाई पृष्ठ : ८००/रू०
१/८ पृष्ठ : ४००/रू०
१/१६ पृष्ठ : २००/रू०
शुभकामना विज्ञापन : १००/रू०
नोट : छोटे विज्ञापन २०/रू० प्रति कालम सेंटीमीटर की दर से छापे जाते है।
कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता
जैन गजट
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड
मिल रोड, ऐश बाग
लखनऊ – २२६ ००४ (उ०प्र०)
फोन/फैक्स : (०५२२) २६७२८७
प्रकाशनार्थ समाचार लखनऊ एवं लेख फिरोजाबाद ही भेजें।
ड्राफ्ट जैन गजट के नाम ही भेजें।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की ओर से *सुरेश कुमार जैन* (प्रकाशक एवं मुद्रक) द्वारा भार्गव प्रिन्टर्स, नेहरु नगर, लखनऊ से मुद्रित तथा नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स, ऐश बाग, लखनऊ से प्रकाशित।
सम्पादक- नरेन्द्र प्रकाश जैन

विषय—सूची

विषय		पृष्ठ संख्या

संतों के आशीर्वचन

-महासभा सदा की भांति धर्म की रक्षा में कटिबद्ध रहे, धर्म को कभी न भूले और धर्म के विरुद्ध कभी कोई कार्य न करे। धर्म एवं संस्कृति रक्षार्थ जिस प्रकार नियमों का पालन वह अभी तक करती आयी है, आगे भी उनका पूर्ण रूप से पालन करती रहे।

-चारित्र चक्रवर्ती स्व. आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा अपने जीवनकाल में धर्म व धर्मायतनों के संरक्षण एवं अभिवृद्धि में संलग्न है। हमारे परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती श्री १०८ आचार्य शांतिसागर जी महाराज का इस महासभा पर सदैव वरदहस्त रहा और हमारी भी यही भावना है कि भविष्य में भी धर्म संरक्षिणी महासभा धर्म व धर्मायतनों के संरक्षण में सदा संलग्न बनी रहे।

-स्व. आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज

-महासभा के नियम नं० - ९, जिसको कि आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने भी आशीर्वाद दिया था, का पूर्ण समर्थन करते हुए कहा कि जो व्यक्ति विजातीय एवं विधवा विवाह का समर्थन करते हैं वे विषय वासना के पोषक हैं। इसका फल शास्त्र में दुर्गति का कारण बतलाया है। प्रत्येक प्राणी ने अनादिकाल से इसी मार्ग को अपनाकर संसार में विभिन्न प्रकार के दुःख भोगे हैं, अतएव दुःख भीरु प्राणी को इस विषय से विमुख होकर आत्म कल्याण के पथ में प्रवृत्ति करना चाहिए।

- स्व. आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज

-महासभा का जन्म भी एक तीर्थ मथुरा (उ०प्र०) में हुआ था और अब शताब्दी पूर्ति के समारोह का प्रारम्भ भी एक तीर्थ धर्मस्थल से हुआ। तीर्थ से तीर्थ तक की यह अविराम यात्रा आगे भी सफल हो, यही भगवान बाहुबली से हमारी प्रार्थना है।

महासभा सदैव धर्म मार्ग पर आरूढ़ रहकर आगे बढ़ेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

-परमपूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज

-ज्ञान के आलोक में सम्पूर्ण पदार्थ या वस्तु स्थिति आलोकित होती है। ज्ञान तो साकार या विकल्पात्मक है तथा श्रुत द्रव्य और भावरूप दो प्रकार का है। साहित्य भावश्रुत की कोटि में आता है। जो वस्तुएं हमारे दृष्टिगोचर नहीं हैं उनका हम साहित्य के माध्यम से जान लेते हैं। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा भविष्य का ध्यान रखकर ही कार्य कर रही है। इस संस्था ने आर्ष परम्परा की रक्षा, जैन धर्म की प्रभावना एवं मंदिरों व तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए गत सौ वर्षों के दौरान जो कार्य किया है वह अनुकरणीय व अविस्मरणीय है। भविष्य में भी यह संस्था इसी प्रकार जैन धर्म की रक्षा व तीर्थों का जीर्णोद्धार करती रहेगी।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के पावन सानिध्य में श्री महावीर जी में हो रहे अधिवेशन के दौरान महासभा अपने मुखपत्र 'जैन गजट' का जो विशेषांक का प्रकाशित कर रही है वह जैन धर्म के अनेकान्त, स्याद्वाद, अहिंसा एवं अपरिग्रह के सिद्धान्त को आम व्यक्ति तक पहुंचाने में सफल रहेगा। वर्तमान युग में यह आवश्यक भी है, इन्हीं सिद्धांतों के बल पर समाज, देश व विश्व में शांति स्थापित हो सकती है।

परमपूज्य मुनि कुंजर समाधिसम्राट आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज कहते हैं कि योग्य साहित्य का अध्ययन करना स्वात्मोपलब्धि में सहकारीकारण होता है। महासभा भी उत्कृष्ट जैन साहित्य का प्रकाशन कर इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

इस विशेषांक को पढ़ने से भव्यात्माओं को बोधि प्राप्त हो सकेगी। इन्हीं भावनाओं के साथ महासभा के सभी कार्यकर्ताओं को मेरा आशीर्वाद है कि वे सभी अपने कल्याण के साथ लोक कल्याण व जैन धर्म की प्रभावना एवं तीर्थों की रक्षा हेतु भी कार्य करते रहेंगे।

- गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी

प्राचीनतीर्थ जीर्णोद्धार हेतु परमपूज्य आचार्य श्री अभिनन्दनसागर जी महाराज का आशीर्वाद

धर्मप्रिय सम्पादक जी जो कई वर्ष से 'जैन गजट' के माध्यम से समाज सेवा में रत हैं एवं महासभाध्यक्ष, उपाध्यक्षादि सभी कार्यकर्ताओं को कोटि-कोटि आशीर्वाद। आज का युग प्रचार-प्रसार का है। जैसे किसी के पास समाचार पहुंचाना हो तो टेलीग्राम, फोन, पत्र आदि के माध्यम से पहुंचाते हैं उसी प्रकार देश में कहां क्या शुभाशुभ घटनायें घट रही हैं वह सब पत्र-पत्रिकाओं द्वारा पहुंचाकर जनता को अवगत तथा सावधान कर सकते हैं।

एक और खुशी की बात है कि महासभाध्यक्ष महोदय श्रीमान् निर्मल कुमार सेठी ने पुरातन मंदिर व मूर्तियों की खोज व उसकी सुरक्षा तथा जीर्णोद्धार करवा रहे हैं, वह कोटि-कोटि धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि पंचमकाल में ये जैन आयतन ही मानव के कल्याण के साधन हैं। साथ ही इनसे भी ज्यादा आशीर्वाद के पात्र वो हैं, जो दानदाता तन, मन तथा धन से इस कार्य में पूर्ण मदद कर रहे हैं। जैसे- एक ड्राइवर गाड़ी चलाने आगे बैठ तो जाय, परन्तु पैसेन्जर उसमें नहीं हो तो गाड़ी कहां पर ले जाय? उसी प्रकार एक ओर बेड़ा उठाने की आवश्यकता है, तो दूसरी ओर समाचार पत्रों द्वारा एवं शिविरादि के माध्यम से प्रचार-प्रसार द्वारा देव, शास्त्र, गुरु, धर्म तथा जाति पर विपरीत हमला यानी गलत प्रचार कर रहे हैं उनसे बचाने उन भोले प्राणियों को सावधान करना भी परम कर्तव्य है नहीं तो धर्म व धर्मात्माओं का ह्रास होगा।

महासभा शतायु हो ऐसा कोटि-कोटि आशीर्वाद।

२५ पिच्छिधारी सहित।

-आचार्य अभिनंदनसागर

-दिनांक १४.१२.९८ को कुंदकुंद भारती दिल्ली में श्री निर्मलकुमार जी सेठी आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज से मिले। चर्चा में महासभा शताब्दी समारोह श्री महावीर जी क्षेत्र पर संपन्न हो रहा ऐसा सूचित किया। महाराज श्री को आनंद हुआ। प्रसन्न मुद्रा से भुवनेश्वर में आयोजित होने वाले सम्राट खारवेल महोत्सव हेतु चर्चा करते हुये शताब्दी महोत्सव हेतु आशीर्वाद प्रदान किया।

-आचार्य विद्यानंद महाराज

-वर्तमान परिस्थिति में धर्म प्रभावना, धर्म जागृति, एकान्तवाद के प्रचार प्रसार को रोकने में महासभा द्वारा समय समय पर जो भी कदम उठाये गये आवश्यक थे, वर्तमान में प्राचीन क्षेत्र जीर्णोद्धार का भी महासभा द्वारा चल रहा है, महान पुण्यकार्य है लेकिन इस काम के उसी समय उस क्षेत्र का ऐतिहासिक लेखा जोखा भी हो सका तो भविष्य में बाधायें नहीं रहेगी। श्री निर्मल कुमार जी तथा समस्त महासभा कार्यकर्ताओं को सदैव आशीर्वाद है।

-संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज

-जब मुनि रहेंगे तब तक महासभा रहेगी। हमें पंचमकाल के अंत तक इस महासभा को चलाते रहना है। महासभा के हाथ और मजबूत हों और यह और भी उन्नति को प्राप्त हो।

-आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज

-महासभा से मैं व्यक्तिगत रूप से अत्यधिक आकर्षित हूँ। आकर्षण का कारण श्रमणपरम्परा की रक्षा एवं व्यवस्था है। शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में मेरा हार्दिक आशीर्वाद है कि सब जातीयता की भावना से ऊपर उठकर महासभा के सदस्य बनें, ताकि श्रमण-संस्कृति की रक्षा में यह और कारगर सिद्ध हो सकें।

महासभा के समस्त पदाधिकारियों को मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद। वे धर्म और संस्कृति की रक्षा में सदैव तत्पर रहें तथा तीर्थ-रक्षा में भी अग्रणी बनें।

-आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज

-महासभा शताब्दी समारोह के लिये परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज, आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज, आचार्य श्री सुधर्म सागर जी महाराज एवं आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

महासभा हजारों वर्ष तक अपना अस्तित्व बनाये रखने में कामयाब हो।

समाज में कई अखिल भारतीय संस्थायें हैं लेकिन वह संस्था शायद ही साल में एकाद बार गुरूओं को संस्कृति को, तीर्थों को देखती हैं लेकिन महासभा ही ऐसी संस्था है, जो निष्पक्ष दृष्टि से अपनी दृष्टि बनाये है। हमारा यह कर्तव्य है कि आगम को जिस रूप में रखा है उसमें परिवर्तन करने की कोशिश न करें। आगम के परिप्रेक्ष्य में सुचित तभी काम देती है जब आगम बाधित न होता हो, सिद्धांत कभी नहीं बदल सकते।

-आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज

अतिशय क्षेत्र कचनेर जी

-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के द्वारा हमेशा से ही देव शास्त्र गुरु की प्रभावना होती रही है। इसी तरह आगे भी धर्म की प्रभावना होती रहे, तथा यह विशेषांक धार्मिक चेतना का जन-जन में संचरण करायेगा।

परम पूज्य उपा. श्री ज्ञानसागर जी महाराज तथा पूज्य श्री वैराग्य सागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त हो।

अतुल (संघस्थ-उपाध्याय श्री ज्ञान सागर जी महाराज)

श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र, बड़ागांव, खेकड़ा (मेरठ)

-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा जैन समाज की सर्वोपरि प्राचीन संस्था है, आर्ष परम्परा के रक्षणार्थ जिन महानुभावों ने इस संस्था को स्थापित किया, यद्यपि वे आज हमारे बीच में नहीं हैं परन्तु जब तक जैन धर्म का अस्तित्व रहेगा, तब तक महासभा के साथ उन महानुभावों का भी कीर्ति ध्वज दिग्दिगान्तर में फहराता रहेगा।

सौ वर्ष प्राचीन महासभा शताब्दी समारोह के माध्यम से सारे देश में अलख जगाकर अपनी तरूणाई के परिचय के साथ दिग्भ्रमित लोगों को सन्मार्ग दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर रही है।

महासभा की लग्नशीलता, समर्पण एवं आगम निष्ठा के कारण ही देव शास्त्र-गुरू की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने में सफलता प्राप्त होती रही है।

हमारी यह भावना है कि युगान्त पर्यन्त महासभा युवावस्था में अलंकृत रहती हुई देश एवं समाज को सत्पथ का दिग्दर्शन कराने में सफलता प्राप्त करती रहे।

'जैन गजट' हिन्दी साप्ताहिक में एक अपना कीर्तिमान स्थापित किये हुये है। अन्य मासिक पत्रिका एवं आचार्य प्रणीत साहित्य प्रकाशन के माध्यम से सम्यग्ज्ञान के प्रचार प्रसार में चार चांद लगा दिये हैं तदर्थ महासभा के यशस्वी अध्यक्ष, उसके पदाधिकारी एवं समस्त कार्यकर्ता धन्यवाद एवं शुभाशीर्वाद के पात्र हैं।

-आचार्य विद्याभूषण सन्मतिसागर

इटावा

आचार्य १०८ बाहुबली महाराज का आशीर्वाद

अध्यक्ष-गुरुभक्त, आर्ष परंपरा के धुवस्तंभ श्री निर्मल कुमार जी सेठी आपको एवं धर्म संरक्षिणी महासभा के सभी कार्यकर्ताओं को सधर्म वृद्धि शुभ आशीर्वाद। श्री श्रीकांत चवरे इनको भी आशीर्वाद।

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा का शताब्दी महोत्सव संपन्न होने जा रहा है। दिगंबर जैन समाज के आदर्श और गौरव की बात है। शताब्दी की ऐतिहासिक आदर्शता-आदर्श- "जैन गजट" द्वारा

विशेषांक रूप में प्रकट कर रहे हैं। शताब्दी महोत्सव विशाल रूप से प्रभावित संपन्न हो- यही आशीर्वाद- मुनिसंघ की तरफ से प्रेषित करते हैं।

- आशीर्वाद

- पत्र से ज्ञात हुआ कि श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज व प्रमुख गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी के सानिध्य में शताब्दी समारोह मनाने जा रहे हैं यह महान प्रसन्नता की बात है।

निःसंदेह महासभा गत १०० वर्ष से देवरक्षा (जिनायतन रक्षा) आगम रक्षा एवं निर्ग्रन्थ गुरु रक्षा अर्थात् इस कलयुग में धर्म के जीवन स्वरूप निर्ग्रन्थ गुरूओं को ससम्मान जीवित जीवन्त बनाये रखने के लिए जो महासभा का निष्ठायुत कार्य रहा वह प्रशंसनीय व श्लाघनीय है वर्तमान में महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने जो तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य अपने हाथ में लिया है वह महान प्रशंसात्मक है। सभी वीर प्रभु के सपूतों को इस संस्था से जुड़कर एवं कन्धे से कंधे मिलाकर इस कार्य में भाग लेना चाहिए। यह महासभा अपने जीवन में अपने जीवन के शताब्दी समापन समारोह ही नहीं बल्कि सफल शताब्दी समापन समारोह मनाये एवं हर कार्यों में दिन दूनी रात्रि चौगुनी वृद्धि करे ऐसा परम पूज्या गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी का मंगल शुभाशीर्वाद है।

सम्भाला है महासभा ने इस गुरुतर भार को,
आशीर्वाद दे रही हूं प्रशंसात्मक कार को।

प्रेषिका

- बा.ब्र. आ. विनीतमती माताजी
दि.जैन मंदिर, मालपुरा (राज.)

-संस्कृत में एक उक्ति है- "शतायु गतायु भवेत" अर्थात् जो सौ वर्ष जी लेता है, वह फिर कभी नहीं मरता। महासभा के सन्दर्भ में यह कहावत सटीक है। यह संस्था अभी हजारों वर्ष तक जीवित रहेगी। महासभा की उपयोगिता जैसे-जैसे समय बीतेगा, वैसे-वैसे बढ़ती ही जाएगी।

-स्व. भट्टारक चारूकीर्ति स्वामी जी, (मूडबिद्री)

-शताब्दी पूर्व मुनियों के दर्शन दुर्लभ थे, पर आज तो सर्वत्र मुनियों के दर्शन हो रहे हैं। इसका श्रेय गत सौ वर्षों के महासभा के सक्षम नेतृत्व को दिया जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

कमाल की बात यह है कि महासभा का न तो कहीं कोई आफिस है और न कोई इमारत ही, फिर भी महासभा ने सौ वर्ष पूरे कर लिए। इसका एक मात्र कारण है, महासभा का सिद्धान्तों के प्रति जुड़ाव। अपनी सिद्धान्तिप्रियता के बल पर महासभा ने जन-जन के हृदय में अपना घर बना लिया है। महासभा के जो भी अध्यक्ष या महामंत्री होते हैं, उनके घर ही महासभा के कार्यालय बन जाते हैं।

-भट्टारक चारूकीर्ति स्वामीजी
श्रवणबेलगोला

Dharmsthal
28-12-98

Dear Sri S.M.Chavare,

Recived your letter and I am happy to note that you have planned to publish "Jain Gazette".

Hope it will be help to promote better and cordial relation in the Jain Community and take up many more constructive projects for the progress of thdDwish your venture all success.

Thanking you,

D.veerendra Hegade

शुभाशीर्वाद

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा, धर्मानुरागी अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी जी, लखनऊ को हॉबुज श्री सन्निधान से मंगल शुभावशीर्वाद।

रत्नत्रय कुशलोपरि!

आपका पत्र श्री सन्निधान तक पहुंचकर विषय ज्ञात हुआ। परम पूज्य श्री १०८ आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ एवं पूज्या श्री आर्यिका रत्न १०५ सुपार्श्वमति माताजी ससंघ सानिध्य में २० जनवरी ९९ को श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर महासभा शताब्दी समापन समारोह संपन्न होने जा रहा है। जानकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इस शुभ अवसर पर महासभा का मुख पत्र 'जैन गजट' का एक ऐतिहासिक विशेषांक प्रकाशित करना समयोचित ही है।

गत सौ वर्षों से यह संस्था अपने तन-मन-धन से अत्यन्त श्रद्धा व भक्ति के साथ आर्ष परंपरा की सुरक्षा प्राचीनतम जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार, जैन साहित्य प्रकाशन, साधु-साध्वी-त्यागी-व्रतीयों की सेवा, आदि सभी धर्म प्रभावना क्षेत्र में सामाजिक व आत्मिक उन्नति हेतु अत्यन्त जागरूकता से कार्य कर रही है। आगे भविष्य में हम आशा करते हैं कि जिनेश्वर भगवान श्री पार्श्वनाथ तथा जगन्माता श्री पद्मावती देवी के कृपानुग्रह से महासभा हर कार्य उत्तरोत्तर उन्नति प्राप्त करे। इसी शुभ कामना के साथ। महासभा के सभी कार्यकर्तागण को हमारा शुभाशीर्वाद।

-भद्र भूयात- वर्धतां जिनशासनं।।

-भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति स्वामी (मूडबिद्री)

परिचय

आर्यिकारत्न १०५ श्री सुपार्श्वमती जी

आपका जन्म राजस्थान के मैंसर नामक ग्राम में मिती फागुन सुदी ६ वि.सं. १६७५ को हुआ था। आपके पिता स्व. हरकचंद जी चूड़ीवाल तथा माता अणची ने आपका नाम भंवरीबाई रखा। १२ वर्ष की बाल्यावस्था में आपका विवाह नागौर निवासी छोगामल जी बड़जात्या के सुपुत्र श्री इन्द्रचन्द जी के साथ हुआ। विवाह के ६ माह पश्चात ही आपको घोर वैधव्य का दुख झेलना पड़ा।

बचपन से ही आप धर्मध्यान की ओर आकृष्ट थी। वि.सं. १६६२ में आचार्यकल्प १०८ श्री चन्द्रसागर जी का मैंनसर में प्रथम बार दर्शन के पश्चात् एवं आर्यिका इन्दुमती जी के सानिध्य से आपका मन वैराग्य की ओर झुक गया। वि.सं. २००५ में आजीवन नमक का त्याग कर आपने सप्तम प्रतिमा ग्रहण की।

वि.सं. २०१४ मिती भाद्र सुदी ६ को खानिया जयपुर में आचार्य श्री १०८ वीरसागर जी महाराज से आपने आर्यिका दीक्षा ग्रहण की और सुपार्श्वमती जी के नाम से विख्यात हुई। आप परम पूज्य आर्यिकारत्न १०५ श्री इन्दुमती माताजी के संघ में शामिल होकर उनकी मुख्य शिष्या बनीं। सतत् लगन और गंभीर चेष्टा के परिणाम स्वरूप अल्पावधि में ही आपने जैन सिद्धान्त, व्याकरण, न्याय, ज्योतिष एवं मंत्र-तंत्र आदि का अपार ज्ञान अर्जन किया।

१०५ श्री इन्दुमती माता जी के संघ ने भारत के बहुत से गांव नगरों में भ्रमण करते हुए सन् १६७४ से १६७७ तक प्रथम बार पूर्वांचल की भूमि को अपने पद विहार से पवित्र किया। इसी भ्रमण के दौरान बारसोई से लेकर तिनसुकिया तक कई गांवों और शहरों का भ्रमण किया। सारे पूर्वांचल में इस पदविहार से आपकी खूब धूम मची रही और आपके सद्उपदेशों से लोगों ने बहुत लाभ उठाया।

वि.सं. २०४२ दिनांक १६ जून सन् १६८५ को पूज्य आर्यिका इन्दुमती जी के समाधिमरण के पश्चात आप संघ नायिका बनी। वि.सं. २०४३ में कानजी में आपको 'गणिनी' पद से सुशोभित किया गया।

ई.सन् १६८७ से पुनः आपका संघ जैन धर्म की महती प्रभावना कर रहा है।

आर्यिकारत्न १०५ सुपार्श्वमती माताजी द्वारा रचित ग्रंथों की सूची-

पूज्य आर्यिका रत्न गणिनी १०५ श्री सुपार्श्वमती माताजी द्वारा अनेकानेक संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के शास्त्रों का सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद के साथ साथ अनेक अन्य ग्रन्थों की भी रचना की गई है। इनकी प्रमुख रचनाओं में है परमाध्यात्म तरंगिणी (हिन्दी अनुवाद), सागर धर्मामृत (सरल हिन्दी अनुवाद), नारी का चातुर्य, भगवान महावीर और उनके संदेश, नय विवक्षा, भ. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, पंचकल्याणक क्यों किया जाता है? प्रणामांजलि, मेरा चिन्तवन, दश धर्म विवेचन, प्रतिक्रमण-पाक्षिका सटीक, लघु बोध कथा, आचारसार, नैतिक शिक्षा (७ भाग), रत्नत्रय की अमरबेल, तत्वार्थवार्तिकम् (राजवार्तिकम्) भट्टाकलंकदेवकृत (सरल हिन्दी अनुवाद) प्रथम खण्ड जिनगुण सम्पति व्रत विधान।

प्रेस में- तत्वार्थ वार्तिकम् दूसरा खण्ड (हिन्दी अनुवादक), चारांग चरित्र जिनदत्त चरित्र।

करुणासागर परम पूज्य आचार्य श्री १०८ वर्द्धमानसागर महाराज

ई. सन् १६५० सितम्बर १८ के शुभ दिन मध्यप्रदेश स्थित सनावद नगर में पिताश्री कमलचंद जी पोरवाल के घर माताश्री सौ.मनोरमा देवी की कोख से आपने जन्म लिया। नाम रखा यशवन्त।

बाल्याकाल से ही मृदुस्वाभावी, बालक यशवन्त की गति लौकिक शिक्षा से अधिक धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति में रहती, परिणामस्वरूप बी.ए. के प्रथम वर्ष में ही अपने भौतिक सुखों को तिलांजली देकर गृहत्याग कर दिया। पूज्य आचार्य श्री विमलसागर महाराज से आपने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। ७ सितम्बर, १६७७ को सरलता की प्रतिमूर्त पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज से आपने दिगम्बर जैनेश्वरी मुनि दीक्षा अंगीकार की। आचार्यकल्प श्रुतसागर महाराज से आपने तत्वज्ञान, संघ अनुशासन सीखा। पूज्य आचार्य श्री १०८ अजितसागर महाराज के समाधि निधन के पश्चात् विशाल जनसमुदाय के बीच २४ जून, १६६० को आपके आचार्य पद प्रदान किया गया। परमपूज्य प्रातः स्मरणीय चारित्र-चक्रवर्ती दिवंगत आचार्य श्री १०८ शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में आप पंचम पट्टाधीश हैं। देश के कोने-कोने में विशाल मुनिसंघ के साथ मंगल विहार करते हुए अपने कुशल मार्गदर्शन से आज जन-जन में जैन धर्म की अपूर्व प्रभावना कर रहे हैं। दिसम्बर, १६६३ में प्रमुख अतिशयपूर्ण सिद्धक्षेत्र श्री श्रवणबेलगोला में गोमटेश्वर १००८ भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक महोत्सव आपके पावन सानिध्य में एवं मंगल आशीर्वाद के साथ सम्पन्न हुआ।

महासभा का शताब्दी महोत्सव आपके ही सानिध्य में कर्नाटक की पावन भूमि श्री १००८ भगवान बाहुबली के चरणों में प्रारम्भ हुआ तथा संयोगवश महासभा का शताब्दी समारोह का समापन आपके ही सानिध्य में श्री महावीर जी क्षेत्र में सम्पन्न हुआ।

रात्री में भोजन न करें।
पानी छान कर पीयें।।

अध्यक्ष

१. राजा लक्ष्मणदास जी के.सी.आई.	मथुरा	सन् १८८५ से १८९९
२. राजा द्वारिका जी रईस	मथुरा	१९००-१९०३, १९०६, १९०९
	सहारनपुर	१९०५
	कलकत्ता	१९०६
३. साहू सलेखचंद जी रईस	अम्बाला, छावनी	१९०४, १९२०
४. बा. देवकुमार जी रईस, आरा	कुंडलपुर	१९०७
५. सेठ माणकचंद जी जी जे.पी. बम्बई	श्रवणबेलगोला	१९१०
६. ला. जम्बूप्रसाद जी रईस	फिरोजाबाद	१९११
७. रा.सा. पन्नालाल जी	मथुरा	१९१३
८. सेठ दामोदर प्रसाद जी रईस	मथुरा	१९१२, १९१५
९. सर सेठ हुकमचंद जी, इन्दौर	मथुरा	१९१४, १९३६-१९३८
१०. बा गुलाबचंद जी रईस छपरा	मथुरा	१९१६
११. पं. पन्नालाल जी न्यायदिवाकर	अम्बाला छावनी	१९१७
१२. सेठ माणकचंद जी सेठी	कोटा	१९१८
१३. रा.सा. सेठ टीकमचंद जी सोनी	अजमेर	१९१९, १९२३
१४. बैरिस्टर चम्पतराय, लखनऊ	लखनऊ	१९२१
१५. सेठ रावजी सखाराम दोशी	देहली	१९२२
१६. पं. नेमिसागर जी वर्णी		१९२४
१७. सेठ मोहनलाल जी खुरई	नांवा	१९२५
१८. सेठ गंभीरमल जी पांड्या	गया	१९२६
१९. सेठ मोतीलाल जी गुलाब सावजी	फतेहपुर	१९२७
२०. पं. श्रीलाल जी पाटनी	मथुरा	१९२८
२१. रा.सा. सेठ हुलासराय जी	लाडनूं	१९२९
२२. सेठ रतनलाल जी रांची	कोसीकलां	१९३०
२३. सेठ गरीबदास जी जबलपुर	छपरा	१९३१
२४. सेठ चन्द्रभान जी साहूमल	थूबौनजी	१९३२
२५. सेठ गेंदमल जी जबेरी	ब्यावर	१९३३
२६. पंडिताचार्य चारुकीर्ति जी स्वामीजी	सोलापुर	१९३४
२७. सरसेठ भागचंद जी सोनी, अजमेर	इन्दौर	१९३५, १९३९, १९५१-१९५२
	श्रवणबेलगोला	१९४०-४३, १९५३-५८
	उज्जैन	१९४४-५०
	आनन्दपुर	१९५९-१९६१
२८. रा.सा. सेठ राजकुमार सिंह जी	लाडनूं	१९६२-१९६३
२९. सेठ भंवरीलाल जी बाकलीवाल	मरसलगंज	१९६४
	गोहाटी	१९६५-१९६६
३०. रा.सा. चांदमल जी पांड्या	श्रवणबेलगोला	१९६७-१९८१
३१. निर्मल कुमार जी सेठी	कोटा	१९८१ से लगातार

नैमित्तिक अधिवेशन

अध्यक्ष

१. सेठ माणकचंद जी जे.पी. बम्बई	श्रवणबेलगोला	१६०६
	मुजफ्फरनगर	१६१०
२. सेठी हीरालाल जी शिवनारायण जी, देहली	उदयपुर	१६१८
३. बा. ठाकुरदास जी बर्णी, उडेसर	उंडेसर	१६२०
४. ला. देवीसहाय जी फिरोजपुर	ब्यावर	१६२४
५. कु.मोतीलाल जी रानी वाले	सम्मेदशिखर	१६२७

महामंत्री

१. डिप्टी चम्पतराय जी गंगनहर	१८६६-१६१३
२. सेठ मोहनलाल जी खुरई	१६१४
३. ला. जम्बूप्रसाद जी सहारनपुर	१६१५-१६१७
४. लाला भगवानदास जी बड़नगर	१६१८-१६२३
५. सेठ चैनसुख जी छाबड़ा	१६२४-१६३६
६. पं. अमोलकचंद जी	१६३७
७. ला. परसादीलाल जी पाटनी	१६३८-१६५८
८. चौधरी सुमेरमल जी	१६५६-१६८०
६. त्रिलोकचंद जी कोठारी	१६८१ से लगातार

जैन गजट के सम्पादक

१. श्री बाबू सूरजभानु जी वकील	१८६५-६६
२. श्री घासीलाल जी मथुरा	१८६६-६६
३. श्री देवकुमार जी रईस आरा	१६००-१६०५
४. श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार	१६०६-१६०६
५. श्री पं. जवाहरलाल जी शास्त्री	१६१०
६. श्री पं. बनारसीदास जी	१६११
७. श्री ला. मिश्रीलाल जी अलीगढ़	१६१२-१६१४
८. श्री ला. घासीराम जी मथुरा	१६१५
६. श्री पं. रघुनाथदासजी सरनऊ	१६१६-२३
१०. श्री पं. मक्खनलाल जी न्याया.	१६२४-३२
११. श्री सुमेरचंद जी दिवाकर	१६३३
१२. श्री पं. खूबचंद जी शास्त्री	१६३३-४३
१३. श्री पं. बंशीधर जी शास्त्री शोलापुर	१६४४-४८
१४. श्री पं. इन्द्रलाल जी शास्त्री	१६४८-५८
१५. श्री पं. अजीत कुमार जी शास्त्री	१६५८
१६. श्री पं. लाल बहादुर शास्त्री	१६६८
१७. श्री पं. कुंजीलाल जी शास्त्री	१६८१-८४
१८. श्री पं. श्यामसुन्दर लाल जी शास्त्री	वर्तमान
१६. प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जी	वर्तमान

समाधि सम्राट, चारित्र चक्रवर्ती, आचार्य श्री १०८ शांतिसागर जी महाराज

आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद

महासभा सदा की भांति धर्म की रक्षा में कटिबद्ध रहे, धर्म को कभी न भूले और धर्म के विरूद्ध कभी कोई कार्य न करे। धर्म एवं संस्कृति रक्षार्थ जिस प्रकार नियमों का पालन वह अभी तक करती आयी है, आगे भी उनका पूर्ण रूप से पालन करती रहे।

आचार्य श्री १०८ वर्धमान सागर जी महाराज

वर्तमान में आचार्य शिष्य परम्परा में
मुनि श्री १०८ वर्धमान सागर जी महाराज

आचार्य श्री १०८ वीरसागर जी महाराज

आचार्य श्री १०८ शिवसागर जी महाराज

आचार्य श्री १०८ धर्मसागर जी महाराज

आचार्य श्री १०८ अजीतसागर जी महाराज

↑

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज एवम् आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी महाराज वात्सल्यपूर्ण मिलन का विहंगम दृश्य

गणिनी आर्यिका रत्न श्री १०५ सुपार्श्वमति माताजी, आचार्य श्री १०८ वीर सागर जी महाराज की शिष्या, (महान विदुषी-आचार्य विद्या सागर जी महाराज मंतव्य) →

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के साथ बिहार के मुख्यमंत्री श्रीमान लालूप्रसाद जी यादव सम्मेदशिखर जी क्षेत्र पर चर्चा करते हुये।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आहार लेने जाते हुए का दृश्य

आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज आहार लेने जाते हुए का दृश्य
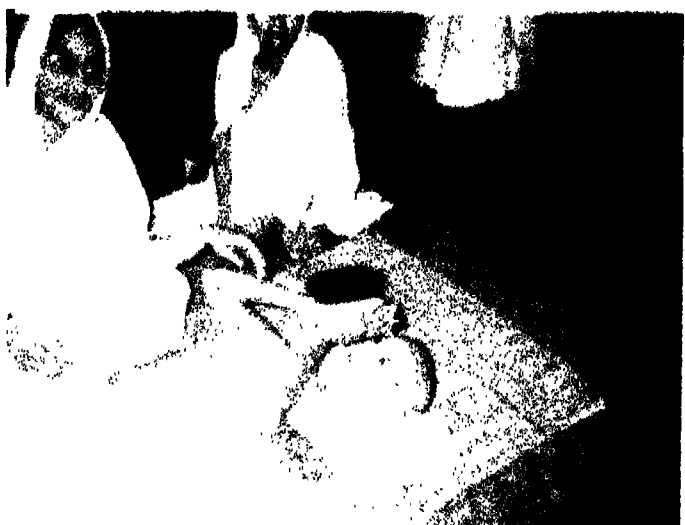
आर्यिका सल्लेखना अवस्था

मुनि श्री दयासागर जी महाराज समाधिस्थ

आचार्यरत्न श्री १०८ देशभूषण जी महाराज
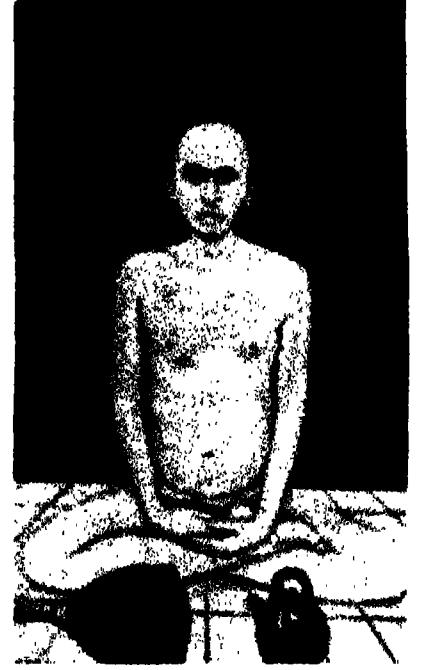
समाधिसम्राट आचार्य श्री १०८ महावीरकीर्ति जी महाराज

वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज
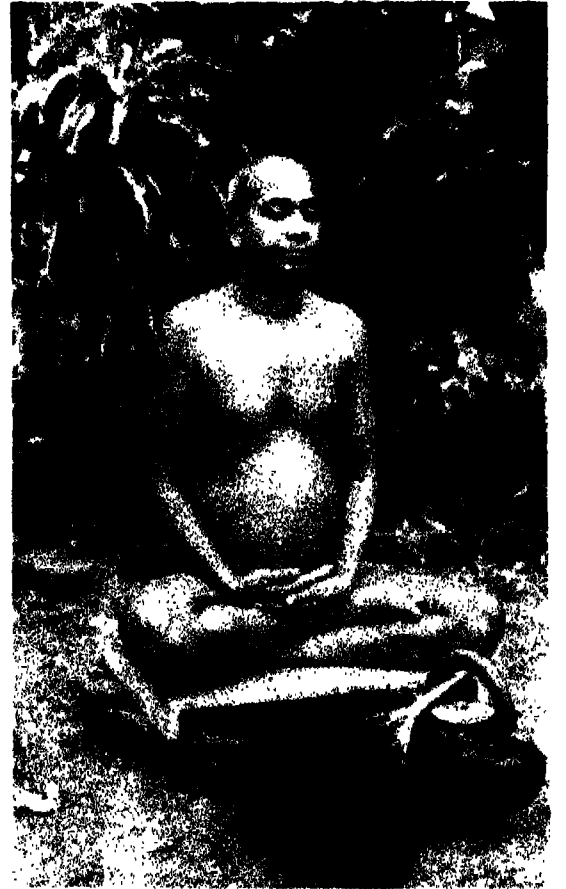
आचार्य श्री १०८ भरतसागर जी महाराज

आचार्यरत्न श्री १०८ कनकनंदी महाराज
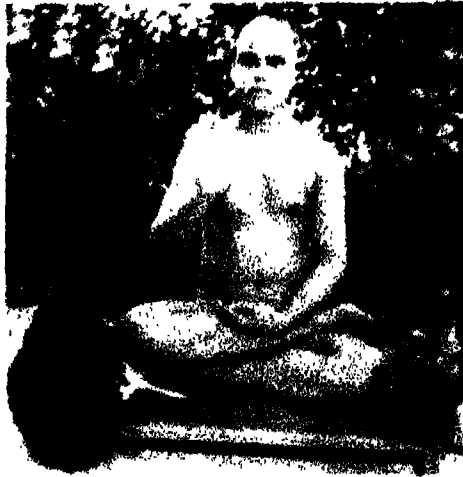
आचार्य श्री १०८ देवनंदी महाराज

आचार्यश्री १०८ पद्मनंदी महाराज

← गणधराचार्य श्री १०८ कुंथुसागर जी महाराज एवम् उनके संघस्थ आचार्य मुनि

आचार्य श्री १०८ गुणधरनंदी महाराज

आचार्य श्री १०८ कुशाग्रनंदी महाराज

आचार्य श्री १०८ कुमुदनंदी महाराज
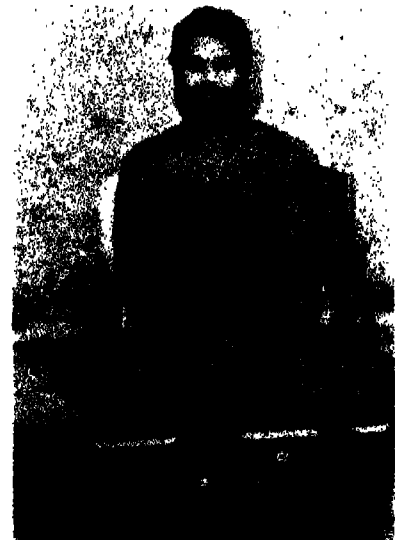
आचार्य श्री १०८ अभिनंदनसागर महाराज
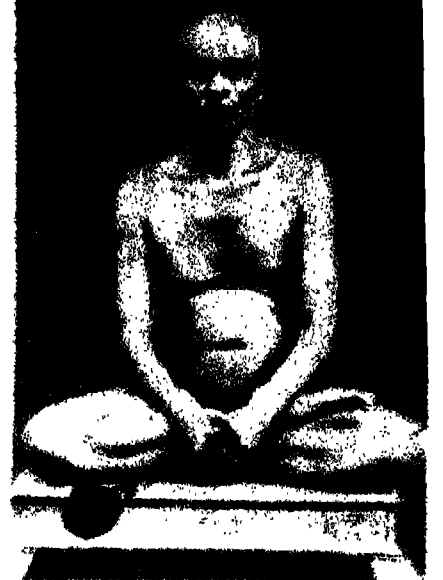
आचार्य श्री १०८ पायसागर महाराज

तपस्वी सम्राट आचार्य श्री १०८ सन्मतिसागर महाराज

आचार्य श्री १०८ नेमिसागर महाराज

आचार्य श्री १०८ आर्यनंदी महाराज

णमोकार मंत्र वाले बाबा आचार्य श्री १०८ कल्याणसागर महाराज

आचार्य श्री १०८ ज्ञानसागर जी महाराज

संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८
विद्यासागर जी महाराज

आचार्यकल्प श्री १०८ श्रुतसागर
जी महाराज

राष्ट्र संत आचार्य श्री १०८
विद्यानंद जी महाराज

आचार्य श्री १०८ सुबलसागर
महाराज

आचार्य श्री १०८ निर्मलसागर
महाराज

मुनि श्री केशलोंच करते हुये दृश्य।

वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री १०८
विरागसागर जी महाराज

आचार्य श्री १०८ अजितसागर जी महाराज आचार्य पद प्रतिष्ठापन समारोह

महान तपस्वी मुनि श्री १०८ चन्द्र सागर जी महाराज

आर्यिका सुपार्श्वमति ६०वीं जन्म जयंती समारोह पर आर्यिका संघ

आचार्य अजितसागर जी महाराज अंतिम समाधि अवस्था

आचार्य श्री आर्यनंदी एवं आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज एवं श्री लक्ष्मीसेन जी भट्टारक।
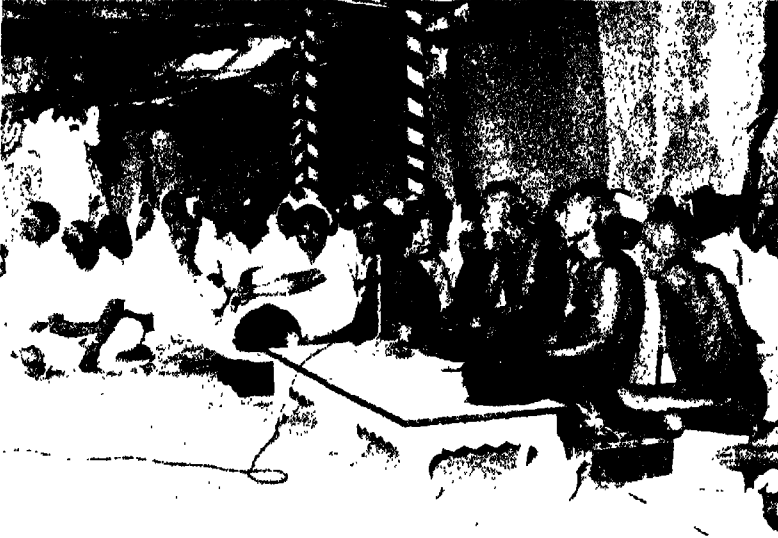
आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज, आचार्य श्री आर्यनंदी जी महाराज ससंघ सभा में महासभाध्यक्ष श्रीमान् निर्मलकुमार जी सेठी।

आचार्य धर्मसागर जी महाराज ससंघ इस फोटो में आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज, आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज आदि मुनि विराजमान हैं।

पूज्य श्री अजितमती माताजी आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की वयोवृद्ध शिष्या जिनकी बारामती नगर में सल्लेखना हुयी

आचार्य श्री १०८ बाहुबली महाराज

आचार्य श्री १०८ सुमति सागर जी महाराज

तपस्वी सम्राट आचार्य श्री १०८ सन्मतिसागर महाराज

आचार्य श्री १०८ श्रेयांससागर महाराज

आचार्य श्री १०८ दर्शनसागर जी महाराज

वार्णी भूषण आचार्य श्री १०८ सन्मतिसागर महाराज

आचार्य श्री १०८ पुष्पदंतसागर जी महाराज

गणिनी आर्यिका श्री १०५ इन्दुमती माताजी

गणिनी आर्यिका श्री १०५ विजयमती माताजी

गणिनी आर्यिका श्री १०५ ज्ञानमति माताजी

आर्यिका संघ

आर्यिका श्री १०५ श्रेयांसमती माताजी अपने संघ के साथ

नव दीक्षार्थी केशलोंच करते हुये।

आर्यिका रत्न चन्दा मांश्री

नवदीक्षार्थी पर दीक्षा के संस्कार
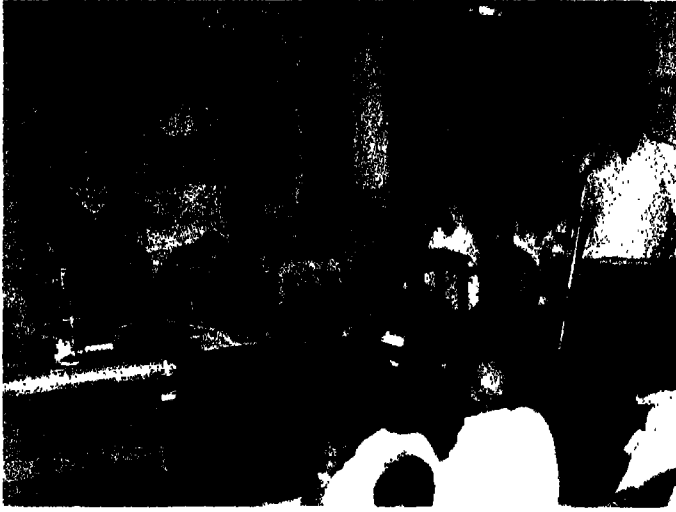
गणधराचार्य कुंथुसागर जी संघस्थ मुनियों के साथ महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी।

आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज को महासभा पदाधिकारी श्रीमान निर्मल कुमार सेठी एवं श्री पूनमचंद गंगवाल पीछी प्रदान करते हुये।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज नवदीक्षार्थी पर दीक्षा के संस्कार करते हुये।

गणिनी आर्यिका विजयमती माताजी विशाल जनसमूह के साथ।

धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े धर्मस्थल अपने समस्त परिवार के साथ।

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति एवं श्री जिनसेन स्वामी के साथ महासभाध्यक्ष।

सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज नव दीक्षार्थी साधुवर्ग एवं संघस्थ मुनियों के साथ

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज एवं श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी श्रवणबेलगोला के साथ भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमान देवगौड़ा जी।

वर्धमानसागर महाराज संघस्थ आर्यिका संघ।

गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज केशलोंच करते हुये।

श्री अभयमती माताजी

कर्नाटक में सर्वधर्म सम्मेलन में भट्टारक श्री चारूकीर्ति जी, श्री जिनसेन जी, श्री चारूकीर्ति मूडबिद्री, श्री लक्ष्मीसेन जी भट्टारक, धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े।
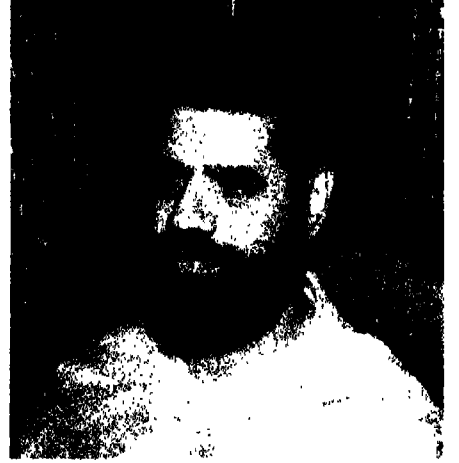
श्रवणबेलगोला भट्टारक श्री चारूकीर्ति स्वामी

हुमचा भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्ति स्वामी

कोल्हापुर भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन स्वामी

मूडबिद्री भट्टारक स्व० श्री चारूकीर्ति स्वामी

सम्पादकीय

थोड़ा लिखा बहुत समझना

एक सिद्धान्तनिष्ठ संस्था

महासभा दिगम्बर जैन समाज की प्राचीनतम संस्था है। वह उस झील की तरह है, जिसमें से अनेक नदियां निकलती हैं। आज इस लोकप्रिय संस्था के शताब्दी-महोत्सव का समापन है। **धर्मस्थल (कर्नाटक) से धर्मस्थल (राजस्थान) तक की यह महोत्सव-यात्रा उसके 'धर्म संरक्षिणी' विशेषण को सार्थक सिद्ध कर रही है।** पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज का पुनीत सान्निध्य धर्मस्थल में भी उसे प्राप्त था और यहां श्री महावीरजी में भी वह हमें अपना प्रशस्त आशीष प्रदान कर ही रहे हैं। इस सुखद संयोग के पीछे यह सीधा-सा प्रतीकात्मक संकेत निहित है कि अपनी सौ वर्ष की इस सुदीर्घ यात्रा में भी महासभा का स्वरूप जस-का-तस है। कुछ भी तो नहीं बदला। जिन सिद्धान्तों के साथ उन्नीसवीं सदी के धुर उत्तरार्ध में उसका जन्म हुआ था, आज इक्कीसवीं सदी की देहरी पर खड़े होकर भी वह उन्हीं सिद्धान्तों की डोर से बंधी हुई है। 'गंगा गए तो गगादास, जमुना गए तो जमुनादास' की नीति में वह विश्वास नहीं रखती। **धर्म के प्रति दृढ़ आस्था रखने वालों के समुदाय का ही दूसरा नाम है- 'महासभा'।** दल बदलुओं के इस युग मे यह अटूट निष्ठा क्या प्रशंसनीय नहीं मानी जायेगी!

एक चिन्तनशील सामाजिक संगठन

मनुष्य एक चिन्तनशील सामाजिक प्राणी है। **संस्कृत भाषा में दो शब्द है- समाज और समज। दोनों का अर्थ है समूह या समुदाय, किन्तु 'समाज' शब्द मनुष्यों के समुदाय के अर्थ में प्रचलित है तो 'समज' से पशुओं के झुण्ड का बोध होता है।** एक मात्रा (ा) की कमी मात्र से दोनों शब्दों में जमीन और आसमान जितना अन्तर आ गया है। यह अन्तर चिन्तनशीलता के सद्भाव और अभाव का ही अन्तर है। संस्था या संगठन समाज की ही इकाइयां हैं। हर संस्था के उद्देश्य होते है- (१) अनेक व्यक्तियों का कंधा-से-कंधा मिलाकर साथ-साथ मन लगाकर काम करना, (२) सफलता की प्राप्ति तक सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना रखना तथा (३) सदा दूसरों की भलाई में संलग्न रहना। महासभा भी एक जीवन्त संस्था है, जो गत सौ वर्षों से एकजुट रहकर इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कोशिश करती रही है। वह आज भी अस्तित्व में है, इसका कारण उसकी **धर्म-संगत चिन्तनशीलता** ही है, अन्यथा तो किसी भी संस्था को इतना लम्बा जीवन कहा मिल पाता है!

मत बनो त्रिशंकु

सिद्धान्तहीन व्यक्ति त्रिशंकु के समान होता है। हिन्दू पुराणों के अनुसार वह एक अन्यायी और अत्याचारी राजा था। उसके मन मे सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसने अपने राज्य के ऋषियों को अपने महल में आमंत्रित किया और उनसे पूछा कि क्या कोई ऐसा उपाय है, जिसमे मै सशरीर स्वर्ग जा सकूं! ऋषिगण इस असंभव-सी बात को सुनकर बगलें झांकने लगे। ऋषि विश्वामित्र भी वहां उपस्थित थे। उन्होंने यह जिम्मा लिया और अपनी तपस्या के बल से वह राजा को ऊपर उठाने लगे। जब स्वर्ग के देवताओं ने उसे ऊपर आते देखा तो उनमें खलबली मच गई। उन्होंने विचार किया कि यदि यह आततायी राजा यहां आ गया तो स्वर्ग में अराजकता फैल जायेगी। सब देवताओं ने मिलकर उसे नीचे धकेलना शुरू किया किन्तु विश्वामित्र उसे नीचे धरती पर नहीं आने दे रहे थे। कुछ देर तक दोनों में ऊपर उठाने और नीचे धकेलने का यह कौतुकपूर्ण खेल चलता रहा। ऋषि जब थकने लगे तो उनके मुह से निकल गया- 'अब तू वहीं ठहर'। तबसे वह राजा वहीं अधर में लटका हुआ है। **महासभा किसी को 'त्रिशंकु' बनाने में विश्वास नहीं रखती।** उसका सोच है कि कथनी और करनी में समानता होनी चाहिए। **जब तक ज्ञान को क्रिया का और विचार को आचार का रूप नहीं दिया जा सकेगा, तब तक हमारी स्थिति त्रिशंकु के समान ही रहेगी। महासभा ने हमेशा चर्चा और चर्या के बीच सम्यक् सन्तुलन बनाए रखने का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है।** इसी एकरूपता के कारण अन्य संस्थाओं से तुलना में उसकी एक पृथक् पहचान बनी हुई है।

महासभा के अमिट पदचिन्ह

गत सौ वर्षों में वीतरागी देव-शास्त्र-गुरुओं द्वारा प्रवर्तित मार्ग के संरक्षण, तीर्थोद्धार, शिक्षा-प्रसार, साहित्य-प्रकाशन, बाल-वृद्ध-विवाह सरीखी कुरीतियों के निवारण, सज्जातित्व की सुरक्षा, जैनधर्म और संस्कृति पर समय-समय पर एकान्तवादियों या धर्म-विरोधियों की ओर से हुए प्रहारों के प्रतिरोध आदि के रूप में **श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा** की उल्लेखनीय सेवायें रही है। यह कहना शायद असंगत नहीं होगा कि महासभा अपने उदय के

साथ ही धर्मप्राण समाज के मानचित्र पर मात्र एक संस्था के रूप में ही नहीं, अपितु एक सशक्त आंदोलन बनकर अपने अमिट पदचिन्ह अंकित करती रही है।

महासभा का शताब्दी- महोत्सव पूरे देश में मनाया गया। अब तक धर्मस्थल (कर्नाटक), कोडरमा (बिहार), भोजग्राम (कर्नाटक), कलकत्ता (पश्चिम बंगाल), लूणवां (राजस्थान), गुवाहाटी (आसाम), ललितपुर (उत्तर प्रदेश), कचनेर (महाराष्ट्र), ईडर (गुजरात), कोटा (राजस्थान), मथुरा (उत्तर प्रदेश), उदयपुर (राजस्थान), नागपुर (विदर्भ), ग्वालियर (मध्यप्रदेश) आदि अनेकानेक स्थानों पर शताब्दी-महोत्सव के आयोजन भव्यतापूर्वक सम्पन्न हो चुके है। अन्य अनेक स्थानों पर नैमित्तिक अधिवेशन एवं शिविर भी सम्पन्न हुए है।

शताब्दी-महोत्सव-काल में ही हमारे कर्मठ, जनप्रिय एवं धर्मनिष्ठ महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के अथक प्रयत्न एवं प्रेरणा से **धर्म संरक्षिणी** के साथ ही **तीर्थ संरक्षिणी महासभा** का भी निर्माण हुआ और अब उसके माध्यम से अनेक प्राचीन (कुछ विलुप्त या अज्ञात) तीर्थों का जीर्णोद्धार-कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित हो रहा है। इस बीच नवोदित युवा उद्योगपति एवं सूझबूझ के धनी श्री गजराज जी गंगवाल द्वारा महासभा के महामंत्री का पद-भार स्वीकार कर लिए जाने से महासभा में एक नये उत्साह का संचार हुआ है। आने वाले समय में यह एक **मणि-कांचन-संयोग सिद्ध होगा, इसमें किसी को सन्देह नहीं** होना चाहिए।

शताब्दी-महोत्सव की समयावधि में जैन विद्या के क्षेत्र में सेवारत प्रतिभाओं को पुरस्कृत एवं सम्मानित करने तथा युवा पीढ़ी में जैन धर्म के प्रति रूचि जागृत करने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन करना भी हमारे संकल्पित मिशन का अंग रहा है। साथ ही चारित्रोन्नयन के लक्ष्य को अपने दृष्टिपथ में रखकर हमने तीन ट्रैक्टों का प्रकाशन भी किया है। जैन इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् डा. कस्तूरचंद जी कासलीवाल ने अपनी समर्थ लेखनी से महासभा के सौ वर्षों का इतिवृत्त भी लिखकर तैयार कर दिया है, जो सुसम्पादित होकर शीघ्र ही प्रकाशित होगा। जैन गजट के इस शताब्दी विशेषांक में हमारे प्रिय पाठकों को उनके द्वारा लिखित वृहद् इतिहास के कुछ अंश पढ़ने को मिलेंगे। हमें खेद है कि शताधिक ग्रन्थों के इस यशस्वी लेखक का वियोग हम सबके लिए एक असहनीय आघात की तरह है। महासभा उनके अवदान को कभी विस्मृत नहीं कर पाएगी।

महासभा का यह शताब्दी-महोत्सव अनन्त यात्रा में एक पड़ाव ही तो था। अभी तो आने वाली सैकड़ों शताब्दियों तक उसे इसी जीवट के साथ जुटा रहना है। यह तो ओंकार है, विराम नहीं।

एक निर्मूल आशंका

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के गठन पर कुछ भाई अपनी अप्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं। उन्हें यह आशंका है कि **इससे भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की महत्ता कम होगी। यह आशंका निर्मूल है। तीर्थक्षेत्र कमेटी की जनक भी तो महासभा ही है। वह ऐसा क्यों चाहेगी कि उसकी मानस सन्तान की हेटी हो। ऐसा तो वह कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकती।** आज उसकी बदौलत हमारे क्षेत्रों पर चल रहे मुकदमों में पहले से अधिक मजबूती से पैरवी हो रही है और हमारे तीर्थों को अब पहले से अधिक सुरक्षा प्राप्त है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के जुझारू एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की इस कर्म-निष्ठा को हम प्रणाम करते हैं। तीर्थ सरक्षिणी महासभा तो तीर्थों के जीर्णोद्धार एवं विकास में द्रुतगति लाना चाहती है। **चिन्ता तो कहान तीर्थरक्षा ट्रस्ट को लेकर होनी चाहिए,** जिसके अपने निहित स्वार्थ तो है ही, इस ट्रस्ट के माध्यम से मुमुक्षुगण समाज पर अपना अवांछनीय वर्चस्व भी स्थापित करना चाहते है। प्राचीन मूर्तियों के शिलालेखों में अपने मनोनुकूल परिवर्तन करने तथा शुद्ध तेरापंथ के नाम पर प्राचीन मंदिरों पर अनधिकृत कब्जा करने की धृष्टतापूर्ण घटनायें हमारे सामने आ चुकी है। खेद है कि उसको लेकर अप्रसन्नता तो दूर, कोई उस पर उंगली भी नहीं उठाना चाहता। **महासभा तो 'जहां भी रहेगी, जिस रूप में रहेगी, रावरी कहायेगी' की कहावत को ही चरितार्थ करेगी।**

तीर्थ-रक्षा का कार्य एक विशाल कार्य है। उनकी सुरक्षा एवं विकास पर हम अब तक जितना खर्च कर पा रहे है, वह ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। यदि एक-एक तीर्थ पर एक-एक करोड़ रूपया भी खर्च कर दिया जाए, तो भी वह कम ही होगा। महासभा इस दिशा में जो भी योगदान करती है, उसे तीर्थक्षेत्र कमेटी के विरोध अथवा प्रतिद्वन्दिता में उठाया गया कदम नहीं समझा जाना चाहिए। यह उपक्रम तो उसके सहयोग में ही है। सभी तीर्थ-हितैषियों को अपने दिल और दिमाग से इस निर्मूल आशंका को निकाल बाहर करना चाहिए।

एक चिन्ता यह भी

हमें यह देखकर हैरत होती है कि हमारे समाज में भी सत्ता के प्रति लिप्सा बढ़ती जा रही है। जब भी किसी संस्था के चुनाव होते है तो दो दल बन जाते है। जीतता तो केवल एक ग्रुप ही है। ऐसी स्थिति में हारा हुआ या हताश-निराश ग्रुप जब यह देखता है कि अपनी संस्था में बहुमत उसके साथ नहीं है तो वह मुमुक्षुओं की गोद में बैठ जाता है। और उनके सहयोग से समानान्तर संगठन खड़ा कर लेता है। मुमुक्षुओं और उनके सहयोग से सामानान्तर संगठन खड़ा कर लेता है। मुमुक्षुओं के मुखिया तो इस ताक में रहते ही है। आर्थिक सहयोग का प्रलोभन देकर वे अपने कुछ लोगों को भी उस संस्था में प्रवेश दिला देते है और धीरे-धीरे संस्था के नीति-नियन्ता भी बन जाते है। अभी एक संस्था में ऐसा हुआ है। हमारी आपत्ति केवल यह है कि ये मुमुक्षु अपनी संस्थाओं में तो मतभिन्नता रखने वाले किसी भी साधर्मी को झांकने तक नहीं देते किन्तु हमारी अपनी संस्थाओं में हमारी कलह और पदलिप्सा का लाभ उठाकर घुसपैठ कर लेते है। इसके दुष्परिणाम कई बार देख चुकने के बाद भी हम नहीं चेत रहे है, यह चिन्तनीय है। महासभा ने ऐसी दुरंगी नीति से सदैव असहमति व्यक्त की है और भविष्य में भी वह एकान्तवादियों के साथ तालमेल का समर्थन या पोषण नहीं कर सकती। समाज के सभी कर्णधारों को भी इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

हमारी सम्पादन नीति

सन् १९८२ में श्रद्धेय पं. कुंजीलाल जी शास्त्री ने जैन गजट के सम्पादन का दायित्व स्वीकार किया था। उस समय उन्होंने एक सुस्पष्ट सम्पादन-नीति की घोषणा की थी। दो-ढाई वर्ष की अल्पावधि के बाद ही उनका असामयिक निधन हो गया। तब माननीय सेठी जी ने उनके स्थान पर हमें सम्पादक बनाया। स्व. पण्डित जी द्वारा घोषित सम्पादन-नीति को हमने एक मार्गदर्शक-रेखा (गाइड लाइन) के रूप में स्वीकार किया और प्रयत्नपूर्वक हम उसका निर्वाह करते आ रहे है। शताब्दी-महोत्सव के समापन के बाद भी वही सम्पादन-नीति यथावत रहेगी। उस नीति के बिन्दुओं को हम एक बार पुनः स्मरण कर रहे है:

जैन गजट भाषा-संयम का पूर्ण पक्षधर रहेगा। सिद्धान्तों पर पूरी दृढ़ता के साथ स्थिर रहते हुए वह ऐसी भाषा का प्रयोग करना कदापि नहीं चाहेगा, जिससे अपने विरोधी के व्यक्तित्व का अपमान हो। इस संबंध में एक बात स्पष्ट है कि जैन गुरुओं का अवर्णवाद एवं उनके प्रति प्रयोग की जाने वाली अशिष्ट भाषा को भी जैन गजट सहन नहीं करेगा।

जैन गजट गुणग्राही एवं गुण-पूजक रहेगा। दोषों का समर्थन एवं उन्हें बढ़ावा देने की प्रवृत्ति जैन गजट की नहीं रहेगी, परन्तु इस विषय में स्थितिकरण और उपगूहन दोनों ही अंगों का पात्र की विवक्षा को ध्यान में रखकर पालन करने का भरसक प्रयत्न किया जायेगा।

हम यह पूरी निष्ठा के साथ चाहेंगे कि जैन गजट में कोई भी रचना इस प्रकार की प्रकाशित न हो सके, जिससे समाज में सदाचार, ईमानदारी और जैन आचार-विचार के प्रति निष्ठा को धक्का लगे या इनकी उपेक्षा को प्रोत्साहन मिले।

हम जितने निश्चयैकान्त के विरोधी है, उतने ही व्यवहारैकान्त के भी विरोधी है। हम दोनों की सापेक्षता को ही मोक्षमार्ग मानते है। स्याद्वादमय जिनवाणी का उद्देश्य ही दोनों नयों के शत्रुभाव को नष्ट कर मित्रभाव को उत्पन्न करना है।

जिनवाणी और जिनसंघ के अवर्णवाद को आचार्यों ने दर्शनमोह के आस्रव का कारण कहा है। जैन गजट की कर्तव्यपरायणता जैन बन्धुओं में सम्यक्त्व और चारित्र की वृद्धि करना है। अतः भीतर या बाहर जहां कहीं से भी अवर्णवाद की कोई बात दृष्टिगोचर होगी तो जैन गजट मूकदर्शक बना नहीं रहेगा।

साधर्मी बन्धुओं के साथ वीतराग कथा का ही अवलम्बन लिया जाएगा और हमारी पूंजी वीतराग ऋषियों की वाणी ही होगी।

समाज में पनपती हुई उन प्रवृत्तियों का जैन गजट डटकर विरोध करेगा, जिनसे धर्म का अपमान होता है, समाज की खिल्ली उड़ती है और राष्ट्रीय धारा से हम अलग-थलग पड़ जाते है तथा सबसे बढ़कर जैन धर्म के कुलाचार की नीव ही ध्वस्त हो जाती है।

मतभेदों को कम करने में यदि कुछ भी सफलता मिल सके तो इसे हम अपना अहोभाग्य समझेंगे, परन्तु यदि मतभेद न भी मिट सके तो कम-से-कम सामाजिक संगठन तो न बिखरे।

पत्र समाज के नैतिक अस्तित्व के सजग प्रहरी होते है। समाज की नैतिकता ही उनके वास्तविक अस्तित्व का प्रमाण है। इस विषय में हम अपने कर्तव्य-बोध ा को सदैव स्मरण रखेंगे।

समाज के विशिष्ट विद्वानों को पक्षपात की भूमिका से सदैव ऊपर रहना चाहिए। उनका अहं इतना न टकरा जाए, जिससे समाज को उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने की आस्था ही डगमगा जाए।

समस्त साधुजनों के पुनीत चरणों में यह विनम्र प्रार्थना है कि कर्तव्य-पथ पर चलते रहने की प्रेरणा और उद्बोधन वे हमें सदैव प्रदान करते रहें।

महासभा के शताब्दी-महोत्सव के समापन पर जैन गजट का यह विशेषांक अपने प्रिय पाठकों के हाथों में सौंपते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। यद्यपि हमें यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं है कि इस अंक के लिए जितनी तैयारी होनी चाहिए थी, अपने प्रमाद और व्यस्तता के कारण उतनी हम नहीं कर सके, तथापि सौ वर्षों की प्रमुख-प्रमुख गतिविधियों की एक झलक तो इसमें उन्हें मिलेगी ही। **इस अंक में जो भी सुरुचिपूर्ण एवं पठनीय सामग्री है, उसका श्रेय हमारे प्रबुद्ध लेखकों को जाता है। हम तो उसे संजोने में निमित्त मात्र रहे है।** सुधी लेखकों का, उनके इस सद्भाव और सौजन्य के लिए, हम आभार मानते है।

परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का प्रशस्त वात्सल्यभाव सदैव रहा है। वह एक युग-नायक आचार्य थे। उन्हीं की गौरवशाली परम्परा में निर्दोष एवं निरतिचारचर्या के पालक तथा सहज/सौम्य व्यक्तित्व के धनी, जिनके दर्शन मात्र से भव्यजनों के चित्त में प्रशम भाव जागृत होता है, का शताब्दी-समारोह को समुचित और स्वस्थ निर्देशन निरन्तर प्राप्त रहा है। उनके श्रीचरणों में हमारे शतशः नमोस्तु। वंदामि प्रेषित कर रहा हूं विदुषी आर्यिका, अनेक ग्रन्थों की रचयिता एवं टीकाकार तथा ममतामयी पूज्य श्री सुपार्श्वमती माताजी के पुनीत चरणों में, जिनके आगम-ज्ञान से बड़े-बड़े विद्वज्जन भी चमत्कृत और उपकृत होते रहते है। इस अवसर पर महासभा के लिए प्राणस्वरूप समस्त सन्तों की सहज सुलभ कृपा के लिए अपना हार्दिक अनुगृह व्यक्त करते हुए एवं उन तक अपनी विनम्र विनयांजलि पहुंचाते हुए हम अपने सौभाग्य को महिमा-मण्डित होते हुए देख रहे है।

महासभा के सभी कर्णधारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना भी हम अपना कर्तव्य समझते है, जिनका स्नेह और आदर हमें सदा प्राप्त रहा है और सबसे बड़ी बात यह कि हमारी स्वतंत्रता में वे कभी बाधक नहीं बने है। इसीलिए हम खुलकर अपनी बात लिखते और कहते रहे है। सर्वश्री सेठी जी, उम्मेदमल जी पाण्ड्या, आर.के.जैन सा., त्रिलोकचंद जी कोठारी, पूनमचंद जी गंगवाल, शिखरचंद जी पहाड़िया, रूपचंद जी कटारिया, गजराज जी गंगवाल, चैनरूप जी बाकलीवाल, आगरा के सभी बैनाड़ा बंधु, भागचंद जी पहाड़िया प्रभृति ऐसे शताधिक महानुभाव है, जिनके वात्सल्यपूर्ण सहकार के बिना हम अपने दायित्व

का सम्यक् निर्वाह कर ही नहीं सकते थे।

सम्पूर्ण भारत में शताब्दी-महोत्सव की गतिविधियों के संचालन में जिनका महनीय योगदान रहा है, वे हजारों की संख्या में है। सबका नामोल्लेख करना किसी के लिए भी सरल नहीं है। तथापि उन सबके प्रतिनिधि-रूप में हम सर्वश्री हरिप्रसाद जी पहाड़िया, राजकुमार जी सेठी, निर्वाणचंद जी, बाबूलाल जी छाबड़ा, डा. श्रेयांस जी, मांगीलाल जी पहाड़िया, शांतिलाल जी, पदमचंद जी धाकड़ा, कमल कुमार जैन, टीकमचंद रांवका, हुक्मीचंद जी सरावगी, महावीर प्रसाद गगवाल, भरत काला, ओमप्रकाश जी अग्रवाल, लालमणि प्रसाद जैन, मनोहर आग्रेकर, शांतिलाल जी बड़जात्या प्रभृत्ति को उनकी प्रशंसनीय कार्यपटुता और समर्पण भाव के लिए साधुवाद देते है।

श्रद्धेय धर्माधिकारी राजर्षि डा. वीरेन्द्र हेगड़े एवं स्वस्ति श्री भट्टारक चारूकीर्ति स्वामी जी के प्रेरक व्यक्तित्व को भी हम कभी विस्मृत नहीं कर सकते। उनका वरद हस्त सदैव हमारे सिर पर रहा है।

इस विशेषांक की तैयारी और साजसज्जा में जो अभिन्न सहयोग भाई श्रीकान्त चंवरे जैन (प्रकाशक), प्रकाश भानु द्विवेदी और सुधेश का हमें मिला है, उसके लिए हम उन्हें प्रेम-पगा धन्यवाद देते हैं। उनके बिना अल्पावधि में इसका प्रकाशन संभव ही नहीं था।

महासभा-परिवार इतना विशाल है कि सबकी नामावली को हर समय स्मरण रखना एक दुष्कर कार्य है। वे सब अपने है और अपनत्व से भरे है। उनके प्रति हमारे मन में क्या-क्या कुछ है, इसे वे सहृदय स्वयं समझ लेंगे और हमारी विवशता को समझते हुए पूर्ववत सौजन्य बनाए रखेंगे। इत्यलम्।

— नरेन्द्रप्रकाश जैन (सम्पादक)

महासभा का गौरव

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा में पहले सभी दिगम्बर जैन सम्मिलित हुआ करते थे। इस महासभा का समाज में इतना गौरव था कि इसके उत्सव में लोग बड़ी श्रद्धा भक्ति से भाग लेते थे। एक - एक वार्षिक उत्सव पंचकल्याणक का आनन्द प्रदान करता था।

-चरित्र चक्रवर्ती:द्वि.सं. पृष्ठ: २२०

मंगल आशीर्वाद

दिगम्बर जैन धर्म-संरक्षिणी महासभा को हमारा आशीर्वाद है, क्योंकि वह धर्म संकट में कभी नहीं डिगी है। आगे भी यह धर्म से नहीं डिगेगी, ऐसी हमें आशा है।

-स्व. समाधि सम्राट आचार्य श्री १०८ शांतिसागर जी महाराज

महासभा धर्म रक्षा का प्राण

सभ्य पुरूषों के समूह का नाम सभा है। बड़े समूह को महासभा कहते है। सभ्य पुरूष वह होता है जो वीतराग मार्ग का पथिक है। वीतरागता ही धर्म है। धर्म की रक्षा धर्मात्मा या सदाचारी सत्पुरूषों की रक्षा से होती है। महासभा धर्म की रक्षा करती है। उसका संकल्प है- तन जाए तो जाए किन्तु धर्म न जाने पाए।

धर्म मुनियों साधुओं से चलता है। महासभा एक मुनिभक्त संस्था है। उसका किसी से व्यक्तिगत द्वेष नहीं किन्तु धर्म से मलिनता लाने वाले भी उसे स्वीकार नहीं।

-गणिनी आर्यिकारत्न श्री १०५ सुपार्श्वमती माताजी

१७ अगस्त १९८७ का एक प्रवचनांश

महासभा इतिहास

श्रीमान् इतिहासरत्न डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, इन्होंने अथक प्रयास करके अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का सन् १८६५ से १६६५ तक १०१ वर्षों का सम्पूर्ण इतिहास चार अध्याय में वितरित कर समाज के लिये इस प्राचीन गौरवशाली संस्था का इतिहास संकलन का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादक श्री प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन एवं प्रबन्ध सम्पादक श्रीमान् त्रिलोकचन्द जी कोठारी संरक्षक महासभा इनके द्वारा सन् १६६६ में प्रकाशित हुये इस ग्रन्थ से जैन गजट शताब्दी विशेषांक में इस चार अध्याय में से संक्षेप में महासभा के कार्य की जानकारी इस लेख के द्वारा समाज के सामने प्रकाशित कर रहें हैं।

महासभा के प्रथम पच्चीस वर्ष

प्रथम अध्याय

इतिहास पूर्व की सामाजिक स्थिति

१९वीं शताब्दी के अंतिम दशक तक आते-आते देश के राजनैतिक एवं सामाजिक स्वरूप में स्थिरता आ गयी थी। सारा देश अंग्रेजी शासन के पंजे में जकड़ गया था। लेकिन सम्पूर्ण भारत के एक ही शासन के अधिकार में आने से देश में भावनात्मक एकता व्याप्त होने लगी थी। देशी रजवाड़ों का यत्र-तत्र शासन अवश्य था लेकिन उनकी स्वतंत्रता नहीं के बराबर थी। सामाजिक एवं जातीय संगठन बनने लगे थे और वे अपने वार्षिक अधिवेशन पूरी शान शौकत से करते थे। समय की मांग के अनुसार जैन समाज में भी संगठित होने की भावना पनपने लगी इसमें कारण बना आर्य समाज एवं अन्य समाजों द्वारा जैन धर्म पर कीचड उछाला जाना, उसे बौद्ध धर्म की शाख बतलाना, भगवान महावीर एवं महात्मा बुद्ध को एक ही व्यक्ति बतलाना, उनके विशाल साहित्य को अनदेखा करना तथा जैनों की धार्मिक सहन शक्ति का गलत अनुमान लगाना आदि कुछ कारणों से प्रबुद्ध जैनों में चिन्ता व्याप्त होने लगी और उनमें एक मंच बनाकर इन सबका प्रतिरोध करने की भावना प्रबल होने लगी। राष्ट्रीय कांग्रेस के उदय ने भी जैन समाज में इसी प्रकार का संगठन बनाने की भावना जोर देने लगी। जातीय सगटन बनाने की दिशा में स्व. पं. चुन्नीलाल जी, पं. मुकुंदराम जी, मुरादाबाद, पं. छेदीलाल जी अलीगढ़, पं. गोपाल दास जी बरैया, पं. प्यारेलाल जी अलीगढ़ एवं पं. धन्नालाल जी कासलीवाल जयपुर बहुत पहले से कार्यरत थे और इन सबने समाज को संगठित करने के लिए एक वातावरण भी बना लिया था।

उन वर्षों में अन्तिम केवली जम्बू स्वामी की निर्वाण भूमि चौरासी मथुरा में कार्तिक मास में भरने वाले मेले में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, देहली का दिगम्बर जैन समाज अच्छी संख्या में एकत्रित होता था। उस समय वह मेला समाज में अत्यधिक लोकप्रिय था। मथुरा के सेठ राजा लक्ष्मणदास जी के.सी.आई. का समाज एवं शासन में अच्छा प्रभाव था। मथुरा के मेले का वे ही संचालन करते थे। समय-समय पर इस मेले में सामाजिक संगठन की बात भी चलती रहती थी लेकिन मेला समाप्त होते ही संगठन की बात आयी-गयी हो जाती। एक बार संवत् १९४९ सन् १८९२ में मेले में पूरे जैन समाज की प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था का जन्म भी हुआ। संस्था का नाम "जैन धर्म संरक्षिणी महासभा" रखा गया। राजा लक्ष्मणदास जी को सभापति एवं पं. छेदीलाल जी को मंत्री मनोनीत किया गया। मथुरा में उसका एक अधिवेशन भी हुआ, लेकिन इसके मंत्री पं. छेदीलाल जी के आकस्मिक निधन के कारण फिर बनाया संगठन बिखर गया और महासभा के लिए सिर मुंडाते ही ओले पड़ने वाली कहावत चरितार्थ हो गयी। समाज संगठन की भावना फिर क्षीण हो गयी।

महासभा की स्थापना

कुछ समय पश्चात् समाज संगठन की भावना सामाजिक कार्यकर्ताओं में फिर से जाग्रत होने लगी। श्री पं. चुन्नीलाल जी, पं. मुकुन्द राम जी, पं. गोपाल दास जी बरैया, धन्नालाल जी कासलीवाल, भोले लाल जी सेठी जयपुर के सम्मिलित प्रयासों से संवत् १९५२ के कार्तिक मास में श्री जैन धर्म संरक्षिणी महासभा का प्रारंभिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। महासभा स्थापना का यह कार्य चौरासी मथुरा में जम्बू स्वामी मेले में ही सम्पन्न हुआ। इस प्रारंभिक अधिवेशन में देश के सभी प्रान्तों एवं देशी रियासतों के समाज हित चाहने वाले सैकड़ों कार्यकर्ता एकत्रित हुए।

महासभा का नेतृत्व भी पूर्ववत् राजा साहब लक्ष्मणदास जी साहब के. सी.आई. रईस मथुरा को ही सम्हालाया गया। स्थापना के समय जैन समाज में से अविद्या, भूख, फिजूलखर्ची एवं प्रमाद जैसी बुराइयों को दूर निकालने का संकल्प लिया गया। महासभा की स्थापना से समाज में नव आशा का संचार होने लगा और वह अपने विकास, उन्नति एवं एकता के सपने देखने लगा।

तत्कालीन समाज की स्थिति

१९वीं शताब्दी के समाप्त होते-होते जैन समाज में अशिक्षा, ऊंच नीच के भाव, फिजूलखर्ची, प्रमाद, फूट आदि अनेक घातक बीमारियों का घुन लग चुका था। जैन बालकों का विद्वान अथवा उच्च शिक्षित होना बन्द सा हो गया था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में जैनों की संख्या मात्र १४ लाख थी किन्तु वह भी अशिक्षा एवं रूढ़ियों से ग्रस्त होता जा रहा था। ऐसी स्थिति में महासभा जैसी संस्था का उदय होना समाज के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ तथा कम से कम वर्ष में एक बार अधिवेशनों में परस्पर एक दूसरे से मिलने-जुलने तथा अपना दुःख दर्द सुनाने का अवसर सबको प्राप्त होने लगा।

महासभा की स्थापना के पश्चात् घर-घर में समाज सुधार, जाति उत्थान, शिक्षा प्रसार आदि की चर्चा होने लगी। सामाजिक बुराइयों को दूर करने की ओर लोगों का ध्यान जाने लगा तथा दूसरे समाजों से जैन समाज की तुलना की जाने लगी। देश के विभिन्न नगरों एवं गांवों में महासभा की शाखाएं खुलने लगी, जिससे सामाजिक कार्यकर्ताओं में एक-दूसरे के समीप आने तथा मिल जुलकर सामाजिक समस्याओं को हल करने की भावना पनपने लगी।

राजा लक्ष्मण दास जी

राजा साहब लक्ष्मण दास जी उस समय समाज के एकाकी नेता थे। वे अत्यधिक सरल स्वभावी एवं समाज का हित चाहने वाले थे। उनमें समाज हित के प्रति मर मिटने की प्रबल भावना थी इसलिए ऐसे प्रभावशील व्यक्तित्व को महासभा के अध्यक्ष के रूप में पाकर सारा समाज ही गौरवान्वित हो चला था। महासभा स्थापना के पश्चात् एक वर्ष तो ऐसे ही निकल गया और एक वर्ष बीतने का पता भी तब लगा जब प्रथम वार्षिक अधिवेशन की तिथियां निश्चित की जाने लगी।

प्रथम वार्षिक सम्मेलन/अधिवेशन

महासभा का प्रथम वार्षिक अधिवेशन बड़े ही समारोह पूर्वक चौरासी मथुरा में जम्बू स्वामी के मेले पर मंगलवार दिनांक २७ अक्टूबर सन् १८९६ से २९ अक्टूबर १८९६ बृहस्पतिवार तक उल्लास मय वातावरण में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में यात्रियों एवं प्रतिनिधियों के अतिरिक्त दर्शकों की भारी भीड़ थी। जब मथुरा के राजा लक्ष्मण दास जी के.सी.आई. सभा में पधारे तो सभी ने उनका स्वागत करतल ध्वनि से स्वागत किया। महासभा के महामंत्री मुंशी चम्पतराय जी ने उपस्थित सभा से अध्यक्ष चुनने की प्रार्थना की तो जयपुर के श्रेष्ठी एवं समाजसेवी भोले लाल जी सेठी ने राजा लक्ष्मणदास जी का गुणानुवाद करते हुए उन्हें ही सभा का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव किया, जो करतल ध्वनि के साथ स्वीकृत किया गया।

अध्यक्ष पद ग्रहण करते समय सभापति राजा साहब ने भाव विभोर होकर कहा "इस अवसर पर मुझको जो आनन्द प्राप्त हुआ है, वह अकल्पनीय है, इस उच्च पद के कर्तव्य को निर्वाहन करने में मुझे आप लोगों के सहयोग की आवश्यकता है, मैं आशा करता हूं कि आप सब निःसन्देह अपना उचित सहयोग प्रदान कर मुझको हर्षित करेंगे तथा जो भी कार्य जिस भाई को करना उचित है वह उसे करने में सच्चे मन से उत्साही रहेंगे। समय कम है तथा कार्य अधिक है इसलिए मैं आपका अधिक समय लेना नहीं चाहता।" इसके पश्चात् लाला उग्रसेन जी रईस व आनरेरी मजिस्ट्रेट सहारनपुर को उप सभापति पद पर निर्वाचित किया गया। उपसभापति महोदय ने भी अपनी लघुता प्रकट करते हुए कहा कि "जैनोन्नति की गाड़ी अब शीघ्रतापूर्वक शांति के साथ स्वच्छ सड़क पर पुनः चलने लगेगी, क्योंकि उसको चलाने के लिए जाति शिरोमणी सभापति महोदय स्वयं उद्यमी सारथी बन गये हैं। जिस महासभा के सभापति हमारे सेट जी महोदय हो उसके गौरव की कोई भी सीमा नहीं हो सकती, भातृगणों अज्ञान एवं प्रमाद निद्रा से जागो उद्यम करो, धर्म साधन, जाति उन्नत करने का इससे उत्तम समय बार-बार हस्तगत होना कठिन है। सभापति एवं उपसभापति के प्रारंभिक वक्तव्य बहुत उत्साहित करने वाले सिद्ध हुए तथा सबने एक स्वर से महासभा के झण्डे के नीचे सामाजिक संगठन को दृढ़ करने का निश्चय किया।

समाज में जैन शास्त्रों को छपाने अथवा नहीं छपाने का एक विवाद सा चल पड़ा था, प्रारंभ में तो ऐसा लगने लगा था कि इस विवाद से कहीं समाज विभाजित नहीं हो जावे इसलिए महासभा के प्रथम अधिवेशन में ही इस प्रश्न पर विचार कर किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए दिनांक २६ अक्टूबर सन् १८९६ को रात्रि ८ बजे लाला उग्रसेन जी रईस सहारनपुर, पंडित पन्नालाल जी आदि अन्य सभासद तथा महासभा के प्रतिनिधि गण जिनकी संख्या १००-१२५ होगी सभापति महोदय के डेरे पर जाकर उनको सम्पूर्ण स्थिति से अवगत कराने के लिये दोनों ही पक्षों के सभासदों ने अपने-अपने विचार रखे। सभापति महोदय ने पूरी स्थिति पर अच्छी तरह विचार करके यही निर्णय दिया कि "जैन शास्त्रों को छपाना उनकी अत्यन्त अविनय का कारण एवं अनुचित व्यवहार है जिसको जैन समाज सदा सर्वदा से निन्दनीय कार्य समझता है तथा महासभा जो जाति सुधारक एवं धर्मोन्नति के लिए उद्यम कर रही है उसने इस कार्य को अनुचित मानकर यह नियम लिया है कि छपे जैन शास्त्रों का प्रचार जैन समाज के स्वयं के लिए अनुकूल नहीं होगा। सभापति महोदय के निर्णय का अधिकांश सभासदों ने समर्थन किया और जैन शास्त्रों को छपाना धर्म विरुद्ध कार्य मान लिया गया।

उक्त प्रस्ताव के पश्चात् महासभा के अन्तर्गत एक सरस्वती भण्डार खोलने का निर्णय भी लिया गया। इस सरस्वती भण्डार में सभी हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह रहेगा। जिस किसी स्वाध्याय प्रेमी को किसी ग्रन्थ की आवश्यकता हो वह वहां से कम कीमत पर ग्रन्थ प्राप्त कर सकता है। सरस्वती भण्डार को मथुरा में ही केन्द्रित किया गया तथा इसकी देखरेख का कार्य लाला रतन लाल जी प्राइवेट सेक्रेटरी राजा साहब मथुरा को दिया गया जिन्होंने बड़ी योग्यता से इस कार्य का सम्पादन किया। प्रारम्भ में सरस्वती भण्डार के लिए दस हजार रूपयों की व्यवस्था के लिए १, २, ५, १० रुपये के टिकट छपवा कर बिक्री की योजना बनाई गई। लाला कन्हैयालाल जी जौहरी देहली निवासी ने १५००/- रुपये सहायतार्थ देकर १५ रुपये की कीमत के ग्रन्थ लिखवा कर १०० पाठशालाओं में निःशुल्क भिजवाने की व्यवस्था की।

महाविद्यालय की स्थापना

इसी अधिवेशन में मथुरा में ही एक जैन महाविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया गया। महाविद्यालय के मंत्रीत्व का भाव उस समय सबसे अधिक सुयोग्य पं. गोपालदास जी बरैय्या पर डाला गया। महाविद्यालय की स्थापना से जैन छात्रों के लिए संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन करना सरल हो गया। विद्यालय स्थापना के पूर्व जैनों को संस्कृत का अध्ययन नहीं कराया जाता था। उन्हें ब्राह्मण बनकर काशी तथा नवद्वीप आदि में संस्कृत पढ़ने के लिए भटकना पड़ता था। महाविद्यालय स्थापना के प्रति सभासदों में बहुत उत्साह था कि उसी रात्रि को ही महाविद्यालय कार्यकारिणी के २१ सदस्यों का चयन कर लिया गया। २१ सदस्यों की कार्यकारिणी के लिए ५ विद्वान पंडित, ३ विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त, ६ धनिक तथा ७ सेवाभावी सदस्यों का कोटा निश्चित किया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि जब तक ८-९ सदस्य एक साथ एकत्रित नहीं होंगे तब तक मीटिंग नियमित नहीं समझी जावेगी।

महासभा के महाविद्यालय के मंत्री पं. गोपालदास जी बरैया इस युग के महापुरुष थे। वे धर्म शास्त्र के अपूर्व विद्वान थे। पंचाध्यायी के पठन पाठन का प्रचार आपके ही प्रयासों का मधुर फल है। इसके अतिरिक्त पं. बरैया

जी गोम्मटसार, त्रिलोकसार और पंचाध्यायी के भी तलस्पर्शी विद्वान थे।

जब विद्यालय के लिए स्थान का प्रश्न आया तो अधिकांश सभासदों ने मथुरा को ही जैन विद्यालय के लिए उचित स्थान माना। इसके लिए तर्क दिया गया कि जैन जाति के राजा श्री लक्ष्मणदास जी का निवास स्थान होने, जम्बू स्वामी के दर्शनार्थ बारह महीनों यात्रियों का लगातार आगमन, देश के प्रत्येक प्रान्त का मध्यस्थान होने, हिन्दुओं का तीर्थस्थल होने, विद्यालय का स्थान बस्ती के नजदीक होने आदि विभिन्न कारणों के कारण चौरासी मथुरा में ही महाविद्यालय की स्थापना को उचित समझा गया।

✉ पत्र प्रकाशन का निर्णय

इस अधिवेशन में सभी ने एक स्वर से महासभा की ओर से साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन करने का भी निर्णय लिया। पत्र का नाम "जैन गजट" रखा गया। इसके सम्पादन का उत्तरदायित्व सहारनपुर निवासी श्री सूरजभान जी वकील को सौंपा गया।

इस अधिवेशन में जैनों के समस्त विवादों को पंचायतियों, द्वारा निर्णित कराने, विवाह एवं मृत्यु भोज में कम से कम खर्च करने के प्रस्ताव को भी स्वीकृत किया गया। इस अवसर पर महासभा के ५१ सदस्यों की निम्नप्रकार एक कार्यकारिणी समिति का भी गठन किया गया।

१. ऑनरेबिल राजा लक्ष्मणदास, के.सी.आई.ई. मथुरा - सभापति
२. रायबहादुर सेठ मूलचंद जी सोनी अजमेर - उपसभापति
३. ऑनरेरी मजिस्ट्रेट लाला उग्रसेन जी जैन रईस सहारनपुर - उपसभापति
४. पण्डित पन्नालाल जी जारखी, सहारनपुर - मंत्री
५. पण्डित गोपाल दासजी बरैया आगरा, बम्बई - उपमंत्री
६. डिप्टी चम्पतराय जी रईस नजफगढ़ देहली हाल निवासी इटावा - सदस्य
७. बाबू छोगा लाल जी बिलाला बी.ए. जयपुर - सदस्य
८. बाबू अजीत प्रसाद जी जैन एम.ए. वकील रईस लखनऊ - सदस्य
९. बाबू रतन चन्द्र जी बी.ए. वकील हाईकोट इलाहाबाद - सदस्य
१०. पं. लदेव दास जी आगरा - सदस्य
११. पं. प्यारे लाल जी जैन अलीगढ़ - सदस्य
१२. श्रेष्ठि पं. भोलेलाल जी सेठी जयपुर - सदस्य
१३. सेठ फूलचन्द जी रईस खुरजा हाल निवासी कलकत्ता - सदस्य
१४. सेठ चान्दमल जी जैन सवाई जयपुर - सदस्य
१५. श्रीमन्त सेठ मोहनलाल जी खुरई (सागर) - सदस्य
१६. लाला उमराव सिंह जी रईस नजीबाबाद - सदस्य
१७. पं. चुन्नी लाल जी, मुरादाबाद - सदस्य
१८. सेठ माणकचंद जी पाना चन्द जी रईस, बम्बई - सदस्य
१९. बाबू बैजनाथ जी आगरा वाले, अजमेर
२०. लाला फुलजारी लाल जी रईस करहल, मैनपुरी - सदस्य
२१. बाबू सूरजभानु जी वकील देववन्द, सहारनपुर - सदस्य
२२. पंडित हकीम नन्दराम जी, आगरा - सदस्य
२३. श्री बिरधीचन्द जी नायब फौजदार, जयपुर - सदस्य
२४. सेठ धन्नालाल जी, लश्कर - सदस्य
२५. लाला चिरंजीलाल जी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, अलीगढ़ - सदस्य
२६. लाला रतनलाल जी प्राइवेट सेक्रेटरी, मथुरा - सदस्य
२७. बाबू उमराव सिंह जी देहली क्लॉथ मर्चेन्ट - सदस्य
२८. सेठ हीरालाल जी, इन्दौर - सदस्य
२९. लाल मूलचन्द जी वकील मथुरा - सदस्य
३०. सेठ दौलतराम जी डिप्टी कलेक्टर झालावाड़ - सदस्य
३१. बाबू बिहारी लाल जी डिप्टी इंस्पेक्टर रायपुर जिला आगरा - सदस्य
३२. बाबू जुगल किशोर जी अतिरिक्त कमिश्नर अमृतसर - सदस्य
३३. सेठ गुरुमुख राय जी, बम्बई - सदस्य
३४. लाला रामानंद जी, फिरोजपुर शहर पंजाब - सदस्य
३५. लाला गणेशीलाल जी रईस, मेरठ छावनी - सदस्य
३६. लाल गुलजारी लाल जी सर्राफ चौक कानपुर - सदस्य
३७. बाबू भैयप्रसाद जी इलाहाबाद - सदस्य
३८. लाला दिलसुख राय जी रईस, बीरपुर एटा - सदस्य
३९. हकीम अग्रसेन जी सरसावा सहारनपुर - सदस्य
४०. लाला निहालचन्द जी रईस नकुड सहारनपुर - सदस्य
४१. कपिता दास जी पदमावती पुरवार धरौआ जिला मैनपुरी - सदस्य
४२. सेठ सालिगराम जी, हाथरस - सदस्य
४३. लाला पन्नालाल जी रईस, बेसवा - सदस्य
४४. सेठ बृजलाल जी बमराना जिला झांसी - सदस्य
४५. सेठ बंशीधर जी खुर्जा - सदस्य
४६. बाबू मुन्नालाल जी एकाउंटेंट रियासत् नाहन - सदस्य
४७. सेठ मूलचन्द जी सदर बाजार, देहली - सदस्य
४८. लाला सुल्तान सिंह जी साहूकार देहली - सदस्य
४९. लाला अनन्तराय जी अैध्या मैसूर - सदस्य
५०. लाल मक्खन लाल जी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रेवाडी - सदस्य
५१. लाल किशोरी लाल जी डीग भरतपुर - सदस्य

उक्त ५१ सदस्यों में से प्रथम २१ सदस्य महाविद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य मनोनीत किये गये। महासभा ने आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी मनोनीत किये।

१. राजा लक्ष्मणदास जी सी.आई मथुरा सभापति एवं कोषाध्यक्ष
२. मुंशी चम्पतराय जी डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर इटावा महामंत्री
३. शाखा सभाओं की संभाल के लिए पं. चुन्नीलाल जी मुरादाबाद मंत्री
४. हकीम उग्रसेन जी सरसावा, सहारनपुर मंत्री भातृगणन।
५. पं. नन्दराम जी वकील आगरा मंत्री फिजूलखर्ची रोकने को
६. मुंशी फूलचन्द जी वकील मथुरा "
७. बाबू सूरजभानु जी वकील देवबन्द सम्पादक जैन गजट
८. लाला रतनलाल जी मथुरा पुस्तकालयाध्यक्ष दि.जैन सरस्वती भण्डार
९. पंडित प्यारे लाल जी अलीगढ़ लेखकाध्यक्ष सरस्वती भण्डार

इसी दिन दिनांक २६ अक्टूबर सन् १८९६ को महाविद्यालय की स्थापना मन्दिर जी के नीचे एक सहदरी में सभी सभासदों की उपस्थिति में हुई तथा पण्डित पन्नालाल जी सहारनपुर निवासी ने पंडित प्यारेलाल जी अलीगढ़ वालों के सुपुत्र श्री लाला को राजवार्तिक ग्रन्थ का पाठ पढ़कर विद्यालय को प्रारंभ किया। इस सफलता पर सभी सभासदों ने एक दूसरे का आभार व्यक्त किया।

महासभा के प्रथम अधिवेशन में कार्यकारिणी के सदस्यों सहित विभिन्न ग्रामों एवं नगरों से १६६ प्रतिनिधिगणों ने भाग लेकर अपनी उपस्थिति अंकित करायी। विभिन्न स्थानों के ये प्रतिनिधि अग्रवाल, खण्डेलवाल, जैसवाल, बरैया, पद्मावती परवार, गंगेरवाल, लमेचू, लोइया, पोरवाल, गोलालारे, ओसवाल, पल्लीवाल, जैसवाल, हूंमड जातियों के सदस्य थे।

बीमारी का प्रकोप

सभा के प्रथम अधिवेशन में ग्रन्थों को नहीं छपवाने का प्रस्ताव तो सहज ही में पास करा लिया लेकिन कुछ सभासदों एवं पदाधिकारियों में व्याप्त रोष कम नहीं हुआ। उसी वर्ष देश में महामारी का प्रकोप छा गया। पं. गोपालदास जी बरैया एवं लाला रतनलाल जी भी बीमारी से नहीं बच सके इसलिए जितनी प्रगति से ये काम होना चाहिये था वह नहीं हो सका। इसी वर्ष भातृगणना का कार्य करने वाले हकीम उग्रसेन का भी अकस्मात् निधन हो गया, स्वयं महामंत्री श्री चम्पतराय जी के भी तीन महिने लगातार बीमार पड़े रहने के कारण भी महासभा के कार्यों में भी बड़ी बाधा पड़ी। पंडित गोपाल दास जी बम्बई से वापिस आगरा आ गये तथा बीमारे के कारण उनको भी कार्य करने में बड़द कठिनाई हुई।

महाविद्यालय का पुनः संचालन

अक्टूबर १८६६ में यद्यपि चौरासी मथुरा में महाविद्यालय का कार्य नाम मात्र के लिए प्रारम्भ तो हो गया था परन्तु वह कार्य आगे नहीं बढ़ सका। इसलिए पण्डित गोपालदास बरैया जी ने विज्ञापन देकर विद्यार्थियों को पुनः बुलाया तथा अध्यापकों को भी व्यवस्था की गयी इसलिए बैशाख शुक्ला ३ संवत १६५४ (सन् १८६७) के शुभ मुहूर्त में चौरासी में महाविद्यालय पुनः प्रारम्भ करा दिया। इसी के साथ परीक्षालय का कार्य भी आपने अपने हाथ में लेकर उसे संचालित किया।

सरस्वती भण्डार के संचालन के लिए बाबू रतनलाल ने दस हजार रूपये के टिकट छपवा लिये और यही नहीं टिकटों को बेचने का कार्य भी पूरी लगन से किया जाने लगा। जैन शस्त्रों को लिखाने का कार्य होने लगा और जहां से भी ग्रन्थों को मंगवाने का पत्र आता वहीं ग्रन्थ भिजवा दिये जाते इसलिए ग्रन्थों के नहीं प्राप्त होने की शिकायत भी दूर हो गयी।

महासभा का संकट

महासभा के विरोधियों ने एक ओर तो वातावरण को गन्दा कर दिया दूसरी ओर उसके कट्टर समर्थक एवं सरस्वती भण्डार के मंत्री श्री रतनलाल जी का आकस्मिक निधन, छापे का झगड़ा खड़ा होना, मुंशी ज्ञानचन्द जी लाहौर द्वारा सभा को तोड़ने की कोशिश करना, सभासदों द्वारा चन्दा एवं आर्थिक सहयोग नहीं करना, सभासदों के कार्यकताओं पर तरह-तरह के दोषारोपण करना, स्वयं अध्यक्ष के विरोधियों के कार्यों में होने वाली गड़बड़ियों का दोष सभा के कार्यकर्ताओं पर लगाना, पं. श्री लाल जी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट अलीगढ का स्वर्गवास होना जैसे कार्यों से महासभा की नींव ही हिल गयी और निराशा एवं उदासीनता के वातावरण का प्रभाव महासभा के कर्मठ सभासदों पर छा गया।

बाल विवाह रोकने के लिये महासभा ने नियम बनाया कि १२ वर्ष से कम उम्र की कन्या एवं १५ वर्ष से कम उम्र के लड़के का विवाह नहीं किया जावे। इसके अतिरिक्त जिन भाईयों के सन्तानों में पुत्र होने, व ४० वर्ष से ऊपर एवं जिनके पुत्र नहीं हो, वह ४५ वर्ष से ऊपर आयु होने पर विवाह नहीं करे। यह नियम समाज में व्याप्त वृद्ध विवाह को रोकने के लिये बनाया गया।

दिगम्बर जैन परीक्षालय की नियमावली

१. इस परीक्षालय का नाम दिगम्बर जैन परीक्षालय है।

२. इस परीक्षालय में पढ़ाई के क्रमानुसार ब्राहमण, क्षत्रीय, वैश्य जाति का कोई भी विद्यार्थी परीक्षा दे सकता है।

३. इस परीक्षालय में परीक्षा का विषय विभाग निम्नलिखित प्रकार होगा-

१. किसी परीक्षा के किसी एक खण्ड के क्रम के अनुसार उस कक्षा के समस्त विषयों में परीक्षा ली जावेगी। प्रत्येक कक्षा के उत्तीर्ण विद्यार्थियें को उस कक्षा में उत्तीर्ण होने का सार्टिफिकेट दिया जायेगा।

नोट- जो विद्यार्थी समस्त विषों में उत्तीर्ण न हों, उनको अलग अलग विषय का उर्त्तीर्ण पत्र इत्यादि मिलेगा।

२. विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने के लिये अभी गणित के अतिरिक्त किसी एक विषय या अधिक विषयों में पृथक पृथक भी परीक्षा ली जा सकती है और जो विद्यार्थी गणित के अतिरिक्त किसी भी कक्षा के एक से अधिक विषयों में परीक्षा देकर उत्तीर्ण होंगे, उनमें से प्रति कक्षा प्रथम उत्तीर्ण विद्यार्थियों को नियत पारितोषिक और समस्त उत्तीर्ण विद्यार्थियो को सर्टिफिकेट दिया जायेगा और जो विद्यार्थी गणित के अतिरिक्त किसी एक ही विषय में परीक्षा देकर उत्तीर्ण होंगे उनमें से समस्त उत्तीर्ण विद्यार्थियों को केवल उत्तीर्ण पत्र दिया जायेगा, केवल गणित की परीक्षा नहीं ली जायेगी।

३. पंडित परीक्षा की प्रथम कक्षा के सिवाय जो विद्यार्थी पंडित और शास्त्रीय परीक्षा के जिस विषय में पूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ होगा, उसकी उन विषय की उत्तर परीक्षा नहीं ली जायेगी।

४. जो विद्यार्थी पंडित परीक्षा के जिस विषय में उत्तीर्ण नहीं हुआ है, उसकी उस विषय में शास्त्रीय परीक्षा नहीं ली जायेगी।

५. यदि कोई व्युत्पन्न पुरूष पूर्व पठित विषय में केवल पारितोषिक के लोभ में परीक्षा देना चाहे तो उसकी परीक्षा नहीं ली जायेगी और इस बात का निश्चय उन प्रधान पुरूषों के विश्वास पर छोड़ा जाता है, जिनकी मार्फत परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों के नाम हमारे पास आयेगें।

६. परीक्षा देने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिये कि वे अपने यहां की पाठशाला के प्रबंधकर्ता की मार्फत अथवा किसी प्रधान पुरूष की मार्फत अपना नाम, पिता का नाम, जाति, गोत्र, उम्र, पता सहित प्रार्थना पत्र भेजें, यानि हमारा भेजा हुआ फार्म भरकर फाल्गुन कृष्णा १५ से पहिले हमारे पास भेजें, यदि किसी का प्रार्थना पत्र इस मिती से पीछे आयेगा, तो परीक्षालय को अधिकार है कि उस विद्यार्थी की परीक्षा ले अथवा न ले।

नोट - यह फार्म परीक्षालय के दफ्तर से मिल सकते है।

७. परीक्षा की मिति के एक दिन पहले प्रत्येक पाठशाला के प्रबंधकर्ता या उन प्रधान पुरूषों के पास (जिनकी मार्फत विद्यार्थियों के नाम आयेंगे) प्रश्न पत्र पहुंचा दिये जायेगें, सो वे महाशय मुख्य पंचों के सम्मुख समस्त विद्यार्थियों की परीक्षा बड़ी सावधानी से (जिससे विद्यार्थीगण पुस्तकें न देख सकें और न परस्पर इशारे आदि से पूछ सके) तरीख लेकर वे उत्तर पत्र पत्रों के सम्मुख उसी वक्त बन्द करके हमारे पास बुक पोस्ट रजिस्ट्री द्वारा भेज देंगे।

८. प्रत्येक विषय के प्रश्न पत्र पर सौ सौ अंक रखे जायेंगे और ३३ अंक से कम आने पर विद्यार्थी उत्तीर्ण नहीं समझा जायेगा।

६. पूर्णाकों में से आये अंकों तक जघन्य श्रेणी ७० अंकों तक मध्यम

मुरैना में स्व. पं० गोपालदास जी बरैया के प्रतिमा का अनावरण करते हुये श्री मान सेठी जी एवम् श्री मदनलाल जी बैनाड़ा

लन्दन महानगर में महिला संत सत्यवती जी एवं सरला बहन भक्तों के द्वारा हवन विधि कराते हुये।

विदेशों में लंदन महानगर में महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी के साथ श्री चंद्रकांत भाई शाह एवं अनिल भाई शाह।

अचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज एवं चारूकीर्ति भट्टारक श्रवणबेलगोला के साथ महामहिम पूर्व राष्ट्रपति शंकरदयाल जी शर्मा चर्चा करते हुये

महासभाध्यक्ष श्रीमान निर्मल कुमार जी सेठी का धर्मप्रभावना में मूल प्रेरणास्त्रोत धर्मपत्नी श्रीमती संतरादेवी सेठी निराकुलता से धर्म कार्य में किसी भी प्रकार का व्यवधान न आवे, किसी भी प्रकार के पारिवारिक दुख भी खुद सहन करने की क्षमता रखने वाली सहनशील वात्सल्य प्रेमी महिला।
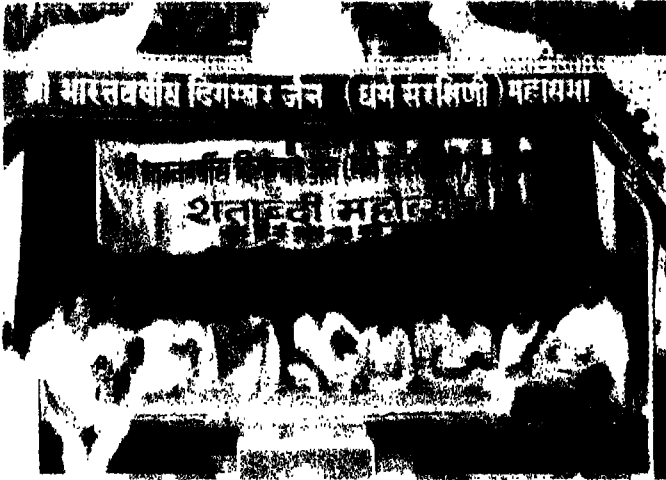
पूर्वांचल महासभा शाखा की तरफ से शताब्दी समारोह में पदाधिकारियों के साथ भट्टारक श्री चारूकीर्ति स्वामी जी गोहाटी नगरी में।

शताब्दी समारोह में उपस्थित पदाधिकारी।

शताब्दी समारोह में उपस्थित विशाल जनसमुदाय

शताब्दी समारोह में महिला कार्यकर्ता।

राजस्थान के भीण्डर नगरी में विद्वान श्रेष्ठीवर्ग।

दिल्ली राजधानी में शाहदरा संभाग में जैन दर्शन राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्राचार्य नरेनद्र प्रकाश जी एवं विद्वत्गण।

शास्त्रि परिषद् में वाणी प्रवर पं. श्री सागरमल जी प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी को अध्यक्ष पद नियुक्ति पर बधाई देते हुये।

पूर्वांचल समिति की ओर से शताब्दी महोत्सव पर पण्डित वर्ग के प्रवचन का दृश्य।

श्रेणी और उससे ऊपर अंक आने पर उत्तम श्रेणी में उत्तीर्ण समझा जायेगा।

१०. प्रश्न पत्र तथा उत्तर पत्र प्रवेश की परीक्षा के हिन्दी भाषा में और पंडित तथा शास्त्रीय परीक्षा के संस्कृत भाषा में लिखे जाया करेंगे।

११. यह परीक्षा निम्न लिखित दिनों में हुआ करेगी।

१२. परीक्षक प्रत्येक विषय के भिन्न भिन्न सभापति एवं मंत्री की सम्मति से नियत किये जायेंगे।

१३. अन्य मत के व्याकरण पर इनाम नहीं दिया जायेगा, किन्तु जो विद्यार्थी समस्त विषयों में परीक्षा देगा, उसको नियमानुसार वजीफा दिया जा सकता है।

१४. केवल अन्य मत के व्याकरण में परीक्षा न ली जायेगी।

१५. जहां कहीं कई पाठशालाएं हैं, वहां के प्रबंधकर्ताओं को एक ही समय परीक्षा लेनी होगी।

☞ पं. गोपाल दास बरैया की अपील

दिगम्बर जैन महाविद्यालय मथुरा वह दीपक है, जिसको जैन समाज में चिरकाल से व्याप्त अज्ञान अन्धकार को दूर करने के लिये भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के कार्याध्यक्षों ने बड़े परिश्रम के साथ कुछ थोड़ी सामग्री संचित करके प्रकाशित किया था और जिसने प्रारंभ से ही कुछ चमत्कारिक रोशनी दिखलाकर हमारे समाज से चिर दुखित चित्त को किंचित हरा भरा किया था। परन्तु बड़े शोक के साथ प्रकट किया जाता है कि थोड़े ही दिनों के परस्पर ईर्ष्या रूपी पवन के झोंको ने उस दीपक के रक्षकां को छिन्न भिन्न कर दिया और इधर दीपक को भी तेल थोड़ा मिलने से इधर उधर भकटता फिरा, और वह चमत्कारिक भाव को छोड़कर धीमी-धीमी रोशनी से टिमटिमाने लगा। यदि आगे की रक्षा एवं वृद्धि का उपाय नहीं किया जावेगा तो शीघ्र ही पोते का तेल धीरे-धीरे खर्च होते ही समाप्त होकर रहा सहा प्रकार अपनी आयु निःशेष होने के कारण इस आसार संसार से कूच कर जावेगा।

पंडित गोपाल दास जी की अपील का समाज पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और अधिकांश महासभाई महाविद्यालय के पूर्व स्वरूप को बनाये रखने में सहमत हो गये।

🕮 ✎ प्राचीन ग्रन्थों का लेखन

आगम साहित्य एवं प्राचीन ग्रंथों के नहीं छपाने के निर्णय की क्रियान्विति के लिए महासभा के सरस्वती भण्डार विभाग ने ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियां करवाकर उन लागत मूल्य पर पाठकों को भिजवाना प्रारंभ किया। एक रिपोर्ट के अनुसार विगत दो वर्षों में ६१२ ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां तैयार की गयी और उन्हें पाठकों को स्वाध्याय भिजायी गयी। इस योजना से ग्रन्थों को नहीं छपवाने के विरोध में बने वातावरण में कुछ उफान कम तो हुआ लेकिन उसको पूरी तरह शांत नहीं किया जा सका। महासभा में ग्रन्थों को छपाने के पक्षपातियों को महासभा से निकालने का भी पूरा प्रयास किया गया, लेकिन उसमें भी उन्हें सफलता नहीं मिली।

उपदेशकों की नियुक्ति

महासभा ने सरस्वती भण्डार, महाविद्यालय संचालन के लिये अर्थ संग्रह करने हेतु उपदेशकों की नियुक्ति की। इन उपदेशकों ने महासभा की विभिन्न योजनाओं के लिये अर्थ संग्रह के अतिरिक्त समाज में जैन विवाह विधि से विवाह कराने का प्रचार किया, गांव गांव में जैन पाठशालायें खुलवायी, मंदिरों में पूजन पक्षाल की व्यवस्था करवायी, पंचायतियों के झगड़ों को मिटाकरजैन बन्धुओं में मतैक्य स्थापित किया और उन्हें धर्म मार्ग पर लगाया, समाज में व्यर्थ व्यय करने की प्रथाओं को रोका गया, जैन धर्म के सिद्धान्तों की आम जनता को जानकारी कराई तथा उनमें जैन धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न की। सर्वप्रथम पंडित लाल जी मल और हकीम कल्याण राय ने एक वर्ष तक देश का दौरा किया तथा कुछ महिनों तक पंडित कलाधर जी ने भी उपदेशक पद पर कार्य किया।

उपदेशकों का दौरा

पंडित लाल जी मल जी ने उपदेशक के रूप में अपना कार्य १६ सितम्बर १८९७ से श्री महावीर जी से प्रारंभ किया। श्री महावीर जी से सोनागिर, ग्वालियर, सुल्तानपुर, मुकड, झबरेडा, बुढ़ाना, नजीबाबाद, बिजनौर, बाराजगर गंज, शेरकोट, अफजलगढ़, धामपुर, नजीबाबाद, लखनऊ, खिल्काना, गुरायडे, कनखल, मेरठ छावनी, आगरा, झांसी, ललितपुर, सागर, दमोह, पथरिया, गढ़ाकोटा, कलावास, सागर, खुरई, बीना, बसारी, कबीना, झांसी, कानपुर, इटावा, मेरठ, सहारनपुर, मथुरा जाकर अपना दौरा समाप्त किया।

पंडित कलाधर जी उपदेशक ने २५ सितम्बर को आरा से दौरा प्रारंभ कर छपरासहसगंज, गयाजी, बनारस, बुलन्दशहर, खुर्जा, मथुरा जी जाकर समाज को जागृत किया।

तीसरे उपदेशक हकीम कल्याणराय जी ने भी मथुरा से अपना दौरा प्रारंभ किया फिर कोसी, मेडू, अलीगढ़ (अम्बाला), मंसूरपुर सुल्तानपुर, बूडिया, सिठौरा, सुल्तानपुर, मथुरा, हापुड़ (मेरठ), बक्सर, रेवाड़ी, सवाई जयपुर, सांगानेर, चाकसू, टोंक, मथुरा, इटावा, करहल (मैनपुरी), कानपुर, लखनऊ, मथुरा लखनऊ, बाराबंकी, कानपुर,नबीपुर (कानपुर), सहारनपुर, खिल्कारा, बूटियां (अम्बाला), मन्सूरपुर, बीहारी, पुखालमान, कचौरा (आगरा), लश्कर, देवबन्द, सरसावा, खिल्काना, नजीबाबाद, मथुरा आरकी (आगरा), काटकी, टूंडला आदि नगरों में दौरा कर महासभा के उद्देश्य एवं कार्यों से समाज को जानकारी करायी।

इन उपदेशकों ने महाराष्ट्र के दो ताल्लुकदारों को मांस भक्षण का त्याग करवाया और सागर जैन समाज के झगड़ों को समाप्त करवाया। हकीम कल्याणराय जी ने रियासत टोंक में जैन एवं जैनेतर भाईयों को विशेष प्रभावित किया। कितने ही भाईयों ने महासभा के प्रेसीडेन्ट को शुक्रिया के पत्र भी भिजवाये।

महासभा के लिये चतुर्थ वर्ष बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ। महासभा के प्रान्तीय एवं स्थानीय सभाएं स्थापित करने के निर्णय से महासभा गांव गांव तक फैल गयी। उसके उपदेशकों ने सैकड़ों नगरों में जाकर महासभा की शाखाएं स्थापित की। महासभा के अधिकारियों ने सम्मेदशिखर जी के झगड़े को बम्बई सभा को स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया।

राजा साहब का स्वर्गवास

चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन के कुछ ही दिनों पश्चात् मंगसिर बदी ६ सं. १९५७ को केवल ४७ वर्ष की आयु में राजा साहब लक्ष्मणदास जी का आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने से सारा समाज शोक मग्न हो गया। आप महासभा के प्राण थे। उसकी स्थापना से उसके चार वर्ष महासभा के पर्याय बने रहे। आपका जन्म आश्विन कृष्णा ८ वि.सं. १९१० को मथुरा में हुआ। आपके पिताजी सेठ रघुनाथदास जी कट्टर जैन धर्मानुयायी थे। आप बड़े पुण्यशाली थे। पूजा पाठ खूब करते थे। भगवान अजितनाथ स्वामी की

विशाल प्रतिमा को ग्वालियर से गाड़ी में लाकर चौरासी मथुरा के मंदिर में विराजमान की थी। ऐसे महान पिता के आप महान पुत्र थे। अपनी छोटी सी उम्र में ही उन्होंने ब्रिटिश सरकार को खूब प्रभावित किया था और सी.आई.ए. एवं राजा साहब की मानद उपाधि से सम्मानित होने वाले प्रथम जैन होने का गौरव प्राप्त किया था। वे मथुरा के राजा कहे जाते थे तथा जनता में उनका उतना ही सम्मान था। सारे देश का जैन समाज उनके आगे नतमस्तक रहता था। और उनके कार्यों की खूब प्रशंसा करता था। चौरासी मथुरा में कार्तिक मास में भरने वाले ८ दिवसीय मेले के आप संरक्षक थे। आप महासभा के जन्मदाताओं में से एक थे। आप उसके चार वर्ष तक अध्यक्ष रहे। आपकी ही प्रेरणा से चौरासी में महासभा ने महाविद्यालय स्थापित किया था। आपकी ही प्रेरणा से जैन गजट का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सर सेठ हुकमचंदजी इंदौर केशब्दों में "महासभा के अधिवेशनों में राजा साहब के अनुरोध पर समस्त भारत के प्रतिनिधि चौरासी मथुरा में एकत्र हुआ करते थे और राजा साहब स्वयं प्रत्येक डेरे में जाकर भाईयों के सुख दुःख के सम्बन्ध में पूछताछ किया करते थे।'८ आपकी केवल ४७ वर्ष की आयु में निधन होने से समाज की बड़ी भारी क्षति हुई। राजा साहब की मृत्यु के कारण महासभा के एक युग की इतिश्री हो गयी। जब तक महासभा है, मथुरा है एवं समाज है तब तक उनकी स्मृति बनी रहेगी।

महासभा की रजिस्ट्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के नाम से इसकी रजिस्ट्री एक्ट २१ सन् १८६० के अनुसार हो गयी। महासभा के कार्यकर्ताओं की नामावली निम्न प्रकार स्वीकृत हुई-

सभापति- श्रीमान सेठ द्वारिका दास जी, मथुरा
उप सभापति- सेठ सलेखचन्द जी, नजीबाबाद
- श्रीमान् सेठ माणकचंद जी पानाचंद जी जौहरी
- श्रीमान् सेठ परणमल जी रईस, सविनी छपारा
श्रीमान् लाला गुलजारीमल जी साहू, कानपुर
महामंत्री- मुंशी चम्पतराय जी डिप्टी मजिस्ट्रेट, गंगनहर
संयुक्त महामंत्री- ला. बनारसीदास जी एम.एड., हेडमास्टर, विक्टोरिया कॉलेज, लश्कर, ग्वालियर
मंत्री, महाविद्यालय- पं. गोपालदास जी, बरैया
मंत्री उपदेशक- लाला निहालचंद जी
सम्पादक, जैन गजट - ला. देवकुमार जी रईस, आरा
मंत्री, परीक्षालय- पं. गोरेलाल जी, देहली

वेद और जैन मत

ता. ६ दिसम्बर १६०१ ई. के श्री वैंकटेश्वर समाचार पत्र ने लिखा है कि:- "भारतवर्ष में वेदमत को छोड़कर जैनमत सबसे पुराना है और इसके अनुयायी शांति पूर्वक स्वधर्म में रत रह कर व्यापारादि कार्यों में हिन्दुओं से ऐसे सट गये हैं कि बहुधा इस देश की प्रजा उन्हें हिन्दू जाति का एक भाग मान बैठी है। पश्चिमी शिक्षा फैलने पूर्व धर्म में धरती आकाश का सा अन्तर होने पर भी हिन्दू मुसलमान जिस मेल से रहते थे वह आज कल देखने में नहीं आता, परन्तु हिन्दुओं का जैनियों से मेल ज्यों का त्यों बना हुआ है। परन्तु अब जैनियों में कुछ कुछ नई रोशनी ने प्रवेश किया कितने ही नवशिक्षित जैनी 'मुबई समाचार' के कालम रंग कर यह सिद्ध करने को उतारू हुये हैं कि जिनमत वेद से भी पुराा है कि इस बात के लिये वह वेद में जिन शब्द का प्रयोग बतलाते हैं उनका यह कार्य वैसा ही है जैसे आर्य समाजी नमस्ते के विषय में कहते हैं- केवल शब्द मात्र से उनका प्राचीनत्व सिद्ध नहीं हो सकता है, क्योंकि शब्द व्याकरण सिद्ध है। यदि वह लोग इसके साथ मत का भी प्रयोग दिखलावें तो उनका कथन ठीक हो सकता है, परन्तु हमें इस बात से कुछ प्रयोजन नहीं यदि जिनमत सृष्टि की उत्पत्ति से एक करोड़ वर्ष पूर्व को हो तब भी हमारे वेद का आधुनिकतम सिद्ध नहीं होता है, परन्तु उनक यह चाल दो शांति प्रिय जातियों में वैमनस्य उत्पन्न करने वाली है। इसका उन्हें विचार करना चाहिए।

निःसन्देह उपरोक्त लेख को पढ़कर हमको इस बात से संतोष होता है कि उक्त पत्र के सम्पादक महाश किसी ऐसे कार्य को उत्तम नहीं समझते जिनसे दो शांति प्रिय जातियों में परस्पर वैमनस्य बढ़े परन्तु हमको इस बात से खेद भी होता है कि वह एह अत्यन्त प्राचीन धर्म के अनुयायियों को उस धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने में बाधक होते हैं।

गत जैन महासभा के अधिवेशन में जो "जैन इतिहास सोसायटी" स्थापित हुई उसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि परस्पर विरोध की उत्पत्ति हो, किन्तु हमारा प्रयोजन यह है कि हमारे परम पवित्र सनातम धर्म के सम्बन्ध में जो सर्व साधारण ने यद्व वद्व अनुमति प्रगट की है, उसको एक प्रमाणिक और सारगर्भित पुस्तक द्वारा खण्डन करके उनके संदेह का निवारण किया जाय।

हमको पता लगा है कि वेदों में हमारे पूज्य तीर्थंकरों के नमस्कार के मंत्र उपस्थित हैं और संभव है कि उनमें जैनमत को प्रयोग भी मिल जाये- जैनियों में वेदपाठी कोई भी नहीं है- हिन्दू भाई ठीक ठीक पता नहीं बतलाते है। इस कारण ठीक ठीक बात मालूत नहीं होती- हम लोग अब इसी बात का उद्योग कर रहे हैं कि सच्ची बात का पता लग जावें। शांति प्रिय जातियों में वैमनस्य उत्पन्न करने का अभिप्राय हमारा कदापि नहीं है- जैन धर्मावलंबी जैसे शांति प्रिय हैं, यह सब जानते हैं और हमारे हिन्दू भाई जैनियों से कैसे बर्ताव करते हैं, यह इसी बात से सिद्ध होता है कि जैनियों के उत्सवों में कैसे कैसे झगड़े उठाये जाते हैं।

बम्बई प्रान्तीय सभा का अधिवेशन

महासभा की शाखा जैन प्रांतिक सभा बम्बई का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसके स्वागताध्यक्ष थे सेठ माणकचंद जी पानाचंद जी जौहरी बम्बई बनाये गये तथा सभापति थे राजा बहादुर दीनदयाल जी के सुपुत्र राजा साहब धर्मचंद जी। इस अधिवेशन में ५०० से भी अधिक प्रतिनिधियों एवं अन्य समाज सेवियों ने भाग लिया। इसमें अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किये गये। इसी अधिवेशन में आश्विन सुदी ६ सोमवार संवत् १६५५ को बम्बई में हीराचंद गुमान जी जैन बोर्डिंग के भवन में संस्कृत जैन विद्यालय की स्थापना की गयी। विद्यालय का उद्घाटन राजा दीनदयाल जी द्वारा किया गया। इसी अवसर पर बम्बई में अपूर्व उत्साह एवं जोश के वातावरण में एक ऐसी रथयात्रा हुई जैसी पहिले कभी नहीं हुई थी। जैन प्रांतिक सभा बम्बई के इन आयोजनों से केन्द्रीय महासभा को बहुत बल मिला।

जनगणना

सन् १६०१ की जनगणना में जैन धर्मावलंबियों की संख्या १३,३४,१४८ रही थी जबकि जैनों की संख्या १८६१ में लगभग १५ लाख थी। पिछले १० वर्षों में ८२,४६४ की कमी हो गयी। इसके कारणों की जांच करने के लिए

एक ११ सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया।

महासभा का सप्तम अधिवेशन एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी का गठन

महासभा का सप्तम वार्षिक अधिवेशन दिनांक २२ अक्टूबर सन् १६०२ को सेठ द्वारिका दास जी रईसा मथुरावालों की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उप सभापति का आसन सेठ माणिकचंद्र जी जौहरी बम्बई ने ग्रहण किया अधिवेशन में पण्डित गोपालदास जी ने तीर्थक्षेत्रों में व्याप्त अव्यवस्था के बारे में सदस्यों का ध्यान आकृष्ट किया तथा एक तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापित करने का सुझाव दिया। इसका समर्थन सेठ माणकचंद जी, मुंशी चम्पतरायजी, बाबू देवकुमार जी रईस आरा ने पुरजोर किया। सभी सदस्यों ने सर्वसम्मत निर्णय लेकर पंडित जी से कमेटी के सदस्यों की नामावली अन्तरंग सभी की अनुमति के साथ प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। इसी तरह महासभा के विधान में संशोधन के सम्बंध में भी पंडित जी सेआवश्यक संशोधनप्रस्तुत करने के लिए कहा। इसके दूसरे दिन पंडित जी ने अंतरंग सभा की स्वीकृति से तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए निम्नलिखित सदस्यों के नाम प्रस्तुत किये जो सर्वसम्मति से स्वीकृत किये गये-

१. सेठ द्वारकादास जी साहब रईस, मथुरा
२. सेठ अमोलक चंद जी खुरजा
३. सेठ चम्पालाल जी नावा नगर
४. सेठ नेमीचंद जी अजमेर
५. सेठ चांदमल जी जयपुर
६. लाला सर्वसुख जी लक्ष्मीचंद जी खजांची जयपुर
७. राजा फूलचंद जी लश्कर
८. बाबू बनारसी दास जी एम.ए. लश्कर
६. सेठ सालगराम जी हाथरस
१०. सेठ सलेखचंद जी नजीबाबाद
११. बाबू देवकुमार जी आरा
१२. लाला दिलसुख रायजी रघुनाथ दास जी सरनऊ
१३. छन्नू बाबू बालिष्टर कलकत्ता
१४. लाला जिनवरदास जी कलकत्ता
१५. लाला गुलजारी लाल जी सर्राफ, कानपुर
१६. सेठ रूपचंद जी सहारनपुर
१७. पंडित गोपालदास जी बरैया
१८. सेठ मानकदास जी छबेरचंद जी बम्बई
१६. सेठ चुन्नीलाल जी पाना चंद जी बम्बई
२०. हरी भाई देवकरण जी सोलापुर
२१. सेठ हीराचंद जी रूपचंद जी शोलापुर
२२. हजारी मल किशोरी लाल जी गिरेटी
२३. लच्छीराम शिवनारायण हजारीबाग
२४. सेठ अमोलक चंद जी इन्दौर
२५. सेठ पूरणशाह जी सीवनी छपारा
२६. सेठ अनंतराम जी अयूया मैसूर
२७. सेठ गुलाबचंद शाह जी नागपुर
२८. आरागा बापू जी पाटली कोलापुर
२६. सैठ कालू जी गुमान जी परतापगढ़
३०. राजा दीनदयाल जी फोटोग्राफर बम्बई
३१. लाला देवीदास जी साहब गोटेवाले लखनऊ
३२. लाला ईश्वरी प्रसाद जी देहली खजांची
३३. लाला पार्श्वदास जी मेरठ
३४. श्रीमंत सेठ मोहनलाल जी खुरई
३५. सेठ मथुरादास जी टंडईया ललतपुर
३६. बाबू किशोर चंद जी मंत्री जैन सभा रावल पिंडी।

इसे मंत्री सेठ माणकचंद जी पानाचंद जी जौहरी बम्बई, उपमंत्री लाला रघुनाथ दास जी सरनऊ एवं सेठ चुन्नीलाल जी झबेरचंद जी बम्बई को मनोनीत किया गया। सेठ माणकचंद जी ने भाव विभोर होकर महासभा के कार्य को तन, मन, धन से आगे बढ़ाने का अपना संकल्प प्रकट किया तथा बम्बई के गूंगे बहरों के स्कूल में जो जैन विद्यार्थी पढ़ते थे उनके २० वर्ष की उम्र होने तक के सभी व्यय अपनी ओर से वहन करने की घोषणा की। इस अधिवेशन में अनेक विद्वज्जन सम्मिलित हुए इनमें सेठ पण्डित मेवाराम जी, पंडित गोपाल दास जी, पंडित धन्नालाल जी, पंडित बालाबक्श जी, पंडित चुन्नीलाल जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी स्वतंत्र संस्था के रूप में मान्यता

इस अधिवेशन में तीर्थक्षेत्र कमेटी जो अभी तक महासभा का ही एक अंग थी, उदारतापूर्वक उसेएक स्वतंत्र कमेटी का रूप दिया गया तथा यह भी अधिकार दिया गया कि वह सभी प्रान्तों में प्रतिष्ठित सज्जनों को अपना सदस्य नियुक्त करें तथा वह अपनी नियमावली बनाकर अपन ही सदस्यें द्वारा उसे स्वीकृत करावें, लेकिन उसके पदाधिकारियों को पूर्ववत रहने की अनुमति दी गयी। महासभा में यह बहुत बड़ा परिवर्तन आया और तीर्थों के प्रबंध में हस्तक्षेप उसके हाथ से निकल गया। इस अवधिशन में महासभा का आगामी अधिवेशन सहारनपुर में करने का निर्णय लिया गया।

जैन गजट साप्ताहिक के रूप में

जैन गजट महासभा के समाचारों को प्रकाशित करने वाला एक मात्र जैन पत्र था। पत्र पहिले मासिक पत्र के रूप में निकलता था लेकिन १ फरवरी, १६०५ से इसे साप्ताहिक पत्र कर दिया गया। जैन गजट अंग्रेजी में भी इसी केसाथ निकलने लगा, जिससे अंग्रेजी भाषा प्रेमियों की मांग भी पूरी की जा सके।

श्रेष्ठिवर्य माणिकचंद जी हीरानंद जी जौहरी

सेठ माणिकचंद जी का जन्म कार्तिक बुदी १३ सं. १६०८ को सूरत नगर में हुआ। आपके पिताजी का नाम सेठ हीराचंद जी था। आप बड़े ही दयालु, मायालु एवं सरल स्वभावी पुरूष थे। तथा सदैव धर्म कार्य में रत रहा करते थे। सेठ माणिकचंद जी बीसा हूंमड जाति थे। सेठ माणिकचंद जी ने बाल्यावस्था में एक पाठशाला में अध्ययन प्रारंभ यिका। उस समय इनकी आयु ७-८ वर्ष की थी। गुजराती भाषा पढ़ने के बाद इन्होंने आगे पढ़ने का विचार किया, किन्तु उसी समय इने पिता ने मुम्बई में व्यापार करने की इच्छा प्रगट की औरपिता की इच्छा पूर्ण करने के लिये सं. १६०२ में ये अपने कुटुम्ब सहित सूरत नगर छोड़कर बम्बई आ गये। इन्होंने अपने अतुल साहस एवं पुण्योदय से जवाहिरात के व्यापार बहुत अधिक सफलता प्राप्त की, जिससे इनकी कीर्ति बढ़ती गई। सेठ माणिकचंद जी की पत्नी का नाम श्रीमती चतुरबाई था। ये भी अपने पति के समान उदारिणी एवं

परोपकारिणी थी, परन्तु ये भी अपने पति का अधिक समय तक साथ नहीं दे सकी। सेठ माणिकचंद जी बड़े ही धार्मिक पुरुष थे। आपने केशरिया जी, गिरनार जी, जैन बद्री, मुडबिद्री, सम्मेदशिखर जी आदि तीर्थों की यात्राएं की। सं. १६३६ में आपने सूरत में एक जीर्ण मंदिर का उद्धार कराया और ८ हजार रुपये खर्च कर बिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव बड़े ही धूमधाम से कराया, आपने जैन बद्री, मूडबिद्री एवं सम्मेदशिखर जी में अनेक निर्माण कार्य कराये और सं. १६५५ में स्वयं शिखर जी जाकर श्वेतांबरियों से सीढ़ियों के झगड़े में न्यायालय से विजय प्राप्तकर सदा के लिये दिगम्बरियों के लिये मार्ग साफ कर दिया। सं. १६४६ में मुम्बई दिगम्बर जैन सभा की स्थापना हुई और आप उसके मंत्री नियत किये गये। इसी समय आपने अपने आग्रह से पंडित गोपालदास जी द्वारा "दिगंबर जैन संरक्षिणी महासभा" की नींव डलवाई। सं. १६५६ में दिगम्बर जैन प्रांतीक सभा मुम्बई की स्थापना हुई, इसके आप सभापति नियत किये गये। आपके सभापतित्व में प्रान्तीक सभा में बहुत महत्वपूर्ण व प्रसिद्ध कार्य किये।

सेठ माणिकचंद जी बहुत से विद्यार्थियों को प्राईवेट मदद किया करते थे। आप दिगम्बर जैन दक्षिण महाराष्ट्र सभा तथा भूलेश्वर पुस्तकालय और दी गुजरात वर्नेक्यूलर सोसायटी के लाइफ मेम्बर है। अपनी ओर से पुस्तककर्ता एवं धर्मात्मा भाईयों को सहायताप्रदान करसंतोष महसूस करते थे आपका धर्म से सबसे अधिक प्रेम है। मंदिर में धर्म चर्चा एवं स्वाध्याय आदि का उपदेश दिया करते थे तथा स्वयं शामिल होकर उत्साह में वृद्धि करते थे। आपका प्रधान गुण उदारता एवं परोपकारिता रहा। आपने अनेक संस्थाओं को बहु अधिक उदारता से दान दिया तथा औषधालय, धर्मशाला आदि का निर्माण कराया।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा का मान पत्र

इस अवसर पर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा द्वारा एक मान पत्र भी दिया गया, जो निम्न प्रकार है- श्रीमान् दानवीर सेठ माणकचंद हीरानंद जी अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा श्रेष्ठि महाशय।

सहारनपुर के महासभा के अधिवेशन के अध्यक्ष स्थान को सुशोभित करके और अखिल भारतीय जैन मण्डली द्वारा धन्यवाद सम्पादन करके आप यहां पधारे है ऐसे प्रसंग में आपका अपूर्व औदार्य अप्रतिम प्रेम उदार हृदय तथा सद्गुण देख के हमको तथा दक्षिणात्मक जैन संघ को जो हर्ष होता है, तिस पर आप महाशय के सामने हम थोड़ा भाग करके देते है। आप हमें क्षमा करेंगे ऐसी आशा है।

जैन समाज में आप अनभिषिक्त राजा है। ऐसा कहने में हमको बिल्कुल शंका नहीं है।

अपनी समाज से उत्कंठ प्रीति आपके अंतःकरण में प्रज्वलित है तथा इस प्रीति भाव को किस प्रकार प्रदर्शित करें। इस भाव में निश्चय से आप का मन रात्रि दिवस उत्पन्न रहता है। आपका विचार प्राचीन आचार्य प्रणीत शास्त्रों की अचल भक्ति में जा रहने से सदा इस उपाय में तत्पर रहता है कि जैन शासन के सनातन तत्वों का पुनरुज्जीवन हो इसी प्रकार आप वर्तमान स्थिति के भेदों को जानकर समाज में नवीन सुधार की जो आवश्यकताएं हैं उनसे पूर्णविज्ञ है- इस सर्वज्ञान के अनुसार कार्य करने में जिन-जिन साधनों की आवश्यकता हैं उन सर्व का पूर्ण भाग आप को प्राप्त है तात्पर्य यह है कि कुशाग्र बुद्धि, सदय अंतःकरण, उदार वासना, अचल सम्पत्ति, अखण्ड कीर्ति इत्यादि सद्गुण और सामग्री के कारण आज आप हमारी समाज में उच्चतम पद पर स्वभावतः ही मवराजमान हुए है।

आपने समाज हित के लिए अद्य पर्यन्त सात लाख रुपये व्यय किये है और उस द्रव्य को इस रीति से खर्च किया है कि उसका उपयोग चिरकाल तक सर्व समाज को उत्तम प्रकार से होता रहेगा। आप का औदार्य और चातुर्य गुण सोना और सुगंध के समान मिश्रित हुआ है अतः आपके साथ आपके उदार बंधु श्री सेठ पानाचंद, श्री सेठ नवलचंद आदि भी पूज्यनीय हुए हैं आप की स्तुति कितने ही शब्दों में करें पूरी हो नहीं सकती है।

संक्षेप में हमलोग जिनेश्वर के चरणों में यह प्रार्थना करते हैं कि आपको, आपके बंधुवर्ग तथा कुटुम्बियों को इसी प्रकार की सेवा करने में उदण्ड, आयुष्य, आरोग्यता तथा वैभव प्राप्त हो।

आपका अनंतराज सेठी
मोतीखनी अध्यक्ष
दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा
श्री स्तवनिधि
पौष्य १५ शके १८२७

जैन गजट के नये सम्पादक

इसी वर्ष बाबू देव कुमार जी रईस आरा द्वारा अस्वस्थता के कारण जैन गजट के सम्पादक पद से त्याग पत्र देने के कारण बाबू जुगलकिशोर जी मुख्तार सरसावा को जैन गजट का संपादक मनोनीत किया गया। मुख्तार साहब जैन धर्म, साहित्य एवं इतिहास के प्रखर विद्वान थे तथा लेखनी के धनी थे।

महासभा के ११वें वार्षिक अधिवेशन में एक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी का प्रकाशन, १५ सदस्यों की विद्या प्रचारिणी समिति का गठन, महासभा की नियमावली में संशोधन के लिए सात सदस्यीय समिति का गठन, विवाह शादियों में धर्म की कुरीतियों के निवारण का प्रयास, बारात में १०० से अधिक बारातियों के जाने पर प्रतिबंध, मृतक संस्कार में बिरादरी को जिमाना आदि को बन्द करने का आग्रह किया गया इसी वर्ष जैन गजट के सम्पादकी से बाबू देवकुमार जी के त्यागपत्र देने के कारण सेठ मेवाराम जी को अस्थायी सम्पादक नियुक्त किया गया।

स्याद्वाद महापाठशाला का प्रथम वार्षिक अधिवेशन

महाविद्यालय का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक ३ सितम्बर १६०७ को पं. रामभाउ जी नागपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विद्यार्थियों के संस्कृत में विभिन्न विषयों पर भाषण हुए। विद्यालय के मंत्री बाबू देवकुमार जी रईसआरा थे। स्कॉलरशिप फण्ड के लिए भारी आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।

महिला परिषद का वार्षिक अधिवेशन

इस वर्ष महासभा के अधिवेशन के साथ ही भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् का अधिवेशन होना भी प्रारंभ हुआ। करीब ३००० महिलाओं ने इसमें भाग लिया। महिला परिषद की नियमावली भी पास की गयी। श्रीमती चमेली बाई देहरादून धर्मपत्नी श्री अजित प्रसाद जी रईस ने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। इस अधिवेशन में सात प्रस्ताव पारित किये गये। परिषद् के मंत्री पद का भार श्रीमती मगनबाई बम्बई ने संभाला।

महासभा के अधिवेशन के साथ ही भारत जैन महामंडल का अधिवेशन भी श्री जुगमन्दर लाल जैनी एम.ए. बैरिस्टर एट लॉ के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। इसमें भी अनेक प्रस्ताव पारित किये गये एवं मण्डल की नियमावली बनाने के लिए एक कमेटी का गठन भी किया गया तथा यह

निर्णय भी लिया गया कि जीवदया एवं शाकाहार का प्रचार-प्रसार किया जावे।

महासभा के प्रति संपादक बाबू बनारसीदास जैन के विचार

भूतकाल में जैन मत का जहाज धर्म के समुद्र में पड़ा हुआ अपने बार-बार के दौरों से मोक्षाभिलाषियों को मोक्ष पहुंचाता था और शास्त्र ज्ञान का मल्लाह अपने शब्द रूपी पतवार को लिए हुए इस जहाज के चलाने के लिए तत्पर रहता था और लक्ष्मी पुत्र जो इस जहाज के रक्षक थे अपने उदार हृदय से तन मन धन जाति सेवार्थ अर्पण करने के लिए तैयार रहते थे। उस जमाने में जैन धर्म का डंका चहुं ओर निशंकर बजता था जिस तरह निगाह जाती थी। एक अद्भुत और चकित करने वाला दृश्य दीख पड़ता था। बड़े-बड़े राजा व महाराजा जैन धर्मावलंबी उपस्थित थे। जिनके प्रभाव से जैन धर्म की पूरी-पूरी रक्षा होती थी और जैन धर्म दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता रहता था। ऐसे ऐसे महान बलाढ्य शुद्ध आम्नाय पर चलने वाले विद्वान और विचारशील पंडित उपस्थित थे जो सत्य शास्त्र का उपदेश करने के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। चाहे उनकी जान क्यों न जाती रहे किन्तु किसी तत्व का न्यिपण करने में वे कभी मान; कषाय या लोभ आदि के वश होकर किसी बलवान या निर्बल अथवा किसी धनवार का निर्धन अथवा किसी सज्जव वा दुर्जन का असत्य पक्ष नहीं लेते थे। सदा उन का आचार-विचार न्यास सम्मति और धर्म के अनुकूल होता था। वह हित मित मधुर वचन बोलने वाले होते थे और मोक्ष के साधनों के प्रतिपालक होते थे किन्तु अब इस कलिकाल के प्रभाव से इस जैन धर्म-रूपी जहाज ने अविद्या, वैर, विरोध रूपी भंवर में चक्कर खाया है डूबने को ही था कि लोभ, मान, माया, मोह और कषायरूपी व्हेल मछलियों ने इसको ऐसा टकराया है कि इसके कई टुकड़े होकर छोटी-छोटी नौका सी बन गई है। अब यह वह महान जहाज नहीं रहा न इसका इतना गौरव व प्रतिष्ठ है फूट का यही फल है कि सब बरबाद हो।

डिप्टी चंपतराय गंगनहर का निधन

१९वें अधिवेशन के पश्चात समाज के दो महान नेताओं का निधन होने से समाज में घोर निराशा का वातावरण छा गया। ८ मई १९१४ को महासभा के महामंत्री डिप्टी चंपतराय जी गंगनहर का स्वर्गवास हो गया। महासभा के १८वें अधिवेशन में उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए महासभा द्वारा एक प्रस्ताव भी पारित किया गया था। डिप्टी चंपतराय जी महासभा के आरंभ से ही महामंत्री रहे थे। अपने १८ वर्ष के मंत्रित्वकाल में इन्होंने कितने ही संकटों का सामना किया और मंत्री जैसे उत्तरदायित्व पद को जिम्मेदारी से संभाला। समाज परउनकी अच्छी पकड़ थी

इसी तरह १६ जुलाई सन् १९१४ को बम्बई नगर में दानवीर सेठ माणिकचंद जी (हीराचंद जी) का स्वर्गवास हो गया। सेठ माणिकचंद जी महासभा के प्रभावक सदस्य थे तथा दान देने में हमेशा आगे रहते थे। महासभा के सन् १९१० में श्रवणबेलगोला में आयोजित अधिवेशन के वे सभापति थे।

पूरा वर्ष खण्डन मण्डन एवं शास्त्रार्थों का रहा। आर्य समाजियों द्वारा जैन धर्म पर समय-समय पर आक्षेप किया जाते थे जिसका जैन विद्वान बराबर उत्तर दिया करते थे। जैनों को नास्तिक बतलाना एक आम बात हो गई थी। जैनियों एवं आर्य समाजियों में शास्त्रार्थ होते रहते थे जा आगे चलकर एक परम्परा सी बन गई थी।

२०वां वार्षिक अधिवेशन

महासभा का २०वां वार्षिक अधिवेशन भी मथुरा में ही सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता सेठ दामोदर दास जी मथुरा द्वारा की गयी। महासभा के अधिवेशन के पूर्व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का अधिवेशन होने की एक परम्परा सी बन गई थी। इस समय तीर्थक्षेत्र कमेटी के सामने मुख्य उद्देश्य तीन मुकद्मों में विजय प्राप्त करना था। प्रथम सम्मेदशिखर जी के दर्शन पूजन का क्योंकि श्वेताम्बर कहने लगे थे कि दिगम्बरी हमारे हुकम से और हमारी रीत्यानुसार ही दर्शन पूजन कर सकते हैं दूसरा जो पट्टाराजा की तरफ से दिगम्बरों को दिया गया था अब उसके इन्कार किया जाने लगा। तीसरा जल मंदिर में दिगम्बरों की चिरकाल से विराजित जिन बिम्बों को श्वेताम्बरियों द्वारा उठा देना था। इनके अतिरिक्त और भी छोटे बड़े उपद्रव श्वेताम्बरियों द्वारा निरंतर किये जाते रहते हैं जिनके लिये नित्य प्रति किसी भी प्रकार कमेटी को तैयार ही रहना ही पड़ता है। यद्यपि तीर्थ क्षेत्र कमेटी का अधिवेशन इन्दौर में किये जाने के लिए अधिकांश सदस्यों की सहमति प्राप्त हुई थी किन्तु इन्दौर में प्लेग फैल जाने के कारण वहां अधिवेशन करना सम्भव नहीं हो सका। इस कारण महासभा के २०वें वार्षिक मधिवेशन क साथ ही तीर्थक्षेत्र कमेटी का अधिवेशन किया जाना निश्चित हुआ महासभा के मंत्री श्रीमंत सेठ मोहनलाल जी ने दोनों संस्थाओं के अधिवेशनों में भाग लेने की अपील जारी की।

महासभा के अधिवेशन में श्रीमन्त सेठ मोहनलाल जी रईस के महामंत्री पद से त्याग पत्र देने के कारण लाला जम्बू प्रसाद जी सहारनपुर को महामंत्री बनाया गया। श्रीमन्त सेठ मोहनलाल जी सात वर्ष तक महासभा के महामंत्री रहे तथा जैन समाज की निस्वार्थ सेवा की। आपकी सेवाओं को देखते हुए आपको जैन जाति भूषण की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। इसी तरह जैन गजट के सम्पादक के पद पर लाला घासीराम जी मथुरा की नियुक्ति की गई। लाला मिश्रीलाल जी ने जैन गजट का तीन वर्ष तक कुशलतापूर्वक सम्पादन किया और उसकी लोकप्रियता में वृद्धि की।

इस अधिवेशन में कार्यकारिणी की अवधि समाप्त होने के कारण महासभा की नई कार्यकारिणी के पदाधिकारीगण एवं सभासद नियुक्त किये गये।

तजवीज जस्टिस ज्वाला प्रसाद

यह अपील एक ऐसे मुकद्मे से की गई है जिसको श्वेताम्बरियों के मुंसिफ की अदालत में २/२ कट्टा जमीन पर अधिकार पाने के लिये दायर किया था और यह भी कहा जाता है कि श्वेताम्बरी उक्त भूमि से बेदखल कर दिया गया है। मुद्दई जैन श्वेताम्बरी सभा का प्रतिनिधि और मैनेजर है और उक्त सोसाइटी की तरफ से पारसनाथ का कर्मचारी है। उक्त जमीन ग्राम मधुबन में पारसनाथ की पहाड़ी के पास है। और राजा पालगंज की जायदाद है। श्वेताम्बरों ने अपना दावा एक ऐसे इकरारनामे पर से किया है जिसको ता. १६ मई १८७२ को वर्तमान राजा पालगंज के पिता राजा पारसनाथ सिंह ने हरकचन्द्र गोयला को लिखा था जो उस समय जैन श्वेताम्बर सोसाइटी का मैनेजर था। उन झगड़ों के तय करने के लिये जो श्वेताम्बर जैन सभा के मंदिरों में जो पारसनाथ की पहाड़ी पर वे कुरीति

कुर्बानियों (हिंसा) की बाबत हो रहे थे। मुद्दई बयान करता है कि उक्त इकरारनामा के अनुसार जैन श्वेताम्बर सोसाइटी को पहाड़ी पर व ग्राम मधुवन में हर जगह अपनी इच्छा के अनुसार मंदिर व धर्मशाला बनाने का इख्तियार है। उस समय भी जबकि राजा या उसक उत्तराधिकारी इन्कार करें तो उक्त सभा अपने अधिकार के बदले बल से ऐसा कर सकती है।

अर्जुनलाल सेठी

श्री अर्जुनलाल सेटी बेलोर (मद्रास) जेल में राजनीतिक बंदी थे। उनके प्रति समाज का बहुत लगाव रहा क्योंकि उन्होंने बिना दर्शन किये अन्न जल का त्याग कर दिया था और सात दिन तक निराहार रहे। उनके स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिये सारा समाज उत्सुक बना रहा। १८ जनवरी १६१८ को सेठी जी का हाल जानने के लिये बेलोर गये। सेठीजी ने वीतराग मूर्ति के दर्शन किये, बिना अन्न का त्याग कर दिया केवल दुग्ध पर आश्रित रहे।

अर्जुनलाल सेठी के सम्बन्ध में राष्ट्रीय कांग्रेस के तीसरे दिन एक प्रस्ताव निम्न प्रस्ताव पास किया गया।

२३ वां एवं २४वां वर्ष

महासभा का २३वां वर्ष विशेष अच्छा नहीं रहा। न उसका वार्षिक अधिवेशन हो सका और न समाज में भी मतैक्य नहीं रहा। लेकिन २४वें वर्ष में महासभा का २३वां वार्षिक अधिवेशन कोटा में ७ फरवरी से १० फरवरी १६१६ तक श्रीमान् सेठ माणिकचंद जी झालरापाटन वालों के सभापतित्व में साआनंद सम्पन्न हुआ। महासभा के अधिवेशन के साथ दिगम्बर जैन मालवा प्रांतिक सभा का एवं हाड़ौती प्रांतिक सभा का अधिवेशन भी सेठ माणिकचंद जी के सभापतित्व में ही सम्पन्न हुआ। इससे समाज में एकता एवं समन्वय का मार्ग प्रशस्त हो गया। स्वागत सम्मान के पश्चात सभापति महोदय का भाषण हुआ। अधिवेशन में ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी, एवं न्यायाचार्य पं. माणकचंद जी का बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ।

अधिवेशन में २५ प्रस्ताव पास हुये। एक प्रस्ताव द्वारा इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में प्रस्तुत किये गये हिन्दु विवाह बिल (हिन्दू मैरिज एक्ट) का भारत के प्राचीन धर्म एवं समाज का घोर विरोध किया गया। एक प्रस्ताव द्वारा जैन शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाध्यापक, संचालक आदि दि. जैन ही रहने चाहिये। एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा जैनों को प्रथम निर्वाचनका अधिकार प्रदान करने तथा प्रांतिक एवं बड़ी व्यवस्था सभओं में जैन प्रतिनिधियों के लिये स्थान नियत करने की मांग की गई। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा कोटा राज्य सेशन्स में जैन अखंडित एवं पूज्य विराजमानमूर्तियों को वापिस जैन समाज को देने की प्रार्थना की गयी। इसी तरह साहबजादा भरी मुहम्मद खां टोंक के मकान में जो दिगम्बर जैन प्रतिमाएं निकली है, उन्हें जैन समाज को वापिस देने का प्रस्ताव पास किया गया। एक अन्य प्रस्ताव में कलकत्ता में हिन्दू मुसलमानों क दंगों के समय कोल्हू टीले के श्री दि.जैन मंदिर की मूर्तियों को खंडित करके एवं कुछ को उठाकर ले जाने की घोर निंदा की गयी। मूर्तियों की खोज करने एवं उपद्रवियों की उचित दंड देने का प्रार्थन की गयी।

एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा ५३ सदस्यों एवं पदाधिकारियों की प्रबंधकारिणी गठित की गयी।

महात्मा गांधी ने अपना अंतिम संदेश इस प्रकार दिया

"मैं ईश्वर को साक्षी रखकर कहता हूं कि आगे से बर्तने के लिए हिन्दुस्तान की रूई, रेशम और ऊन से बना हुआ कपड़ा उपयोग करूंगा और विदेशी ऊनी, सूती और रेशमी कपड़े का सर्व रीति से त्याग करूंगा। मेरे पास जो स्वदेशी कपड़े हैं, उन्हें जलाने की प्रतिज्ञा करता हूं।"

डबल विवाह करने का विरोध

महासभा के महारथी एवं सभापति दानवीर राय बहादुर सेठ हुकमचंद जी इंदौर निवासी ने एक पत्नी और अनेक पुत्र पुत्रियों के रहते दूसरा विबाह करने पर समाज में उसका घोर विरोध किया गया। इसके पश्चात् उन्हीं के भाई एवं दि.जैन महासभा के उपसभापति राय बहादुर कल्याणमल, इंदौर वालों ने भी एक पत्नी के होते हुए दूसरा विवाह नासिक में कर लिया। सेठ माणिकचंद जी सेठी, झालरापाटन श्री कोटा अधिवेशन में महासभा के अध्यक्ष थे, उन्होंने भी दूसरा विवाह कर लिया। इन सबके समाज विरोधी कार्यों से साधारण जैन समाज में घोर रोष व्याप्त हुआ, लेकिन समाज इन लक्ष्मी पुत्रों का कुछ भी नहीं कर सकी और केवल नाराजगी प्रकट करके ही रह गयी।

खण्डेलवाल महासभा स्थापित

बम्बई दि.जैन खंडेलवाला पंचायत ने भारतवर्षीय दि.जैन खण्डेलवाल महासभा स्थापित करके एक व्यवस्था समिति का गठन किया, जिसके मंत्री खण्डेलवाल कुलभूषण पं. धन्नालाल जी कासलीवाल नियुक्त किये गये।

महासभा का नैमित्तिक अधिवेशन

महासभा के कोटा अधिवेशन के पश्चात् उसकी लोकप्रियता में वृद्धि हुई। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण उदयपुर में नैमित्तिक अधिवेशन का आयोजन रहा।

महासभा से मान्यता प्राप्त संस्थाएं

१. श्री दि.जैन मालवा प्रांतिक सभा, बड़नगर
२. श्री राजपूताना प्रांतिक सभा, जयपुर
३. श्री दि.जैन मुम्बई प्रांतिक सभा, मुम्बई
४. श्री नागपुर प्रांतिक खण्डेलवाला सभा, सिवनी
५. श्री परवार जैन सभा
६. सरसेट सरूपचंद हुकमचंद दिगम्बर जैन पारमार्थिक संस्थाएं, इन्दौर इस संस्था के अंतर्गत महाविद्यालय, बोर्डिंग हाउस,दि.जैन मंदिर, धर्मशाला औषधालय। श्री कंचन बाई श्राविकाश्रम,विधवा और असहाय फण्ड
७. श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, काशी
८. जैन महिलाश्रम धीरज, देहली
९. मिथ्यात्व तिमिर नाशिनी दि.जैन सभा, देहली
१०. श्री देशभूषण कुलभूषण ब्रह्मचर्याश्रम, कुंथलगिरी
११. सखाराम नेमचंद जैन औषधालय
१२. दिगम्बर जैन सम्मति विधालय, कलकत्ता
१३. श्रीमती दिगम्बर जैन धर्म संरक्षिणी सभा, कलकत्ता
१४. श्री स्याद्वाद प्रचारिणी सभा, कलकत्ता
१५. श्री दिगम्बर जैन बोर्डिंग, बड़वानी
१६. श्री मेघराज दि.जैन पाठशाला, बड़वानी

१७. सुमेरचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस, इलाहाबाद
१८. श्री जैन धर्म प्रचारिणी सभा, भिवानी
१६. श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावक मण्डल, देहली
२०. श्री सुकृत द्रव्य संरक्षक कमेटी, सुपारी (बडवानी)
२१. श्री दिगम्बर जैन पाठशाला, दुमदुमा
२२. श्री जैन पाठशाला, पपौरा
२३. श्री ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला, अमरोहा
२४. श्री आत्महितकारिणी दि.जैन पाठशाला, कोपरगांव
२५. श्री दिगम्बर जैन पाठशाला, फिरोजाबाद
२६. श्री दिगम्बर जैन बोर्डिंग, वर्धा
२७. श्री दिगम्बर जैन व्यापारिक पाठशाला, अजमेर
२८. त्रिलोकचंद जैन हाईस्कूल, इंदौर
२६. जे.सी. जैन औषधालय, बेसवां (अलीगढ़)
३०. दिगम्बर जैन पवित्र औषधालय, कानपुर
३१. पद्मावती पुरवाल परिष्क्द, मालवा की पाठशाला
३२. दि.जैन पाठशाला, देह (मारवाड़)
३३. जैन बोर्डिंग हाउस, कोल्हापुर
३४. श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तिनापुर
३५. श्री सतर्कसुधा तरंगिणी दि.जैन पाठशाला, सागर
३६. श्री महावीर पाठशाला, साढूमल
३७. मौमोरियल जैन स्कूल, फाजिल्का
३८. दि.जैन पाठशाला, भानपुरा
३६. गोलापूरव दि.जैन सभा, रेशिंदीगिर
४०. विद्या प्रचारिणी सभा, फाजिल्का
४१. श्राविकाश्रम, मुम्बई
४२. जैन हाईस्कूल, बड़ौत
४३. दि.जैन बोर्डिंग, अकोला
४४. सेठ हीराचंद गुमान जी जैन संस्थाएं
४५. जैन मित्र मण्डल, देहली
४६. जैसवाल जैन सभा
४७. श्री गोपाल दि.जैन सिद्धान्त विद्यालय, मोरेना

इस प्रकार महासभा का जैन समाज की उक्त सभी संस्थाओं के संचालन में योगदान रहता था। उनके वार्षिक प्रतिवेदन आते, रिपोर्टों में उनको सम्मिलित किया जाता और वार्षिक अधिवेशनों में उनका हिसाब आम जनता के सामने रखा जाता था। महासभा का विस्तार सारे देश में हो गया था। उसकी लोकप्रियता में बराबर वृद्धि हो रही थी और समाज का उसके प्रति पूरा विश्वास हो गया था।

२५वां वर्ष

महासभा का जिस प्रकार २४वां वर्ष शानदार रहा। उसी तरह २५वा वर्ष भी विविध कार्यक्रमों एवं वार्षिक समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। सभापति का असन साहू सलेख चन्द जी जैन न ग्रहण किया। कानपुर में प्रथम बार महासभा का प्रवेश हुआ। इसलिये समाज में भी उत्साह एवं महासभा के अधिकारियों, प्रतिनिधियों तथा जन सामान्य का स्वागत सत्कार खूब किया गया। मंत्री ने विभिन्न विभागों की पहिले स्वयं ने और फिर विभाग के मंत्रियों ने अपने अपने विभाग की रिपोर्ट प्रस्तुत की। वास्तव में इन सभी ११ विभागों द्वारा समाज की जो महती सेवा की वह सदा इतिहास के पृष्ठों पर अंकित रहेगी।

महासभा के जैन गजट प्रकाशन, उपदेशक विभाग, महाविद्यालय संचालन एवं सरस्वती भंडार इन विभागों के महासभा द्वारा की जानी वाली समाज सेवा, समाज उनति, समाज में एकता कायम और जनधर्म के प्रचार प्रसार आदि का प्रशंसनीय कार्य किया गया। विगत २५ वर्षों में इन प्रमुख विभागों ने समाज के विकास में कितना योगदान दिया, उनका संक्षिप्त इतिहास निम्न प्रकार है:-

जैन गजट प्रकाशन

महासभा के मुख्य पत्र जैन गजट के प्रकान से समाज के सामने उसकी तस्वीर प्रस्तुत की जाती रही। कभी साप्ताहिक और कभी पाक्षिक के रूप में प्रकाशित होने वाले जैन गजट महासभा की रीति नीति से समाज को अवगत होता रहा। विधवा विवाह का महासभा के लिये प्रमुख मुद्दा बना रहा और जैन गजट में विधवा विवाह की अनुपयोगिता, धार्मिक दृष्टि से भी अवांछनीयता पर प्रकाश डाला जाता रहा। समाज के एक प्रमुख शिक्षित वर्ग को विधवा विवाह का खूब समर्थन किया, लेकिन वे भी विधवा विवाह को मूर्तरूप नहीं दे सके। इसलिये उनकाप्रयास भी निष्फल ही रहा।

मुनियों का सम्प्रदाय को विगत २५ वर्षों में कुछ छुट पुट घटना को छोड़कर समाज को मिला ही नहीं। किन्तु जैन गजट द्वारा दिगम्बर के समीचित तत्वों, सच्ची शास्त्रा कुल धार्मिक चर्चाओं का प्रचार, शंका समाधार, जैन धर्म पर मिथ्या आक्षेपों का खण्डन, समाजोन्नति कारक लेख एवं समाचारों का प्रकाशन होता रहा।

धर्म का निरंतर प्रचार करने के लिये महासभा द्वारा जैन गजट का प्रकाशन १ दिसम्बर, सन् १८९५ में बाबू सूरजभान जी वकील के संपादकत्व में देवबंद जिला सहारनपुर में प्रकाशन प्रारंभ हुआ। वकील सा. के पश्चात् बाबू घासीराम जी, लाला प्यारेलाल जी के संपादकत्व में साप्ताहिक के पश्चात् पाक्षित के रूप में मथुरा से प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् लगातार ६ वर्ष तक बाबू देवकुमार जी आरा वालों के संपादकत्व में प्रकाशित होता रहा। इसका रूप पाक्षित से फिर साप्ताहिक हो गया। १ जुलाई, १६०७ से बाबू सूरजभान जी वकील के सहचर बा. जुगलकिशोर की संपादकत्व में प्रकाशित होने पर जैन गजट ने पर्याप्त विकास किया। इसके पश्चात् पं. जवाहरलाल जी शास्त्री की संपादकीय में खुरई में, बा. बनारसीदास जी की संपादकीय में जलेसर से, लाला मिश्रीलाल जी की संपादकीय में अलीगढ़ से और सेठ दामोदर दास जी के संरक्षकता में मथुरा से प्रकाशित होता रहा। इसके पश्चात् सन् १६१६ से पं. रघुनाथदास जी सरनउ के संपादकत्व में प्रकाशित होता रहा।

उपदेशक विभाग

महासभा ने उपदेशक विभाग खोलने का अच्छा निर्णय लिया। विगत २५ वर्षों में उपदेशकों द्वारा देश के सभी प्रमुख गांवों, नगरों में महासभा का संदेशही नहीं पहुंचाया, किन्तु लोगों को जैन धर्म की जानकारी, धार्मिक जीवन का पालने करने का उपदेश, अन्य सामाजिक सुधार, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा विवाह जैसी कुप्रथाओं को रोकने एवं सामान्य जनता को जैन धर्म का परिचय प्राप्त कराने में बहुत योग दिया। दक्षिण भारत में भी पं. शांति राजैया जी न्यायातीर्थ मूडबिद्री ने दक्षिण भारत के गांवों एवं नगरों

में महासभा का संदेश पहुंचाया। इस विभाग ने महासभा को जन जन से जोड़ने का अच्छा कार्य किया।

महाविद्यालय संचालन

यह विद्यालय संवत् १९५५ से ही अंतिम केवली जम्बू स्वामी जी की निर्वाण भूमि चौरासी में स्थापित है। विद्यालय के प्रमुख उद्देश्य समाज में जैन धर्म के ज्ञाता विद्वानों को तैयार करना रहा। विगत २५ वर्षों में विद्यालय में १८६ विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया, जिनमें १५० से भी अधिक विद्यार्थियों ने जैन धर्म की शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन का निर्माण किया। लेकिन जिस आशा से विद्यालय का संचालन किया जाता रहा, वह आशा उससे पूर्ण नहीं हो सकी।

सरस्वती भण्डार

इस विभाग का कार्य प्राचीन ग्रंथों की पाण्डुलिपियां तैयार करवाकर स्वाध्याय के लिये लागत मूल्य पर गांव गांव में भेजना था। महासभा ने प्रारंभ से ही छापाखाने का विरोध किया था। इसलिये सरस्वती भण्डार खोलने की आवश्यकता पड़ी। प्रारंभ में तो प्राचीन ग्रंथों की पर्याप्त संख्या में पाण्डुलिपियां तैयार की जाती रही और उनकी मांग बनी रही, लेकिन छपे हुए ग्रंथों की लोकप्रियता बढ़ने के कारण इस भंडार का कार्य स्वयं ही शिथिल होने लगा।

महासभा के २६ से ५० वर्ष अर्द्ध शताब्दी तक

महासभा का लखनऊ अधिवेशन

महासभा के लखनऊ में आयोजित २६ वें वार्षिक अधिवेशन के लिये जैन गजट एवं दूसरे जैन पत्रों में पर्याप्त प्रचार प्रसार किया गया। इस प्रचार के फलस्वरूप अधिवेशन मनभावक रहा। स्वागत समिति के सभापति लाला फतहचन्द जी जौहरी लखनऊ के थे। उन्होंने सभापति पद के लिये लाला चम्पतराय जी बैरिस्टर हरदोई के लिये प्रस्ताव रखा। ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी ने जिसका समर्थन करते हुए बैरिस्टर साहब का विस्तृत परिचय दिया। इसके पश्चात समाज के अनेक प्रभावशील महानुभावों ने उसका समर्थन किया। सभापति महोदय ने सर्वप्रथम श्रावक के पन्चाणव्रत धारण किये और अपना सुभाषित भाषण दिया।

परिचय-१

सभापति महोदय दिल्ली के एक प्रतिष्ठित घराने के रत्न हैं। राय सा० लाला प्यारेलाल जी वकील दिल्ली के दामाद हैं। जैन सिद्धान्त के मर्मज्ञ हैं। आपका समय जैन धर्म की दृभावना वर्द्धक पुस्तकों के निर्माण में व्यतीत होता है। अपकी प्रमुख पुस्तों में A Key Of Knowledge (की आफ नालेज) ज्ञान की कुंजी, दी प्रेक्टिकल पार्थ (कर्म योग) परमात्म मनाना व अंग्रेजी अनुवाद साइन्स आफ थाट (विचार विज्ञान) हाउस होल्ड धर्म (गृहस्थाधार) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। लाला चम्पतराय जी लेखक के साथ-साथ अच्छे वक्ता भी हैं। समाज सेवा करने में पूरी रूचि रखते हैं। महात्मा के अधिवेशन में कितने ही प्रस्ताव पास हुए और पूरे जैन समाज को एकजुट होने का सन्देश दिया। महासभा ने लखनऊ अधिवेशन से सारे अवध प्रान्त में पूरे जैन समाज में स्वाभिमान की भवना का उदय हुआ और जैन कहलाने में वे गौरव का अनुभव करने लगे।

एक प्रस्ताव द्वारा पूरे जैन समाज (दिगम्बर, श्वेताम्बर स्थानकवासी) के लिये जैन कानून तैयार करले और उसे सरकार से पास करालो। इस समिति के प्रधान लाला चम्पतराय जी बैरिस्टर को दिया गया। जैन त्योहारों के दिन अवकाश घोषित करने, जैन विवाह विधि से विवाह कराने, जैसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

मैं सबसे पहले इस भारतवर्ष के अनितम तीर्थकर परमात्मा महावीर स्वामी और विभेद क्षेत्र के वर्तमान तीर्थकर परमात्मा अजित बीर प्रभु को नमस्कार करके और नमस्कार द्वारा अपने कषायों को बन्द करके हृदय को हट और वैर भावों से पाक करके आपकी उस समानता के लिये जो आपने इस अवसर पर मेरी की है अपका कृतज्ञ होते हुए अपको अनेक बार ६ न्यवाद देता हूँ। यह अधिवशन तो इतना विशाल था किक उसके लिये किसी विशेष योग्य सभापति की आवश्ययकता थी किन्तु मैं आपकी आज्ञा को नहीं टाल सकता था और इस आशा पर कि समस्त जैन जाति इस अधिवेशन को अत्यंत सफलता के साथ पूर्णतया तैयार है और अपने-अपने मतभेद को सबने हृदय से हटा दिया है या हटा देने का प्रयत्न करेंगे। मैने इस सम्मान को इस उद्देश्य से स्वीकार यि कि मैं सच्चे हृदय से जाति की सेवा करू और मुझको पूर्ण आशा है कि भिन्न विचार और प्रत्येक गिरोह के भाई हृदय से इस अधिवेशन को एकता और प्रेम का नमूना बना देंगे।

पूर्वनव दस महीने हुए इस सभा का जलसा कानपुर में हुआ था, अभाग्यवश इस छोटी सी जैन समाज के इतने समय में ही काल ने (१) श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचंद जी जमींदार (बमराना), (२) ला० सोहनलाल जी सरवाले वाले, (३) जौहरी प्यारे लाल जी नसीरदाबाद निवासी और (४) रायबहादुर ला० घमंडीलाल जी मुजफ्फरनगर वाले सज्जन पुरूषों को हमसे हमेशा के लिये विलग कर दिया है। जैन जाति को उनकी असमय मृत्यु का अत्यन्त खेद है। इस सज्जनों के शुभ कृत्यों को जैन समाज भली-भाती प्रकार परिचित है और वे अपने सदाचार और धर्म प्रेम के कारण विख्यात था।

इसी के साथ में मुझे उन जैन कर्मवीरों के इस अधिवेशन में न होने का भी अफसोस है कि जो सरकार द्वारा जेलखानों में पड़े हुए हैं। ब्रह्मचारी कुंवर दिग्विजयसिंह जी, ब्र० भगवानदीनजी, श्रीयुत पद्मराज जी कलकत्ता वाले और अन्य कर्मवीरों को इस जलसे में उपस्थित होने से इस अधिवेशन की शोभा ही और हो जाती है। धन्य ही उनकी आत्माओं को जिन्होने देशभक्ति के लिये जेलखानों के कष्टों को सहन अपने ऊपर गवारा किया।

जैन (लॉ) कानून व नीति शास्त्र

आपको मालूम है कि अदालतों में जैन लॉ अभी तक मान्य नहीं है बल्कि हिन्दुओं के धर्मशास्त्र मितक्षर आदि ही की पाबन्दी जैनियों से कराई जाती है। अथवा रिवाज यदि कहीं प्रमाणित हो तो उसके अनुसार अमल दरामद होता है। जैनियों के कानून व नीति शास्त्रों का प्रचार नहीं है और कितने फैसले हाईकोर्टों से ऐसे सादि हो चुके हैं जिनमें यह करार दे दिया गया है कि हिन्दू लॉ जैनियों पर लागू होना चाहिये सिवाय उस अवस्था के

महासभा के पुराने कार्यकर्त्ता

स्व० श्रीमान् राजा लक्ष्मणदास जी साहब बहादुर सी०आई०ई० मथुरा

स्व० दानवीर जैन कुलभूषण सेठ माणिकचन्द जी जे०पी० बम्बई

सेठ रघुनाथ दास जी

स्व० रायबहादुर सेठ मूलचन्दजी सोनी अजमेर

अनेकोपाधि विभूषित रावराजा सर सेठ हुकुमचन्द जी साहब इन्दौर

सर सेठ भागचन्दजी सोनी अजमेर

सेठ हीरालाल जी पाटनी किशनगढ़

सेठ बैजनाथ सरावगी कलकत्ता

रायबहादुर राजकुमार सिंह इन्दौर

आचार्य श्री विद्यानंद जी के साथ भूतपूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री स्व० श्रीमान गुलजारी लाल जी नंदा।

आचार्य शांतिसागर महाराज के जन्म स्थली भोजनगरी में रथयात्रा के समय पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती सभा को संबोधित करते हुये सन् १६८५।

आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज प्रवचन करते हुए सभा में महासभा के फौलादी पुरुष श्री माणिकचंद जी पालीवाल एवं विशाल जन समुदाय।

शांतिसागर महाराज की जन्म स्थली भोजग्राम में शांति पथ दर्शन रथयात्रा का प्रारंभ करते समय अध्यक्ष श्री पारिसप्पा इंगरोले, संयोजक श्रीकांत चंवरे आदि कार्यकर्ता।

भोजनगरी में रथयात्रा वाहन का उद्घाटन करते हुये श्रीमान वी.डी.जत्ती।

भोजग्राम नगरी में सांसद श्री कलाप्पा आवाडे विदुषी सुश्री विमलाबाई का सम्मान करते हुये।

भोजनगरी में रथयात्रा वाहन का निरीक्षण करते हुये बी.डी.जत्ती एवं कार्यकर्ता।

जहां कोई स्थानीय रिवाज विरूद्ध पाया जाये। हाल में डाक्टर एच.एस. गौड साहिब बैरिस्टर ने अपनी किताब 'हिन्दू कोड' में तो जैन मत को बुद्धमत का बच्चा और हिन्दू धर्म से विरोधकर निकला हुआ ही कायम कर दिया है। इस हिन्दू कोड की गलतियों से आज कौन जैनी अनभिज्ञ है। प्रत्येक ग्राम और नगर में इसके विरोध में मीटिंग हुई है और अखबारों, पत्रों और नीज किताबों के द्वारा गौड साहब का ध्यान उनकी गलतियों की ओरदिखाया गया है। मगर गौड साहब की उलटी बुध्दि जैसी की तैसी बनी रही। पहले तो उनके पत्र से जो 'सिविल मिलीटरी गजट' लाहौर में छपा था। ऐसा मालूम होता था कि डाक्टर गौड मैत्रीवर्धक तथा न्यायी होंगे अपनी जिनको अपनी गलतियों को ठीक करने में उजर न होगा लेकिन अब तो वह खुल्लमखुल्ला हठधर्मी और जिद पर अड़े हुए हैं। अब वे कहते हैं कि हिन्दू कोई हाईकोर्ट के फैसले की दृढ़ नींव पर आधारित व स्थापित है और जब तक वह फैसले ज्यों के त्यों हैं मैं अपने लेख को नहीं बदल सकता। मानो हाईकोर्ट ने गैर कानून वालों का भी फैसला खिलाफे जैनियों के कर दिया है। यह उस डाक्टरसाहब की केवल हीलासाजी है। हर व्यक्ति इस बात को जानता है कि हाईकोर्ट सिर्फ उन्हीं बातों का तसफिया कर सकती है जो जाबते के अनुसार उसके सामने पेश करे और किसी बात के तै करने का अधिकार हाईकोर्ट को नहीं है। अब मैं डाक्टर गौड से पूछता हूं कि यह अगर कि जैनी लोग हिन्दूमत क विरूद्ध हो पृथक होने वाले हैं किस मुकदमें में तै हुआ और कौन वह तनाजा था जिसमें हाईकोर्ट ने या प्रिवी कौंसिल ने यह फैसला किया कि जैनमत बौद्धमत का बच्चा है। आजतक कोई मुकदमा बौद्ध लोगों और जैनियों के या जैनियो और हिन्दुओं के मध्य इस बात का तसफिया के लिये नहीं खड़ा है कि कौन धर्म इनमें से प्राचीन है और कौन अर्वाचीन हाईकोर्ट मे यह प्रश्न न कभी पेश हुए और न हो सकते थे। इसलिये जब डा० गौड हाईकोट की नजीरों की शरण लेते हैं तो यह केवल कपट है। किसी हाईकोट जावते के खिलाफ इसकी तै कर सकती है। क्या डा० गौड अलट्रावायरिस के नियम से अनभिज्ञ है। अलट्रावायरिस के अर्थ खिलाफ अखत्यार के हैं। अत यदि कोई हाईकोट ऐसी बातें अपने फैसले में शामिल भी कर दे तो वह फेसला अलट्रावायरिस होगा क्या हिन्दू ताजीरात हिन्द और ट्रान्सफर आफ प्रॉपर्टी एक्ट का टीकाकर ऐसी लचर दलील का सहारा पकड़ सकता है कदापि नहीं। मेरे मान्यवर मिश्र मि. जुगमन्दिर लाल जैनी और २ महाशयों ने गौड का खण्डन प्रसिद्ध लेखकों के लेखों द्वारा किया है। मैंने भी एक साधारण लेख अंग्रेजी भाषा में लिखा था। जिसको जैन मित्र मंडल दिल्ली ने स्वीकार करके छपवाया है। इसका अनुवाद अब हिन्दी भाषा में तैयार हो गया है और आज आपकी नजर किया जायेगा। इसमें गौड महाशय की गलतियों की पूरे तौर से प्रकट कर दिया है और इस प्रकार उनका वर्णन किया गया है कि प्रत्येक मनुष्य उनको सरलता पूर्वक समझ सके। यदि डा. गौड नेकनीयती को काम में लाते तो उनको चाहिये था कि वह अपनी गलतियों पर नादिम होते और इन तीन बातों में से एक न एक पर जरूर अमल करते।

१. नये हिन्दू कोडमें अर्थात् उसके दूसरे संस्करण में खेद प्रकट करते और गलतियों की जगह सही बात लिखते।

२. बिना खेद प्रकट किये हुए गलतियों को दूर कर देते।

३. वो यदि यह भी न करते तो कम से कम आरंभित अभिन्न समय को निरर्थक व्याख्यों के साथ पश्चात् के सच्चे प्रमाण भी निष्पक्ष भाव से दे देते जिससे कि पाठक स्वयं अपना नतीजा निकाल लेते। यह सब कुछ बड़ी सरलता के साथ हो सकता था मगर यहां तो बात ही और मालूम पड़ती है। यहां मेरे पास इस कदम वक्त तो नहीं है कि मैं इस विषय पर विस्तार के साथ कुछ कह सकूं परन्तु केवल दो ही प्रमाण मैं स्वतः बुद्धदेव के कथन के दूंगा जिनसे आप देखेंगे कि वह कहां तक उपयुक्त है कि जैनमत बौद्धमत का बच्चा है। एक अवसर पर बुद्धदेव ने ऐसा कहा था कि-

ऐ भाइयो! बहुत से संसार तारक (अचेलक- आजीवक-निर्ग्रंथ आदि) हैं जो यह शिक्षा देते हैं और जिनका यह मत है कि जो कुछ कोई मनुष्य भोगता है चाहे वह सुख हो या दुख हो अथवा ऐसा अनुभव हो जो न सुख है और न दुख है वह समस्त पिछले कर्मों का फल है और इस प्रकार तप द्वारा पुराने कर्मों का नाश करने से और नए कर्मो के न करने से भविष्य जीवन के लिये आश्रव नहीं होता। आश्रव के न होने से कर्मों का नाश हो जाता है और इस दुख का विध्वंस हो जाता है। ऐ भाईयों! निग्रंथ (जैनी) ऐसा कहते हैं. . . मैंने उनसे पूछा कि क्या यह सत्य है और कि इसको तुम मानते हो और इसका तुम प्रकार करते हो। उन्होंने उत्तर दिया हमारे पथ प्रदर्शक नाथयुक्त सर्वज्ञ हैं वह अपने ज्ञान की गंभीरता से यह बतलाते हैं कि तुमने भूतकाल में अशुभ कर्म किये हैं। इसे तुम कठिन तपस्या और कठिनाइयों को सहन करके नष्ट कर दो। जितना तुम कठिन तपस्या मनसा वाचा कर्मणा से अपनी इच्छाओं को वश में करोगे उतना ही अशुभ कर्मों का अभाव होगा। इस प्रकार अन्त में समस्त कर्म नष्ट हो जायेंगे और सर्व दुख भी। इससे हम सहमत हैं। (मझिम २/२१४ इ.रि.ए. २/६०)

यहां पर यह स्वयं बौद्धदेव जैनियों का और उनके परमगुरू भगवान महावीर स्वामी का जिनका उल्लेख बौद्धों ने नातपुत के नाम से किया है वर्णन करते हैं। वह कहते हैं कि हमने जैनियों से उनके मत के बारे में पूछा और फिर अन्त में कहते हैं कि इसको उनके तत्वों से स्वीकारता है। क्या जैनमत ऐसी अवस्था में बौद्धमत का बच्चा हो सकता है और क्या कोई यथार्थ धर्म अपने अनाशाकारी बच्चे धर्म से ऐसा प्रश्न किया करता है। और बच्चा भी कैसा हो जो कहा जाता है बौद्धमत के १३०० वर्षों के उपरांत उत्पन्न हुआ। जवाब साफ है। मुझे कहने की आवश्यकता नहीं है। जैन ध र्म कदापि बौद्धमत का बच्चा नहीं है।

मुझे बड़ा हर्ष है कि बुद्धदेव कायह कथन नष्ट होने से बच रहा है इससे हम जैनियों के सिद्धान्त और हमारे धर्म की प्राचीनता का पूरा समर्थन होता है और सबसे विशेषकर मुख्य बात जो है वह यह है कि भगवान महावीर की सर्वज्ञता का ऐलान संसार में जैनियो ने उन भगवान की विद्यमानता ही में किया था। उन्होंने स्वयं बुद्धदेव को बताया था कि हमारे पथ प्रदर्शक सर्वज्ञ हैं किसी की अविद्यमानता में दावा करना कोई वस्तु नहीं है। कारण कि इस समय उसकी परीक्षा नहीं हो सकती है कि अथवा कहने वाले ने सच कहा है अथवा झूठ, परन्तु गुरू की विद्यमानता में इसका प्रकट करना तो बात ही दूसरी है। प्रत्येक मनुष्य की परीक्षा करने का अवसर मिलता है और यह बात भी नहीं हैकि बुद्धदेव के दिल पर जैनियों के इस दावे का प्रभाव नपड़ा हो। बौद्धमत के शास्त्री और बुद्धदेव के जीवन चरित्र से विदित होता है कि उसने सर्वज्ञाता के प्राप्त करने के लिये बड़ी कठिन तपस्या की और वर्षों भूख प्यास के कष्ट सहे। वर्षों की तपस्या और शरीर के निर्बल और दुर्बल पड़ जाने पर भी उसने सर्वज्ञता का विचार हृदय नहीं भुलाया। बल्कि एक स्थान पर उसनेइस प्रकार कहा कि:

" न उन कठिनाइयों के सहन करने वाले नागवार मार्ग से मैं उस अद्भुत और उत्कृष्ट पूर्ण (आर्यो के) ज्ञान को जो मनुष्य की समझ के बाहर

है प्राप्त कर पाऊंगा। क्या यह संभव नहीं है कि इसके प्राप्त करने का कोई अन्य मार्ग हो (इ.रि.ए ६/७०)

ये अत्यन्त सार्थक शब्द है जो बुद्धदेव के मुख से निकले। इनसे प्रकट होता है कि उनको सर्वज्ञता में किस प्रकार श्रद्धा थी। इसके होते हुए भी कि वर्षों की तपस्या से उनका शरीर दुर्बल और लागर हो गया था तो भी उन्होंने उसको असंभव नहीं कहा। बल्कि इस बात का प्रयत्न किया कि शायद कोई अन्य मार्गउसकी प्राप्ति का हो। इससे ज्ञात होता है कि बुद्धने जरूर स्वयं तीर्थंकर भगवान को देखा होगा। सुनी सुनाई सर्वज्ञता में किस जिसके लिये वर्षों कठिन से कठिन तप किये जाये और फिर पूर्ण असफलता पर भी जिसका ख्याल हृदय से न निकले ऐसी दृढ़ श्रद्धा कैसे हो सकती है। औ यह भी नहीं है कि बुद्धदेव ने उस 'अद्भुत उत्कृष्ट पूर्ण (आर्यो के) ज्ञान'' को परमात्मा महावीर स्वामी के अतिरिक्त नहीं और देखा हो। उस समय में नअन्य कोई सर्वज्ञ था और न किसी और ने सर्वज्ञता का दावा ही किया था कि जहां से बुद्धदेव ने अपने इस दृढ़ विश्वास को प्राप्त किया हो।

यदि डा० गौड बुद्धदेव के इन वचनों पर पक्षपात को छोड़ कर ध्यान देंगे तो उनको जैन धर्म की प्राचीनता ही नहीं बल्कि उसके महत्व का भी शीघ्र ही बोध हो जायेगा। सच यह है कि केवल खोजी मनुष्य को ही पुस्तकें लिखने का अधिकार होता है और कोई यर्थाथ खोजी इस बात के कहने का अधिकारी नहीं है कि उसने यूरोपीयन अन्वेष (खोज) की अन्तिम सम्मति को जो इ०रि०ए ७/४७२ में अंकित किय है नहीं पढ़ा है इस इन्सायक्लोपेडिया में योरूपियन विद्वानों ने दिखाया है कि जैन धर्म बौद्ध धर्म सेप्राचीन है और बौद्धमत ने जैन धर्म से उनकी दो परिभाषाएं आश्रव व संवर ले ली हैं। अन्तिम निर्णय इन शब्दों में दिया है

जैनी लोग इन परिभाषाओं का भाव शब्दार्थ में समझते हैं और मोक्ष प्राप्त के मार्ग के सम्बन्ध में उन्हें व्यवहृत करते हैं। (आश्रवों के संवर और निर्जरा से मुक्ति प्राप्त होती है) अब यह परिभाषाएं उतनी ही प्राचीन है जितना कि जैन धर्म है। कारण बौद्धों ने इससे अतीव सार्थक शब्द को ले लिया है और जैन धर्म के समान ही उसका व्यवहार किया है परन्तु शब्दार्थ में नहीं। कारण बौद्ध लोग कर्म को सूक्ष्म पुद्गल नहीं मानते हैं और आत्मा से परा का भी नहीं मानते हैं। जिसमें कर्मों का आश्रव हो सके। संवर के स्थान पर वे आसवकस्य को व्यवहृत करते हैं। अब यह प्रत्यक्ष है कि बौद्ध धर्म में आश्रव का शब्दार्थ नहीं रहा इसी कारण यह आवश्यक है कि यह शब्द बौद्धों ने किसी अन्य धर्म से जिसमें यह यथार्थ भाव में व्यवहृत हो अर्थात् जैन धर्म से लिया है। बौद्ध संवरा का भी व्यवहार करते हैं अीत बौद्ध संवर और कियारूप में सबूत का यह शब्द ब्राह्मण आचार्यों द्वारा इस भाव में व्यवहृत नहीं हुए हैं। अतः विशेषतया यह शब्द जैन धर्म से लिये गये हैं जहां यह अपने शब्दार्थ रूप में अपने यथार्थ भाव को प्रकट करते हैं। इसप्रकार एक ही व्याख्या से यह सिद्ध हो जाता है कि जैन धर्म का कर्म सिद्धांत जैन धर्म में आरंभिक और अखंडित रूप में अपने पूर्व से व्यवहृत है और यह भी कि ैन धर्म बौद्ध धर्म से प्राचीन है।

इस लेख के उपरांत यह कहना कि जैनियों ने बौद्धों के सिद्धांत ले लिये हैं अत्यंत असत्यता और हठधर्मी है। और मुझे आश्चर्य है कि गौड जैसा विद्वान क्यों बिना कारण जैनियों से झगड़ा करने पर उतारू हैं।

डा० गौडसाहब की राय के विरुद्ध मि० जे०सी० चटर्जी बी०ए० विद्यावारिधी, पूर्वीय विद्या के डायरेक्टर आदि रियासत काश्मीर की सम्मति जो जैन होस्टल मैगजीन के जनवरी १९२२ के अंक में छपी है देखने काबिल है। आप लिखते हैं कि-

यह थोड़े ही दिनों की बात है कि लोग ख्याल किया करते थे कि जैन धर्म बौद्धमत की शाखा है। इस प्रकार कम जानकारी सर्व साधारण को उसकी शिक्षा और उसके इतिहास से थी। अब भी बहुत लोग ऐसे नहीं है कि जिनको साफ तौर से मालूम हो कि वास्तव में जैन धर्म क्या है और उसका अन्य मतों और दर्शनों से क्या संबंध है, क्योंकि जैनमत जो इतना ही प्राचीन है जितना कि कोई अन्य भारतीय धर्म, धर्म और दार्शनिक सिद्धान्त दोनों पहलू लिये हुए हैं और उसको हम उसी समय ठीक तरह पर समझ सकते हैं जब देश के अन्य प्राचीन धर्मों के साथ उसकी तुलना करें।

अस्तु डा० गौड का यह कथन कि जैनी हिन्दू डिसीरेन्ट (कुपथगामी) केनितान्त असत्य है। यदि डा० साहब इस शब्द को व्यवहृत करने से पहले इसके अर्थ को विचार लेते तो उनको इस बात का ज्ञान हो जाता कि यह शब्द उसी समय व्यवहृत किया जा सकता था जब यह प्रमाणित हो जाता कि किसी मुख्य समय में हिन्दुओं में आपस में किसी धार्मिक नियम के ऊपर मतभेद हुआ और मतभेद होन पर दो सम्प्रदाय उनमें हो गई। जिनमें से एक तो नितान्त सनातनी बनी रही और दूसरी भी पुराने धर्मको ही मानती रही सिवाय उस मतभेद वाले नियम के परन्तु यहा तो मामला नितान्त विपरीत है। यदि स्थूल दृष्टि से देखा जाये तो हिन्दूमत में मुख्य २ देवी देवताओं की पूजाआदि है और उन्हीं को बलिदान आदि भेंट देकर प्रसन्न करने से हिन्दूमत में काम निकाला जाता है। जैनमत में इसके विपरीत हिन्दूमत का एक देवता भी नहीं पाया जाता है और न जैनमत की देवपूजा आदर्श पूजा के अतिरिक्त कोई अन्य भाव रखती है। जैनधर्म के सिद्धांतो का कहीं हिन्दू धर्म में उल्लेख नहीं है और जैन धर्म बलिदान की अदया और कठोरता का कृत्य मानता है। इसके अतिरिक्त जैनमत में तत्वों का क्रम आपस में इस प्रकार का गुंथा हुआ है कि एक तत्व के निकाल डालने के लिये भी स्थान नहीं है। अर्थात् यदि सात तत्वों में से एक तत्व को भी लोप कर दिया जाए तो फिर जैन धर्म का समझना असंभव होगा। इसका अर्थयह है कि जैन धर्म जब कभी स्थापित हुआ होगा कुल का कुल एक ही समय में रचा गया होगा। हिन्दूमत का यह लक्षण नहीं है उसमें देवता नए नए सम्मिलित होते रहे हैं और दर्शन भी बाद को बने हैं। अतः यदि नियमों का एक मत से दूसरे मत में लिया जाना संभव था तो जैन मत में नहीं बल्कि हिन्दू मत में ही हो सकता था। स्थूल दृष्टि से तो यह फल निकला।

जब सूक्ष्म दृष्टि से गौर करते हैं तो यह फल निकलता है कि उस अवस्था में जबकि जैन धर्म वैज्ञानिक धर्म है, हिन्दूमत वैज्ञानिक सिद्धान्त के नियमों की कवि कल्पना के रूपक अलंकारों में दर्शाता है। अब यह स्पष्ट है कि सिद्धान्त के नियमों को कवि कल्पना में अलंकृत करने से पहले उन नियमों का अस्तित्व अवश्य होगा। नहीं तो कवि लोग रूपक अलंकार किसके बनाते। अब प्रश्न केवल यह रह जाता है कि यह वैज्ञानिक सिद्धांत किनको ज्ञात था। क्या यह हिन्दुओं के पास था और उनसे जैनियों ने लिया? नहीं! क्योंकि उस अवस्था में तो हिन्दुओं और जैनियों दोनों के यहां उसको मिलना चाहिए था और आपस में हिन्दुओं और जैनियें के मतभेद नहीं होना चाहिये था। आप ऋग्वेद के जमाने पर जो सबसे प्राचीन वेद माना गया है ध्यान दें न कि जब अवशेष तीन वेद और न पश्चात के षट दर्शन ही मौजूद थे और इस बातको ख्याल करें कि ऋग्वेद जमाने के हिन्दुओं का क्या धर्म था तो आप इस बात को साफ तौर से जान लेंगे कि ऋग्वेद में तो सिवाय देवी देवताओं के उल्लेख के किसी भी सिद्धांत या विज्ञान का पता भी नहीं है।

अस्तु वैज्ञानिक सिद्धान्त यदि कहीं हो सकता है तो केवल जैनियों के यहां ही हो सकता है। और सच यही है कि सिवाय जैनमत के और किसी धर्म में वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं है यद्यपि उसके नियमों पर प्रत्येक प्राचीन धर्म अवस्थित है। अस्तः यहां भी यह कहना कि जैनी हिन्दू सम्प्रदाय के कुपथगामी हैं नितान्त असत्य है।

जैन धर्म ही के सिद्धान्त चीन व जापान के धर्मों में मिलते हैं। जैनमत के ही सिद्धान्त पारसियों व यहूदियों के मतों में पाए जाते हैं। ईसाई मत के संस्थापक की वाणी कि मैं मार्ग, सत्य व जीवन हूं, जो इन्जील के नये अहदनामे में दी हुई है, जैनियों की बाईबिल अर्थात् तत्वार्थ सूत्र जी के पहले श्लोक का शाब्दिक अनुवाद है जो सिखाता है कि "सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः"। अब इन्जील के शब्दों का अनुवाद कीजिए तो-

मार्ग- सत्यमार्ग अर्थात् सम्यक् दर्शन

सत्य- सत्य ज्ञान अर्थात सम्यक् ज्ञान

जीवन- सत्य चारित्र अर्थात् सम्यक् चारित्र

इनके दो स्वरूप हैं एक व्यवहार व एक निश्चय जैसा हर जैनी पण्डित जानता है। व्यवहार सम्यक् दर्शन जिनेन्द्र कथित अर्थात् जैनमत के तत्वों में श्रद्धा रखना है। सम्यक् ज्ञान जैन धर्म में कहे हुए तत्वों का ज्ञान है और सम्यक् चारित्र गृहस्थ व साधु के नियमों पर जैन धर्म के कथनानुसार अमल करना है परन्तु यथार्थ स्वरूप में अर्थात् निश्चयनय के अपेक्षा स्वतः आत्मा ही स्वय सम्यक दर्शन, सम्यकज्ञान व सम्यकचरित्र रूप है कारण कि यह पदार्थ आत्मा में ही रह सकते हैं अन्य कहीं नहीं। इसलिये प्रत्येक आत्मा जो अपने स्वरूप में लीन हो जाती है इस बात के कहने का पूरा अधिकारी होता है कि मैं मार्ग, सत्य व जीवन हू। निश्चय व व्यवहार नयों को हम अंग्रेजी भाषा में और कह सकते हैं। सत्य बात यह है कि इन्जील और जैनमत के सिद्धांतों में बहुत पूरी समानता है। यद्यपि इन्जील के कथनों का जो अलंकार की गुप्त भाषा में लिखे हैं समझना सहज बातनहीं है। इसी जैन धर्म के तत्वों को आप मिश्र की ओयायरिस परस्ती में पायेंगे। यही जैन धर्म नींव है जिस पर बेबेलोनिया व सिरिया के प्राचीन मतों की स्थापना हुआ था। यही जैन धर्म यूनान की मनोरंजक देवमाला की जड़ है। यही अन्य सर्वदेशो में प्राचीन काल में किसी न किसी रूप में प्रचलित पाया जाता है। हिन्दुस्थान की सर्वप्रकार की देवमालाएं तो जैनासिद्धांत के नियमों के ही रूपक अलंकार है। अब आप शायद कुछ समझे होंगे कि जैन धर्म वास्तव में किस उच्चकोटि का मत है और उसका महत्व कैसा अद्वितीय है। यथार्थता यह है कि यदि कोई मत अपने यथार्थ भाव को समझना चाहे तो वह विदूर जैन धर्म की सहायता के नहीं समझ सकता। ऐसे पाक पवित्र परम पूज्य धर्म से खेद है कि हम लोगों ने भूतकालीन आट व नवासी वर्षों से न तो खुद ही पूरा फायदा उटाया और न दूसरे लोगों को ही फायदा उठाने दिया। हमने अपने सारे सिद्धान्त जमीनदोश तैखानों में बंद कर दिए और इस प्रकार छुपा डाले यह सच है कि समय और देश के प्रभाव और राज्य की जुल्म व ज्यादतियों के डर के कारण से भूतकाल में ऐसा होना आवश्यक था परन्तु क्या यहशोक की बात नहीं है कि अब बहुत से ग्रन्थ बिलकुल ही लुप्त हो गये हैं जैसे गंधिहस्ति महाभाष्य। इसी तरह नहीं मालूम और कितने ग्रन्थ नष्ट हो गए कि जिनके नाम का भी पता अब नहीं लगता है।

तो फिर तथा अब भी हम नहीं जागेंगे। क्या अपनी स्वतंत्रता के बदले हिन्दूकोड की इताअत (आधी नता) का डर भी हमको जागृत नहीं करेगा (भविष्यवाणी के अनुसार भी अभी पंचकमाल के अन्त तक धर्म और उपस्थित रहेगा। क्या आजकल के द्वारा बस लाख आज खुद गालिफ(स्वस्वप्त) कम हिम्मत जैनी इसको कायम रखेंगे। कदापि नहीं तो फिर इसकी विद्यमानता क्योंकर होगी। केवल एक ही मार्ग द्वारा अर्थात् आगामी अन्य देशों में और जातियों में जैन धर्म का प्रचार फैलेगा वरना वर्तमान में १२०००,०० जैनी तो जिस चाल से कम होते चले आए हैं तीस या चालीस साल में ही टाट व उलट देंगे।

महाराजा चन्द्रगुप्त के स्वप्नों के पूरे होने का समय भी अब आ गया है। आपके १६ स्वप्नों में से एक यह भी थे कि तालाब बीच में से सूखा है और उसके किनारों के आसपास पानी है। इसका अर्थ यही है कि जैनधर्म अब भारतवर्ष से उठ जायेगा और कम हो जावेगा और आसपास के देशों में फैल जायेगा। अतः हम लोगों को उचित है कि हम अपने धर्म की रक्षा करने व प्रचार करने में तन-मन-धन प्रयत्न करें। जाति की तरफ से एक साथ मिलकर कोशिश होनी चाहिए। व्यक्तिगत कोशिश पूरे तौर से नहीं होगी और न साधारण तौर से कारगर हो सकती है एक दफा दिल खोलकर रूपा लगा दिया जावे, फिर उसके सूद से ही काम चलता रहेगा। एक करोड़ रूपये का चंदा होना चाहिये। हर गांव या शहर में जनसंख्या के अनुसार परता लगा देना चाहिये। कोई ज्यादा देगा और कोई कम, मगर गांव का परता पूरा हो जाना चाहिये। ज्यादा हो जाये तो धन्यवाद। गांव का परता न फैले तो जिले का परता ठीक रहना चाहिये और नहीं तो प्रांत का परता जो जरूर ही कायम रहना चाहिये। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को धर्मलाभ में शिरकत का अवसर मिलेगा। और सहज ही में एक करोड़ रूपया जमा हो जायेगा इससे एक जैन यूनीवर्सिटी स्थापित की जानी चाहिये जिसमं एक चेयर (तुलनात्मक धर्मानर्णय) की होनी चाहिये। यहां जैन धर्म व अन्य धर्मों के तत्वों की तुलनात्मक शिक्षा मंडनरूप मिलेगी। सत्य का अन्वेष होगा और बैरभाव भीलोगों के हृदयों में से इसकी शिक्षा के प्रभाव से निकलते रहेंगे। अब शेष रूपये से एक जैन प्रेस खोला जावे जिसमें हिन्दी अंग्रेजी आदि की पुस्तकें छपती रहे और योग्य मनुष्यों को मुफ्त में या लागत के दाम पर ही जाया करें। आपको मालूम है कि अमेरिका के ईसाई मनुष्यों में करोडों रूपये इसी काम के लिये खर्च होता रहता है। संसार भर में मिथ्यात्मक घोर अंधेरा छाया हुआ है। क्या जैन जाति एक करोड़ रूपया भी इस काम के लिये नहीं इकट्टा कर सकेगी। क्या जैनी सत्य सिद्धांत को बैठे रहेंगे और मनुष्यों को मिथ्यात्व और पाखंडो में पड़कर दुर्गति को जाने देंगे। मैं नहीं मान सकता हूं कि जैनी जो एक चींटी व भुन्गे तक को कष्ट पहुंचाने के रवादार नहीं होते हैं ऐसे कठोर हृदय के हो जायेंगे कि मनुष्यों को दुर्गति में जाने दे। मैं उम्मीद करता हूं कि इस दफे हमारे सेसन के सम्पूर्ण होने के पहले हम इस अमर पर कोई योग्य प्रस्ताव अवश्य पास करेंगे और फौरन अमल भी करेंगे और जब प्रस्ताव जैन लॉ के प्रचलित करने व छपवाने पर पासहोना चाहिये। जैन लॉ के प्रचार की तरकीब यह है कि पहले पहल लॉ सम्बन्धी जैन पुस्तकों का संग्रह किया जावे। फिर उनको हिन्दी भाषा में छपवाया जावे और फिर एक कमेटी बुद्धिमानों को उनके विषय को शुद्धकर और अर्थ को ठीक लगाकर एक जैन लॉ की पुस्तक तैयार करे। अब इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया जावे। फिर जातिकी इस पर प्राप्त की जावे। जब तक यह सच हो जावे तब कौन्सिल में इस बात को पेश कर और पास कराया जावे। मुझे इस बात को मालूम करके हर्ष होता है कि इस वर्ष में दिल्ली में एक सोसायटी स्थापित हुई है जिसके सुपुर्द यह काम किया गया है कि जैन लॉ चालू की जावे।

अब मैं कुछ शब्द पंडित व बाबू पार्टियों के विषय में कहूंगा जिनकी निस्बत कुछ काल से आपस में छेड़छाड़ चली आती है। यह प्राकृतिक बात है कि पंडित महाशय व बाबू साहिब कापूरा पूरा मेल साधारणतया न इसके कारण दोनों की शिक्षा व बिना नितान्त विभिन्न नियमों पर होती है। एक पाठशालाओं में शिक्षा पाता है व एक जहां सब बाते पुरानी तरीके की अच्छी और बुरी ज्यों की त्यों पुरखों के समय से जैसी चली आई है वैसी ही अब भी है। दूसरा अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा पाता है जहां पर असली और आर्या (ऊपर की) बातों में फरक जान पड़ता है। और जहां समस्त संसार और देशों के ख्यालातात से विद्यार्थी को जानकारी हो जाती है परन्तु विशेषतया धर्म से के विचार तो अंग्रेजी स्कूल की शिक्षा से हो जाते हैं। इसमें बाबू साहब का खुद असर बहुत कम है। यह सब शिक्षा के क्रम का दोष है। कोई धर्म आजकल के पुद्‌गलवादी विज्ञान को शिक्षा के आगे नहीं पाता है कारण कि पुदगलवाद की शिक्षा कार्य कारण रूप में होती है जो बुद्धि को तत्क्षण पसन्द और स्वीकृत होती है। जैन धर्म के अतिरिक्त और सब धर्म ऐसे तौर पर लिखे गये हैं कि बुद्धि की रूचि उनकी और नहीं होती है। यहां पंडित महाशय भी लाचार है क्योंकि संस्कृत भाषा के प्रचलित भाषा न होने के कारण इनकी रसोई विज्ञान की पुस्तकें तक नहीं होती है और इसीलिये ठीक २ स्वतंत्र विचार का माहट, थोड़े ही पंडितों में पाया जाता है। इसी वजह से इनकावचन बाबू लोगों के दिन पर प्रभाव नहीं डाल पाता। यथार्थता यह है कि जैन धर्म के सिद्धांत पूर्णरूप से वैज्ञानिक है और फौरन बुद्धि को कबूल होते हैं बशर्ते कि उनको क्रम और नियम से पेश किया जावे। गत शताब्दियों में जो क्रम शिक्षा का रहा है वह करीब करीब वही है कि यदि कोई पूछे कि जैनधर्म क्या है तो झट उसके सर पर कुल का कुल सिद्धांत ६ द्रव्य ७ तत्व ५ पदार्थ ५ आस्तिकाय १४ गुणस्थान आदि एकदम खींच मारना भला बाबू लोगों को इससे कैसे संतोष हो वह तो पूछेंगे कि महाराजा तत्व ७ ही क्यों है ६ वा ८ क्यों नहीं। पदार्थ ६ के स्थान पर १० व ११ क्यों नहीं हो और चूंकि हर पंडित इसका जवाब नहीं दे सकता है इसलिये बाबू साहब को जैन धर्म में मामूली तौर से अश्रद्धा ही होती है। यही अश्रद्धा है जो उनके चरित्र में हर जगह पर घटित होती है जिसके बारे में उन पर दोष लगाया जाता है। थोड़े में यह है कि बाबू लोग तो पंडित जी के पाण्डित्य के कायल नहीं होते और उनको केवल लकीर का फकीर ही जानते हैं। और पंडित लोग इनके विश्वास में दोष निकाला करते हैं। इसकुल झगड़े की जड़ विद्या अर्थात् ज्ञान ही से कट सकती है। ज्ञान से ही पंडित जी के स्वतंत्र विचार बढ़ेंगे और उनके पाण्डित्य का प्रभाव बाबू साहब के दिल पर पड़ेगा और ज्ञान से ही बाबू साहब की अभिनय और अश्रद्धा दूर होगी। यू आपस में एक दूसरे में अवगुण निकालना रंज व लड़ाई का कारण हो सकता है परन्तु कभी मित्रता और मिलाप का नहीं। जो लोग दूसरे के दोष इसलिये निकालते हैं कि उनको दुड़ा दें तो उनको इस तरकीब से अमल करना चाहिये कि जिसके आपस में मित्रता व प्रेम बढ़ता रहे और वह तरकीब यह है कि उसका चाहिए कि हम दूसरों के गुणों का वर्णन करते रहे जिससे कि उनकी बुद्धि व पुष्टि होती रहे और दोषों के लिये उनको धिक्कारे नहीं बल्कि स्वयं अपने चरित्र को ऐसा शुद्ध व पवित्र बना दें कि वह हमारे उच्च आचरणों को देखकर दिल ही दिल में लज्जामान होकर अपने दोषों को निकाल डाले। इसके विपरीत नुक्ताचीनी से तो ऐसी छोटी सी जाति में जैसे जैन समाज केवल आपस की फूट व बैर भाव बढ़ेंगे। और अन्ततः धर्म की हानि होगी। और नियम यही है कि हमको अपने मित्रों को सदैव हिम्मत बढ़ानी चाहिये जिससे कि उनके गुण सदैव बढ़ते रहें। और दोषों की अपेक्षा यदि हम उनको जलील करना आरंभ कर दें तो वह हमारे शत्रु हो जाते हैं परन्तु यदि केवल हम अपनी चारित्री की पवित्रता से उनको लज्जायमान करें तो वह अपनी करतूर से वंचित होते हैं और उनको बुरा समझने लगते हैं और बस दुष्कृतियों को बुरा समझना ही है कि मानो वह छूट गये क्योंकि जिस कार्य को मनुष्य अपने हृदय से बुरा समझने लगता है उससे दिल में घृणाआरंभ हो जाती है और धीरे-धीरे एक दिन वह घृणा उसको फिर हमेशा के लिये छुड़ा देती है।

महासभा की प्रबंधकारिणी की देहली में बैठक

दिनांक २६ जुलाई १६२२ को भा.दि.जैन महासभा की प्रबंधकारिणी की मीटिंग लाला बैरिस्टर चम्पतराय जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। लाला चम्पतराय जी का महासभा के महामंत्री पद से दिये गये त्याग पत्र को सखेद स्वीकार करते हुए उनके स्थान पर अस्थायी रूप में पं० अमोलकचंद जी महामंत्री नियुक्त किये गये तथा सात सदस्यों का एक पैनल बना दिया गया जिसमें से स्थायी महामंत्री का चुनाव किया जायेगा।

भू भ्रमण भ्रांति

जैन समाज में और विशेषतः जैन पत्रों को पृथ्वी भ्रमण के बारे में बहुत चर्चा रहती थी। इसलिये पं० प्यारेलाल जी अलीगढ़ वालों ने बडे परिश्रम से भू भ्रमण भ्रांति पुस्तक लिखकर बहुत बड़ी कमी को पूरी कर दी लेखक ने पृथ्वी घूमती है उस सिद्धान्त का सपुक्तिक खण्डन किया है। भू-भ्रमण भ्रांति पुस्तक तीन भोगें में प्रकाशित हुई थी।

महासभा के नये महामंत्री

ला. भगवानदास जी के त्याग पत्र के पश्चात महासभा के महामंत्री पद के लिये सेठ चैनसुख जी छाबड़ा सिवनी ने स्वीकृति प्रदान कर दी। आपके महामंत्रित्व में नागपुर प्रांतीय खण्डेलवाल सभा का काम बड़ी ही उत्तमता से हो रहा था। कितने ही जातीय झगड़ों को निपटाने में आपका यथार्थ पूर्ण प्रयास सफल रहा। नागपुर में आपके उद्योग से विद्यालय सुसंचालित है।

दशहरे पर होने वाली जीव हिंसा बंद

महासभा ने अपने लखनऊ अधिवेशन में अपने एक प्रस्ताव में सकीर राज्यमें दशहरा पर होने वाली पशुबलि को बंद करने की प्रार्थना की गयी। सीकर नरेश ने बम्बई में सेठ गुरूमुख राय जी सुखानन्द जी की धर्म शाला का उद्‌घाटन करते समय दशहरा आदि किसी भी धर्म उत्सव दिनों एवं दिगम्बर जैनों के मुख्य पर्व दशलक्षण के दिनों में जीव हिंसा बंद करने की उद्‌घोषणा की। जीव हिंसा बन्द करने के लिये जगद्‌गुरू शंकराचार्य ने भारतीय कण्जी महाराज एवं महात्मा गांधी ने भी पत्र लिखे थे।

महात्मा गांधी का पत्र ✉

।सरसी में प्रति दो वर्ष में भूला भरता है। उसमें धर्म के नाम से हजारों निर्दोष बकरों का वध होता है, यह खबर मुझे मिली है। इस वर्ष ऐसा थोड़े दिनों में होने वाला है, ऐसा सुना है। मुझे तो एक जीव का वध चाहे जिस कारण से हो दुख होता है परन्तु धर्म के नाम से प्राणियों का वध हो यह असह्य है। हिन्दू धर्म में यह रिवाज बहुत दिनों से चली आती है यह मैं जानता हूं, परन्तु मेरा हिन्दू आत्मा मुझे सूचना करता है कि ऐसा प्राणीवध । धर्म नहीं है अधर्म है। मेरा इन शब्दों का असर अगर किसी भी हिन्दू पर

हो और वह इस अधर्म से बचे तो मैं राजी हूंगा।

पोष वदी ७ सं. १९७८- मोहनदास करमचंद गांधी जैन गजट २६ सितम्बर १९२२ पृष्ठ संख्या ९ (प्रकाशित)

२६वां वार्षिक अधिवेशन

महासभा के देहली अधिवेशन में देहली समाज में कुछ अधिक मनोमालिन्य रहा। कुछ सामाजिक समस्याओं को लेकर महासभा के ही कुछ व्यक्तियों ने भा.दि.जैन परिषद नाम से एक संस्था का और जन्म हुआ और इस प्रकार २६ वर्ष तक लगातार एकता के प्रयास होते रहने पर भी आखिर उग्रवादियों की विजय हुई और समाज फिर दो खेमों में बंट गई।

महासभा का २८वां वर्ष

लाला जम्बू प्रसाद जी का निधन

इस वर्ष महासभा के कट्टर समर्थक राय बहादुर सेठ मेवाराम जी खुराडा वालों का एवं ब्रह्मचारी ज्ञानानंद जी के स्वर्गवास से उत्पन्न शोक एवं दुख को नहीं भूल सके थे कि सहारनपुर के लाला जम्बूप्रसाद जी का सावन बदी ११ शुक्रवार ११ अगस्त १९२३ को दिन ११ बजे मात्र ४५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। लाला जम्बूप्रसाद जी का जीवन पूर्णतः ध ार्मिक था। दिन भर पूजापाठ किया करते थे। तीर्थराज सम्मेदशिखर जी की रक्षा के लिये ५० हजार दिये थे और आवश्यकता पड़ने पर अपनी पूरी स्टेट ही सम्मेदशिखर जी के लिये देने के लिये कह दिया था। भा.दि.जैन महासभा के आप विशेष अंग थे। आप तीन वर्ष तक लगातार महाविद्यालय के घाटे की पूर्ति करते रहे थे।

रतनपुर (विलासपुर सी.पी.) में प्राचीन जैन स्मारक

रतनपुर विलासपुर शहर में १६ मील पक्की सड़क का रास्ता है। रतनपुर करीब २००० आदमियों की बस्ती है। कुल जैन परिवार अकलतरा एवं भाटापारा में आकर रहने लगे हैं, जो रतनपुर से ३०-४० मील दूरी पर हैं। रतनपुर के श्री पन्नालालजी जैन अध्यापक श्री महावीर दि.जैन पाठशाला अकतरा ने निम्न वर्णन भेजा है-

१. गांव से करीब १ मील तक एक पहाड़िया पर लक्ष्मी देवी का एक मंदिर है। उस मंदिर में एक प्रतिमा पद्मासन प्रतिमा मामूली पहाड़ी पत्थर की।१ फुट ऊंची महावीर स्वामी की है। इनको सिन्दूर वगैरा चढ़ा था। कागज की मूछ वगैरह बना दी गई है और लक्ष्मीदेवी का भाई मानते हैं। इस मंदिर में बकरों की बलि भी दी जाती है। दीवाल में एक बीजक है जो चूना से छुपा होने से पढ़ने में नहीं आया प्रयत्न करने पर पढ़ा जा सका है।

२. प्रतिमा पद्मासन नीले पत्थर की सी श्री पार्श्वनाथ स्वामी की ढाई फुट ऊंची सर्प की फणावली सहित पक्की सड़क के एक पुल की परतिया में चिनी है, यह पुल गांव के बीच में है सड़क पी.डब्लू.डी. के मुहकमा को है विलासपुर के डिस्ट्रिकबोर्ड को लिखा पढ़ी करने पर निकाली जा सकती है इनकी लोग औरगपाट मानते हैं और सिर पर कोल्तरा चढ़ाते हैं

३. इसी पुल के दूसरे बाजू की पर दिया में श्री बाहुबलि स्वामी जी की मूर्ति करीब ३ फुट ऊंची खड्गासन है यह भी निकल सकती है।

४. एक रावत के घर की मिट्टी की दीवाल में श्री महावीर स्वामी जी की मूर्ति करीब ३ फुट ऊंची पद्मासन बड़ी मनोहर प्रतिमा-है यह रावत इनको माहुली देवता करके मानता है, सिन्दूर चढ़ा नारियल चढ़ाता है प्रयत्न करने पर यह भी हाथ आ सकती है।

५. प्रतिमा महामाया के तालाब के किनारे के चबूतरा पर रखी है। करीब ३ फुट ऊंची पद्मासन श्री चन्द्रप्रभु स्वामी जी की नीले पत्थर की यह प्रतिमा बहुत प्राचीन होने से उपांग खिर गये हैं जिस मंदिर के चबूतरे पर यह रखी है वह मंदिर प्राचीन कारीगरी का एक अद्भुत नमूना है, मंदिर की दीवालें झमक गई हैं इसी सरकार ने मरम्मत कराई है। ऊपर लिखी प्रतिमा तथा दो खंडित प्रतिमा इस प्रकार तीन प्रतिमाएं मंदिर के भीतर रखी थी पर मरम्मत के लिऐ बाहर निकाली गई थी- अब मंदिर के भीतर महादेव जी की मूर्ति है।

इसके सिवाय महामाया का यहां का प्रसिद्ध मंदिर भी जैनियों का बनाया हुआ है क्योंकि मंदिर के चार तरफ चार खम्भों में जैन प्रतिमाएं खुदी हुई है तथा मंदिर के दरवाजे की बाजू में भी ३ बड़ी व २ प्रतिमाएं करीब १ फुट ऊंची और बीच में ४ छोटी २ करीब १/२ फुट ऊंची प्रतिमाएं खुदी है मंदिर के शिखर में भी प्रतिमाएं खुदी हुई है।

मंदिर की दिवाल में २ और बीजक है जो १६०० की शताब्दी के हैं। प्रायः शाम हो गई थी और इससे ठीक २ पढे नहीं जा सके पर सरसरी नजर रखने पर जैन शब्द नजर नहीं आया इस मंदिर के अहाते में भी दो जैन प्रतिमाएं हैं जो अखंडित मालूम होती है। इस मंदिर में भी बकरे चढ़ाये जाते हैं। इसके सिवाय बहुत सी खंडित मूर्ति भी मिली हम लोग सिर्फ एक दिन ठहरे थे। अधिक खोज करने पर और भी शायद प्राचीन जैन चिन्ह नजर आयेंगे। प्रतिमाओं पर लेखक का एक अक्षर भी नहीं है समाज को चाहिये कि उक्त प्रतिमाएं जो बड़ी अविनय में है प्राप्त करने की कोशिश करें। इस विषय में जो महाय आज्ञा भेजेंगे यथाशक्ति पालन करने की कोशिश करूंगा।

ब्यावर में २८वां वार्षिक अधिवेशन रीति नीति सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रस्ताव

महासभाई नेताओं मुख्यतः पं. धन्नालाल जी, सेठ सुखानंद जी एव मा. माणकचंद जी से विशेष प्रयास से बम्बई महानगर में महासभा का २८वां वार्षिक अधिवेशन अजमेर के रायबहादुर सेठ टीकमचंद जी सोनी के सभापतित्व में २५ दिसम्बर से २७ दिसम्बर सन! १९२३ को सम्पन्न हुई। यह अधिवेशन महासभा के देहली में विघटन के बाद हुआ था इसलिये सदस्यों में विशेष उत्साह दिखाई देता था। देहली जैन समाज के आदेशानुसार वहां महासभा के लिये कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई इसलिये महासभा को अपनीपूरी गतिविधियां चलाने में बड़ी कठिनाई हुई। इस पर पं धन्नालाल जी से आर्थिक समस्या को हल करने के लिये अनुरोध किया गया।

नांदगांव में जब बम्बई प्रान्तीय सभा का वार्षिक अधिवेशन था वहां जाकर कुछ सहायता प्राप्त की गयी। गजट का प्रकाशन भी देहली से इटावा लाया गया और जिसका प्रकाशन का भार न्यायालंकार पं० मक्खनलाल जी पर डाला गया।

कलकत्ता में जाने के पश्चात जैन गजट के साप्ताहिक एव दैनिक में दो संस्कारण निकलने लगे जिससे समाज में और भी सम्पर्क बढ गया। वार्षिक अधिवेशन में सभी विभागों की रिपोर्ट पढ़कर सुनायी। उपदेशकों के दौर चलते रहते थे। पं. सुमतिचन्द जी शास्त्री तो राजस्थान के करीब ६४गा एवं मध्यप्रदेश महाराष्ट्र के ८२ ग्रामों एवं नगरों का दौरा किया। सार्वजनिक सभाएं की गयी और सामाजिक सुधार के विभिन्न विषयों पर भाषण हुए।

इसी प्रकार दूसरे उपदेशक ने भी देश के विभिन्न नगरों में भ्रमण किया।

वार्षिक अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बम्बई के सेठ सुखानन्द जी थे जिनका लिखित भाषण सेठ जम्गीमल जी ने पढ़ा। अधिवेशन में २१ प्रस्ताव पास किये गये। देहली अधिवेशन के पश्चात लाला जम्बूप्रसाद जी व ज्ञानानंद जी, सेठ सखाराम नेमीचंद जी सेठ मेवाराम जी के निधन को समाज को गहरी क्षति बतलाया। उनकी आत्मा को शांतिलाभ की कामना की गयी एवं दूसरे प्रस्ताव द्वारा श्री महावीर तीर्थक्षेत्र के विषय में जयपुर पंचायत एवं भट्टारक जी के परस्पर चलते हुए झगड़े को देखकर महाराजा जयपुर से एक डैपूटेशन मिलने के लिये पांच महासभाइयों की डेपूटेशन समिति बनायी गई, महासभा का इतिहास तैयार करवाने, श्री केशरिया अतिशय क्षेत्र या श्वेतांबरियों द्वारा अनुचित कार्यवाही के विरोध में ११ सभासदों का डेपूटेशन भेजने, श्री अतिशय क्षेत्र अन्तरीय पार्श्वनाथ के नागपुर के हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफत में अपील करने, जैसे लॉ बनाने के लिये नयी कमेटी का गटन, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग एवं विदेशी वस्त्रों को मंदिरों में कम काम लाने तथा सामाजिक पत्रों को वर्ण जातियों के सम्बन्ध में कोई आन्दोलन नहीं करने जैसे प्रस्तावों को पास किया गया।

सदस्यता के लिये नया प्रतिज्ञा-पत्र फार्म

महासभा के सभी पुराने एवं नये बनने वाले सदस्यों के लिये विधवा विवाह, जातिपांति का लोप, वर्ण व्यवस्था लोप आदि के प्रचार के विरोध स्वरूप महासभा ने सदस्यता फार्म में "मैं आगम विरूद्ध विचारों से सर्वथा सहमत नहीं हूं" ऐसा प्रतिज्ञा वाक्य नियत रहना आवश्यक बतलाया तथा इसी तरह आगम शब्द नियमावली में भी जोडा जावे ऐसा निर्णय लिया जावे। इस प्रस्ताव नं० १६ के प्रस्तावक प. मक्खनलाल जी कलकत्ता, समर्थक पं नन्दनलाल जी जैन एवं अनुमोदक पं. नन्दलाल जी शास्त्री जयपुर थे। इसी तरह इस प्रस्ताव द्वारा बाबू जुगलकिशोर जी मुख्तार द्वारा लिखी हुई "शास्त्रीय शिक्षायक उदाहरण" नामक पुस्तक को आगम विरूद्ध होने के कारण उसको अप्रमाणिक मानते हुए उसका सामाजिक बहिष्कार किया गया।

इसी तरह अपने एक प्रस्ताव द्वारा ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी को धर्म विरूद्ध बातें न लिखने का सलाह दी गयी तथा उन्हे विधवा विवाह का खण्डन करने के लिये एक महीने का समय दिया गया। यदि वे अपने लेखन के शब्दों को वापिस नहीं लेते हैं तो उन्हें भविष्य में ब्रह्मचारी भी नहीं लिखा जावे ऐसा निर्णय लिया है।

इस प्रकार ब्यावर का वह नैमित्तिक अधिवेशन में महासभा की रीति नीति निर्धारण के लिये महत्वपूर्ण कार्य किया।

जैन गजट के सम्पादक में परिवर्तन

पं० खूबचंद जी शास्त्री द्वारा जैन गजट के सम्पादक पद से तयागपत्र ४१वे वार्षिक अधिवेशन में स्वीकृत हुआ और साथ यह भी निश्चय किया गया कि भविष्य में जैन गजट के पं० मक्खनलाल जी शास्त्री एवं पं. सुमेरचंद जी दिवाकर दोनों मिलकर जैन गजट का सम्पादन करेंगे ऐसा निर्णय लिया गया। एक और जहां पं. मक्खनलाल जी पुरानी विचारधारा क पंडित थे वहीं पं. सुमेरचंद जी दिवाकर सिवनी कुछ कुछ सुधारवादी के रूप में पहचाने जाते थे, लेकिन यहां यह उल्लेखनीय है कि **पं. सुमेरचंद जी जैन** गजट के सम्पादक का कार्य एक वर्ष से अधिक नहीं कर सके और उनका त्याग पत्र स्वीकार करके वे सम्पादक के उत्तरदायित्व से मुक्त कर दिये गये।

४२वा ४३वां वर्ष (१९३७-३८)

महासभा का ४२वें व ४३वें दोनों वर्षों का एक ही वार्षिक अधिवेशन देवगढ़ क्षेत्र पर आयोजित हुआ। इस द्विवार्षिक अधिवेशन के सभापति पद पर श्री सेठ हुकमचंद जी कासलीवाल इन्दौर वालों को अलंकृत किया गया। यद्यपि गत वर्ष को परगांव से महासभा को अपना अधिवेशन करने के लिये निमंत्रण प्राप्त हुआ था लेकिन बाद में उन्होंने अधिवेशन कराने में अपनी असमर्थता प्रकट की इसलिये वह अधिवेशन नहीं हो सका और ४२-४३ वां सम्मिलित अधिवेशन कहलाया।

इस द्विवार्षिक अधिवेशन सभापति पद को सर सेठ हुकमचंद जी कासलीवाल ने अलंकृत किया। समाज के सभी प्रमुख महासभाईयों ने सेठ साहब को तार एवं पत्र भेजकर सभापति बनने का अनुरोध किया था। संघपति सेठ पूनमचंद जी घासीलाल जी जौहरी बम्बई, श्री वैद्य पं. छोटेलाल जी शास्त्री रतलाम, सेठ बापूलाल जी चौधरी प्रतापगढ़, सेठ केसरीमल जी जावारा वाले, सेठ कुंअर लाल जी कासलीवाल मल्हारगंज का एक डैपटेशन सर सेट सा. से सभापति पद स्वीकार करने का अनुरोध किया गया। फिर समाज ने एक स्वर से सर सेठ सा. के प्रति निम्न शब्दों में बहुमत प्रस्तुत किया .

आपका व्यक्तित्व महान है, आप राजमान्य, लोक मान्य एवं समाज मान्य हैं। सारे समाज को आप पर गौरव है। जैन समाज प्रत्येक व्यक्ति छोटा हो या बड़ा सबही आपकी दानवीरता, उदारता और धर्म तत्परता से पूर्ण परिचित हैं। आप जैसे प्रभावशाली योग्य और अनुभवी व्यक्ति का सभापति होना महासभा के लिये गौरव की बात है। आपके सभापतित्व में यह अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा और आपके द्वारा आगामी महासभा का कार्य भली प्रकार चलेगा और उन्नति होगी, ऐसी आशा है।

रा सा. सेट चैनसुख जी छाबड़ा महामंत्री सिवनी का ३.९.१९३७ को आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने से महासभा का प्रबध विभाग गड़बड़ा गया। श्री चैनसुख छाबड़ा महासभा के १६ वर्ष तक महामत्री रहे महासभा और आप एकप्राण होकर रहे लेकि अचानक हार्ट फेल हो जाने के कारण दो मिनट में अनन्त आकाश की ओर चले गये। आपने जिस लगन एवं निष्ठा से महासभा की सेवा की उसके लिये श्री छाबड़ा जी के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगी।

हैदराबाद स्टेट द्वारा दि.जैन मुनिविहार पर प्रतिधि लगाया गया था। इस प्रतिबंध को हटाये जाने की कार्यवाही की गयी, गजटों में आन्दोलन किया गया, निजाम सरकार को तार वगैरह दिये गये इस कारण प्रतिबंधतो हटा लिया गया। अन्य प्रमुख निम्न प्रकार सम्पन्न हुए-

गोमटेश्वर की मूर्ति पर चिट्टे पड़ जाने पर उनको ठीक कराने के लिये मैसूर सरकार को लिखा गया। सी पी धारा सभा में असपृश्यता निवारण का बिल विशेष विरोध होने के कारण बिल रद्द हो गया इसमें महासभा को बहुत बल मिला।

जोबनेर के जैन विद्यालय को राज्य कर्मचारियों द्वारा बन्द करा दिया गया था लेकिन जयपुर महाराजा के पत्र व्यवहार करके विद्यालय को वापिस चालू करा दिया गया। इसी तरह भादवा (जयपुर) एवं इलाहाबाद में जो रथयात्रा रोक दी गयी थी उसकी कार्यवाही भी की गयी। इसी तरह ककुडची और हैदराबाद को मुनि विहार पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उसके संबंध में भी कार्यवाही की गयी।

देवगढ़ अधिवेशन में सभापति, स्वागताध्यक्ष क भाषणों के एवं सभापति महोदय के गुणगानों के पश्चात १७ प्रस्ताव पास किये गये। एक प्रस्ताव द्वारा जैन धर्म को स्वतंत्र धर्म बताते हुए हिन्दू समाज के लिये किसी नियम को बनाते समय यह नियम जैन समाज पर लागू नहीं होगा ऐसी नियम बना दिया जावे। इस संबंध में भारत सरकार एवं प्रांतीय सरकारों को निवेदन किया गया।

आचार्य सुधर्मसगर जी महाराज, मुनि शुभचन्द जी, क्षुल्लक वीरसागर जी एवं क्षुल्लक शिवभूति महाराज के महाप्रयाण पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। मुनि शुभचन्द जी एव क्षुल्लक वीरसागर जी एवं शिवभूति जी ने आरा नगर में अग्निकृत घोर उपमार्ग से बड़ी शांति से सहनकर एक आदर्श उपस्थित किया।

४४वें से ४९वें वर्ष तक (१९३९-१९४४ तक) महासभा की शिथिलता

देवगढ़ में ४३ वें वार्षिक अधिवेशन होने के पश्चात महासभा का समाज में कुछ प्रभाव कम हो गया। देवगढ़ में महासभा के सभापति सर सेठ हुकमचंद जी इन्दौर वाले थे। इसके पश्चात एक एक वर्ष निकलता गया और सिंी के यहां से निमंत्रण नहीं मिला। सर सेठ सा. महासभा के संरक्षक तो बन गये लेकिन वे भी क्रियाशील नहीं रहे। सन् १९३९ से सन् १९४४ तक देश में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। महायुद्ध की विभीषिकाएं देश पर मंडराने लगीं। कांग्रेस का भारत छोड़ो आंदोलन भी इसी अवधि में जोरों पर रहा। इसलिये सामाजिक अधिवेशनों के आयोजनों पर जनता का ध्यान कम हो गया। समाज में भी महासभा और परिषद के मध्य एक प्रकार शीतयुद्ध चल रहा था। इसलिये समाज भी महासभा की ओर से कुछ कुछ उदासीन होने लगी थी। जिस महासभा के प्रतिवर्ष अधिवेशन होते रहते थे उसी महासथा का वार्षिक अधिवेशन होने में ५ वर्ष निकल जाना अवश्य चिन्तनीय विषय था। लेकिन यह भी सही है कि सन् १९४२ के पश्चात आंदोलन के लोगों में सामाजिक क्षेत्र में अभिरूचि स्वतः कम होने लगी थी। लेकिन अपने शैथिल्य के बावजूद महासभा द्वारा कुछ उल्लेखनीय कार्य किये गये-

१. कारकल में श्री दि.जैन मंदिर के पास अनकेरे तालाब में मछलियों को पकड़ लेना घोर विरोध करके तालाब पर हिंसाबन्दी का यह लिखने में सफलता प्राप्त की।

२. श्री गोम्मटेश्वर संरक्षिणी कमेटी में चार नाम और जोड़ने की स्वीकृति दी गयी इसमें श्री आर वल्लाल सा. एवं सेठ रतनचंद जेवरी के नाम उल्लेखनीय हैं।

३. जैन गजट का प्रकाशन कलकत्ता से होने की स्वीकृति प्रदान की गयी।

४. महासभा के कार्य से नाराज होकर धर्मरत्न पं. लाला जी शास्त्री मैनपुरी, न्यायालंकार पं. मक्खनलाल जी शास्त्री मोरेना, सेठ हीरालाल जी कासलीवाल इन्दौर, सेठ तनसुखलाल जी शर्मा आदि सदस्यों के त्यागपत्र प्राप्त हुए लेकिन उन सबकी सेवओं की आवश्यकता समझते हुए त्यागपत्र वापिस लौटा दिये गये।

५. २४ दिसम्बर सन् १९४१ को नातेपूले (शोलपुर) में आचार्य शांतिसागर जी महाराज पर वहां के कुछ धर्मांध व्यक्तियों द्वारा उपसर्ग हुआ, उनके विहार में रुकावट डाली गयी, उससे समाज में बहुत बड़ी चिन्ता व्याप्त हो गयी। महासभा ने इस घृणित कार्य पर घोर दुख प्रकट किया तथा इस घटना को अथवा घृणित कार्य को जैन समाज का अपमान समझते हुए बम्बई प्रान्तीय सरकार से अनुरोध किया कि उदण्ड अपराधियों को घोर दण्ड देवे, धार्मिक सद्भाव कायम करने एवं समस्त जैन समाज को समुचित एवं निष्पक्ष न्याय प्राप्त हो। इसके साथ यह भी निर्णय लिया गया कि नाते पूते के लिये किसी अच्छे बैरिस्टर को नियुक्त किया जावे।

इसके साथ ही इन्दौर में महासभा प्रेस को बन्द होने के कारण उसे उपयुक्त मूल्य पर बेचने का निर्णय लिया गया।

महासभा के महामंत्री पद पर श्री परसादीलाल जी पाटनी को मनोनयन किया गया तथा पं. सुमेरचंद जी दिवाकर न्यायतीर्थ का जैन गजट के संयुक्त सम्पादक के पद से सखेद त्यागपत्र स्वीकार किया गया।

उक्त सभी प्रस्ताव महासभा की कार्यकारिणी समिति के अधिवेशनों में पास होते रहे।

वर्ष सन् १९४४ में महासभा का ४९वां वार्षिक अधिवेशन उज्जैन में आयोजित किया गया जिसके सभापति का पद सर सेठ भागचंद जी सोनी ने अलंकृत कियां इस पांच वर्षों में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी, मुनि पदमसागर जी, मुनि सुधर्मसागर जी, मुनि श्री श्रुतसागर जी आदि पूज्य आत्माओं ने स्वर्गारोहण पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इन पांच वर्षों में महासभा के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों के निधन से समाज में रिक्तता अनुभव की गयी उनमें बैरिस्टर चम्पतराय जी, जाति भूषण लाला भगवानदास जी बड़नगर, सेठ चैनसुख जी पांड्या कलकत्ता, पं. नरसिंहदास जी चावली, पं. भगवतस्वरूप जी भगवत जैसे नाम भी हैं। ये सभी समाज के एवं महासभा के कट्टर समर्थक एवं कार्यकर्ता थे। एक प्रस्ताव द्वारा महासभा ने राव कमेटी ने हिन्दू कोड के सुधार के लिये जो प्रारूप तैयार किया है जैन महासभा उसकी बहुत सी बातों से असहमत है। महासभा ने उसमें सुधार के लिये रा.बा.राजकुमार सिंह जी इन्दौर, बाबू जौहरीलाल जी मित्तल इन्दौर, इन्दौरीलाल जी वर्मा वकील इन्दौर एवं पं. बंशीधर जी शास्त्री इन्दौर की समिति का गठन किया गया। पछार जिला गुना में विमान निकालने पर प्रतिबंध लगाया गया था, उसे वापिस नहीं लिया गया इसलिये समिति ने जुलूस निकालने के प्रतिबंध को हटाने की आज्ञा प्राप्त करने हेतु एक समिति का गठन किया गया। अधिवेशन में ही १०१ सदस्यों को महासभा की प्रबंधकारिणी गठित की गयी।

सन् १९४६ में देश को आजाद हुए २ वर्ष हो चुके थे। भारत का नव निर्माण होने लगा था उसमें जैन समाज का भी सम्मानीय स्थान रहे यह सभी सदसें की हार्दिक इच्छा थी। समाज में भी मतैक्य नहीं था इसलिये उसकी मजबूत आवाज उठे यह सबकी इच्छा थी। इसलिये समाज में एकता लाने के प्रयत्न करने के लिये तीन सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया जो समाज के महत्वपूर्ण अंगों एवं संस्थानों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित कर इस दिशा में यथावसर प्रयत्न करे। इस समिति ने रा०बा०सेठ हीरालाल जी कासलीवाल इन्दौर, सेठ लालचंद जी सेठी उज्जैन एवं पं. देवकीनंदन जी शास्त्री कारंजा सदस्य मनोनीत किये गये। इनके अतिरिक्त महासभा के सभापति इसके पदेन सदस्य होंगे तथा श्री जैनेन्द्र जी का भी यथासंभव सहयोग किया जावेगा।

इस अवसर पर कोल्हापुर स्टेट द्वारा स्थावर और जंगम मिल्कियत को अपने अधिकार में लेकर अपनी योजना के अनुसार उन पर खर्च करने के नियमों का महासभा ने घेर विरोध किया और जैन समाज के स्वत्वों की रक्षा

के पि पूरे प्रयास करने के हेतु कार्यकर्ताओं को आदेश दिया। महासभा ने विभिन्न जैन जातियों की स्थिति, विवाद एवं संख्या की जानकारी प्राप्त करने के लिये एक डाइरेक्टरी निर्माण करने का निर्णय लिया गया जिसकी व्यवस्था करने के लिये रा.बा. हीरालाल जी इन्दौर से निवेदन किया गया।

५०वां वर्ष (सन् १९४५)

उज्जैन अधिवेशन के पश्चात महासभा की रीति-नीति में पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देने लगा। प्रति वर्ष वार्षिक अधिवेशन का आयोजन करने के स्थान पर प्रबंधकारिणी मीटिंग में प्रस्ताव करना ही पर्याप्त मान लिया गया। साथ ही में परोक्ष प्रस्ताव द्वारा आय-व्यय का हिसाब स्वीकृत कराने की परम्परा को बहुत बल मिला। दिनांक १३ जनवरी सन् १९४५ को परोक्ष प्रस्ताव सं. ६ द्वारा बजट की स्वीकृति प्राप्त कर ली गयी तथा आय-व्यय की जांच के लिये आडिटर को नियुक्त करके हिसाब पास करा लिया गया। उक्त कार्यावाही के अतिरिक्त वर्ष भर में महासभा की कोई अन्य कार्यवाही सम्पन्न नहीं हो सकी। इस कार्यवाही से समाज का महासभा के प्रति लगाव कम होने लगा। महासभा इन्दौर, अजमेर, उज्जैन के श्रीमान्तों के पाकेट की संस्था बनने की ओर बढ़ने लगी।

तृतीय अध्याय

महासभा के ५१ से ७५ वर्ष का काल

महात्मा गांधी के निधन पर शोक प्रस्ताव

सीकर में १६.३.४८ को आयोजित एक मीटिंग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निधन पर हार्दिक दुःख और शोक प्रकट किया। उनके निधन को राष्ट्र के लिये महान क्षति होना स्वीकार किया गया तथा स्वर्गीय आत्मा को शांति लाभ की कामना की गयी।

जैन गजट के लिये नये सम्पादक

जैन गजट के सम्पादन के कार्य से बंशीधर जी शास्त्री सोलापुर का सखेद त्यागपत्र स्वीकार किया गया तथा उसके स्थान पर पं० इन्द्रलाल जी शास्त्री जयपुर को सम्पादक नियुक्त किया गया।

पवतमाल (महाराष्ट्र) में हिन्दू मंदिरों पर लगाई गई जैनों की रोक की पूरी जांच के लिये सेट बैजनाथ जी सरावगी कलकत्ता एवं पं० इन्द्रनाथ जी शास्त्री की एक दो सदस्यीय कमेटी का गठन करके पूरी रिपोर्ट प्राप्त करने का निर्देश दिया गया।

संघपति सेठ घासीरलाल जौहरी का निधन

६ नवम्बर १९४८ को अपने जन्म स्थान प्रतापगढ़ में संघपति सेठ घासीलाल जी चौहरी का निधन हो गया। आपने शिखर जी की यात्रार्थ आचार्य श्री शान्तीसागर जी महाराज (दक्षिण) समक्ष समेद शिखर जी की यात्रा करवायी वहीं आचार्य श्री संघ सहित जब शिखरजी पहुंचे आपका वहां १ लाख जनता ने स्वागत किया। आपने यहां वृहद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न करायी। उस समय आपको एवं आपके तीनों पुत्रों को एवं आप स्वयं को महासभा की ओर से पं. संघभक्त शिरोमणि मानद उपाधि से समलंकृत किया। बम्बई में भी आपने मंदिर का निर्माण करवाया। आप महासभा के प्रति समर्पित थे।

❀ राष्ट्रपति का सम्मान ❀

राष्ट्रपति डा० पटआभि सीताभि रमैय्या को जैन समाज देहली की ओर से कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन के पश्चात अभिनंदन पत्र देकर उन्हें सादर सम्मानित किया गया।

हैदराबाद में जैन जुलूस पर पत्थर फेंकना

१८ सितमबर सन् १९४६ को हैदराबाद में जैन जुलूस पर मुसलमानों ने पत्थर आदि फेंके जिससे जैन समाज में काफी क्षोभ फैल गया महासभा के संरक्षक, सभापति एवं महामंत्री ने तार आदि भेजकर आवश्यक कार्यवाही की।

हरिजन मंदिर प्रवेश बिल का घोर विरोध

बम्बई प्रान्त ने एक हरिजन मन्दिर प्रवेश बिल नं० ३५ सन १९४७ पास करके हरिजनों को सभी मन्दिरों में प्रवेश करने का अधिकार दे दिया। इससे जैन समाज में घोर विरोध हुआ। उसे विरोधी बिल बताया गया। महासभा ने २६ अगस्त ४८ को बम्बई में प्रबन्धकारिणी और जैन समाज के प्रमुख नेताओं की एक मीटिंग बुलाई जिसकी अध्यक्षता सा. सेट भागचंद ने सोनी ने की। इस मीटिंग में बम्बई प्रान्त में हरिजन मंदिर के प्रवेश बारे में आगम सम्मत कार्यवाही करने के लिये ३३ महानुभावों की एक अस्थायी समिति की नियुक्ति की गई जो सम्पूर्ण परिस्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके आवश्यक कार्यवही करेगी। इसी के साथ १० महानुभावों का एक डेंपूटेशन कमेटी का गठन किया गया तथा कानूनी सलाह के लिये श्रीमान रतनचंद जी चुन्नीलाल जी बम्बई रा.ब. राजकुमार सिंह इन्दौर तलबच्नद जी वकील फल्टन तथा पं० सुमेरचन्द जी सिवनी की एक समिति का गठन किया गया जिसके लिये आवश्यक बजट भी पास किया गया।

इस हरिजन मन्दिर प्रवेश बिल के विरोध में पूज्य आचार्य शान्तिसागर जी महाराज ने पिछले सितम्बर १९४७ से अन्न त्याग कर दिया। इससे पूवे देश के जैन समाज में चिन्ता व्याप्त हो गयी। मीटिंग होने लगी एवं तार टेलीफोन दिये जाने लगे। प्रस्ताव पास होने लगे। महासभा ने इसमें अपना सक्रिय योगदान दिया तथा बम्बई, देहली आदि नगरों में मीटिंग्स करके वातावरण को अपने अनुकूल बनाया। बम्बई के पश्चात १८ मार्च सन् १९४६ में देहली में प्रबंधकारिणी की मीटिंग में बिल पर गंभीर चिन्तन किया गया। प्रधानमंत्री एवं उप प्रधानमंत्री ने डेपूटेशन मिलने का निर्णय लिया गया। इसके पश्चात ३० जुलाई सन! २९४६ को फिर अजमेर में मीटिंग आयोजित की गई जिसमें आचार्य शांतिसागर जी महाराज का स्वास्थ्य समय गिरता हुआ देखकर हार्दिक चिन्ता प्रकट की गयी। आचार्य श्री का आदेश बम्बई सरकार को कानूनी नोटिस देने का था लेकिन बम्बई के प्रधानमंत्री खेर साहब ने आश्वासन के बाद एक समिति का गठन किया गया जो इस विषय में आगे कार्यवाही करेगी। इसके अतिरिक्त ४ अगस्त ४६ को देशभर में हरिजन मंदिर प्रवेश विरोध दिवस मनाने की अपील निकाली गयी और आचार्य श्री को पूरी स्थिति से अवगत कराने का निर्णय लिया गया।

उक्त कार्यवाही के पश्चात २१ सितम्बर १९४६ को कलकत्ता (महाराष्ट्र) में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के सानिध्य में हरिजन मंदिर प्रवेश

बिल के बारे में फिर विचार विमर्श हुआ। इसके पश्चात आचार्य श्री ने कहा कि लौकिक व्यवहार से स्पर्शास्पर्श शास्त्रानुकूल है यह हम नहीं मानते। किन्तु दण्ड विधान मौजून है। प्रायश्चित स्नान आदि की आज्ञा है। समय के माफिक हमारा विरोध लौकिक बातों में नहीं चलता किन्तु प्रायश्चित विधान मौजूद है। मन्दिर कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान का स्थान है। कषाय मिटाकर धर्म में समय बिताना चाहिये। धर्म पर संकट है इसलिये हम विरोध कर रहे हैं क्योंकि धर्मातन है।

इसके पश्चात सेठ रतनचंद जी बम्बई के भेजे गये पत्र के उत्तर में खेर मा० का जो तलासे से मिलने का उत्तर आया इसलिये ६ व्यक्तियों को एक डेपूटैशन का गठन किया गया जिसमें सर सेठ भागचंद जी सोनी, रा०बा० राजकुमार सिंह जी, लाला परसादीलाल जी पाटनी, रतनलाल जी हीराचन्द जी बम्बई, पं० सुमेरचन्द जी दिवाकर, पं० राजेन्द्र कुमार जी न्यायतीर्थ मथुरा। इस डेपूटेशन द्वारा निम्न विषय लिये गये-

१. जो जिस धर्म को अनुयायी हो वही उसके मन्दिर में जाने का अधिकार है।

२. मन्दिर प्रवेश बिल से जैनों को मुक्त किया जावे।

इस अवसर पर यह भी निर्णय किया गया कि जैन धर्म हिन्दू धर्म से भिन्न स्वतंत्र धर्म है। इसने प्रमाणों को लेख के माध्यम से तैयार कियाजावे तथा जिसका संकलन करके एक मैमोरेण्डम तैयार किया जावे। निम्न विद्वानों से लेख मागे कये-

(१) पं. मक्खनलाल जी शास्त्री मोरैना, (२)पं० कैलाशचंद जी शास्त्री वाराणमी (३) पं. जगमोहन लाल जी शास्त्री (४) पं० सुमेरचन्द जी दिवाकर सिवनी (५) पं० बंशीधर जी शास्त्री इन्दौर (६) पं. इन्द्रलाल जी शास्त्री जयपुर (७) पं० राजेन्द्र कुमार जी न्यायतीर्थ देहली (८) पं० वर्धमान जी शास्त्री (९) पं० तनसुखलाल जी काला (१०) पं० खूबचंद जी शास्त्री बम्बई (११) पं० श्री मोतीलाल जी कोठारी बम्बई।

महासभा की दक्षिण महाराष्ट्र सभा ने ११.६.४६ को बम्बई सरकार द्वारा पास किये गये हरिजन मन्दिर प्रवेश एक्ट के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास किया था उसका भी महासभा को विरोध करना पड़ा।

इसके पश्चात २६ मार्च सन् १९५० को अजमेर में आयोजित महासभा की प्रबंधकारिणी कमेटी ने एक प्रस्ताव द्वारा बम्बई मन्दिर प्रवेश कानून के सम्बन्ध में अब तक की कार्यवाही पर प्रकाश डाला और प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू जी के पत्र पर भी विचर किया गया। इस संबंध में यह निर्णय लिया गया कि भारतीय संविधान की धार्मक स्वतंत्रता संबंधी धारा २५ तथा तत्संबंधी अन्य धाराओं पर विधान विशेषज्ञों की लिखित सलाह ली जावे।

मंदिर प्रवेश और जेनेतर

जैन मंदिरों पर जैनेतर अपना स्वत्य स्थापित करने के लिये अनेक प्रकार के यत्न करते रहते हैं। पिछले ६ सालों में दिल्ली, मध्य भारत, राजस्थान और उत्तरी उत्तर प्रदेश के कुछ शहरों में इसके लिये संगठित प्रयत्न किया गया। कुछ भाईयों ने जो अपने को अगुवा कहते हैं, यह झूठा प्रचार किया कि जैन मंदिर हरिजनों के लिये खोल दिये गए हैं। यहां तक कि महामंत्री के नाम से हिन्दुस्तान टाइम्स में एक जाली पत्र भी इस संबंध में छपवाया गया। इस आंदोलन का उत्तर देने के लिये महासभा के कार्यालय को कितना सतर्क, सक्रिय और जागरूक रहना पड़ा होगा इसकी सहज में कल्पना की जा सकती है।

आरंभ से ही महासभा का यह स्पष्ट दृष्टिकोण रहा है कि जैन समाज में कोई हरिजन नहीं है, अतः जैन समाज के सामने हरिजनों के मंदिर प्रवेश की समस्या ही नहीं है। इस अवस्था में जैनेतरों द्वारा मंदिर के प्रबंधकों की अनुमति व इच्छा के बिना जैन मंदिरों में प्रवेश पाने का यत्न करना या उसके लिए आंदोलन करना अवैध है, गैर कानूनी है।

भारत की राजधानी दिल्ली तक में प्रसिद्ध जैन 'लाल मंदिर' में दिल्ली विधानसभा की मंत्रणी डा० सुशीला नायर के नेतृत्व में प्रवेश करने का यत्न किया गया। यह प्रयत्न एक निश्चित योजना का परिणाम था क्योंकि चीफ कमिश्नर द्वारा मामला सुलझा देने पर भी, कुछ काल ठहर कर पुनः इस मंदिर में प्रवेश करने के लिए सामूहिक प्रयत्न किया गया। इस बार इस दल नेता हरिजन नेता श्री अमीचन्द भगत थे जो उस समय दिल्ली विधानसभा के एक सदस्य थे। डा० सुशीला नायर और भगत अमीचंद सरीखो व्यक्तियों द्वारा जब जैन मंदिर में प्रवेश करने का नेतृत्व किया जाता है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि यह श्रद्धा और भक्ति की भावना से प्रेरित होकर नहीं किया जाता। इसकाप्रेरक कारण कुछ और ही है। राज्य शासन को अपनी नीति इस संबंध में स्पष्ट करने की आवश्यकता है, क्योंकि जेन मंदिरों की सम्पत्ति का लोभ किसी को भविष्य में भी ऐसे कामों के लिये आकर्षिक कर सकता है।

इस एक बात से प्रश्न की व्यपकता को समझा जा सकता है। यह कानूनी प्रश्न है, अत. अदालत में जाने से जहां शक्ति और समय का क्षय होता है वहां व्यय भी होता है। महासभा को इन मुकदमों की पैरवी व सलाह के लिये योग्य वकील नियुक्त करने की आवश्यकता है। अतः महासभा के पास कानूनी परामर्श देने की व्यवस्था करने की क्षमता और सुविधा होनी चाहिए। इसकी आवश्यकता दिनों दिन अधिक बढ़ेगी, क्योंकि केन्द्रीय और विधि सभाओं में, किस समय कौन सा कानून पेश होगा जो जैन हितों पर आघात कर सकता है, यह कहना कठिन है। प्रस्तावित कानून का क्या अर्थ है? उससे क्या अभिप्रेत है, जैन समाज पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, यह जानने के लिये चोटी के वकीलों की राय जाननी आवश्यक हो जाती है। यह बात पिछले ६ वर्षों के अनुभव से सिद्ध हो चुकी है।

जैन मंदिरों की सम्पत्ति पर दूसरे लोगों की दृष्टि है, जैन धर्म के प्रति भक्ति के वश होकर जैन मंदिरों में प्रवेश पाने की इच्छा नहीं की जाती है. इसका एक उदाहरण है कि बम्बई विधानसभा द्वारा स्वीकृत 'बम्बई सार्वजनिक पूजा स्थान' श्री तपासे ने यह विधेयक पेश किया था। लेकिन उसके छपने से पहले ही तथा जनता को अपना मत प्रकट करने का अवसर दिये बगैर ही जल्दी-जल्दी में यह बिल पास कर दिया गया। भविष्य में भी इस प्रकार की कार्यवाही होना संभव है। महासभा की सतर्क और जागरूक दृष्टि तभी फल लायेगी, जब उसके पास पर्याप्त साधन हों।

महासभा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

महासभा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दिनांक १३ से १५ मई सन् १९५१ को इन्दौर में सर सेठ भागचन्द जी सोनी की अध्यक्षता में आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में मध्य भारत के राजप्रमुख ग्वालियर नरेश ने पधारकर महोत्सव की शोभा बढ़ाई। सर सेठ भागचंद जी सेनी ने पुष्पाहार भेंट कर उनका स्वागत किया। श्रीमन्त राजप्रमुख ग्वालियर नरेश ने अपने भाषण में जैन धर्म, श्रमण संस्कृति एवं अहिंसात्मक समाज रचना, महासभा की उपयोगिता पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये। इस

अवसर पर सर सेट हुकमचंद अभिनंदन ग्रंथ को सम्पादन समिति के सदस्य श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने सर सेठ भागचंद जी सोनी को उसे राज प्रमुख द्वारा सर सेट हुकमचंद जी को भेंट करने के लिये दिय। इसके पश्चात राजप्रमुख ने तुमुल हर्षध्वनि जयकार से गगनभेदी नारों के बीच अभिनंदन ग्रंथ सेठ सा. हुकमचंद जी को भेंट किया।

अस्पृश्यता (अपराध) विधेयक १९५४

इस विधेयक में हिन्दू धर्म की व्याख्या में जैन धर्म को सम्मिलित करके इसको स्वतंत्र सत्ता पर प्रहार किया गया। इसलिये इस विधेयक में से जैन धर्म को निकाल देने के लिये सारे समाज में प्रदर्शन किया गया। सभाएं आयोजित की गयी। महासभा के महामंत्री द्वारा निम्न प्रस्ताव प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं लोकसभा अध्यक्ष के पास भेजा गया-

- वो जैनियों या जैन पंचायत की सभा संदर की संयुक्त प्रवर समिति द्वारा संशोधित अस्पृश्यता (सं अपराध) विधेयक के खण्ड ३ की व्याख्या से पूर्णतः और सर्वांश में असहमत है। इसका यह निश्चित मत है कि जैन धर्म हिन्दू धर्म से एक अलग और स्वतंत्र धर्म है और हिन्दू धर्म में जैन धर्म को शामिल करना एक ऐतिहासिक भूल है। यह पत्र भारत सरकार से आग्रह पूर्ण अनुरोध करना चाहती है कि विधेयक के खण्ड ३ को व्याख्या से जैन शब्द को निकला दे और समय रहते एक भारी भूल का संशोधन करें।

समाज के उक्त बिल का डटकर विरोध किया। गांव गांव और नगरों में समाज की मीटिंग करे जैन धर्म को स्वतंत्र धर्म मानते हुए बिल नं० १४ में हिन्दू धर्म की व्याख्या में जैन शब्द को निकालने की मांग की गयी। केकड़ी, ब्यावर, सीकर, खांचरियावास, कोटा, लाडनूं, सलुम्बर, डूंगरपुर, उदयपुर, रायपुर, अक्कलकोटा, भोपाल, लश्कर, खातेगांव, धमफपेरा दिल्ली में सभायें की गयी। जैन गजट, जैन सन्देश आदि पत्रों में सम्पादकीय टिप्पणियां लिखी गयी। जैन गजट में हिन्दू धर्म का अर्थ लेखमाला आरंभ की गयी। और भी विद्वानों ने विभिन्न लेखों के माध्यम से हिन्दू शब्द पर विशेष प्रकाश डालते हुए जैन धर्म को देश का प्राचीनतम धर्म बतलाते हुए जैन शब्द को निकालने का समर्थन किया गया।

जैन गजट दिनांक १७ फरवरी सन् १९५५ के अंक में जैन धर्म सबसे प्राचीन धर्म है और स्वतंत्र धर्म है इससे संबंधित तथ्य को संग्रह करने प्रकाशित किया इसमें से कुछ उदाहरण यहां दिये जा रहे हैं।

विधेयक में जैन मंदिरों को सर्वसाधारण की पूजा का स्थान माना गया है। यह सर्व साधारण का जैन समाज की अपेक्षा में हो तब तो कुछ आपत्ति नहीं क्योंकि सर्वसाधारण शब्द जैन और वैदिक जनता के लिये प्रयुक्त है तो बहुत गड़बड़ी उत्पन्न हो गई क्योंकि जैन तीर्थकरों में श्रद्धा न रखने वाली जनता जैन मंदिरों में आकर जैन विधि के अनुसर तो पूरा उपासना करेगी नहीं। यदि वहां पूजा उपासना करेगी तो अपने देवी देवता की अपने ढंग से करेगी। उप उस अवस्था में जैन मंदिर जैनों के लिये पूजा उपासना के स्थान नहीं रह सकेंगे। इस सम्बन्ध में सेठ भागचंद जी सोनी की अध्यक्षता में एक १५ सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल गृहमंत्री से भेंट करके उन्हें स्थिति से अवगत कराया। श्री गृहमंत्री ने डेपूटेशन की बातें बहुत गौर से सुनी और आवश्वासन दिया कि जैन समाज की भावना का ध्यान करेगी।

☺☺☺☹☹

जैनधर्म स्वतंत्र धर्म है, लोकसभा द्वारा मान्य

लोकसभा ने २८ अप्रेल, १९५५ को जैन धर्मानुयायों की इस शास्त्र और इतिहास सम्मत बात को स्वीकार किया कि जैन धर्म हिन्दू धर्म से पृथक है और एक स्वतंत्र धर्म है। भवर समिति ने हिन्दू की व्याख्या करते हुये एक भारी और ऐतिहासि भूल की थी, उसको लोकसभा ने सुधार किया। समस्त जेन समाज ने महासभा के आह्वान और प्रकार को सुना और उसने महासभा की न्यायपूर्ण योग का एक स्वर से समर्थन किया। इस सफलता में आचार्य शांतिसागर जी महाराज एवं आचार्य नेमिसार जी महाराज के शुभाशीर्वादों का मूल कारण माना यगा। महासभा के इस प्रयास से समस्त जेन समाज में एक नयी चेतना जागृत हुई।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी की ८४वीं जन्म जयन्ती

सारे देश में आचार्य की ८४वीं जन्म जयन्ती दिनांक ११ जून, १९५५ को जन्म जयन्ती मनायी गयी। वैद वाद टिक्की, कुचासेट देहली, निवाई, इन्दौर, सुजानगढ़, डूंगरपुर, सागर सभी देश के विभिन्न भागों में आचार्य श्री की दीर्घ जीवन एवं स्वस्थ जीवन की कामना की गयी। महासभा की ओर से ८४वीं पुण्य जयन्ती मनाने का विशेष प्रयास किये गये। आपने इस वर्ष कुंथलगिरी पर अपना चातुर्मास योग स्थापित किया। उस समय आपने निम्न शब्दों से जनता को सम्बोधित किया-

"मैं कुंथलगिरी क्षेत्र पर विशेष उद्देश्य से आया हूं। मेरा इन्द्रिय संयम तो ठीक चल रहा है, किन्तु मेरी दृष्टि मे मंदता आती जा रही है। यदि मेरी दृष्टि और भी कम हो गयी तो मेरे प्राणी संयम में बाधा आ जावेगी। उस समय मैं आहार पान का त्याग करके समाधि में बैठ जाऊंगा"

इसके पश्चात दिनांक 17 अगस्त, 1955 से यम संल्लेखना ग्रहण कर ली। भारतीय दिगम्बर जैन महासभा को आचार्य श्री नहीं भूले। जब महाराज श्री से महासभा के लिये कोई संदेश देने के लिये प्रार्थना की तो महाराज श्री बोले कि महासभा पहिले की तरह धर्म रक्षा में कटिबद्ध रहे, धर्म को कभी नहीं भूले और धर्म के विरुद्ध कभी कोई कार्य नहीं करें।

इसी बीच खनिया जयपुर में विराजमान मुनि श्री वीरसागर जी महाराज को आचार्य श्री ने अपना आचार्य पद प्रदान किया। आपको द्वितीय भाद्र पद बुदी ६ गुरूवार ८ सितम्बर, १९५५ को खनिया जयपुर में आचार्य पद प्रदान किया गया।

आचार्य शांतिसागर जी महाराज का समाधि मरण पूर्वक स्वर्गवास

परम पूज्य जगद् बन्ध चारित्र चक्रवर्ती श्री १०८ आचार्य जी महाराज कुंथलगिरी में दिनांक १९ अगस्त को प्रातः ६ बजकर ५० मिनट पर हंसमुख और प्रसन्न मुद्रा में समाधि मरण पूर्वक स्वर्गवास हो गया। १०,००० जनता उपस्थित थी। आचार्य श्री सन् १९५० में गजसेवा में उत्कृष्ट संल्लेखना के पथ पर अग्रसर हुए थे। श्रावण सुदी के अवमौदर्य व्रत ग्रहण किया। प्रथम भाद्रपद बुदी ८ को और सिंघाड़े का भी परित्याग कर सिर्फ बादाम का जल ग्रहण करना प्रारंभ कर दिया। शक्ति अत्यन्त क्षीण होते देख और आंखें की ज्याति अत्यन्त मंद हो जाने के कारण १४ अगस्त से बादाम का जल लेना भी बंद कर दिया और सिर्फ जल लेना प्रारंभ कर दिया। १७ अगस्त से

आमरण सलेट बना ग्रहण कर ली।

आचार्य श्री के संल्लेखना पूर्वक समाधिकरण देश के सम्पूर्ण जैन समाज ने अपने यहां के नगरों एवं गांवों में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की थी, जितनी शोक स भाएं आचार्य श्री के निधन के बाद आयोजित की गई, उसका रिकार्ड स्थापित किया।

बम्बई हिन्दू सार्वजनिक पूजा स्थान (प्रवेश अधिकार) एक्ट १९५६

बंबई सरकार के गजट (२३.३.५६) मंदिर प्रवेश के सम्बन्ध में एक बिल पेश करने की सूचना दी गयी है। इसका आवश्यक भाग जो जैन समाज से संबंधित है, उसे ५ अप्रेल, सन् १९५६ के अंक में प्रकाशित किया गया। इस कानून का नाम बम्बई हिन्दू सार्वजनिक पूजा स्थानों विशेषाधिकार एक्ट १९५६ दिया गया। इस कानून में भी सार्वजनिक पूजा स्थान में हिन्दू जैन या विश्व या बौद्ध या इनके किसी भाग या वर्ग द्वारा किया जाता हो। परिभाषा में जैन शब्द भी जोड़ा गया था।

उक्त विधेयक का भी महासभा के महामंत्री ने तीव्र विरोध करने के लिये कहा और बम्बई सरकार से मांग की गयी कि पूजा स्थानों की परिभाषा में जेन शब्द तुरन्त निकाल देवें।

जैन गजट का श्रद्धांजलि विशेषांक

भा दि जैन महासभा ने जैन गजट साप्ताहिक पत्र जैन गजट का श्रद्धांजलि विशेषांक प्रकाशित किया। इसकी पृष्ठ संख्या २६० साईज ७.५X१० इंच विशेषांक हिन्दी-अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित किया गया। विशेषांक में आचार्य श्री के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अतिरिक्त १५० चित्रों द्वारा आचार्य श्री के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित किया गया है। आचार्य श्री के सम्बन्ध में प. जगमोहनलाल जी, सत्यदेव विद्यालंकार आदि के मार्मिक लेख है।

नग्नता विरोध बिल

राजस्थान विधानसभा में एक सदस्य ने नग्नता विरोधी बिल पेश करने की सूचना दी। आज की बहुपरिधानमयी सभ्यता के लिए नग्नता का कोई अर्थ न हो, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से नग्नता मानव की सर्वोच्च अवस्था है, इसमें इन्कार नहीं किया जा सकता। इस समय जैन बंधुओं और महासभा की विकट धर्म परीक्षा थी। नग्नता विरोध बिल के प्रस्तावक ने इस शर्त पर बिल वापिसलेने की इच्छा प्रकट की कि पशु बलि विरोध बिल वापिस ले लिया जाय। महासभा यह सौदा कैसे कर सकती थी। अतः इस सिलसिले में राजस्थान विधानसभा के सदस्यों, मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया व प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री जयनारायण व्यास आदि से अनेक बार भेंट की थी बड़ी मात्रा में पत्र-व्यवहार किया गया था। इन सबका फल शुभ निकला और प्रस्तावक ने प्रस्ताव वापिस ले लिया।

साधु सन्यासी बिल

इसी तरह का एक उदाहरण लोकसभा में दिखाई दिया, दिल्ली के श्री राधारण "साधु सन्यासी बिल' पेश किया। इसकी मंशा यह थी कि जो कोई व्यक्ति सन्यासी होना चाहे, वह अपनी रजिस्ट्री करावे। इससे जब एक जगह से दूसरी जगह जावे तो वह उसकी सूचना दे यह जैन साधुओं पर लागू होता था, इसके विरोध में संसद सदस्यों को इसकी व्यर्थता बताई गई, पर मंत्री श्री पन्त जी के पास भी डेपूटेशन ले जाया गया, इस कार्य में और इसके विरोध में लोकमत बनाने में श्वेताम्बर साधु धर्मसागर जी गणी ने बहुत कार्य किया और इस आंदोलन का नेतृत्व 'महासभा' ने किया। इस आंदोलन का फल यह कहुआ कि ये लोकसभा में जब यह बिल पेश हुआ तो प्रस्तावक को एक भी समर्थक नहीं मिला। सब वक्ताओं ने एक स्वर से राय दी कि प्रस्तावक इस बिल को वापिस लें और इस प्रकार प्रस्तावक ने बिल वापस ले लिया।

अनूप मण्डल

राजस्थान में जोधपुर के जालोर गांव के पास एक संस्था- अनूप मण्डल थी, इसमें जैनियों के विरूद्ध बड़ा विषाक्त प्रचार किया। यही नहीं उसने जैन बन्धुओं का जीवन तक खतरे में डाल दिया, उस इलाके का वातावरण आतंकपूर्ण हो गया। इसके द्वारा प्रकाशित साहित्य खुल्लमखुल्ला जैनियों को मारने और निकाल देने के लिये करना था। महासभा ने इस विषम स्थिति का वीरता से मुकाबला किया। हम जैन बन्धुओं के साथ मुख्यमंत्री श्री सुखाड़ियाजी से अनेक बार मिले। अन्य मंत्रियों को भी स्थिति से परिचित किया।

महासभा के काम में श्री आनन्दराज सुराणा दिल्ली ने भी सक्रिय सहयोग दिया और महासभा की ओरसे मांग की गई कि अनूप मण्डल संस्था गैर कानूनी घोषित की जाये और इसका साहित्य जब्त किया जाये। महासभा का आंदोलन औ प्रयत्न रंग लाया और सरकार ने उसकी ये दोनों मांगे मान ली।

भगवान बुद्ध पुस्तक

साहित्य अकादमी एक अर्द्ध सरकारी संस्था है, और इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री श्री नेहरू है। इसने 'भगवान बुद्ध' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की। इसमें डा. कौशाम्बी ने श्वेताम्बराय सम्प्रदाय के ग्रन्थों से प्रमाण देकर लिखा है कि भगवान महावीर मांस भक्षण करते थे। इस प्रकार के प्रकाशन से जैन समाज में अधिक विक्षोभ फैल गया। यह एक ऐसा प्रश्न था जिसमें जैन समाज के अवान्तर भेद भी लुप्त हो गए, तारों का तांता बंध गया। साहित्य अकादमी के मंत्री श्री कृपलानी, इसके उपाध्यक्ष डा० राधाकृष्णान और शिक्षा मंत्री स्व० मौलाना आजाद से अनेक बार मिला गया और पुस्तक के विरोध में उठे आंदोलन से उनसे बराबर परिचित रखा गया। यह आंदोलन भी कई मास तक चला। अकादमी के सदस्यें से अलग अलग भेंट की गई और डा० कौशाम्बी की भूल की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया यगा। इन सब प्रयत्नों और आंदोलनों का यह परिणाम हुआ कि साहित्य अकादमी ने इस पुस्तक को भविष्य में छापना बंद करने का निश्चय किया और छपी पुस्तक में आपत्तिजनक स्थान के नीचे पाद-टिप्पणी (फुट नोट) जोड़ना माना। इस कार्य में श्री आनन्दराज सुराणा ने व श्री जिनेन्द्रकुमार जी ने कठिन प्रयत्न किया उन सबको धन्यवाद है।

बाहुबलि की मूर्ति

जैन समाज में श्रवणबेलगोला की बाहुबलि की मूर्ति का आदर बहुत है। कला की दृष्टि से भी इसकी बहुत प्रतिष्ठा है। यह मूर्ति दुनियां का ९वां आश्चर्य है। क्रेन पर बिजली गिरी पर मूर्ति को कोई नुकसान नहीं पहुंचा।

लेकिन इस घटना से जैन बन्धुओं के मन में एक भयंकरभय उत्पन्न कर दिया। भविष्य में ऐसी दुर्घटना घटित न हो इसके लिये प्रयत्न किया गया। शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद तक जैन समाज की मनोगत भावना पहुंचाई गई और पुरातत्व विभाग का ध्यान इधर खींचा गया। संसद में श्री रतनलाल मालवीय एम०पी० द्वारा इस विषय में प्रश्न पूछाये गये। सरकार ने और पुरातत्व विभाग ने जैन समाज की भावना का आदर करते हुए विश्वास दिलाया कि यथोचित व्यवस्था कर दी गई है। भविष्य में ऐसी दुर्घटना न होगी।

महामस्तकाभिषेक

सन् १६५३ में बाहुबलि की मूर्ति के मस्तकाभिषेक की सरकार ने फिल्म डिवीजन द्वारा 'वृतचित्र' (डाक्यूमैंट्री फिल्म) बनाई गई उसमें दिखाया गया था कि शहद से अभिषेक किया गया। यह जैन समाज के हृदय को चोट पहुंचाने वाली बात थी। महासभा का ध्यान इधर दिलाया गया। यह एक तो सत्य बात नहीं थी, दूसरे सिद्धान्त विरूद्ध थी फलतः अधिकारियों का ध्यान खींचा गया। उन्होंने शिकायत को सही मानकर संशोधन करना स्वीकार किया। मद्रास हिन्दी प्रचार सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक में १ पृष्ट इस विषय का भी था कि उसमें यह भूल की गई थी- सभा के अधिकारियों ने इस भूल को माना और द्वितीय आवृति में इसमें संशोधन करने का वचन दिया।

भारत सरकार के पर्यटक विभाग की ओर से प्रकाशित टूरिस्ट गाईड में भी इस गलती को दुहराया गया अतः इस भूल की ओर अधिकारियों का ध्यान खींचा गया। उनके पास जाकर मिले, उनको बताया कि शहद एक अहिंसा में विश्वास करने वाला नहीं बरत सकता, फिर मूर्ति का मस्तकाभिषेक कैसे हो सकता है। अन्ततोगत्या उन्होंने भूल मानी और महासभा को ये वचन दिया कि इस भूल का संशोधन कर दिया जायेगा। इस समय अनुभव हुआ कि जैन धर्म के विषय में लोगों को कितनी भ्रांति है और प्रचार व प्रकाशन द्वारा इसको दूर करने की कितनी आवश्यकता है।

अवन्तिका

पटना से अवन्तिका नाम की एक पत्रिका प्रकाशित होती थी। उसमें सुमागधा नाम से श्री सनतराम बी.ए. की एक कहानी छपी जिसमें उन्होंने लिखा था कि भगवान महावीर मांस भक्षण करते थ। उन्होंने यह बंगाल के शिक्षा विभाग द्वारा ४० साल पहले प्रकाशिता एक पाठ्य पुस्तक के आधार पर लिखा था। महासभा ने इस संबंध में जोरदार कार्यवाही की यह भूल अनजाने में हुई थी। इसलिये लेखक और सम्पादक ने क्षमा याचना की और खेद प्रकट किया।

जयपुर में विद्वानों की गोष्ठी का आयोजन

पं. लाडमल जैन ने समाज की ओर से विद्वानों को एक वृहद संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में तत्वचर्चा हो गयी संगोष्ठी में ३७ विद्वानों को आंत्रित किया गया। तत्वचर्चा आचार्य शिवसागर जी महाराज के सानिध्य में २० अक्टूबर सन् १६६३ से आरंभ हो गई। प्रथम पक्ष के विद्वान् पं. माणकचंद जी फिरोजाबाद, पं. मक्खनलाल जी शास्त्री मोरेना, पं. जीवनधर जी इन्दौर, पं. बंशीधर जी व्याकरणाचार्य बीसा, पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर। दूसरे पक्ष के पं. फूलचंद जी सिद्धान्त शास्त्री, पं. जगमोहनलाल जी एवं श्री नेमीचंद जी पाटनी आगरा होंगे। चर्चा लिखित होगी। आगम प्रश्नोत्तरों को मध्यान्ह में जनता के सामने पढ़कर सुनाया जाता था। चर्चा बहुत ही सौम्य वातावरण में सम्पन्न हुई।

पं. कैलाशचंद जी शास्त्री का कानजी स्वामी को परामर्श

कानजी श्रीमान पं. कैलाशचंद जी शास्त्री वाराणसी ने गत ३० अगस्त के जैन संदेश में कल्याण की बात शीर्षक सम्पादकीय लेख प्रकाशित किया है। इस लेख में आपने श्रीकानजी स्वामी को निम्नलिखित परामर्श दिये हैं-

१. श्री कानजी स्वामी आपने आपको सद्गुरूदेव अपने श्रद्धालुओं द्वारा न कहलवाये क्योंकि दि.जैन सिद्धांत अनुसार सद्गुरूदेव सर्वआरंभ परिग्रह त्यागी ब्रमहाती मुनि ही माना गया है। यदि उन्होंने अपने लिये प्रयुक्त शब्द सदगुरूदेव शब्द को इस समय न रोका को कालान्तर में इस शब्द का दुरूपयोग होगा, सदगुरू की यथार्थ मान्यता लुप्त हो जायेगी।

२. समयसार उच्चकोटि का आध्यात्मिक ग्रंथ है, उसका रहस्य समझने के लिये नये प्रमाण, गुणस्थान, मार्गणा, कर्मसिद्धान्त आदि (करणानुयोग, चरणानुयोग तथा द्रव्यानुयोग) का अच्छा पर्याप्त ज्ञान होना चाहिये, जिससे सम्यसार का स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति भ्रम का शिकार न हो सके। अतः श्री कानजी स्वामी पात्र-अपात्र का विवेक करके अपने प्रभातिव व्यक्तियों को समयसार के स्वाध्याय की आज्ञा प्रदान करे अपात्र व्यक्ति समयसार के स्वाध्याय से लाभ के बजाय हानि उठाते हैं।

३. आजकल जनता जिस स्थिति में है उस स्थिति में जनता के लिए निमित्त कारण भी उतना उपयोगी है जितना कि उपादान कारण अतः दोनों कारणों की उपयोगिता जनता को समझनी चाहिये। केवल उपादान कारण पर ही जोर देना और निमित्त कारण को कार्यकारी न बताना उचित नहीं. इससे जन साधारण को लाभ नहीं हो सका है।

४. व्यवहार नव भी उतना ही उपयोगी है जितना कि निश्चय नव उपयोगी है। जिनवाणी का लाभ लेने के लिये मुमुक्षुओं को किसी एक ही नव के पक्षपात में न पड़ना चाहिये, केवल निश्चय नव का या केवल व्यवहार नव का पक्षपाती जिनवाणी का पूर्णलाभ नहीं ले सकता।

कानजी स्वामी द्वारा जैन सिद्धांतों का प्रतिपादन धीरे धीरे एकान्तवादी बनता जा रहा था। पहले तो आम जनता उसे समझ नहीं सकी इसलिये उनके प्रति समाज का आकर्षण बढ़ता गया। समाज के सभी नेताओं एवं विद्वानों ने उनका एक स्वर से समर्थन किया लेकिन धीरे धीरे वे विवाद के दायरे में आते गये। पं. कैलाशचंद समाज के मूर्धन्य विद्वानों में से थे तथा वे स्पष्टवादी भी थे। यहां उनके कानजी स्वामी को दिया गया परामर्श अवकल रूप में दिया जा रहा है।

उपदेशकों का भ्रमण

महासभा के उपदेशक पं. महेन्द्रकुमार जी महेश ने देली, बारावली, आगरा, मोरेना, भिण्ड, मो खुरई एवं करनी में धार्मिक उपदेश दिये। समाज की जानकारी प्राप्त की सबसे अधिक घर भिण्ड में है जिनकी संख्या १००० है इनमें गोलाला, गोल सिंगारे, खरउला लमेंच जाति के परिवार हैं। यहां ११ जिनालय हैं। इसी तरह पं. पातीराम जी ने महाराष्ट्र प्रान्त के वरंगल, डोरनवाल, गारला, आलंद, गुलबर्गा, अक्कलगोट, सोलापुर, तालेपूते, दहीगांव अकबूजा, नीमगांव, कुर्डवाडी, कुंथगिरि एंवं मोडनिल गांवों एवं नगरों में भ्रमण किया। सबसे अधिक सोलापुर में ५०० जैन परिवार हैं तथा ७ मंदिर हैं।

अधिक शीर्षक निम्नलितखत सम्पादकीय लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें

आपने लिखा है कि श्री दि.जैन पंचायत ऐत्मादपुर (आगरा) ने दि.जैन महासभा के मरसलगंज अधिवेशन के लिये ४ विवेकपूर्ण प्रस्ताव भेजे हैं।

डेपूटेशन

दि.जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रेरणा से दिगम्बर जैनों का एक प्रतिनिधिमंडल बिहार सरकार के मुख्यमंत्री बिहार सरकार एवं रेवैन्यू मिनिस्टर से मिला। प्रतिनिधि मण्डल की बात का बहुत ध्यान से सुना गया और पूर्ण न्याय देने का आश्वासन दिया। डैपूटेशन में सर्वश्री साहू शांतिप्रसाद जी जैन, राजकुमार सिंह जी इन्दौर, सेठ रतनचन्द्र चुन्नीलाल जवेरी, रा.बा. हरकचंद जी गोधा पांड्या आदि व्यक्ति थे।

आचार्य देशभूषण जी महाराज द्वारा अनशन

हजारीबाग जिले में स्थित सुप्रसिद्ध जैन तीर्थ सम्मेदशिखर के संबंध में बिहार सरकार ने श्वेतांबर जैन समाज के साथ मिलकर जो एक पक्षीय समझौता किया है, उस समझौते के विरूद्ध आचार्य देशभूषण जी महाराज ने ११ जुलाई को नई दिल्ली के दि.जैन मंदिर में बैठकर आमरण अनशन की घोषणा कर दी। इससे सारे जैन समाज में चिन्ता व्याप्त हो गयी।

भारत के प्रधानमंत्री का निधन

देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का ११ जनवरी को मध्यान्ह १.३० मिनट पर ताशकन्द (रूस) में हृदयगति बन्द हो जाने के कारण निधन हो गया। सारा देश उनके अकस्मात निधन पर बिलखने लगा व लाखों लोग उनकी अन्त्येष्टी में सम्मिलित हुए।

लाला छोटेलाल जी जैन का निधन

समाज के प्रिय नेता ला. छोटेलाल जी जैन कलकत्ता वालों का दिनांक २६ जनवरी ६६ को ७० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। उनके अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशन योजना को स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन योजना में परिवर्तित करना पड़ा। उनके निधन पर कलकत्ता, वाराणसी, जयपुर, देहली, राजाखेल में शोक सभाएं आयोजित की गयी।

अन्तरीष जी क्षेत्र पर श्वेताम्बरों द्वारा अमानवीय कृत्य

दिनांक ३ नवम्बर ६७ को पूर्व नियोजित ड्यंत्र के अनुसार ृवेताम्बरों द्वारा किराये के गुंडों द्वारा लाठी व लोहे की छड़ों से आक्रमण कर दिया। इसमें १५-१६ दिगम्बर जैन भाई घायल हो गये महिलाओं पर भी आक्रमण किया गया। इस घटना से समस्त जैन समाज में रो । व्याप्त हो गया। तथा उनके ककृत्यों की सर्वत्र निन्दा की गई। महावीर जयंती का सार्वजनिक घो ित करने के लिये महासभा के सभापति श्री चांदमल जी पांड्या ने समाज से अपील की कि वह प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, गृहमंत्री जैसे उच्च पदाधिकारियों से मिलकर सार्वजनिक अवकाश घो ित करने पर जोर देवें।

अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ मंदिर

सुप्रसिद्ध इतिहासकार ८६ व ीय डा. प. ख. देशपाण्डे ने नागपुर के सेनगण मंदिर के योग में बताया कि अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ मंदिर और अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ ये दोनों ही पूर्ण निग्रंथ व दिगम्बर जैनों के हैं। इतिहासवेत्ता ने यह भी बतलाया कि करीब २००० व । पहले भारत में केवल दिगम्बर धर्म एवं उनके मंदिर प्रतिमाएं थी। महावीर निर्वाण के बाद ५००-६०० व । तक भारतव । में केवल दिगम्बर जैन ही थे। २६ जनवरी ६८ के दिन गोहाटी एवं विजयनगर में मारवाड़ी समाज की दुकानें लूटी गयी, जलाकर राख कर दी गयी एक अनुमान के अनुसार क्षति १० करोड़ से भी अधिक होगी।

भगवान महावीर का २५००वां निर्वाण दिवस

महासभा के संरक्षक सर सेठ भागचंद जी सोनी ने भगवान महावीर का २५००वां परिनिर्वाण किस प्रकार मनाया जावे और उसकी अभी से किस प्रकार तैयारी की जावे इस परअपना वक्तव्य प्रकाशित कराया जावे इस पर अपना एक वक्तव्य प्रकाशित कराया।

७५वां वर्ष (नवम्बर १९६९ से अक्टूबर १९७० तक)

इस व । सिद्धक्षेत्र गजपंथा में महासभा के अध्यक्ष राय सा. चांदमल जी पांड्या ने भाद्रपद मास आचार्य महावीर कीर्ति जी के चरण सानिध्य में १० दिनों का उपवास, स्वाध्याय, चिन्तन मनन एवं आचार्य श्री के धर्मोपदेश श्रवण के साथ व्यतीत किया। समाज ने उन्हें श्रावक शिरोमणि पद से अलंकृत किया।

राष्ट्रीय पुरस्कार

इस व । शिक्षक दिवसपर पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य एवं श्रीमती अंगूरी देवी जैन मेरठ को २२-२२ नवम्बर ६९ को विज्ञान भवन देहली में सम्मानित किया गया।

भट्टारकजी का निधन

दिनांक १२.१२.६९ कोशुक्रवार को श्रवणबेलगोला के जेन महा मठाध ीश भट्टारक जी महाराज स्वस्ति श्री चारूकीर्ति श्री पंडिताचार्य जी का स्वर्गवास हो गया।

इस दिन २० वर्षी बाल ब्रह्मचारी श्री रत्नाकरजी बोरा को श्री चन्द्रकीर्ति जी स्वामी जी के नाम रखकर विधिपूर्वक नये भट्टारक के रूप में दीक्षित किया गया।

सेठ मोहनलाल जी का निधन मियागंज के श्री सेठ मोहनलाल जी का हृदयगति बंद होने के कारण दिनांक ९.१.७० को निधन हो गया। लाला जी महासभा से वर्षों से जुड़े थे।

आदिनाथ की प्रतिमा

श्री बद्रीनाथ जी के मंदिर की प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है यह विचार मुनि श्री १०८ श्री विद्यानंद जी महाराज ने प्रतिमा को अभि ेक एवं श्रृंगार के समय देखने के पश्चात व्यक्त किये। यह भगवान श्री आदिनाथ की प्रतिमा अत्यधिका प्राचीन है।

जैन गजट अंक ३२ वर्ष ७५

सभापति जी को मानपत्र

समसत दिगम्बर जैन समाज मीणा (राज.) को भाद्रपद सुदी १४ वि. सं. २४९६ को राय सा चांदमल जी पांड्या, सभापति महासभा को उनकी सेवाओं के प्रभावित होकर एक सम्मान पत्र भेंट किया। सम्मान पत्र में उनके गुणों का बखान किया गया। पांड्या सा. ने भारत छोड़ो आंदोलन में जेल यात्रा की।

चतुर्थ अध्याय

महासभा के वर्ष ७६ से १०१ वर्ष का काल
शताब्दी का अन्तिम दशक चरमोत्कर्ष का काल

एक महत्वपूर्ण विचार मंथन

निश्चित हुआ कि भगवान के जीवन के सम्बन्ध में समस्त जैन एवं जैनेतर साहित्य में जो सामग्री उपलब्ध होती है, उसका विशेष अध्ययन करके यह पुस्तक लिखायी जावे। विभिन्न साहित्य से सामग्री संकलित करने के लिए विद्वानों को निम्न प्रकार दायित्व देने का निर्णय हुआ-

पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री शोलापुर (दि.जैन साहित्य), पं. शोभाचन्द्र भारिल्ल, ब्यावर (श्वे. जैन साहित्य), डॉ. भागचन्द्र जैन नागपुर (बौद्ध साहित्य), डा० देवेन्द्र कुमार शास्त्री नमीच (अन्य और साहित्य) पो. प्रेमसुमन जैन, बीकानेर।

सामग्री संकलित कर चुकने पर उसके आधार पर ग्रन्थ की रूपरेखा क्या हो, उसमें क्या क्या विषय वस्तु रहे और उस सामग्री के आधार पर किस विद्वान को पुस्तक लिखनेका दायित्व दिया जावे, इस सबका निश्चय निम्नलिखित विद्वानों की उपसमिति करेगी-

१. डॉ. ए.एन. उपाध्ये, कोल्हापुर,प. जगन्मोहनलाल जी शास्त्री कटनी, प. कैलाशचन्द्र जी शास्त्री वाराणसी, पं. वर्धमान पार्श्वनाथ जी शास्त्री शोलापुर, पं. सुमेरूचन्द्र जी दिवाकर सिवनी।

२. समिति यह आवश्यक मानती है कि भगवान महावीर के बाद के जैन आचार्यों की परम्परा तथा उनके जन्म स्थान, तपस्या स्थान और उनके द्वारा रचे गए साहित्य की प्रमाणिक जानकारी ऐतिहासिक क्रम से दी जानी चाहिए। विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष डॉ. नेमिचन्द्र जीशास्त्री के पत्र से ज्ञात हुआ कि भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव पर विद्वत् परिषद् जो ग्रन्थ प्रकाशित कर रही है, उसमें इस प्रकार की सामग्री रहेगी इसलिए समिति ने यह निश्चय किया कि वे विद्वत् परिषद् के इस कार्य की सराहना की जाये और उसे ही यह दायित्व लेने दिया जाय।

३. भगवान महावीर के समय से भारत के विभिन्न प्रांतों के जैन राजाओं तथा अन्य जैन ऐतिहासिक व्यक्तियों-दीवानों, सेनापतियों, श्रेष्ठियों आदि का विवरण देने वाला एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जाये। श्रीमान् साहू श्रेयांस प्रसाद जी ने बतलाया कि बम्बई कमेटी द्वारा प्रकाश्य ग्रन्थ में इसभारिल्ल, ब्यावर (श्वे. जैन साहित्य), डॉ. भागचन्द्र जैन नागपुर (बौद्ध साहित्य), डा० देवेन्द्र कुमार शास्त्री नमीच (अन्य और साहित्य) पो. प्रेमसुमन जेन, बीकानेर।

सामग्री संकलित कर चुकने पर उसके आधार पर ग्रन्थ की रूपरेखा क्या हो, उसमें क्या क्या विषय वस्तु रहे और उस सामग्री के आधार पर किस विद्वान को पुस्तक लिखने का दायित्व दिया जावे, इस सबका निश्चय निम्नलिखित विद्वानों की उपसमिति करेगी-

१. डॉ. ए.एन. उपाध्ये, कोल्हापुर,पं. जगन्मोहनलाल जी शास्त्री कटनी, पं. कैलाशचन्द्र जी शास्त्री वाराणसी, पं. वर्धमान पार्श्वनाथ जी शास्त्री शोलापुर, पं. सुमेरूचन्द्र जी दिवाकर सिवनी।

२. समिति यह आवश्यक मानती है कि भगवान महावीर के बाद के जैन आचार्यों की परम्परा तथा उनके जन्म स्थान, तपस्या स्थान और उनके द्वारा रचे गए साहित्य की प्रमाणिक जानकारी ऐतिहासिक क्रम से दी जानी चाहिए। विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष डॉ. नेमिचन्द्र जी शास्त्री के पत्र से ज्ञात हुआ कि भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव पर विद्वत् परिषद् जो ग्रन्थ प्रकाशित कर रही है, उसमें इस प्रकार की सामग्री रहेगी इसलिए समिति ने यह निश्चय किया कि वे विद्वत् परिषद् के इस कार्य की सराहना की जाये और उसे ही यह दायित्व लेने दिया जाय।

३. भगवान महावीर के समय से भारत के विभिन्न प्रांतों के जैन राजाओं तथा अन्य जैन ऐतिहासिक व्यक्तियों-दीवानों, सेनापतियों, श्रेष्ठियों आदि का विवरण देने वाला एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जाये। श्रीमान् साहू श्रेयांस प्रसाद जी ने बतलाया कि बम्बई कमेटी द्वारा प्रकाश्य ग्रन्थ में इस प्रकार की सामग्री रहेगी। यह विचार हुआ कि डॉ. उपाध्ये जी को लिखकर यह ज्ञात कर लिया जाय कि वह सामग्री विस्तार के साथ उस ग्रन्थ में दी जायेगी या संक्षेप में। यदि संक्षेप में ही दी जाती है तो इस विषय पर दिगम्बर जैन समिति एक स्वतंत्र ग्रन्थ प्रकाशित करे जिसका दायित्व डॉ. ज्योति प्रसाद जी जैन लखनऊ वालों को दिया जाय, क्योंकि इस विषय पर उनका विशेष अध्ययन है।

४. भारत में विभिन्न प्रांतों के अंचलों में जैन समाज की वर्तमान स्थिति क्या है तथा जैन सम्प्रदाय की विभिन्न जातियां किस किस प्रान्त में कितनी कितनी संख्या में बसती हैं, उनका विशेष धंध क्या है और वर्तमान स्थिति क्या है, इस विषय पर एक पुस्तक प्रकाशित की जाये। समिति यह निश्चय करती है कि इस कार्य को सम्पन्न करने का दायित्व भारत जैन महामण्डल ले।

५. सम्पूर्ण भारतवर्ष के दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों का परिचय देने वाला एक ऐसा विशिष्ट ग्रन्थ प्रकाशित किया जाय, जिसमें तीर्थक्षेत्रों का पौराणिक एवं ऐतिहासिक परिचय, रेल और यातायातों के अन्य भागों के नक्शे तथा प्राचीनतम मंदिरों, मूर्तियों आदि के चित्र भी शामिल रहें। पूरा ग्रन्थ दो खण्डों में (१) उत्तर भारत के तीर्थ तथा (२) दक्षिण भारत के जैनतीर्थ, प्रकाशित हो जिसमें कम से कम २५० चित्र और लगभग १००० पृष्ठो की पाठ्य सामग्री रहे। इस प्रकार का ग्रन्थ तैयार करने तथा ५००० प्रतियों का संस्करण छपाने में लगभग १ लाख रुपये व्यय होंगे।

यह निश्चय हुआ कि सामग्री के संकलन का दायित्व पं. बलभद्र जैन आगरा को दिया जाये तथा इसकी तैयारी और प्रकाशन के व्यय के संबंध में तीर्थक्षेत्र कमेटी से पत्र-व्यवहार किया जाये और अनुरोध किया जाये कि यह दायित्व यह लें।

६. जैनेतर मंदिरों में जहां पर जैन शासन देवी-देवताओं की मूर्तियां विराजमान हैं तथा जिन्हें सर्व-साधारण व्यक्ति आस्था और श्रद्धा के साथ पूजते हैं- उनका पूरा विवरण तैयार किया जाय। यह कार्य भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा किये जा रहे जैन कला ग्रन्थ विषयक कार्य के संदर्भ में सम्पन्न किया जा सकेगा। अतएव समिति यह निश्चय करती है कि यह कार्य ज्ञानपीठ द्वारा सम्पन्न किया जाये।

७. भारत के तथा विदेश के विभिन्न संग्रहालयों में जो जैन प्रतिमाएं, शिलालेख तथा पुरातात्विक सामग्री उपलब्ध है उसके फोटो ग्राफ संग्रहित किए जायें। यह कार्य भी ज्ञानपीठ के द्वारा हो रहे कार्य के साथ सम्पन्न किया जा सकेगा। इसलिये समिति यह निश्चय करती है कि यह कार्य ज्ञानपीठ द्वारा ही सम्पन्न हो।

८. भारतवर्ष के विभिन्न जैन मंदिरों आदि में जो शास्त्र भण्डार हैं उनके विषय में विशेष जानकारी की जाय। खासतौर पर ऐस शास्त्रों की जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। श्री महावीर शोध संस्थान, जयपुर द्वारा राजस्थान के ग्रन्थ भण्डार की सूचियां प्रकाशित हुई हैं जिन्हें डॉ. कस्तूरचंद जी कासलीवाल और उनके सहयोगियों ने तैयार किया हैं इसलिए समिति यह निश्चय करती है कि इस प्रकार का ग्रन्थडॉ. कस्तूरचंद जी कासलीवाल तैयार करें तथा ग्रन्थ की तैयारी और प्रकाशन श्री महावीर शोध संस्थान, जयपुर की ओर से किया जाय।

९. अनुश्रुति के अनुसार जिन क्षेत्रों में पहले जैन संस्कृति के केन्द्र रहे हैं पर अब जो जमीन के गर्भ में हैं उनके इतिहास की जानकारी की जाय। निश्चय हुआ कि भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा जैन पुरातत्व और कला विषयक जो कार्य हो रहा है, उसके संदर्भ में इस प्रकार की सामग्री संग्रहीत करने का पूरा प्रयत्न किया जाय। इसी प्रकार प्राचीन जैन तीर्थक्षेत्रों का परिचय आदि तैयार करते समय पं. बलभद्र जी को जो सामग्री प्राप्त हो उसे भी उसमें शामिल कर लिया जाय।

१०. भारतवर्ष में कुछ ऐसी समाजें भी हैं, जो अपने को जैन तो नहीं कहतीं पर जिनका जीवन जैनपरम्परा के अनुसार है और वे अपने लिए कोई अन्य नाम व्यवहृत करती हैं। इस विषय पर एक पुस्तक तैयार की जाये। यह कार्य करने का दायित्व पं. वर्द्धमान जी पार्श्वनाथ जी शास्त्री शोलापुर ने लेने का विचार व्यक्त किया है। श्री अगरचंद जी नाहटा भी इस प्रकार की सामग्री तैयार कर सकते हैं। यह निश्चय किया गया कि समिति की ओर से उक्त दोनों विद्वानों से अनुरोध किया जाय कि वे वह विवरण अवश्य तैयार करें।

११. जैनेतर साहित्य में जेनधर्म, जैन दर्श, जैन संस्कृति, जैन तीर्थकरों आदि से संबंधित जो समग्री उपलब्ध होती है, उन सब उल्लेखों को संकलित करके उस सामग्री के आधार पर एक पुस्तक लिखी जाये और इस विषय पर पूज्य मुनि श्री विद्यानंद जी, डॉ. हीरालाल जी तथा अन्य जैन एवं जैनेतर विद्वानों ने जो सामग्री संकलित की है तथा उसमें का जो अंश अब तक प्रकाशित है और जो प्रकाशित नहीं है, उस सब सामग्री का उपयोग किया जाये। समिति अनुभव करती है कि कार्य चूंकि बहुत बड़ा है इसलिए पूज्य मुनि श्री विद्यानंद जी, डॉ. हीरालाल जी तथा पं. कैलाशचंद जी से अनुरोध किया जाये कि वे यह दायित्व स्वीकार करें।

१२. भगवान महावीर के अतिरिक्त अन्य २२-२३वें तीर्थकरों तथा उनके शासन यक्ष-यक्षियों का क्या परिचय प्राचीन दिगम्बर जैन साहित्य में मिलता है, तीर्थकरों के जीवन की विशेष क्या क्या घटनाएं उपलब्ध होती हैं, विशेषकर भगवान ऋषभदेव, नेमिनाथ और पार्श्वनाथ के जीवन की जो घटनाएं हैं, उनके संबंध में प्राचीन मूल ग्रंथों से संबंध में प्राचीन मूल ग्रंथों से प्रामाणिक सामग्री संकलित करके ग्रंथ प्रकाशित किया जाये और इस सामग्री को ऐतिहासिक और पुरातात्विक सन्दर्भों, चित्रों आदि से भी पुष्टि किया जाय। प्राचीन ग्रंथों से सामग्री संकलित करने का दायित्व पं. हीरालाल जी शास्त्री, ब्यावर ने लिया है। समिति यह निश्चय करती है कि इस सामग्री के संकलित करने के लिए जो भी व्यवस्था अपेक्षित हो, उसे अध्यक्ष श्री साहू शांतिप्रसाद जी करा दें।

१३. जनश्रुतियों और शास्त्रों के आधार पर जहां पर पूज्य आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों आदि ने अपनी रिद्धि-सिद्धि प्राप्ति के द्वारा धर्म की प्रभावना की है, उन स्थानों एवं उन घटनाओं का परिचय देने वाली एक पुस्तक तैयार करायी जाय। निश्चय हुआ कि डॉ. विद्याधर जोहरापारकर से अनुरोध किया जाए कि वे इस विषय पर लिखें और पूज्य आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी से भी इस संबंध में परामर्श कर लें।

१४. समिति यह अनुभव करती है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष की एक ऐसी डायरेक्टरी प्रकाशित की जाय जिसमें सम्पूर्ण जैन समाज, जैन तीर्थक्षेत्र, जैन स्कूल कालेज, अन्य संस्थाएं आदि सामग्री का संकलन रहे। यह निश्चय हुआ कि यह कार्य अखिल भारतीय जैन जनगणना समिति सम्पन्न करेगी।

१५. उपर्युक्त सभी निर्णयों के संदर्भ में विचार करते हुए यह निर्णय किया गया कि वीर सेवा मंदिर, दिल्ली को जैन विद्यार्थियों के उच्च स्तरीय अध्ययन के लिए केन्द्रीय शोध संस्थान के रूप में विकसित किया जाए, जहां से उक्त प्रकार की सभी महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों को भी सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए योजनाबद्ध रूप में निर्देशित किया जा सके।

इस केन्द्रीय संस्थान के साथ एक ऐसा संग्रहालय भी बनाया जाय जिसमें प्राचीन शास्त्र, चित्र, अन्य पुरातात्विक महत्व की संपूर्ण सामग्री संकलित की जा सके।

१६. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में संग्रहालय बनाये जायें तथा इस संबंध में सरकार से पूरी मदद ली जाए। इस विषय में लाला डिप्टीमल जी जैन दिल्ली, श्री मिश्रीलाल जी पाटनी, ग्वालियर तथा श्री नीरज जैन सतना प्रान्तीय सरकारों से सम्पर्क करें।

१७. दिल्ली में यमुना के किनारे भगवान महावीर का एक विशाल भव्य मंदिर बनाया जाय। इस विषय में लाला प्रेमचंद जी जैन, जैना वाच कम्पनी, दिल्ली पत्र व्यवहार करें।

१८. भारतवर्ष के कम से कम पांच विश्वविद्यालयों में भगवान महावीर के सिद्धांतों और जैन वांड्मय एवं संस्कृति के अध्ययन के लिये जैन चेयरों की स्थापना की जाये। सागर विश्वविद्यालय में जैन चेयर की स्थापना के लिये श्री प्रकाशचंद जी चौधरी सागर ने उत्साह दिखाया। उनसे अनुरोध किया गया कि इसके लिये वे विशेष प्रयत्न करें।

१९. श्री महावीर जी क्षेत्र पर एक विशिष्ट अस्पताल बनाया जाय जिसे लगभग २.०-२.५ करोड़ रूपये की लागत से आधुनिक साधन सम्पन्न किया जाय। इसकी व्यवस्था डॉ. राजमल जी कासलीवाल, अध्यक्ष श्री महावीर जी क्षेत्र कमेटी को सौंपी गयी।

२०. पिछली बैठक के निश्चयानुसार साहू श्रेयांस प्रसाद जी ने पदक (मेडल) के बहुत से डिजायन प्रस्तुत किये। उपस्थित सभी सदस्यों ने उनकी बहुत सराहना की और सुझाव दिये। उनको ध्यान में रखते हुए श्री साहू श्रेयांस प्रसाद जी से अनुरोध किया गया कि वे इन्हें अंतिम रूप दिलाकर अगली बैठक में प्रस्तुत करें। इस कार्य में उन्हें जिनसे सहयोग प्राप्त हुआ है, उनकी सराहना करती हुई उनकी उपसमिति इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए बनाई जाती है।

श्री साहू श्रेयांस प्रसाद जी जैन, बम्बई, श्री सेठ देवकुमार सिंह जी जैन, इंदौर, श्रीमती सरयूदेवी, बम्बई, श्रीमती दुर्गाबाई, बम्बई।

इस उपसमिति से यह भी अनुरोध किया गया कि कीर्ति स्तम्भ और स्मृति पट्ट डिजाइन भी बनवा दें।

२१. समिति द्वारा पिछली बैठकों में स्वीकृत उपर्युक्त निर्णयों को कार्य रूप देने के लिए तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में महावीर निर्वाणोत्सव विशाल समारोहों के साथ सम्पन्न करने के लिए क्षेत्रीय समितियां निम्न प्रकार बनाई गई, जिनमें उन क्षेत्रों की समाज के सुझाव के अनुसार और भी कमी-वृद्धि

की जा सकती है।

क्षेत्रीय समितियां

इंदौर, ग्वालियर, सागर, जबलपुर,रायपुर, रीठ, लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी-इलाहाबाद, आगरा-झांसी, ललितपुर, मेवाड़, उदयपुर, जोधपुर और बीकानेर, जयपुर, कोटा, अजमेर, बिहार, हरियाणा, गुजरात, सौराष्ट्र बम्बई, सोलापुर, नागपुर, मंगलोर, बैंगलोर, हैदराबाद, बैजवाड़ा, मद्रास, केरल, उड़ीसा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश।

महासभा की महान क्षति

समाज की सर्वाधिक चारित्र विभूति श्रीमद् परम पूज्य १०८ आचार्यवर्य श्री शिवसागर जी महाराज का स्वर्गारोहण समाज की सर्वाधिक क्षति है। आचार्य श्री धार्मिक जगत के प्रेरणास्त्रोत एवं परम तपस्वी मुनिराजा थे।

परम पूज्य आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज का वरदहस्त सदैव महासभा पर रहा।

मुनिराज श्री शीतलसागर जी महाराज का समाधिमरण भी धार्मिक जगत की उल्लेखनीय क्षति है।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के उपसभापति जैन रत्न सेठ गजराज जी गंगवाल, उपसभपति सेठ बालचंद जी सुजानगढ़, जैन गजट के भूतपूर्व संपादक एवं शीर्षस्थ विद्वान श्री पं. इन्द्रलाल जी शास्त्री जयपुर तथा श्री मोहनलाल जी सेठी दुर्ग के असामयिक निधन से महासभा की एवं समाज की महान क्षति हुई है। सेठ गजराज जी साहब गंगवाल व सेठ बालचंद जी साहब पाटनी महासभा के कर्मठ हिते ी थे। महासभा के कार्यों में निरंतर रूचि व उत्साह उनका उल्लेखनीय था। श्रीमान् पं. इन्द्रलाल जी शास्त्री महासभा के सक्रिय ठोस हितैषी थे। महासभा की प्रत्येक गतिविधि में रूपूर्वक भग लेना उनका उद्देश्य था। वे समाज के अनुभवी उच्चकोटि के विद्वान थे जिनकी सेवाओं से महासभा व समाज समानरूप से लाभान्वित हुए।

महासभा पुनर्गठन वर्ष १९८१-८२

महासभा का पुनर्गठन कोटा में आयोजित उसके अधिवेशन में सम्पन्न हुआ। महासभा के पूर्व अध्यक्ष राय साहिब चांदमल जी पांड्या का बहुत पहिले स्वर्गवास हो चुका था। इनके स्वर्गवास के पश्चात् कुछ वर्षों तक महासभा बिना अध्यक्ष के चलती रही। सुजानगढ़ में महासभा का ऐ नैमित्तिक अधिवेशन हुआ, उसमें स्वागताध्यक्ष श्री नेमीचंद जी बाकलीवाल थे। उनके स्वताध्यक्षीय भाषण में महासभा के लिये कोई उत्तदायी व्यक्ति का न हो उनकी एक पीड़ा थी, जिसको उन्होंने अपने स्वागत भाषण में निम्न शब्दों में व्यक्त किया-

सन् १९७७ में गोहाटी के प्रमुख समाज नेता श्री लक्ष्मीचंद जी छाबड़ा ने महासभा के सभापति का पद संभाला। उनकी सच्ची सेवा भावना होते हुये भी महासभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं में कोई जोश नहीं भर सके। उधर उसके महामंत्री जी श्री सुमेरचंद जी पाटनी दलगत नीतियों में फंस गये, जिससे वे महासभा में पूरी महासभा के मंत्री न होकर दलीय महामंत्री हो गये। दूसरी ओर साहू श्रेयांस प्रसाद जी के अध्यक्षता में गठित दि.जैन महासमिति ने समाज में नवचेतना जागृत करने में अच्छी सफलता प्राप्त की। इसलिये समाज युवा वर्ग भी उधर ही झुक गया और महासभा को पुराने पंथियों की जाति भेद करने वाली महासभा कहकर उससे अपना संबंध तोड़ लिया। सबसे अधिक क्षति महासभा के मुख पत्र जैन गजट को बंद होने से हो गयी। किसी को कुछ पता नहीं चला कि महासभा क्या कर रही है। इसलिये महासभा जगत में चारों ओर अंधकार ही अंधकार छा गया।

आखिर कोटा में महासभा की प्रबंधकारिणी समिति का अधिवेशन हुआ। महासभा के प्रमुख सदस्यों ने भाग लिया और नि प्राण महासभा को संजीवनी बूटी देने का साहस किया। कोटा अधिवेशन में युवा सेवी श्री निर्मल कुमार जी सेठी, लखनऊ को अध्यक्ष एवं श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी को महामंत्री बनाया गया। अध्यक्ष और महामंत्री की इस जोड़ी ने महासभा में प्राण फूंकने और उसे पूरे जैन समाज की सशक्त प्रतिनिधि सभा बनाने का दृढ़ संकल्प लिया। बस यही से महासभा की नवयात्रा प्रारंभ होती है।

जैन गजट जो कुछ समय तक बंद रहा, उसे फिर से प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। पं. कुंजीलाल जी ास्त्री कोउसका सम्पादक मनोनीत किया गया। उन्होंने अपने प्रथम सम्पादकीय वक्तव्य में गजट के १५ सितम्बर, १९८१ वाले अंक में निम्न प्रकार अपनी नीति अथवा महासभा की रीति-नीति के संबंध में अपने सम्पादकीय में चर्चा की गयी-

हमारी नीति-

जैन गजट की नीति तो उसके उद्देश्य ही स्पष्ट है, फिर स्पष्ट करना कर्तव्य समझते हैं-

(१) जैन गजट भाषा संयम का पूर्ण पक्षधर रहेगा। सिद्धांतों पर पूरी दृढ़ता के साथ स्थिर रहते हुए ऐसी भाषा का प्रयोग करना कदापि नहीं चाहेगा जिससे अपने विरोधी सिद्धानत पक्ष वाले केन्द्र या व्यक्तित्व का अपमान हो। अपनी समझ में समाज में जो विवाद वर्तमान में चल रहे हैं उनमें सिद्धानत भेद तो कारण है ही परन्तु उसे कलह का रूप देने में भाषा का असंयम मुख्य कारण है। इस संबंध में एक बात स्पष्ट है कि जैन गुरूओं का अवर्णवाद एवं उनके प्रतिप्रयोग की जाने वाली अशिष्ट भाषा को भी जैन गजट सहन नहीं करेगा।

(२) जैन गजट गुण-ग्राही एवं गुण पूजक रहेगा। दोषों का समर्थन एवं उन्हें बढ़ावा देने की जैन गजट की प्रवृत्ति नहीं रहेगी। परन्तु इस विषय में स्थितिकरण और उपगूहन दोनो ही अंगों को यथा स्थान पात्र की विवक्षा रख कर पालन करने का भरसक प्रयास किया जायेगा।

(३) हम यह पूरी निष्ठा के साथ चाहेंगे कि जैन गजट में कोई भी रचना इस प्रकार की प्रकाशित न हो जिसस समाज में सदाचार, ईमानदारी एवं आचार विचार के प्रति निष्ठा को धक्का लगे या उपेक्षा को प्रोत्साहन मिले। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि धर्म का शरीर बाह्य आचार ही है। पहिले शरीर का दर्शन होता है बाद में आत्मा का। अंतरंग धर्म आत्मा है और बहिरंग धर्म शरीर है।

(४) हम जितने निश्चय एकांत के विरोधी है, उतने ही व्यवहार एकांत के भी विरोधी हैं। हम दोनों की सापेक्षता (मित्रता) को ही मोक्ष मार्ग मानते हैं। स्याद्वाद मय जिनवाणी का उद्देश्य ही दोनों नयों के शत्रुभाव को नष्ट कर मित्र भाव को उत्पन्न करना हे। पक्षातीत अवस्था ही साध्य सिद्धि है। जैसा कि स्वामी अमृत चन्द्राचार्य ने सुस्पष्ट किया है।

उभय नय विरोधध्वंसिनि स्यात्पदांके।
जिमवचसि रमन्ते से स्वयं वान्तमोहा।।
सदपि समय सार ते परै ज्योतिरूच्चैं।
रतनवमनय पक्षाक्षु णमीक्षंत एव।।

(५) जिनवाणी और जिन संघ के अवर्णवाद को आचार्यों ने दर्शन मोह के आस्रव का कारण कहा है। जैन गजट को कर्तव्य परायणता जैन बन्धुओं में सम्यक्त्व और चारित्र की वृद्धि करना है। अतः भीतर या बाहर जहां से भी अवर्णवाद की बात दृष्टिगोचर होगी तोवहां जैन गजट मूक दर्शक नहीं रहेगा। जिन शासन के महात्म्य की वास्तविकता को प्रकट करना उसके जीवन की सार्थकता होगी। हमारी भाषा ने शहद लपेटी तलवार होगी और न विष बुझी कटारी।

(६) साधर्मी बन्धुओं के साथ वीतराग कथा का ही आवलम्बन किया जायेगा और हमारी पूंजी वीतराग ऋषियों की वाणी होगी।

(७) समाज में पनपती हुई उन प्रवृत्तियों का जैन गजट डटकर विरोध करेगा जिनसे धर्म का अपमान होता है। समाज की खिल्ली उड़ती है। रा ट्रीय धारा से हम अलग-थलग पड़ जाते हैं और सबसे बढ़कर जैन धर्म के गुलाचार की नींव ही ध्वस्त हो जाती है।

(८) मतभेदों के कम करने में यदि कुछ भी सफलता मिल सके तो इसे हम अपना अहोभाग्य सकझेंगे। परन्तु यदि मतभेद न भी मिट सके तो कम से कम सामाजिक संगठन भी न बिखरे। दूसरों के समक्ष हमारी आवाज तो न बंट जाय, इसके लिए सतत् सावधानी रखी जायेगी।

(९) पत्र, समाज के नैतिक असित्वि के सजग प्रहरी होते हैं। समाज की नैतिकता ही उसके वास्तविक अस्तित्व का प्रमाण है। इस विषय में हम अपने कर्तव्य बोध को सदैव स्मरण रखेंगे।

(१०) समाज के विशिष्ट विद्वानों को पक्षपात की भूमि से सदैव ऊपर रहना चाहिये। उनका अहंक इतना न टकरा जाय जिससे समाज की उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने की आस्था ही डगमगा जाय। क्योंकि यह भय सामने दीख रहा है इसलिए अपने आदरणीय नेताओं की सेवा में साधारण संकेत भर कर दिया है।

(११) हमारे परम पूज्य साधुगण अपनी को परम आदर्श रखते हुए हमें हमारी कर्तव्यनिष्ठा के लिये सदैव उद्बोलित करते रहें उनके चरणों में इतनी ही विनम्र प्रार्थना है।

इसके पूर्व दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर पूज्य आर्यिका रत्न ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में महासभा की प्रबंधकारिणी कमेटी की एक बैठक दिनांक १४-१५ जुलाई, १९८१ को सम्पन्न हुई। इसमें जैन गजट को पुनः प्रकाशित करने एवं परीक्षालय को सुव्यवस्थित करने पर गंभीरता से विचार किया गया। अधिवेशन में प्रांतीय समितियों के गठन की आवश्यता महसूस की गयी। इसी के साथ सम विचार वाली संस्थाओं से भी सहयोग करने का निर्णय लिया गया। अधिवेशन में अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ पर भी विचार विमर्श किया गया। इस प्रकार इस अवसर पर पं. हीरालाल जी शास्त्री, साढूमल, पं. शिखरचंद जी ईसरी, पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागर जी महाराज के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

हस्तिनापुर में दिनांक १६ जुलाई, १९८१ को महासभा की उत्तर प्रदेश प्रांतीय समिति का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इसमें उत्तर प्रदेश प्रांतीय समिति का गठन किया गया। समिति के अध्यक्ष श्री सुमेरचंद जी पाटनी लखनऊ एवं महामंत्री श्री कैलाशचंद जी सर्राफ, टिकैतनगर को बनाया गया। अनेक उपसमितियों का भी गठन किया गया।

इसी तरह दिनांक २० सितम्बर, १९८१ को अजमेर महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी पधारे और वहां सोनी जी की नसियां में आयोजित मीटिंग में राजस्थान प्रांतीय महासभा का गठन किया गया। विचार विमर्श के पश्चात् २५१ सदस्यों की समिति का गठन करने एवं उसमें २५ स्थान महिलाओं को देने का भी निर्णय किया गया। अधिवेशन में राजस्थान के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इसके बाद १९ दिसम्बर, १९८१ को चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दि.जैन अ. क्षेत्र पर राजस्थान महासभा का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में महासभा के अध्यक्ष सेठी जी ने एवं महामंत्री ने समाज को महासभा की गतिविधियों की जानकारी दी और कहा कि पिछले दस महिनों में महासभा की प्रांतीय शाखाएं उत्तर प्रदेश, देहली, आसाम, बंगाल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं हैदराबाद में खुल चुकी है और कार्य आरंभ हो चुका है।

मध्यप्रदेशीय प्रांतीय शाखा का गठन

दिनांक १० नवम्बर, १९८१ को नैनगिरि सिद्धक्षेत्र में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के पादमूल में १०१ सदस्यीय मध्यप्रदेशीय प्रांतीय महासभा शाखा का गठन कियागया। श्री बाबूलाल जी पाटोदी को प्रांतीय शाखा का अध्यक्ष चुना गया। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने भी महासभा को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा का गठन

दिनांक १३ नवम्बर, १९८१ को आचार्य सन्मतिसागर जी के सानिध्य में तीन मूर्ति बोरीवली में महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा शाखा का १४३ सदस्यों की समिति का गठन कया गया। इसी तरह १७ नवम्बर, १९८१ को हैदराबाद अधिवेशन में आंध्र प्रांतीय महासभा का गठन किया गया। जिसमें श्री जयचंद जी काला लुहाडे को संरक्षक, श्री मांगीलाल जी पहाड़े को अध्यक्ष एवं श्री जयकुमार जी काला को महामत्री बनाया गया।

नागपुर में सेतवाल जैन समाज ने महासभा के कार्यों में विशेष रुचि से भाग लिया। यद्यपि महासभा के नियम ९ में संशोधन करके विधवा विवाह एवं अन्तर्जातीय विवाह को समर्थन देने की बात पर जोर दिया गया लेकिन केन्द्रीय महासभा अध्यक्ष ने सभी आचार्यों एवं मुनिराजों एवं विद्वानों के विचार जानने के प चात् इस प न पर विचार करने के आ वासन के पश्चात् सभी सेतवाल जैन बंधुओं ने महासभा को समर्थन देने का निर्णय लिया।

महासभा की तीर्थक्षेत्र जीर्णोद्धार योजना

महासभा की तीर्थक्षेत्र जीर्णोद्धार योजना को समाज का व्यापक समर्थन मिला। इस योजना के अंतर्गत तीन वर्ष तक ५,०००/- रु. प्रतिवर्ष देने वाले १०० सदस्यों में से एक कार्यकारिणी गठित की गयी जो प्रत्येक वर्ष जीर्णोद्धार के लिये एक तीर्थक्षेत्र का चयन करेगी तथा एक सेवानिवृत इंजीनियर की सेवाएं ली जावेगी। एक २० सदस्यीय समिति का गठन किया गया।

महासभा का ऐतिहासिक अधिवेशन भीण्डर में सम्पन्न

महासभा की साधारण सभा का एक अधिवेशन दिनांक ४ मार्च, १९८२ को भीण्डर में सम्पन्न हुआ। इसमें देश के कोने-कोने से महासभा के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अनेक प्रस्ताव पास किये तथा निम्न पदाधिकारी अगले तीन वर्षों तक के लिये चुने गये-

अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी
महामंत्री श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी
सह-महामंत्री श्री उम्मेदमल जी पांड्या
कोषाध्यक्ष- श्री सुमेरमल पाटनी
उपाध्यक्ष श्री पति श्री जैन एवं श्री पूनमचंद जी गंगवाल

गुजरात में महासभा

इसी वर्ष सन् १९८२ में भा. दि. जैन महासभा गुजरात प्रांतीय शाखा का गठन हुआ। जिसमें हिम्मतनगर के कटडिया जी को संरक्षक, सौभग्यमल जी कटारिया को अध्यक्ष एवं मीठालाल नेमचंद कोठारी को महामंत्री नियुक्त किया गया। ५८ सदस्यों की प्रांतीय शाखा का गठन किया गया।

पूर्वांचल महासभा शाखा का अधिवेशन

प्रसिद्ध व्यापारिक नगरी तिनसुकिया में दिनांक ३१ जनवरी, १९८२ को पूर्वांचल महासभा शाखा का सेठी जी की अध्यक्षता में अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में अंतर्जातीय विवाह एवं विधवा विवाह पर विशे । चर्चा हुई। एक सदस्य ने विधुर विवाह का भी विरोध किया। सेठी जी ने सभी का शांतिपूर्वक समाधान किया।

केन्द्रीय गृहमंत्री से भेंट

श्री भा.दि.जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी के नेतृत्व में समाज के विभिन्न अंचलों से पधारे २१ प्रतिनिधियों का एक शिष्टमंडल दिनांक १ नवम्बर सन् १९८२ को शाम ५.०० बजे भारत के गृहमंत्री श्री प्रकाशचंद जी सेठी से देहली में उनके निवास स्थानपर निम्नलिखित मांग को लेकर मिला-

(१) महासभा परीक्षालय को सरकार की मान्यता प्रदान करना।

(२) देहली में एवं नये स्थानों पर जो कट्टी खाने खुलने जा रहे हैं उन्हें रोकना एवं बन्द करना।

(३) राजस्थान की छठीं कक्षा में सामाजिक ज्ञान शास्त्र की पुस्तक " भगवान महावीर के विवाह अंश को निकालना।

गृहमंत्री ने मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार किये जाने का आश्वासन दिया। उत्साहजनक वातावरण में वार्ता हुई। महासभा के शिष्टमण्डल में निम्न महासभाई रहे-सर्वश्री चैनरूप बाकलीवाल, गणेशलाल रानीवाला, त्रिलोकचंद कोठारी, उम्मेदमल पांड्या, पूनमचंद गंगवाल, जयकुमार काला, एम.एल.सी, पन्नालाल सेठी, राजेन्द्र प्रसाद कम्मोजी, पं. नाथूलाल शास्त्री, पं. सुमतिचन्द्र शास्त्री, धर्मचन्द मोदी, ब्र. धर्मचंद शास्त्री, भरत कुमार काला, कैलाशचंद सर्राफ, सुभाषचंद्र जैन, कैलाश चन्द कागजी एवं डॉ. हरीन्द्रभूषण।

महासभा द्वारा गठित शिक्षा नीति निधारण समिति

डॉ. भागचंद जैन भास्कर के संयोजकत्व में गठित शिक्षा नीति निर्धारण समिति को अपनी निम्न प्रकार रिपोर्ट प्रस्तुत की-

दिगम्बर जैन शिक्षा-नीति निर्धारण समिति

समाज और राष्ट्र के विकास के लिए सुनिश्चित शिक्षानीति एक अपरिहार्य अंग है, जिसके बिना प्रगति पथ प्रशस्त नहीं हो पाता। यह चिन्ता का विषय है कि हमारे दि.जैन समाज में अभी तक किसी भी एक सर्वमान्य शिक्षानीति का निर्धारण नहीं हो सका। श्री माणिकचंद दि.जैन परीक्षालय, बम्बई, दिगम्बर जैन महासभा परीक्षालय, इन्दौर, दि.जैन परिषद् परीक्षा बोर्ड, दिल्ली, वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर आदि जैसे अनेक संस्थान हैं जो वार्षिक परीक्षाओं का संचालन करते हैं। उन समीति के पाठ्यक्रम अपने अपने हैं जिनमें सामन्जस्य बैठाना अत्यावश्यक सा हो गया है।

इस तथ्य को दृष्टि में रखकर महासभा ने खुलक मस्तिष्क से दि. जैन समाज के समक्ष अपनी शिक्षानीति को निर्धारित करने का दृढ़ संकल्प किया है और तदर्थ में एक समिति का भी संयोजन कर दिया है। उसकी यह शिक्षानीति मात्र शिक्षा क्षेत्र तक ही सीमित नहीं होगी। सामाजिक विकास के नये आवासों के संदर्भ में अन्य संबद्ध विषयों पर भी वह अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगी। इस संदर्भ में जो विज्ञप्ति और पत्रक प्रकाशित हुआ है उसमें उल्लिखित केन्द्र बिन्दुओं पर विचार विमर्श करने के लिए यह संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है।

१. पाठ्यक्रम-

पाठ्यक्रम सार्थक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सार्वभौमिक होना चाहिए। अभी जितने पाठ्यक्रम हमारे समक्ष व एकांगी से दिखाई देते हैं। उनमें पारस्परिक सामनजस्य बैठाकर और कुछ नये मद्दे जोड़कर एक सर्वमान्य पाठ्यक्रम बनाने का प्रयत्नकरना है। संभव है, वह भी एक विवाद का विषय बन जाये। पर यह सोचकर उस संकल्प को छोड़ देना उचित नहीं होगा। विवाद का विषय तो हर मुद्दा बन सकता है, पर उसकी अधिसंख्य उपयोगिता उसकी कसौटी मानी जा सकती है। हमारा पाठ्यक्रम आधुनिक शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित होगा और श्रेणीगत विभाजित होगा ताकि हर व्यक्ति उससे अधिकाधिक लाभान्वित हो सके। इस आशय से उसे हम निम्नलितखल वर्गों में विभाजित कर सकते हैं-

२. अंग्रेजी विभागीय पाठ्यक्रम-

पब्लिक स्कूल जैसे अंग्रेजी माध्यम से चलने वाली विद्यालयों में प्रारंभिक स्तर पर जैन संस्कृति का ज्ञान बालबोध, बाल विकास आदि जैसी पुस्तिकाओं से दिया जा सकता है। धीरे-धीरे इसे सामान्य और विशे । ज्ञानप्रदान करने की दृष्टि से तीन प्रश्नपत्र पृथक पृथक स्तरों पर नियोजित किये जा सकते हैं-

१. जैन धर्म एवं दर्शन
२. जैन दर्शन का जैनेतर दर्शनों केसाथ तुलनात्मक अध्ययन
३. जैन कला एवं संस्कृति

३. संस्कृत विभागीय पाठ्यक्रम-

संस्कृत, जैन विद्यालयों में अध्ययन छात्रों के लिए आधुनिक विषयों के साथ संस्कृत, प्राकृत और जैन संस्कृति का पाठ्यक्रम रखा जाना चाहिए। इस दृष्टि से विद्वत परिषद द्वारा तैयार किया हुआ, पाठ्यक्रम अधिक उपयोगी प्रतीत होता है। यथावश्यक परिवर्तन कर उसे स्वीकार किया जा सकता है। इतना अवश्य है, इन पाठ्यक्रमों के साथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत संस्थान, दिल्ली अथवा प्रान्तीय विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित संस्कृत परीक्षाओं की पाठ्यक्रमों के अध्ययन-अध्यापन की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए।

४. अन्य पाठ्यक्रम-

इसी तरह अन्य पाठ्यक्रम भी सुविधानुसार प्रारंभ किये जा सकते हैं। उदाहरणानुसार हाईस्कूल तक शिक्षा देने वाली संस्थाओं में यह पाठ्यक्रम

प्राथमिक और माध्यमिक वर्ग के अनुसार निर्धारित किया जा सकता है। इसी तरह स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शोध छात्रों के लिए भी एक पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है। अथवा अंग्रेजी विभागीय पाठ्यक्रम से काम चलाया जा सकता है। पर स्नातकोत्तर अथवा शोध छात्रों के लिए संस्कृत और प्राकृत के अध्ययन पर भी जोर देना आवश्यक है। सामान्य ज्ञान के लिए तैयार किया हुआ पाठ्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा के लिए उपयोगी हो सकता है। इसके अतिरिक्त एक पत्राचार पाठ्यक्रम भी तैयार किया जा सकता है, जिसमें कुछ निश्चित पाठ, अध्याय परीक्षार्थियों के पास साइक्लोस्टायल कराकर भेजें जायेंगे। इन सभी पाठ्यक्रमों का प्रत्येक भाग शैक्षणिक सत्र का होगा।

५. पाठ्य-पुस्तक निर्माण योजना तथा परीक्षा फल विभाग-

उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अनुसार यथा विधि पाठ्य पुस्तकों का निर्माण शिक्षा शास्त्री विद्वानों द्वारा किया जायेगा। उपलब्ध पाठ्य पुस्तकों में से भी यथानुरूप पुस्तकों का चुनाव किया जा सकता है।

परीक्षाओं का संयोजन करने के लिए एक स्वतंत्र परीक्षा विभाग की स्थापना की जायेगी। वर्तमान परीक्षालयों (महासभा, बम्बई, दिल्ली आदि) का एकीकरण होकर यदि यह कार्य सम्पन्न हो सके तो निश्चित ही श्रेयस्कर होगा।

६. शिक्षण संस्थाओं का सर्वेक्षण स्वरूप समस्याएं एवं समाधान-

उपर्युक्त पाठ्यक्रम का शिक्षण किसी भी संस्था में प्रारंभ किया जा सकता है। संभव है, सरकारी नियमों के अनुसार हम उसे शिक्षा के आवश्यक अंग के रूप में न रख सके पर नैतिक शिक्षा के रूप में तो हम उसे नियोजित कर ही सकते हैं। आवश्यकता प्रतीत हुई तो नई शिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना कर यथानुरूप पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जा सकती है।

इस व्यवस्था को प्रारंभ करने के पूर्व कुछ प्रमुख जैन एवं जैनेतर संस्थाओं का सर्वेक्षण कर लेना आवश्यक होगा। ये वे संस्थाएं होगी जो किसी न किसी रूप में धर्म का प्रचार कर रही हैं उनकी सारी व्यवस्था का अवलोकन कर एक नई व्यवस्था की जा सकती है। इस संदर्भ में मैंने सागर, वाराणसी, कुरूक्षेत्र आदि और दिल्ली की जैन-जैनेतर संस्थाओं का कुछ सर्वेक्षण के आधार पर जो कुछ समस्याएं उभर कर सामने आई उनका समाधान भी खोजना आवश्यक होगा। इसे हम इस प्रकार रख सकते हैं।

७. अध्यापक समस्या-

कुछ समय पहले की स्थिति पर यदि गंभीरता पूर्वक विचार किया जाये तो यह स्वीकार करने में किसी को हिचकिचाहट नहीं होगी कि विद्वान का समुचित सम्मान समाजा नहीं कर सका। समाज ने उसका अमूल शाषण किया और उसे इस रूप में रखा कि आर्यकालीन पीढ़ी उनकी दैत्यावस्था को देखकर पंडित बनने का साहन नहीं कर सके। इतना ही नहीं, विद्वान पंडितों ने स्वयं अपनी संतान को इस क्षेत्र में उतारना उचित नहीं समझा। फलतः हरी-भरी संस्थायें मुरझाने लगी, शुद्ध संस्कृत अध्ययन के लिए छात्र दुर्लभ हो गये और फलतः पंडित परम्परा विच्छिन्न सी होने लगी।

इस विकट कटु परिस्थिति को देखकर अध्यापक, समाज तथा छात्रों की मनोवृत्ति में कुछ मनोवैज्ञानिक परिवर्तन करना आवश्यक सा हो गया है। अध्यापक इस क्षेत्र में इसलिए नहीं आना चाहते कि एक तो उनकी सर्विस की सुरक्षा नहीं और दूसरे वेतन पर्याप्त नहीं। यदि इस तथ्य को स्वीकार कर लिया जाए और सरकारी नियमों के आधार पर सारी व्यवस्था कर दी जाए तो कोई कारण नहीं कि अध्यापक समाज और छात्र इस ओर आकर्षित न हो। उन्हें कुछ और अधिक भी सुविधाएं देकर इस ओर मोड़ा जा सकता है। केन्द्रीय फण्ड बनाकर अथवा व्यक्तिगत या सामाजिक ट्रस्टों का निर्माण कर उससे उनके वेतन की समुचित व्यवस्था हो, जिससे वे पूरी तरह आश्वस्त रह सकें।

८. छात्र व्यवस्था-

जहां तक व्यवस्था का प्रश्न है उस पर भी मंथन करना आवश्यक है। इसके लिए कदाचित मिश्रित व्यवस्था की जा सकती है। मिश्रिमत व्यवस्था से मेरा तात्पर्य है वर्तमान में प्रचलित सरकारी शिक्षा के लिए ही जैन धर्म की शिक्षा व्यवस्था करना। छात्रों के विकास की सारी समुचित सुविधाएं प्रदान करते हुए अतिरिक्त समय में जैन शिक्षा पाठ्यक्रय में आवश्यक कर दिया जाये। आवास निवास आदि का प्रलोभन देकर भी छात्रों को इस ओर आकर्षित किया जा सकता है। इससे एक ओर असहाय छात्र अपनी प्रतिभा का विकास कर नये युग के लम्बे दौड़ लगा सकेंगे और दूसरी ओर जैन संस्कारों से संस्कारित होकर समाज को कभी भूलेंगे भी नहीं। छात्र की प्रतिभा जिस किसी क्षेत्र मे विकसित हो सके उसे पूरा सहयोग दिया जाये। कला, वाणिज्य, विज्ञान आदि किसी भी शाखा में जाकर उसे अध्ययन करने की सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। शर्त यही रहे कि उसे जैन पाठ्यक्रम अनिवार्य रूप से पढ़ना होगा। इस व्यवस्था का यह लाभ होगा कि समाज का हर वर्ग अपना विकास कर सकेगा। यह व्यवस्था कतिपय संस्थाओं में भी उपलब्ध हैं।

दूसरी व्यवस्था शुद्ध व्यवस्था कही जा सकती है, जिसके अंतर्गत शत प्रतिशत जैन धर्म के अध्ययन की व्यवस्था हो। छात्र को आवास निवास के अनुरूप भरपूर छात्रवृत्ति प्रदान की जाये और उन्हें पूरी तरह से प्रशिक्षित करने की व्यवस्था बनायी जाए। हीन भावना से मुक्त रखने के लिए कदाचित यह व्यवस्था अधिक उपयोगी हो सकती है। या दूसरा पक्ष यह भी हो सकता है कि समुचित सम्मान के छात्र छात्रों को आवास निवास आदि की निःशुल्क व्यवस्था की जाय और अध्ययन पूर्ण करने के बाद उन्हें सर्विस की गारंटी भी दी जाये। हां अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान करा देना आवश्यक है। इससे विदेशों में प्रचार-प्रसार के लिए हम कुछ लोगों को तैयार कर सकते हैं

९. प्रचार-प्रसार विभाग-

जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा स्थायित्व की आवश्यकता को देखते हुए निम्नलिखित योजना पर विचार किया जा सकता है-

१०. शिक्षण प्रशिक्षण शिविर-

लगभग १५ दिवसीय शिविरों की संयोजना कर समाज को प्रबुद्ध किया जा सकता है। इसके माध्यम से जैन संस्कृति का शार्ट कोर्स (संक्षिप्त पाठ्यक्रम) देकर आम जनता को प्रबुद्ध किया जा सकता है। इन्हीं में से कुछ व्यक्ति ऐसे भी मिल सकेंगे जो पर्यूषण पर्व आदि पर प्रवचन करने जा सकेंगे और यथावश्यक विधान आदि करा सकें। विविध अंचलों में ऐसे शिक्षण प्रशिक्षण शिविरों की व्यवस्था होने से समाज सुसंस्कारित हो सकता है।

११. संगोष्ठी एवं व्याख्यानमाला-

जैन जैनेतर समाज में जैन संस्कृति के जो भी विद्वान हैं उन्हें यथा समय संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया जाये। इस कार्यक्रम को संगोष्ठी अथवा व्याख्यानमाला का रूप दिया जा सकता है। कार्यक्रम में आमंत्रित विद्वानों के आवास निवास आदि की समुचित व्यवस्था की जाये। इससे समाज में समुचित रूप से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जागृति आयेगी और

समाज जैन संस्कृति की वास्तविकता को समय सकेगा। नई पीढ़ी को जैन संस्कृति के अध्ययन को झुकाने की दृष्टि से भी यह कार्यक्रम अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा शैक्षणिक पर्यटन भी इसके अन्तर्गत रखा जा सकता है।

१२. छात्रवृत्ति योजना-

जो छात्र स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना चाहते हैं पर आर्थिक समस्या उन्हें पीछे ढकेल रही है, ऐसे छात्रों की विवशता/आर्थिक बाधा का योग्य छात्र वृत्तियों की संयोजना कर दूर किया जाना चाहिए। वे जिस किसी भी संकल्प में अध्ययन करना उचित समझें, करें। संस्थान को उसमें कोई विरोध न हो। इस योजना को व्यक्तिगत या सामाजिक सार्वजनिक ट्रस्ट अपने हाथ में ले सकते हैं। आंचलिक आधार पर भी यह व्यवस्था हो सकती है।

१३. प्राकृत एवं जैन धर्म विभाग-स्वरूप एवं व्यवस्था-

विश्वविद्यालय शिक्षा-व्यवस्था के केन्द्र हैं वहां अधिकतम विद्या शाखाओं के अध्यापन की व्यवस्था की जाती है। विशेष रूप से उन विषयों पर ध्यान दिया जाता है जो अधिक लोकप्रिय और उपयोगी माने जाते हैं। प्राकृत एवं जैन धर्म का अध्ययन न लोकप्रिय है और न उपयोगी। आजकल उपयोगिता का सम्बन्ध उदर-पोषण के साधन से जुड़ गया है। जैन दर्शन का अध्ययन इस परिधि से बाहर हो गया है। इसलिए छात्रों का झुकाव इस ओर न हो तो अस्वाभाविक और आक्षेपाई बात नहीं है। इसके बावजूद कतिपय विश्वविद्यालयों में प्राकृत एवं जैन धर्म के अध्ययन की व्यवस्था की गई है। कहीं उसे स्वतंत्र विभाग के रूप में रखा है और कहीं अन्य संबद्ध वि यों से जोड़ दिया गया है। इसके बावजूद यह विभाग छात्रों को आकर्षित नहीं कर पा रहा है। फलतः प्राकृत जैन दर्शन के अध्यापन की व्यवस्था में तीव्र आघात लगने की संभावना बढ़ती जा रही है। भय है कहीं यह व्यवस्था टूटकर चकनाचूर न हो जाये। इसलिए अब यह आवश्यक हो गया है कि छात्रों ओ अधिक से अधिक छात्रवृत्तियां देकर इस विषय को विश्वविद्यालय-स्तर पर जीवित रखने के प्रयत्न किया जावे। साथ ही यह भी प्रयत्न किया जाए कि जहां इस वि ाय के अध्ययन की व्यवस्था न हो वहां व्यवस्था की जा सके और व्यवस्था और यह व्यवस्था स्थायित्व के लिए हुए हो। इन विभागों में यदि स्थान स्थान से अच्छी छात्रवृत्तियां देकर छात्रों को भेजा जाए तो भी उन विभागों को चलाने में सुविधा हो सकती है। छात्रवृत्तियों के साथ हो स्वर्ण पदक, रजत पदक आदि की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

१४. धर्मन्तरण, स्वरूप, समस्या एवं समाधान-

धर्मान्तरण सामाजिक विकास की सहज प्रक्रिया है। जैन धर्म मूलतः जन्म से जाति, वर्ग और वर्ग विहीन समाज की स्थापना में विश्वास करता है। इसलिए धर्मान्तरण उसका ाश्वत अंग सा बना हुआ है। प्राचीन काल में तो धर्मान्तरण अधिक होता था पर वर्तमान में वह कुलधर्म बन गया है। जिसने अब जाति का रूप ले लिया है। इसलिए कोई वयक्ति धर्मान्तरित होकर जैन बनता भी है तो जैन समाज उसे सहजता स्वीकार, अन्तर्भूत नहीं कर पाता। इसी तरह सराक, कासार, जैन, कलार आदि कुछ ऐसी भी समाज है जो किसी समय जैन धर्म में दीक्षित किय गये थे पर उन्हें पूर्णतः समाज का अंग नहीं बनाया जा सका। फलतः वे जैन होते हुए भी जैन धर्म से विमुख हैं। आज आवश्यकता यह है कि उनके बीच जैनधर्म का प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक किया जाये, उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जायें और समाज के एक अंग के रूप में उन्हें सम्मान स्वीकार किया जाये।

यह प्रसन्नता की बात है कि बिहार में सराक जाति के बीच कार्य करने वाली दोनों संस्थाओं में एकीकरण हो चुका है और वे एकजुट होकर कार्य कर रही हैं। महासभा का यह प्रयत्न शलाघनीय रहा है। अब यह प्रयत्न होना चाहिए कि इस प्रकार की जातियों को हम अन्तर्मुक्त कर सके। वे भी जैन समाज के एक वर्ग के रूप में समानता के आधार पर पूरे सम्मान के साथ रहे सकें तो निश्चय ही एक नया जीवंत कदम होगा। इसलिए इसे शिक्षा नीति से असंबद्ध नहीं कहा जा सकता है।

१५. पुस्तकालय एवं वाचनालय-

जैन संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए पुस्तकालयों एवं वाचनालयों की स्थापना एक आवश्यक अंग है। इनमें जैन पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों को अधिकाधिक स्थान दिया जाना चाहिए। हर ग्राम और नगर में इनकी स्थापना हो जाये तो जैन साहित्य के विक्रय की समस्या तो सुलझती ही है। साथ ही जैन धर्म के प्रति सम्मान भी पैदा होता है।

१६. पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन-

जैन संस्कृति के प्रचार की दृ ट से शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के समान ही पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी आवश्यक है। इसे जैन धर्म के विभिन्न पहलुओं पर ट्रेक्ट निकाल कर भी चलाया जा सकता है।

१७. ग्रन्थ प्रकाशन योजना-

ग्रन्थ प्रकाशन योजना के बिना शिक्षा नीति का निर्धारण अधूरा रहेगा। इस योजना के अन्तर्गत आम कोटि के प्राचीन अर्वाचीन प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन किया जाये। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़ आदि भाषाओं में अभी भी बहुत सारा महत्वपूर्ण प्राचीन साहित्य अप्रकाशित स्थिति में बिखरा पड़ा हुआ है। उसे व्यवस्थित कराना और उसमें से अप्रकाशित ग्रन्थों की प्रकाशन व्यवस्था करना हमारा परम कर्तव्य है। अन्यथा ये प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपिया विलुप्त और अनुपलब्ध होती जायेगी। प्रसन्नता का विषय है कि महासभा ने इस योजना को हाथ में ले लिया है।

इसी तरह अनेक शोध प्रबंध, मौलिक एवं अनुक्ति ग्रन्थ भी प्रकाशन की बाट जोह रहे हैं। विद्वान अनुसंधाता जैन विषय पर शोध करते हैं पर उनके ग्रन्थ यो जी पड़े रहते हैं। इसलिए इन ग्रंथों में उपयोगी अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित कर जैन संस्कृति के विविध प्रश्नों को उद्घाटित किया जाना चाहिए। अंग्रेजी में भी जैन ग्रंथों को अनुदित कराकर अथवा मौलिक ग्रन्थों का प्रणयन कराकर उन्हें विदेशी विद्वानों को उपलब्ध कराये जाये।

इसी संदर्भ में लेखकों को पुरस्कार देकर उन्हें प्रोत्साहित करना भी हमारा कर्तव्य है। छोटी-छोटी पुस्तिकाएं भी निकाल कर जैन संस्कृति का प्रचार प्रसार किया जा सकता है।

१८. साहित्य विक्रय योजना स्वरूप एवं विस्तार-

समाज का साहित्य के प्रति अधिक लगाव न होने के कारण ग्रन्थ प्रकाशित हो जाने के बावजूद भी वे बिक नहीं पाते। इस लिए ग्रन्थ क्रय की प्रकृति के समाज में विकसित की जाये। इस योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के स्थायी सदस्य बनाये जा सकते हैं-

१. मंदिर, पुस्तकालय एवं संस्थाएं जैसे- सार्वजनिक न्यास और

२. व्यक्तिगत।

ऐसे पांच सौ स्थायी सदस्य बन जाये तो साहित्य प्रकाशन और विक्रय

की योजना सफल हो सकती है। स्थायी सदस्यता शुल्क एक हजार एक रुपये लिया जाये। जिससे परिवर्तन स्वरूप सदस्यों की प्रकाशित ग्रन्थों की एक-एक प्रति सधन्यवाद भेजी जाये।

इसके अतिरिक्त कम से कम चार साहित्य विक्रय केन्द्रों की स्थापना की जाये। जहां सभी स्थानों से प्रकाशित साहित्य को एकत्रित किया जा सके। और उनकी विक्रय कार्यालय अथवा केन्द्र नहीं है, जहां से इन सभी कार्यों के लिए सम्पर्क किया जा सके। अतः केन्द्रीय कार्यालय की स्थापना कर हम उपर्युक्त सभी योजनाओं को कार्यान्वित करने में गतिशील एवं सक्षम हो सकते हैं।

शिक्षा समिति निर्धारण समिति के ये कुछ संदर्भ हैं जिन पर समाज के हर वर्ग को गंभीरता पूर्वक विचार करना है। इनके अतिरिक्त और भी कुछ मुद्दे हो सकते हैं। उन सभी पर वस्तुनि ठ होकर विचार करने के बाद एक ऐसी शिक्षा नीति का निधारण किया जाये जो सभी को मान्य हो सके। उसके कार्यान्वित के लिए हम किसी को बाध्य तो अवश्य नहीं कर सकेंगे फिर भी यदि वह उपयोगी प्रतीत होगी तो विश्वास है, उसे स्वीकार करने में किसी को संकोच भी नहीं होगा।

पूर्वांचल बंगाल बिहार प्रान्तीय अधिवेशन

लूणवां अधिवेशन के पश्चात् २४ मार्च को मधुबन पार्श्वनाथ में बंगाल बिहार प्रान्तीय महासभा का अधिवेशन सेठी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्रकी जीर्णोद्धार योजना, सूर्य पहाड़ को विकसित करने, शिखर जी के मधुबन रोड पर सिंह बनवाने आदि वि यों पर विस्तृत चर्चाकी जाकर कार्य की समीक्षा की गयी। इसी मीटिंग में बंगाल प्रांतीय समिति से श्री हरकचंद जी पांड्या का त्यागपत्र स्वीकार करके उनके स्थान पर सेट अमरचंद जी पहाड़िया को अध्यक्ष बनाया गया, जिन्होंने कलकत्ता में ही महासभा के पांच-पांच हजार वाले ४०-५० सदय बनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर जैन गजट के सम्पादक पं. कुंजीलाल जी शास्त्री की सेवाओं की प्रशंसा की गयी।

कर्नाटक प्रांतीय महासभा का अधिवेशन

दिनांक ३ अप्रेल, १९८३ को हुम्मच पद्मावती में कर्नाटक प्रान्तीय महासभा का विधिवत उद्धत्य हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज के आशीर्वाद में हुम्मचा के भट्टारक जी श्री देवेन्द्र कीर्ति जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता श्री सेठी जी ने की। श्री एम.सी.पाटनी कोल्हापुर ने बताया कि १०वीं शताब्दी तक यहां सभी राजा जैन थे तथा प्रजा भी जैन धर्म को मानने वाली थी। लेकिन इसके पश्चात यहां की धार्मिक स्थिति में बदलाव आया और आज न तो कोई जैन राजा है और उनके अनुयायी भी अंगुलियां पर गिनने लायक है। इसलिये महासभा ही एक ऐसी संस्था है जो इस स्थिति में कुछ परिवर्तन ला सकती है।

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय महासभा अधिवेशन

सुहाग नगरी फिरोजाबाद में महासभा की उत्तर प्रदेशीय महासभा शाखा का एक नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक १४ अप्रैल को जैन मेले के अवसर पर श्री सुमेरचंद जी पाटनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। पाटनी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उत्तर प्रदेश में होन वाली महासभा की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्री निर्मल कुमार जी सेठी इस अधिवेशन के मुख्य अतिथि थे। जिन्होंने उत्तर प्रदेश में महासभा की गतिविधियों में विकास करने का अनुरोध किया।

इस वर्ष उदयपुर (राजस्थान) में महासभा का नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक ११ सितम्बर, १९८३ को औरंगाबाद में महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा का अधिवेशन, दिनांक ११ एवं १२ नवम्बर, ८३ को डूंगरपुर (राज.) में महासभा का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। डूंगरपुर में राजस्थान प्रांतीय महासभा के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गय जिसमें श्री मदनलाल जी चांदवाड को अध्यक्ष एवं श्री धर्मचंद जी मोदी को महामंत्री बनाया गया। इसके पश्चात् महासभा के पदाधिकारी सागवाड़ा, घाटोल एवं मंदसौर में सभायें आयोजित करके महासभा की गतिविधियों की जानकारी दी गयी एवं नये आजीवन सदस्य बनाये गये।

आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज का राष्ट्र के नाम संदेश

आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज ने राष्ट्र के नाम संदेश में कहा कि प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के निर्मम हत्या काण्ड के पश्चात सम्पूर्ण देश में भड़की हुई हिंसा भारतीय संस्कृति को आघात पहुंचाने वाली है। अहिंसा में विश्वास रखने वाले देश में इस प्रकार की हिंसा एक जघन्य कार्य है। देशवासी अहिंसा के बारे रास्ते पर चलें तभी विश्वशांति में भारत योग दे सकेगा।

पं. तनसुख जी काला का स्वर्गवास

महासभा के कर्मठ सदस्य, विद्वान वक्ता पं. तनसुखलाल जी काला का ८८ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। ऐलाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने क्षु. धर्मनंदी महाराज को पंडितजी को संबोधित करने के लिये भेजा। इसी तरह पूज्य आर्यनंदी महाराज ने डा. पन्नालाल जी को पंडित जी के पास भेजा। उन्होंने उनके कानों में आचार्यश्री का संदेश सुनाया।

सूयकीर्ति तीर्थंकरमूर्ति स्थापना का विरोध

सूर्यकीर्ति तीर्थकर मूर्ति प्रति ठापना के विरोध में एक विशाल रैली का आयोजन श्री निर्मलकुमार जी सेठी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बम्बई में जिसमें सोनगढ़ में सूर्यकीर्ति तीर्थंकर की बहि कार करो, कानजी भाई को तीर्थंकर बनाना जैन धर्म का मजाक है आदि नारे लगाये गये।

समाज का जबरदस्त विरोध होने के बावजूद घाटकोपर मंदिर बम्बई में अन्य जिन बिम्बों के साथ भावी तीर्थंकर सूर्यकीर्ति की प्रतिमा विराजमान कर दी गयी। इस संबंध में श्री १००८ नेमीनाथ जी दिगम्बर जैन मंदिर घाटकोपर (पू) बम्बई के प्रतिष्ठापकों से पत्र लिखा गया। जिसकी अविकल प्रति निम्न प्रकार है-

श्री १००८ नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर घाटकोपर (प)
बम्बई के व्यवस्थापकों से विनम्र निवेदन
तथाकथित आगम विरोधी सूर्यकीर्ति की मूर्ति की स्थापना न करे
२२ ओडीयन, आर.बी. मेहता मार्ग
घाटकोपर (पू) बम्बई-४०००७७
२७.५.८५
प्रति
मा व्यवस्थापक एवं ट्रस्टी महोदय
श्री १००८ नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
आर.बी.मेहता मार्ग, घाटकोपर (पू.)
बम्बई-४०० ०७७

सप्रेम जय जिनेन्द्र। नीचे हस्ताक्षर करने वाले हम सभी दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों को यह जानकारी की भारी वेदना एवं चिंता हुई है कि आप श्री

१००८ नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, घाटकोपर (पू.) में आगम विरोधी तथाकथित कपोलकल्पित भावी तीर्थंकर सूर्यकीर्ति नाम की मूर्ति विराजमान कर रहे हैं। इस आशय आगम विरोधी मूर्ति के निर्माण से दिगम्बर जैन संस्कृति एवं आगम का विरोध तथा अवज्ञा ने का भयंकर खतरा निर्माण हो गया है। आपसे विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार के किसी भी आगम विरोधी कार्य को आप इस मंदिर में नहीं होने देवें। आगम एवं दिगम्बर जैन संस्कृति की सुरक्षा एवं सुरक्षा में हम सभी आपके साथ हैं।

आइये। धार्मिक सामाजिक एकता तथा सौहार्द के सुन्दर मनोविज्ञान के वातावरण को बनाए रखने में हम आप सभी मिलकर काम करने का प्रयत्न करेंगे। व्यर्थ के कलहपूर्ण एवं अशांत वातावरण को न तो उजागर होने देंगे व न प्रेरणा देकर तथा मंदिर की पवित्रता एवं सुन्दरता को धूमिल न होने देने का संकल्प करेंगे।

समस्त दिगम्बरावलंबियों की आगम सम्मत भावनाओं का आदर करते हुए मंदिर की पवित्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने में आप सहायक होंगे ऐसी आशा है।

ताराचंद एम.शाह एवं अदरस

भा.दि.जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू श्रेयांस प्रसाद जैन का वक्तव्य-

सूयकीर्ति या घातकीखण्ड के भावी तीर्थंकर की स्थापना आगम विरू० है यह एक वक्तव्य साहू श्रेयांस प्रसाद जी द्वारा निकाला गया। पूरा वक्तव्य निम्न प्रकार है-

श्री दिगमबर जैन स्वाध्याय मुदिर ट्रस्ट, सोनगढ़ की ओर से स्वर्गीय श्री कानजी स्वामी के भावी तीर्थंकर के कल्पित रूप में 'सूर्यकीर्ति या घातकी खण्ड के नाम से मूर्ति की स्थापना का जब से समाचार मिला, तभी से भारतव ीय दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के हमारे सभी सहयोगी इस बारे में चिंतित रहे और इसे रोकने के लिये प्रयत्नशील रहे। समाज के मूर्धन्य विद्वानों की राय लेकर भारतव ीय दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की १७ दिसम्बर १९८४ की बैठक में इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई, जहां सभी उपस्थित सदस्यों ने इस प्रकार की मूर्ति स्थापना को आगम विरूद्ध, परम्परा के विरूद्ध और धर्म के सिद्धान्तों के विपरीत होने से उसका विरोध किया। मूर्ति स्थापना को रूकवाने के लिए वार्ताओं और पत्र व्यवहार के द्वारा बहुत प्रयास किये गये। दिगम्बर जैन महासमिति से प्रेरणा पाकर इन्दौर के सज्जनों द्वारा तथा बाद में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा यहप्रकरण न्यायालय में भी उठाया गया, समाज में मान्य विद्वानों में प्रति आचार्य पं. नाथूलाल जी शास्त्री आदि ने भी इस स्थापना को धर्म विरूद्ध और मिथ्यात्व प्रेरित निरूपित किया। जैन पत्रों ने भी इसके विरोध में बराबर लिखा। इस तरह पूरी दिगम्बर जैन समाज ने अनेक स्तरों पर इस गलत कार्य का विरोध किया।

अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि इस सारे विरोध के बावजूद सोनगढ़ ट्रस्ट की हठधर्मी के कारण 'घातकी खण्ड के भावी तीर्थंकर के नाम से कुछ मूर्तियों की तथाकथित प्रति ठा करा ली गई है और अब उन्हें कई जगह मुमुक्षु-मण्डलों के दिगम्बर जैन मंदिरों में स्थापित किया जा रहा है। भारतव ीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ही ऐसी मूर्तियों की स्थापना को सर्वथा धर्म विरोधी और लोकमूढ़ता का कार्य मानती है, इसलिए देश के सभी तीर्थों, मंदिरों और चैत्यालयों के प्रबंधकों से अनुरोध करती है कि इस स्थापना के प्रति सजग और सतर्क रहे और किसी भी हालत में अपने तीर्थ में, मंदिर में या चैत्यालय में ऐसी किसी मूर्ति को रखने की अनुमति नहीं दे। संगठित और जागरूक विरोध के द्वारा ही इस आगम विरूद्ध कार्य को रोका जा सकेगा।

इसलिए आपसे अपेक्षा है कि दिगम्बर जैन संस्कृति और परम्पराओं की रक्षा के लिए सम्बद्ध रहते हुए आप अपने प्रभाव का उपयोग करे और इस पाखण्ड से अपने धर्मायतनों की रक्षा करें।

यदि किसी छलबल से किसी मन्दिर में इस प्रकार की मूर्ति रखने का प्रयास किया जाये तो उसे किसी प्रकार भी बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए और ऐसी मूर्तियों को हटा देने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए तथा पूरी समाज को संगठित होकर ऐसे सारे प्रयास विफल करना चाहिये। इसी सिलसिले में प्रायः श्री कुन्दकुन्द कान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, बम्बई के बारे में प्रश्न उठ रहे हैं। इस संबंध में यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के साथ किसी प्रकार का कोई अनुबंध नहीं है। दूसरी ओर सदैव मे प्रत्येक तीर्थ और मंदिर आदि संस्थान अपनी अपनी प्रबंध समितियों के अंतर्गत अपनी-अपनी नियमावली के अनुसार कार्य करते है। समाज की किस संस्थान से सहयोग या अनुदान लेना है तथा किससे नहीं लेना, यह निर्णय वे संस्थान स्वयं करते हैं। आरंभ से यही प्रथा रही है।

हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस गभीर प्रश्नों पर आप विचार करें तथा उपरोक्त संदर्भों में सावधानीपूर्वक दिशा निर्देश पर अमल करें। इस संबंध में यदि आप कोई मनतव्य या सुझाव देना चाहे तो उसका स्वागत है।

साहू श्रेयांस प्रसाद जैन,

अध्यक्ष, भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

इसी वर्ष दिनांक २१ अक्टूबर को महासभा प्रबंध महासम्मेलन का ऐ आयोजन लूणवा (राजस्थान) में श्री निर्मल कुमार जी सेठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक नगरों से आये हुए जैन युवक युवतियों ने भाग लिया जिसमें सेठी जी ने कहानी पंथियो की डटकर खबर ली। सेठी जी को ग्रन्थ प्रकाशन के संबंध में भी महिला एवं पुरूषों के सहयोग की अपेक्षा की गयी।

महासभा का ९०वां वार्षिक अधिवेशन

हस्तिनापुर जम्बूद्वीपस्थल पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर दिनांक ३० अप्रेल ८५ को महासभा का ९०वां वार्षिक अधिवेशन श्री सेठीजी की अध्यक्षता में सानंद सम्पन्न हुआ। इसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री लुहाड़िया जी भी उपस्थित थे। यह पूरा अधिवेशन कानजी स्वामी के विरूद्ध था। इस अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक दिगम्बर जैन मंदिर में एक बोर्ड लगाया जावे जिसमें यह अंकित हो कि-

''दि. जैन आम्नाय के विपरीत कानपंथी साहित्य का मंदिर जी में रखना पठन पाठन करना वर्जित है।'

एक प्रस्ताव के द्वारा कानजी भाई को भावी तीर्थंकर बतलाने पर घोर विरोध किया गया। प्रस्ताव अविकल रूप से निम्न प्रकार है-

श्री भारतवर्षीय दि. जैन महा. जैन महासभा का हस्तिनापुर में श्री जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के शुभावसर पर आयोजित यह खुला अधिवेशन दिगम्बर जैनागम विरोधी मनगढ़ंत, कपोल-कल्पित मिथ्या धारणाओं के आधार पर कानजी भाई की भावी तीर्थंकर के रूप में श्री

दिगम्बर जैन मंदिर जी सोनगढ़ में जो मूर्ति स्थापित की गई है उसका घोर विरोध करत हुए इस संबंध में परमपूज्य आचार्य श्री १०८ श्री धर्मसागर जी महाराज ने सांभर (राज.) में जो आदेश दिया है, उसके प्रति अपनी पूर्ण विनयवान श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करती है एवं आचार्यश्री के आदेश को शिरोधार्य करती है। महासभा समस्त समाज में से विनम्र करती है कि वह इस आदेश का पूर्णतया पालन करे। आप साथ ही समस्त पू० त्यागीवृन्द विद्वतजन तथा सभी जैन संस्थाओं से करबद्ध प्रार्थना करती है कि वे सभी इस संदेश को क्रियांवित करने के लिए प्रेरणा एवं सहयोग देवें।

आचार्य पद प्रतिष्ठापन समारोह

आचार्य धर्मसागर जी महाराज के समाधिमरण के पश्चात चतुर्थ पट्टाधीश के पद पर उदयपुर में हजारों श्रावकों की दिनांक ७ जून ८७ को अजितसागर को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस अवसर पर कहा गया कि जातीय संगठनों को मजबूत करो तथा सज्जातीय की रक्षा करो।

आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज का समाधिमरण

जैन समाज के शीर्षस्थ आचार्य श्री देश भूषण जी महाराज का ६८ वर्ष की आयु में कर्नाटक के कोथल ग्राम में २८ मई ८७ को दिन के ४ बजे समाधिमरण हो गया। उनके समाधिमरण के समाचार बिजली की तरह सारे देश में फैल गया और जिसने भी सुना वह शोक विह्वल हो गया। उन्होंने ५० से भी अधिक व्यक्तियों को दीक्षित किया। आचार्य विद्यानंद जी महाराज एवं आर्यिकारत्न ज्ञानमती मातजी उनके प्रमुख शिष्य हैं। देशभूषण जी महाराज का महासभा को पूर्ण आशीर्वाद रहा।

प्रबंधकारिणी कमेटी का अधिवेशन

दिनांक १२ जुलाई ८७ को जयपुर खानिया में भा. दि. जैन महासभा का प्रबंधकारिणी कमेटी का अधिवेशन हुआ जिसमें कितने ही विषयों पर चर्चा हुई। इस अवसर पर डा. कासलीवाल द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया गया।

इस कमेटी का एक अधिवेशन दिनांक १५ अगस्त ८७ को महावीर भवन फैन्सी बाजार गोहाटी में आयोजित किया गया। इसमें अनेक सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई।

तीर्थ वंदना रथ को सहयोग की शर्त

महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने एटा में कहा कि महासभा द्वारा तब तक समर्थन नहीं किया जायेगा जब तक कि अ.भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने आपको कहानपंथियों से मुक्त घोषित नहीं करे। महासभा के अध्यक्ष के इस वक्तव्य का सभी ओर से पूर्ण समर्थन किया गया। श्री सेठी जी ने अपने वक्तव्य (जैन गजट वर्ष ६३ अंक १५ में प्रकाशित) में फिर से स्पष्ट किया कि महासभा ने अपने गौहाटी अधिवेशन में जो निर्णय लिया है कि जब तक श्री भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी हमारी मांगों को स्वीकार नहीं करती तब तक ने केवल हमें तीर्थ वंदना का रथ का विरोध ही करना है बल्कि तीर्थक्षेत्र कमेटियों के सदस्यों को समझाकर हमें दिगम्बर जैन तीर्थ कमेटी में दिगम्बर जैन समाज स्वरूप की रक्षा करनी है।

जैन रत्न डा० नरेन्द्र कुमार सेठी का निधन

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त सुप्रसिद्ध समाजसेवी, डा. नरेन्द्र कुमार सेठी का ७ मार्च १९८८ को न्यूयार्क अमेरिका में निधन हो गया। आपका जन्म १२ जुलाई १९३५ को हुआ। आपने यह इन्दौर उज्जैन कलकत्ता मे शिक्षा प्राप्त की। तमिलनाडु जो जैन समाज द्वारा आपको जैन रत्न की उपाधि से प्रदान की। आपके निधन से जैन समाज को भारी क्षति मानी गयी।

भीण्डर (राज.) में महासभा का नैमित्तिक अधिवेशन

परम पूज्य आचार्य श्री धर्म अजित सागर जी के सानिध्य में एवं आचार्य कल्प श्रुतसागर जी महाराज के सानिध्य में महासभा का नैमित्तिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में महासभा के अनेक कार्यकर्ता, पदाधिकारियों ने भाग लिया। विचार विमर्श हुआ और महासभा के विस्तार पर चर्चा हुई।

तीर्थ वंदना रथ का विरोध

महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने २१ अप्रेल ८८ ने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा कहानपंथियों से अपने संबंध विच्छेद न करने तक सम्पूर्ण प्रकार के अन्न का त्याग कर दिया था। अध्यक्ष महोदय के अन्न त्याग के समाचार सुनकर त्रिलोकपुर के श्री सेठीजी के समर्थन में एक दिन छोड़कर एक दिन का त्याग कर दिया। सेठी जी के अन्न त्याग से समाज में चिन्ता व्याप्त हो गयी और सभी ओर से सेठीजी के कदम का स्वागत किया गया।

समाधिमरण

महान तपस्वी परम सन्त आचार्य कल्प श्रुत सागर जी महाराज का दिनांक ६ मई ८८ को प्रातः ६.१५ बजे णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए लूणवां (राजस्थान) तीर्थ पर समाधिमरण पूर्वक स्वर्गवास होगया। लूणवां में हजारों लाखों यात्रियों ने आपके दर्शन किये और अपने जीवन के सम्ल बनाया। महासभा के अध्यक्ष श्री सेठीजी सपरिवार लूणवां पहुंचकर समाधिमरण यात्रा में भाग लेकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

जीवन परिचय-

जन्म आपका जन्म राजस्थान के बीकानेर में संवत् १९६२ में फाल्गुन बदी अमावस्या को ओसवाल जाति में ज्ञावक गोत्र में हुआ। आप अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने कलकत्ता में कपड़े का व्यापार किया। व्यवसाय के साथ साथ आप श्वेताम्बर आम्नाय के कट्टर अनुयायी थें, आपको दिगम्बर जैन धर्म के कुछ अन्य ग्रन्थ हाथ लगे तथा उनका अध्ययन किया। तथा आपने दिगम्बर जैन धर्म को धारण किया तथा पंडित झमकलाल जी से जैन धर्म की दीक्षा प्राप्त की। आपके ३ पुत्र थे पुत्रों को व्यापार सौंपकर ईसरी में ब्र. सुरेन्द्रनाथ जी के पास आ गये तथा विनायक जिनागम एवं तत्व चर्चा में लीन हो गये। ४० वर्ष की अवस्था में आपने ब्रह्मचर्य व्रत को अंगीकार किया। वि.सं. २००६ में पूज्य श्री आचार्य वीरसागर जी महाराज के प्रथम दर्शन तथा संसार को असार जानकर उदासीन रहने लगे। सं० २०११ में टोडा रायसिंह में ७वीं प्रतिमा का व्रत ग्रहण किया तथा ३ माह बाद आपने क्षुल्लक दीक्षा ले ली। सं. २०१४ में खानिया जयपुर में आचार्य वीरसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ली और ३२ वर्ष तक मुनि धर्म के बाद आचार्य शिवसागर जी महाराज के साथ १२ वर्ष तक संघ का संचालन किया। तत्पश्चात आर्चा श्री धर्मसागर जी के पास रहकर धर्म साधना धर्मसागर जी के पास रहकर करते रहे। आपने एकान्त मत को निरस्त करने हेतु जयपुर में खानियां तत्व चर्चा आपके मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई। आपने अपने जीवन का समय जैनागम के अध्ययन में लगाया। आपने षट्खंडागम, धवल, गोमटसार, समयसार, नियमसार, मूलाचार, प्रवचनसार, त्रिलोकसार आदि उच्च कोटि के ग्रंथों का अध्ययन किया।

आपके निर्देशन में कई उच्च कोटि के ग्रंथों का संपादन हुआ। आचार्य धर्मसागर जी महाराज अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन भी आपके कर कमलों से सम्पन्न हुआ। आपने वर्ण एवं जाति पर कई शोधपूर्ण लेख लिखे हैं। आप २५ वर्षों से निरंतर जैन जैनेतर समाज को रत्नाकर की लहरों के माध्यम से समाज को दिशा निर्देश देते रहे। आपके जीवन में निरंतर ज्ञान साधना मुख्य लक्ष्य रहा। आचार्य कल्प श्री की समाधि के समाचार सुनकर लूंणवां पर एक मेला सा प्रतीत हो रहा था।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष श्रीमान निर्मल कुमार जी सेठी (सपरिवार) एवं महासभा के अन्य अनेक पदाधिकारी समाधि के समाचार लूणवां पहुंच गये थे। सभी ने आचार्य कल्पश्री की समाधिमरण यात्रा में भाग लेकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। हजारों लोगों के मुंह से सुना गया कि ऐसी यम संल्लेखना आज तक नहीं देखी। आचार्य कल्प श्री अंतिम समय तक चैतन्य और शांति परिणामी रहे।

भींडर कल्पद्रुम में महामंडल विधान में महासभा अधिवेशन

महासभा अध्यक्ष द्वारा आयोजित प्रथम बार कल्पद्रुम महाविधान के अवसर पर दिनांक १५ अप्रेल ८८ को महासभा का अधिवेशन आचार्य अजितसागर जी महाराज के संघ सानिध्य में तथा श्रवणबेलगोला के भट्टारक चारूकीर्ति स्वामी जी के पावन आशीर्वाद के साथ सेठीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भट्टारक चारूकर्ति जी ने कहा कि जैन समाज (महासभा) एक पार्लियामेंट है तो आचार्य अजितसागर जी महाराज उसके राष्ट्रपति हैं।

महासभाध्यक्ष श्री सेठीजी एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहूजी में सहमति-

६ मई ८८ को श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र क्षेत्रपाल जी ललितपुर में अ. भा.दि. जैन महासभा के अध्यक्ष निर्मलकुमार सेठी एवं भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू अशोक कुमार जैन अनेक सहयोगियों के साथ परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में उपस्थित हुए तथा समाज में चल रहे वर्तमान विवादों को समाप्ति और पारस्परिक सद्भावना की स्थापना के लिये सौजन्यपूर्ण वातावरण में उनके बीच चर्चा हुई।

पूज्य आचार्य श्री की प्रशस्त प्रेरणा पाकर पारस्परिक चर्चा में निम्न प्रकार से सहमति हुई कि कानजी स्वामी पंथ का किसी किस्म का कोई संबंध इस तीर्थ वंदना रथ से नहीं है और न इसके माध्यम से उसका प्रचार या प्रसार ही है। तीर्थक्षेत्र कमेटी इसमें कोई विश्वास नहीं रखती है। यह विज्ञप्ति साहू अशोक कुमार जी पूर्व में दे चुके हैं। आगे भी तीर्थक्षेत्र कमेटी ऐसी किसी संस्था से किसी भी प्रकार का कोई संबंध नहीं रखेगी।

प्रतिष्ठित होने वाली दि. जैन मूर्तियों उत्कीर्ण आलेखों में परम्परानुसार आचार्य कुन्दकुन्द आम्नाय का ही उल्लेख किया जायेगा तथा मूलसंघ, गण और गच्छ के अतिरिक्त उपदेशदाता आदि के रूप में केवल पिच्छीधारी दि. जैन संयमियों के नाम अंकित किये जायेंगे क्योंकि किसी अविरत सम्यक् दृष्टि या असंयमी वस्त्रधारी व्यक्ति उपदेशदाता के रूप में नामांकनकी परम्परा नहीं है। यदि इस प्रकार शब्दांकित मूर्ति कहीं रखी जाती है तो उसे रोका जावेगा।

देवशास्त्र गुरूभक्त समसत प्रति ठाचार्य की सहमति से एक प्रतिष्ठा विधान का प्रकाशन हो तथा उस सर्वमान्य विधान के अनुसार ही प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न की जावे। शास्त्रोक्त विधि विधान का भी पालन सुनिश्चित हो। सूर्य मंत्र आदि के शास्त्रोक्त होने पर ही किसी प्रतिष्ठित मूर्ति को मान्यता दी जायेगी। आपस का मनोमालिनय और विरोध मिटाने के लिये महासभा, महासमिति परिषद और तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी द्वारा निरंतर प्रयास किये जायेंगे और प्रकाशनों से एक दूसरे की आलोचना नहीं करेंगे। यहां उपस्थित समाज के प्रबल आग्रह पर भारतवर्षीय दि. जैन महासभा और उसके अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी द्वारा तीर्थ वंदना रथ का विरोध तत्काल समाप्त किया गया। आज के बाद सेठीजी व्यक्तिगत रूप से तथा महासभा के अध्यक्ष के नाते तीर्थ वंदना रथ प्रवर्तन को अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

इन सारे तथ्यों पर सौजन्यपूर्ण सहमति हो जाने से सभी महानुभावों की संतुि ट हुई और श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने इन मुद्दों को लेकर किये गये अन्न त्याग के संकल्पों को आचार्य श्री का आशीर्वाद लेकर समाप्त कर दिया। पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के जयनाद के साथ बैठक समाप्त हुई।

कार्यकारिणी की देहली में बैठक

देहली में दिनांक १८ एवं १९ को महासभा की कार्यकारिणी की बैठक हुई। इस अवसर पर दिल्ली में महासभा कार्यालय शाखा की स्थापना की गयी। महासभा के लिये एक विधि सलाह समिति का भी गठन किया गया तथा महासभा उच्च स्तरीय २१ सदस्यीय समिति का गठन किया गय। तथा विशेष परिस्थितियों को छोड़कर प्रत्येक महीने की १५ एवं १६ तारीखों को अध्यक्ष के निवास स्थान पर उच्च स्तरीय समिति की मीटिंग रखने का निर्णय लिया गया।

इस अधिवेशन में महासभा के ध्रुव फण्ड के लिये गौहाटी में ३० जून ८८ को ट्रस्ट फण्ड के प्रारूप को अंतिम रूप देने एवं फण्ड की धनराशि एकत्रित करने हेतु श्री मांगीलाल जी छाबड़ा को मीटिंग बुलाने का भार सौंपा गया।

संतो की पुकार
मांस निर्यात बन्द करो।
जीवों की रक्षा करो

☆ श्री सेठीजी का भावभीना अभिनंदन ☆

महासभा के अध्यक्ष लोकप्रिय नेता श्री निर्मल कुमार जी सेठी का दिगम्बर आर्य परम्परा के रक्षार्थ अन्न त्याग सत्याग्रह की सफलता पर श्री सेठी जी बम्बई महानगर में दिनांक ५ जून ८८ को आचार्य श्री शांतिसागर हाल बोरीवली में हार्दिक अभिनंदन किया गया। सुप्रसिद्ध मुनि सेवक श्री आर.के. जैन बम्बई ने कहा कि निर्मल जी तो वास्तव में पूजा करने योग्य व्यक्ति हैं। उनके जैसा निर्मल व्यक्तित्व हमारे समाज में ढूंढकर मिलना भी मुश्किल है।

सोनगढ़ समीक्षा का प्रकाशन

श्री नीरज जैन द्वारा लिखित सोनगढ़ समीक्षा पुस्तक प्रकाशन सोनगढ़ के प्रति समाज की धारणा पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। प्रस्तुत पुस्तक महासभा के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की गयी।

दिगम्बर जैनाचार्यों का पावन सन्देश

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद दिगम्बर जैनाचार्यों के

भावना सन्देशनामा से एक अपील प्रसारित की जिसके अन्त में कहा गया कि दिगम्बर जैनाचार्यों साधुओं सन्तों ने अपने प्रवचनों में जो पावन संदेश दिया था वह निम्न प्रकार है-

"कानजी पंथ से संबंधित सोनगढ़, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर एवं उसके मुमुक्षु मण्डलों द्वारा प्रकाशित साहित्य का पठन पाठन करना, दिगम्बर जैन मंदिरों में रखना, दिगम्बर जैन परम्परा के अनुरूप नहीं है। उनके प्रचारक विद्वानों द्वारा इस परंपरा से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधान, शिक्षण शिविर आदि कार्यक्रम आयोजित करना आगम के अनुकूल नहीं है।"

प्रतिनिधित्व किया

दिनांक १७ जुलाई से २१ जुलाई ८८ तक ब्रिटेन के लेस्टर नगर में नवनिर्मित जैन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु स्वस्ति श्री भट्टारक चारूकीर्ति जी स्वामी श्रवणबेलगोला एवं पं. प्रतिष्ठाचार्य पं. फतहसागर जी के द्वारा सम्पन्न होने वाले पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व जैन कांफ्रेंस में भाग लेने जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल का महासभा के महामंत्री श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी ने नेतृत्व किया। लेस्टर (ब्रिटेन) में आयोजित पंचकल्याणक में महोत्सव का महासभाध्यक्ष श्री सेठीजी ने दीप जलाकर प्रज्वलित कर उद्घाटन किया।

दिगम्बराचार्य समन्तभद्र जी महाराज का समाधिमरण

वयोवृद्ध दिगम्बर जैनाचार्य तपस्वी श्री समन्तभद्र जी महाराज ने दिनांक १८ अगस्त ८८ को माता कुंभोज बाहुबलि में समाधिमरण हो गया। आपका जन्म २७.१२.१८९१ में करगोले (महाराष्ट्र) में हुआ था। सन् १९५२ में आपने मुनि दीक्षा ली। आपने कांटेजा एवं कुंभोज में गुरूकुल की स्थापना की। महासभा एव जैन गजट परिवार ने आपके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

महासभा द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्त्राब्दी समारोह का उद्घाटन

श्री सिद्धक्षेत्र सोनगिरि में दिनांक ३ अक्टूबर ८८ को आचार्य श्री निर्मलकुमार जी महाराज की ७३वीं जन्म जयन्ती के शुभारंभ पर महाराज एव आचार्य श्री विमलसागर जन्म जयन्ती समारोह समिति द्वारा आचार्य कुन्द कुन्द द्विसहस्त्राब्दी समारोह का आयोजन ग्वालियर के उपकुलपति श्री के.के. तिवरी के मुख्य आतिथ्य में एवं श्री चैनरूप बाकलीवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

महासभा का ९४वां वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आचार्य विमलसागर जी महाराज की ७३वीं जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर महासभा का ९४वां वार्षिक अधिवेशन दिनांक १ अक्टूर ८८ को महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी की अध्यक्षता में अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न हुआ। श्री पारसकुमार जी गंगवाल स्वागताध्यक्ष ने अपना स्वागत भाषण पढ़ा। अनेक वक्ताओं के भाषण हुए। इस अवसर पर श्री नीरज जैन का सोनगढ़ समीक्षा पुस्तक के लेखक के रूप में स्वागत किया गया।

मेरा धर्म समाज की आगम के अनुकूल,
एक पुनीत उद्देश्य है महासभा का मूल।

वर्ष- १९८९

सज्जातीयता की अनादिनिधनता

उक्त विषय पर पूज्य आर्यिका श्रेयांसमती माताजी (संघस्थ आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज)

द्वारा सज्जातीयता की अनादि निधनता पर जैन गजट १५ दिसम्बर १९८८ में एक अच्छा लेख प्रकाशित हुआ है। इस लेख में सज्जातीयता की रक्षा करने का अनेक उदाहरणों द्वारा समर्थन किया गया है। इसलिये इसे अविकल रूप से यहां दिया जा रहा है-

संघस्थ परम पूज्य आचार्य कल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज पंचमकाल के अन्त तक धर्म होगा। आजकल भारत में कुछ व्यक्ति सज्जातित्व का लोप करने के पक्ष में हैं किन्तु यह सज्जातित्व अनादि निधन होने से उसका सम्पूर्णतया लोप नहीं हो सकता है। जब तक चतुर्विध संघ रहेगा तब तक सज्जातित्व भी रहेगा। वर्तमान अवसर्पिणी काल के छठे काल के अन्तिम ४९ दिन में प्रलय होगा। उसमें पवन, अग्नि, बिल, बर्फ, धुली धुंआ और क्षारजल ये क्रमशः ७/७ दिन तक बरसेंगे। उस समय इस आर्यखण्ड के कुछ पुण्यशाली युगलों को विजयार्थ पर्वत की गुफा में देवों द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। संतान परिपार्टी से हम युगलों का पिंड शुद्ध होता है।

युगलों द्वारा सृष्टि रचना- श्रावणबदी से भाद्रपद शुक्ल ५ तक के ४९ दिनों में जल, धृत, अग्नि, इक्षुरस, अमृत, मधु इनकी वर्षा से पृथ्वी शान्त हो जाती है। उस समय उत्सर्पिणी की शुरूआत हो जाती है। और इन सुरक्षित युगलों द्वारा सृष्टि की रचना धीरे-धीरे हो जाती है। इस प्रकार यह जाति विषयक व्यवस्था अनादिकाल से है। जीव के उत्पत्ति स्थान को जाति कहते हैं उसे योनि भी कहते हैं। ये ८४ लाख होती है। वे इस प्रकार से होती है-

नित्येतरधा सुसप्त तरू दश विकलेन्द्रियणुशट चैव
सुर नारक तिर्युक्ष तत्वार चतुर्दश मनु येशतसहस्त्रा।।
एदे सर्वे जीव चतुरशीति लक्ष योनिवश प्राप्ता।
ये ये विराधिता खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु कल्याणालोचना।।

अर्थः नित्य निगोद की योनि ७ लाख
इतर निगोद की योनि ७ लाख
पृथ्वी कायिक " " ४२ लाख
जल कायिक " "
अग्नि कायिक " "
वायु कायिक " "
विकलोन्द्रिय " "
वनस्पतिकाय १० लाख
देव ४ लाख
नारकी ४ लाख
पंचेन्द्री तिर्यंच ४ लाख
मनुष्य १४ लाख
कुल- ८४ लाख

पृथ्वी कायिक के प्रभेद में सफेद पाषाण, काला पाषाण, सोना, चांदी, तांबा इत्यादि ७ लाख भेद हैं। हर भेद में अन्तर है। कीमत में और रूप में भी अन्तर है।

जलकायिक के जीव के प्रभेदों पर दृष्टि करने से यह बात ज्ञान में आजाती है कि समुद्र का पानी झरने का पानी चन्द्रकान्त मणी से झरा हुआ पानी अपनी अपनी विशषता से भरा हुआ है। अग्निकायिक जीव के प्रभेदों पर दृष्टि करने से एक बात समझ में आती है कि अंडों की अग्नि, घास की अग्नि, बिजली की अग्नि के भेद दिखलाई पड़ता है। इसी प्रकार विज्ञान ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि वायकायिक जीवों में भी बहुत प्रभेद है।

वनस्पति कायिक का गेहूं लीजिये उसमें भी जातियां होती हैं। वैसे एक वृक्ष का जड़ तो अमृत का काम करता है- उसका फल विविमत होता है, आजकल विजातीय संकर से कुछ फल निर्माण किये हैं। पशु में भी संकरित गाय होती है, जिसको बहुत ही सावधानी से पालना होता है व गाय व बैल ज्यादा काम नहीं कर सकता। जन्द्रिय जीवों की एक जाति में दूसरे जाति के जीव पैदा नहीं होते, इस प्रकार तिन्द्रिय जीवचिंटी, चिंटा, खटमल, जूं आदि भी अपने अपने समूह में ही पैदा होते हैं। इतना ही नहीं लाल चीटी के लाइन में एक भी काली चिंटी नहीं मिलेगी, इसी प्रकार से चतुरिन्द्रिय मधुमक्खी के छत्तों में दूसरी जाति की मक्खी नहीं मिलेगी। इसी तरह पंचेन्द्रिय संज्ञी पशुओं के संबंध में भी लाल मुंह के बन्दर समूह में काले मुंह के बन्दर नहीं मिलेगें। यह निसर्ग से ही ऐसी रचना है। जहां घोड़ा गधों या गधा घोड़ी की विजातीय संतान के बारे में विचार करेंगे। यह विजातीय संतान कमजोर होती है और उसका नाम खच्चर पड़ता है।

सज्जातित्व के लिये माता पक्ष के समानपिता का कुल भी शुद्ध चाहिये मातु पक्ष को जाति तथा पितृ पक्ष को कुल कहते हैं। ८४ लाख जाति तथा १९९ १/२ लाख कुलकोड़ी हैं। जहां पर रजवीर्य से संतान उत्पन्न होती है, वहां पर मातृ-पितृ का विचार किया जाता है। किन्तू सम्मूर्छन जीव रज-वीर्य से नहीं बनते हैं। जिस स्थान में वे उत्पन्न होते हैं उस स्थान को योनि और जिस पुदगल परमाणु से शरीर की रचना होती है उसको कुलकोड़ी कहते हैं। ये कुल कोड़ी नीचे लिखे अनुसार १९९ १/२ लाख होते है:-

पृथ्वी काय २ लाख कुलकोड़ी
जल काय ०७ " "
अग्नि काय ०३ " "
वायु काय ०७ " "
वनस्पति काय २८ " "
दोन इन्द्रिय ०७ " "
तीन इन्द्रिय ०८ " "
चार इन्द्रियां ०९ " "
पांचिन्द्रि पशु ४३.५ " "
नारकी २५ " "
देव २६ " "
मनुष्य १४ " "
कुल- १९९ १/२ लाख कुलकोडी

सज्जातित्व में गोत्र कर्म का स्थान-

गोत्र कर्म के दो भेद हैं- (१) उच्चगोत्र और (२) नीच गोत्र। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पशु तक नीच गोत्री है। नारकी भी नीच गोत्री हैं। देव सभी उच्च गोत्री होते हैं। उन देवों में भी इन्द्र सामाजिक, त्रायस्त्रीश परिषद आत्मरक्ष, लोकपाल अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक ये दस भेद होते हैं।

देवों के मूल भेद ये ४ हैं-

(१) भवनवासी (२) व्यंतरवासी (३) ज्योतिषवासी और (४) कल्पवासी। इनमें व्यंतर और ज्योतिषी देवों में त्रायस्त्रीश तथा लोकपाल नहीं होते। उनके सिर्फ ८ भेद ही होते हैं। और वे अपना-अपना निश्चित कार्य करते हैं। जैसे इन्द्र जो देवों का राजा होता हैऔर बाकी देवों से इन्द्र में विशेष ऋद्धि सिद्धि होती है।

(२) सामाजिक- इन्द्र क समान वायु, आयु, वीर्य, भोग उपभोग परन्तु आज्ञा और ऐश्वर्य से रहित होते हैं।

(३) त्रायस्त्रीश- ऐसा देव मंत्री, पुरोहित के समान महत्व को धारण करते हैं। एक इन्द्र की सभा में ये ३३ ही होते हैं।

(४) पारिषद- इन्द्र की सभा में बैठने वाले देव

(५) आत्म रक्ष- अंगरक्षक का स्थान इन्हें मिला है।

(६) लोकपाल- इन्हें कोतवाल का दर्जा रहता है। वैमानिक देवों के सभी लोकपाल १ भवावतारि होते हैं।

(७) अनीक- ये सेना में रहते हैं।

(८) प्रकीर्णक- नगरवासी के समान होते हैं।

(९) आभियोग्य- सेवक के समान होते हैं।

(१०) किल्विषिक- चांडालादिक के समान नीच काम करते हैं।

देव गति में भी वर्ण-व्यवस्था है-

ये किल्विषक देव उच्चगोत्र का उदय होने पर भी सभा में नहीं आ सकते, दूर खड़े रहते हैं दूसरे देव इनको स्पर्श भी नहीं करते हैं। तीव्र पाप कर्म का उदय इन्हें रहता है। जो जीव देव गुण शास्त्र का विनय नहीं करते अवर्णवाद करते हैं, वे जीव यदि देवायु का बंध करते हैं तो अभियोग्य या किल्विषिक जातियों में ही उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार से देव गति में भी वर्ण व्यवस्था अपने अपने पद के अनुसार स्वभाव सिद्ध है।

भोग भूमि में जाति भेद नहीं- भोगभूमि के जीवों के भेद नहीं है। सभी जीव अपने अपने पुण्य का फल भोगते हैं। यह व्यवस्था अनादि अनन्त है।

कुलकर द्वारा समाज प्रबोधन

अवसर्पिणी काल के तृतीय काल-खण्ड के अंतिम भाग में कुलकर (मनु) की उत्पत्ति होती है। उस समय में जो-जो समस्यायें खड़ी होती है वह निवारण करने का प्रशिक्षण कुलकर देता है। ये १४ होते हैं। अंतिम कुलकर नाभी राजा थे। वे प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव के पिता थे। इन्होंने असि, मसि, ऋषि, वाणिज्य, शिल्प कला के संबंध में प्रजा को अवगत कराया। विवाह संस्था का प्रनयन भी इन्हीं के द्वारा हुआ। नाभिराय का विवाह इन्द्रों द्वारा मरूभूती के साथ कराया गया और वृषभदेव का विवाह यशस्वती और सुनन्दा के साथ सम्पन्न कराया गया। वृषभदेव के ६ कल्याणक हुए क्योंकि देवों द्वारा उनका विवाहोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। वे चाहते तो बाल ब्रह्मचारी भी रहे सकते थे। वे जन्म से ३ ज्ञान के धारी थे। अवधिज्ञान से उन्होंने ये जाना कि पंचमकाल के अंत तक धर्म रहेगा। और धर्म गृहस्थों और यति के बिना नहीं रह सकता। उन्होंने कर्म भूमि में रहने योग्य विद्यायें लोगों को सिखलाई।

धर्म परम्परा और संतति बिना चल रही सकती और धार्मिक संतति निर्माण होने के लिये गृहस्थों के अपने पुत्र और पुत्रियों का विवाह कर देना भी आवश्यक है। यह विवाह संस्कार ही एक धार्मिक मर्यादा है। वि ाय सेवन का या भोग के लिये विवाह नहीं होता है, विवाह से तो धर्म की प्रज्ञा उत्पन्न होती है। धार्मिक संतान की उत्पत्ति यह विवाह का एक उद्देश्य भी है। धर्मचक्रक की धुरा सहित संसार चक्र की धुरा सम्हालना यह भी एक

उद्देश्य विवाह में होता है। विवाह के लिये उत्तम मुहूर्त देखा जाता है। माता पिता, अग्नि, देव गुरू इनके साथी से विवाह होता है। भिन्न गोत्र देखकर ही वह होता है। विवाह योग्य दम्पत्ति एक दूसरों को चाहते हैं। गोत्र और जाति/कुल का विचार किये बिना होने वाला विवाह अन्त में कष्ट देता है, कभी लड़की लड़के को तलाक देता है तो कभी लड़का लड़की को। पैसा देखकर कोई शादी करता है और बाद में पछताता भी है।

नेमी और राजुल विवाह के पवित्र बंधन में पड़ने के पूर्व की एक प्रेम पाश में बंधे थे और दोनों परस्पर एक दूसरे को चाहते थे और जब नेमीनाथ दीक्षा लेते हैं तो राजुल दूसरे ब्याह का प्रस्ताव ठुकरा देती है और पूरी जिन्दगी भर सन्यास वृत्ति से आर्यिका पद में रहती है।

कृ ण के भाई राजकुमार वर बनकर निकले। बीच में ही नेमिनाथ का समोशरण लगा। वहां दर्शन किया। वैराग्य जगा और दीक्षा ले मुनि बन गये। उनकी पत्नी ने अपने पति पर बहुत से उपसर्ग किये। उस समय वह कहती है विवाह की तैयारी न होती तो मैं कुंवारी कहलाती, विवाह हो जाता तो मैं फिर सौभाग्यवती कहलाती। आप मर जाते तो मैं विधवा कहलाती किन्तु इस समय में तीनों ही अवस्थाओं से विपरीत मेरी अवस्था करकर आप यहां आये ये ठीक नहीं किया। ऐसी अवस्था में उसके पति को अपार लगा दी। किन्तु दूसरा विवाह करना मंजूर नहीं किया। अरे इसका तो विवाह भी नहीं हुआ था। लेकिन दूसरे पुरूष का विचार तक उसके मन में नहीं आया। आजकल दहेज के कारण लड़का वक्त पर अड़ जाता है कि उस लड़की उसका त्याग करके माता-पिता की अनुमति से दूसरे लड़के साथ विवाहिता हो जाती है। इसमें कोई भी विरोध नहीं करता और न किसी ने किया। इसका विरोध करना चाहिए।

भ्रूण हत्या- आजकल भ्रूण हत्या का प्रमाण बढ़ गया है। ६० प्रतिशत फीसदी तो इसमें लड़का ही जिम्मेवार है। यह एक महान हत्या है। इसके खिलाफ तो साधु संस्थान को भी आवाज उठानी चाहिए। अहिंसा प्रधान जैनियों के लिये तो यह बड़े शर्मनाक बात है। कुन्ती और पाण्डु राजा का विधियुक्त विवाह न होने से कुन्ती को अपना बेटे कर्ण को पेटी में बन्द करे जल प्रवाहित करना पड़ा और कर्ण को भी उसका दुख जन्म भर उठाना पड़ा। जब विधि पूर्वक कुन्ती और पांडु का विवाह हो गया तो उसकी संतान भी धार्मिक निकली। भीम, अर्जुन, सहदेव, नकुल, धर्मराज ये पांचों पांडव कहलाने लगे। कर्ण भी उनका सगा भाई था तो भी उसका नाम पांच पांडवों में सम्मिलित नहीं किया गया क्योंकि उसकी पैदाइश ही धर्म सम्मत नहीं थी।

शास्त्रों में कुछ कथानक ऐसे आते हैं कि एक जैन अग्रवाल जातीय पुत्री का जैन अग्रवाल जाति में लड़का न मिलने से वै णव अग्रवाल के लड़के के साथ विवाह कर दिया गया। मतलब ये कि उन्होंने जाति में ही लड़की दी। जैन सेठ की लड़की से किसी मुसलमान राजा ने विवाह के लिये याचना की। उस समय वहां के सब जैनी भाई धर्म संकट जानकर देश पार हो गये। कितने ही मर गये लेकिन धर्म भ्रष्ट नहीं हुआ। एक राजा के लड़की को सर्पदंश हुआ था। राजा ने यह घावणा नगर में करवा दी कि जो कोई मेरी पुत्री को निर्विष करेगा उसे मेरे आधे राज्य के साथ मेरी बेटी का विवाह कर दिया जायेगा। किसी विदेशी राजपुत्र ने उसे निर्विष कर दिया। किन्तु उसके कुल का पता न होने से राजा को चिन्ता हुई। लड़की देता है तो कुल भ्रष्ट हो जाने का दुख और नहीं देता है तो वचन भ्रष्ट हो जाने का दुख। आखिर एक देव ने ये विश्वास दिलाया कि यह लड़का उत्तम वंशीय राजकुमार है तब कहीं उस लड़की का विवाह उसके साथ कर दिया।

इस प्रकार इस दृष्टान्त से हमको यह निश्चित करना है कि विजातीय/अंतर्जातीय तथा विधवा विवाह शास्त्र सम्मत तथा रूढ़ि सम्मत भी नहीं है, जो इस प्रकार से वर्ण संकर करता है, वह उच्च कुल में जन्म लेकर भी शूद्र कहलाता है। शास्त्रों में उच्च गोत्री व्यक्ति यदि इस प्रकार धर्म बाह्य आचार अपनाता है तब उसके सत्ता में स्थित उच्चगोत्र का नीच गोत्र में संक्रमण हो जाता है और ऐसे नीच गोत्री को दान पूजनादि का कोई अधिकार नहीं होता और ऐसे व्यक्ति पंचायती द्वारा समाज से बहिष्कृत किये जाते थे। आज वह बंधन टूट रहा है यह खेद की बात है। यदि कोई नीच कुलोत्पन्न व्यक्ति उच्च आचरण भी करता है तो उसी भव में उसके नीच गोत्र का संक्रमण उच्च गोत्र में नहीं हो जाता है। दिगम्बर महासभा का नियम क्र. ०९ सज्जातित्व की रक्षा करनेवाला होने से उसकी एक विशेषता है। एक ब्राह्मण ने मुस्लिम कन्या से विवाह किया। उके पुत्र हुआ। तब पुत्र का सुन्ता करना या मौज करना इसका ठीक निर्णय नहीं हुआ। एक दिन ब्राह्मण ज्योति ी उनके यहां रात भर रहा, ब्राह्मण का घर समझकर उसके यहां राखी भी खा ली। फिर ब्राह्मण की बीबी पूछती है ज्योतिषीजी से कि महाराज मेरे लड़के को सन्ता करना चाहिये कि मौज करना चाहिए। ब्राह्मण ज्योतिषी विचार करता है कि इन बच्चों का जो होगा तो होगा लेकिन इनके यहां मैंने रोटी खाई तो अब मेरा क्या होगा।

एक पुरूष एक भवन में १००० स्त्रियों के साथ विवाह कर सकता है, लेकिन एक स्त्री एक भव में एक पति को ही वर सकती है। इसका कार्य पुरूष एक साल में ३६५ बच्चों को पैदा कर सकता है लेकिन स्त्री एक साल में एक ही बच्चे को जन्म दे सकती है। पुरूष छोड़ता है और स्त्री ग्रहण करती है। यह इन दोनों के शरीर की रचना में फर्क है। सज्जातित्व की रक्षा किये बिना आगे के सप्त परम स्थान ही प्राप्ति दुर्लभ है। अतः सभी श्रावकों को सज्जातीत्व की रक्षा करनी चाहिए।

आजकल सुधारवादी पाने का मुखड़ा ओढ़ के जो सज्जातीत्व को नष्ट करने में तुले हुए हैं वे धर्मद्रोही और विधान संतापी हैं। आगे गोत्र कर्म के कार्य को समझाते है-

संतान कमेवाशर जीवायरणस्सग गोदा निदिसण्णा
उच्चं बीचं चरणं उच्चं वीचं हुवे गोदं
(गोमटसार क.का.)

कुल की परिपाटी के क्रम से चला आया लोक का आचरण उनकी गोत्र संज्ञा है। उस कुल परम्परा में उत्तम आचरण हो तो उसे उच्च गोत्र कहते हैं। निंद्य आचरण का ही दूसरा नाम नीच गोत्र होता है।

एक सिंहनी ने सियार का एक बच्चा बचपन से ही पाला था। वह सिंह के बच्चों के साथ खेला करता था। एक दिन सब बच्चे किसी जंगल में गये जहां एक हाथी था। सिंहनी के बच्चे तो हाथी के सामने आये पर सियार उस हाथी को देखते ही भागने लगा। अपना बड़ा भाई भागता हुआ देखकर सिंहनी के बच्चे जंगल से तुरंत लौट गये और माता से सियार की शिकायत की। कहने लगा इस सियार के कारण हम हाथी का शिकार नहीं कर सके। माता सियार को एक श्लोक कहती है, उसका मतलब यह है कि अब हे बेटा तू यहां से भाग जा अन्यथा तेरी जान खतरे में है-**श्लोक-**

शूरोसि कृतं विद्योसि दर्शनीयोसि पुत्रक
यस्मिन कुले त्वमुत्पन्नो मजस्तत्र न हन्यते

अर्थ- हे पुत्र तू शूरवीर है, विद्यावान है, रूपवान है परन्तु जिस कुल में तू पैदा हुआ है उस कुल में हाथी मारे नहीं जाते हैं।

भावार्थ- कुल का संस्कार अवश्य आ जाता है। चाहे वह विद्यादि से रहित हो। उस पर्याय में संस्कार नहीं मिटता है।

अच्छे जमीन में अच्छा बीज बोया तो फसल अच्छी आती है उसी प्रकार रजो वीर्य की शुद्धि होने से ही योग्य संतान उत्पन्न हो सकती है जो देश और धर्म तथा राष्ट्र का उद्धार कर सकती है। गोत्र शब्द की व्युतपत्ति-

मां भूमिं योनि भयन्ति इति गोत्राः

सुप्तु गोत्राः एषां से सुगौत्रीः।।

सुगोत्री वही है जिनके यहां सूतक पालकी रक्षपस्वत्मा का विचार किया जाता है। जिनके यहां का खान-पान आचार-विचार शुद्ध है तथा विधवा विवाह और अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन जिनमें नहीं है। ऐसे उच्च गोत्री व्यक्ति ही मुनि दीक्षा के पात्र होते हैं और वे श्रावक ही आहार दान आदि कर सकते हैं। भक्तामर स्तोत्र के २०वें श्लोक में लिखा है तेसो महामणिषु याति तथा यथा महत्व नैवं व कांचशकले किरणाकलेअपि।

अर्थ- जैसा तेज महारत्न में होता है, वैसा तेज चमत्कार कांच के टुकड़ों में से नहीं मिलता। उसी प्रकार उत्तम कुल वंश में उत्पन्न हुए बालकों में जो छात्र तेज रहता है वह नीच कुलोत्पन्न मनु यों में नहीं रहता। अतः अपना कल और जाति तथा आचार शुद्ध रहे ऐसा ही प्रयत्न करना युक्त है।

सेठी जी के नेतृत्व में कनाडा के लिये प्रस्थान

महासभा के अध्यक्ष श्री सेठी जी के साथ लगभग पचास लोगों का एक प्रतिनिधि मण्डल टोरन्टो (कनाडा) में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लेने दिनांक २४ जून को प्रस्थान किया। ये सभी जैन एसोसिएशन जो दिनांक १.७.८६ से ६.७.६८ तक चली थी उसमें भाग लिया। टोरन्टों का प्रथम पंचकल्याणक दिनांक २.७.६८ से ६.७.८६ तक सम्पन्न हुआ। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समारोह में भट्टारक जी श्री चारूकीर्ति जी श्रवणबेलगोला, हुमचा के भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति जी एवं कोल्हापुर के भट्टारक लक्ष्मीसेन जी ने भाग लिया और उपदेशों से वहां के निवासियों पर गहरी छाप छोड़ी।

जैन गजट के सम्पादक का निधन

जैन गजट के सम्पादक एवं मूर्धन्य विद्वान **पं. कुंजीलाल जी शास्त्री** का दिनांक ४ सितम्बर ८६ को निधन हो गया। आपके निधन पर महासभा अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी ने व मंत्री कोठारी जी ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की

महासभाध्यक्ष सेठी जी का प्रधानमंत्री को पत्र

महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को एक पत्र लिखकर यह अनुरोध किया कि सरकार का कोई भी कार्य हिंसा पर अधारित नहीं होना चाहिए।। सेठी क पूरा पत्र निम्न प्रकार है-

आदरणीय श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी,

प्रधानमंत्री- भारत सरकार

नई देहली

भगवान आदिनाथ, भगवान महावीर, भगवान राम और भगवान बुद्ध एवं गांधीजी के इस महान अहिंसा प्रधान देश में एक नई सरकार का गठन हुआ है, जो इस देश में एक नई दिश देने के लिए तत्पर है। यह जानते हुए हम आपसे यह आशा करते हैं यह लिखने का कि इसदेश की सरकार का कोई भी कार्य हिंसा पर आधारित नहीं होना चाहिए।

इज्जतनगर (बरेली) उ.प्र. में प्रस्तावित कट्टीखाना, पशु हिंसा का एक घृणित केन्द्र होगा, जिसमें मारे जाने वाले पशुओं की करूण पुकार से इस देश का नाम न केवल अपने ही देश में अपितु विदेशों में भी बदनाम होगा और अहिंसा की छवि को नुकसान पहुंचेगा और आप जैसे प्रकाशक के ऊपर भी भयंकर आंच उन पशुओं की करूण पुकार से आयेगी। आपको तो विदित ही है कि इस देश के रहने वाले करोड़ों लोग शाकाहारी हैं एवं वे भी मांसाहारी भोजन का प्रयोग करने की कल्पना भी नहीं करते हैं। इस देश के राजस्व में भी इन शाकाहारियों का योगदान है। यदि इनसे प्राप्त राजस्व से बरेली में या अन्य जगह पर कट्टीखाने खुलते हैं तो हमारी संस्कृति के अनुसार उस कर्म का फल भी इन लोगों को लगेगा और ये लोग भी आपके इस कट्टीखाने के पाप के भागीदार बन सकेंगे। अतएव आपसे निवेदन है कि भारत सरकार स्वयं इस कट्टीखाने को न खोले और न ही ऐसे कारखानों को खोलने की किसी को अनुमति ही देवे।

अभी हमारे देश में मांस-मछलियों का निर्यात हो रहा है जो कभी भी नहीं हुआ था। आप सोचें अहिंसा जिनकी महान संस्कृति थी, प्राणीमांत्र की रक्षा का जिन्होंने उपदेश दिया था, उस धरती पर यदि धन आहरण के लिए पशुओं का वध किया जायेगा तो इससे घृणित क्या हो सकेगा। इससे आहरण धन को हमारे स्कूल के बच्चों पर खर्च किया जायेगा तो उनकी संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसका तो अनुमान ही नहीं लगाया जा सकता है। इसके साथ ही जब विदेशों में मांस पहुंचेगा तो भारत के मनीषियों की शिक्षाओं पर वहां के लोगा क्या सोचेंगे कि भारत कहता कुछ है और करता कुछ है। आज पर्यावरण की रक्षा के लिये सारा विश्व चिन्तित है और हमारा गौरव है कि हमारे देश की एक महान नेता श्रीमती मेनका गांधी जी इस कार्य में विशष रूचि ले रही हैं और अपने उनको अपने मंत्रि परिषद में चुनकर अपने मंत्री परिषद का गौरव बढ़ाया है। पर्यावरण की दृष्टि से भी पशुओं को मारना बिलकुल अनुचित है। ये पशु भी हमारे पर्यावरण के रक्षक हैं।

हमारे दिगम्बर परम्परा के स्वर्गीय आचार्य श्री १०८ शांतिसागर जी महाराज के पट्टशि य हैं आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज, जिन्होंने इस कट्टीखाने को न खुलने के लिये ही अपना उपदेश दिया है। अभी उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। अभी जब मैं उनसे मिलकर आया तो उनके मन में पीड़ा थी कि बरेली में एक स्वचालित कट्टीखाना खुल जायेगा तो भावी पीढ़ी में संस्कारों को नष्ट करने का कारण बनेगा। हमारे जितने भी मुनि संघ हैं जैसे कि आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज, आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री विनिर्मलसागर जी महाराज, आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, आचार्य श्री कल्याणसागर जी महाराज, आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री पुष्पदन्तसागर जी महाराज एवं अनेक आर्यिकायें जिनमें श्री आर्यिकारत्न १०५ ज्ञानमति माताजी, आर्यिका विशुद्धमती माताजी, आर्यिका सुपार्श्वमती मातजी, आर्यिका विजयमती माताजी एवं अनेक संतों ने इस कट्टीखाने को न खुलने के लिये कहा है और महासभा को आदेश दिया है उनके आदेश को शिरोधार्य कर भारत सरकार से इस संबंध में अनुरोध करें।

उत्तर प्रदेश में जहां १८ तीर्थंकरों की जन्मभूमि है, वहां इस कट्टीखाने को खोलने का आदेश किसी भी कीमत पर न दिया जाये। यहां पार्श्वनाथ भगवान का समोशरण आया है उस अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ के निकट यह कारखाना खुलने से हम सबको घोर दुख होगा। आशा करता हूं कि आप

भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी के रूप में इस कट्टीखाने को न खुलने के आदेश देंगे। हम लोगों ने इस संबंध में भू.पू. प्रधानमंत्री माननीय श्री राजीव गांधी जी से भी अनुरोध किया था कि उस समय प्रस्तावित पटपड़गंज दिल्ली के कट्टीखाने को निरस्त कर दें। उन्होंने इस ओर ध्यान दिया और योजना को निरस्त कर दिया। आशा है आप भी इसी प्रकार से इसे निरस्त कर देंगे और पशुवध का कार्य इस देश से सरकारी तौर से न करने के आदेश देंगे। सब विभागों को आप इस संबंध में आदेश भिजवाने की कृपा करें।

सधन्यवाद

- निर्मल कुमार जैन सेठी

आचार्य अजितसागर जी महाराज का समाधिमरण

आचार्य अजितसागर जी महाराज का ९ मई १९९० को प्रातः ७.३० बजे पर समाधिमरण हो गया। आपने ७ जून १९८७ में आचार्य धर्मसागर जी के पश्चात आचार्य पद प्राप्त किया था। आचार्य श्री के चरणों में सैकड़ों हजारों व्यक्तियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

हीरक जयंती समारोह

श्री सिद्धक्षेत्र सोनगिरि जी में सन्मार्ग दिवाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज का हीरक जयंती समारोह दिनांक १० से १२ सितम्बर तक विभिन्न आयोजनों के साथ विशेष कार्यक्रमों के साथ मनाई गई। इसअवसर पर संघ के सभी साधुओं ने समाज के सभी प्रतिष्ठित महानुभावों ने आचार्य श्री के चरणों में सादर श्रद्धांजलियां अर्पित की। हीरक जयंती के उपलक्ष में ७५ ग्रंथों का प्रकाशन अपने आपमें एक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ।

इस वर्ष विभिन्न स्थानों पर महासभा के नैमित्तिक अधिवेशन सम्पन्न हुए-

दिनांक ६-७ अक्टूबर १९९० को मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र का संयुक्त अधिवेशन। स्थान मुक्तागिर सिद्धक्षेत्र सानिध्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज।

मुख्य न्यायाधीश नियुक्त होने पर बधाई

राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री मिलापचद्र जी जैन को दिल्ली हाईकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त होने पर महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने तार द्वारा बधाई दी गयी। देहली जैन समाज द्वारा भी आपका हार्दिक स्वागत किया गया।

प्रथम राष्ट्रीय प्राकृति सम्मेलन

स्वामी भट्टारक चारूकीर्ति जी श्रवणबेलगोला की अध्यक्षता में स्थापित ज्ञान भारती एजुकेशन ट्रस्ट बंगलौर के द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रीय प्राकृत सम्मेलन ८ एवं ९ दिसम्बर ९० को बंगलौर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्राकृत भाषा के प्रसिद्ध १० विद्वानों का प्राकृतिज्ञान भारतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसअवसर पर प्राकृत भाषा की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सम्मेलन में पचास से अधिक विद्वानों ने भाग लेकर अपने निबंध पढ़े।

सिद्धक्षेत्र बावनगजा पंचकल्याणक महोत्सव

श्री दि.जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा जी में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव दिनांक १४ जनवरी से २१ जनवरी तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। महामस्तकाभिषेक में अनेक राजनेता एवं तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा पधारे। सारा कार्य आचार्य विद्यानंद जी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ महासभाध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी ने इस अवसर पर कहा कि महासभा सदैव ही शाकाहार एवं अहिंसा के लिये समर्पित रही है और आगे भी रहेगी। दिनांक २१ जनवरी ९१ को महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महासभा की अनौपचारिक बैठक श्री सेठीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। एक दूसरी मीटिंग में आचार्य विद्यानंद जी महाराज के सानिध्य में वर्ष १९९१ को महासभा महासमिति परिषद सभी ने इसे शाकाहार वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री का निधन

भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व महामंत्री श्री चंदूलाल कस्तूरचंद गट्टा का दिनांक २२ जनवरी मंगलवार को णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए निधन हो गया वे ९२ वर्ष के थे। तीर्थक्षेत्र कमेटी के वे वर्षों तक महामंत्री रहे थे। महासभा की महाराष्ट्र शाखा के पदाधिकारियें ने मृतात्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

तीन व्यक्तियों को राष्ट्रीय सम्मान

गणतंत्र दिवस १९९१ के अवसर पर महासमिति के महामंत्री श्री बाबूलाल जी पाटोदी को 'पद्मश्री' की उपाधि देकर रा ट्रीय सम्मान किया गया। महासभा के महामंत्री ने पत्र लिखकर उनको हार्दिक बधाई दी। इसी अवसर पर श्री विमलकुमार जी जैन मैनेजिंग डाइरेक्टर अरविंद कानसट्रक्शन कं. देहली एवं एयर मार्शल श्री प्रद्युन कुमार देहली को परम विशि ट सेवा पद से अलंकरण किया गया।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीवगांधी की हत्या

पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की नृशंस हत्या पर महासभा कार्यकर्ताओं एवं समस्त दिगम्बर जैन समाज ने तीव्र भर्त्सना की गयी। उनकी हत्या पर समस्त जैन समाज ने हार्दिक दुख प्रकट किया तथा इसे सबसे बड़ी राष्ट्रीय क्षति स्वीकार की।

पहाड़िया जी संयुक्त महामंत्री नियुक्त

महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने महासभा के उपाध्यक्ष श्री अमरचंद पहाड़िया के सुपुत्र श्री भागचंद पहाड़िया को महासभा की केन्द्रीय समिति के संयुक्त महामंत्री पद पर मनोनीत किया।

विद्वत्‌रत्न पं. सुमेरचंद जी दिवाकर का निधन

देश एवं समाज के वयोवृद्ध विद्वान पं. सुमेरचंद जी दिवाकर का २५ जनवरी, १९९४ को निधन हो गया। दिवाकर जैनदर्शन, साहित्य एवं इतिहास के अच्छे विद्वान थे। आपका चारित्र चक्रवर्ती, रिलीजियस एवं पीस, जैसी कितने ही पुस्तकों के लेखक एवं सम्पादक रहे। महासभा ने आपको २२ अगस्त, १९९२ को कलकत्ता में महासभा पुरस्कार से सम्मानित किया था। आपकी निधन के समय ८९ वर्ष की आयु थी। आपके निधन एवं जैन गजट परिवार ने आपको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

लाडादेवी का स्वर्गवास

महासभा के प्रकाशन मंत्री श्री राजकुमार जी सेठी की माताजी एवं स्व. सेठ श्री फूलचंद जी सेठी की धर्मपत्नी अत्यधिक दानशीला, धर्मपरायण, श्रीमती लाडादेवी सेठी का दिनांक ४ मई, १९९४ को लम्बी बीमारी के बाद

स्वर्गवास हो गया।

सेठ सिखमीचंद छाबड़ा का निधन

महासभा के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में संरक्षक परम मुनिभक्त श्री सेठ सिखमीचंद जी छाबड़ा का ८ मई, ६४ को गोहाटी में स्वर्गवास हो गया। आपके निधन से समाज में सर्वत्र शोक छा गया तथा सभी ओर उनकी सेवाओं को याद किया जाने लगा।

राय देवेन्द्र प्रसाद जी जैन का निधन

महासभा की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य राय देवेन्द्र प्रसाद जी का १२ जून, १९९४ को गोरखपुर में रात्रि को निधन हो गया। आप समाज के अच्छे कार्यकर्ता थे। प्रभावक व्यक्तित्व वाले थे।

महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा द्वारा अनेक निर्णय

सिद्धक्षेत्र गजपंथ में मुनि श्री देवनंदी जी महाराज के सानिध्य में स्थायी फण्ड के यि सात लाख के वचन प्राप्त हुये। आचार्य श्री शांतिसागर जैन सिद्धान्त ज्ञानपीठ योजना को स्वीकृत कियागया। श्रीमती बेला गोधा को महाराष्ट्र महिला संगठन की अध्यक्ष तथा श्री आर.के.जैन जतीर्थरथ भक्त शिरोमणि दयसागर की उपाधि से अलंकृत किया गया।

सम्मेदशिखर जी में मूर्तियां खंडित

श्री सम्मेदशिखर जी में मधुवन स्थित दिगम्बर जैन तेरापंथी कोठी में नंदीश्वर द्वीप मंदिर जी में दिनांक ११ नवम्बर, १९९२ को दो मूर्तियां खंडित किये जाने से समस्त जैन समाज में गंभीर चिन्ता व्यक्त हो गयी। शाहदरा दिल्ली में महासभा के अध्यक्ष द्वारा एक मीटिंग करके तथा हजारों लोगों का जुलूस निकाल कर बिहार के महाप्रांतय निरीक्षण में भेंट की। इसी तरह गिरडीह, हजारीबाग में जुलूस निकाल कर विरोध प्रदर्शित किया गया। कुछ दिनों बाद स्वयं अपराधी बनवारीलाल ने आत्म समर्पण कर दिया। रांची में १३ नवम्बर, १९९२ को मौन जुलूस निकाया गया।

सार्वजनिक अभिनंदन

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन का फिरोजाबाद पी.डी.जैन इंटर कालेज के प्राचार्यपद से निवृत्त होने के पश्चात उनका नवनिर्मित आचार्य महावीर कीर्ति प्रवचन हाल में महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभी वक्ताओं ने आपके पांडित्य, संचालन क्षमता एवं मधुर व्यवहार की प्रशंसा की गयी। आचार्य श्रेयांस सागर जी महाराज का दिन।

कोठारी जी का सम्मान

महासभा के महामंत्री श्री त्रिलोकचंद कोठारी का श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पर कल्पद्रुम महामंडल विधान महोत्सव के अवसर पर सम्मान किया गया। आपने इस अवसर पर क्षेत्र को एक लाख रुपये का दान देकर उसके नवनिर्माण में सहयोग किया। महासभा अध्यक्ष ने भी एक अपील निकाल कर समजा से क्षेत्र को सहायता भेजकर पुण्य दान प्राप्त करने का आह्वान किया।

[illegible]

कुण्डलपुर (दमोह) के बड़े बाबा के पाद मूल में विराजमान आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के २५वें दीक्षा रजत समारोह पर १५ ब्रह्मचारिणी बहिनों को आर्यिका दीक्षा दी गयी तथा २५ बहिनों ने २५वें दीक्षा दिवस पर व्रत ग्रहण किये।

पश्चिम बंगाल प्रांतीय अधिवेशन

महासभा की पश्चिम बंगाल शाखा का नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक १५ से २३ अगस्त तक अहिंसा प्रचार समिति हाल ३४/३५ काटन स्ट्रीट कलकत्ता में सम्पन्न हुआ। इसके पूर्व एक जुलूस निकाला गया। अधिवेशन में २० महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुये, जिसमें महासभा का अपना भवन, पशुपति चिकित्सालय भवन, अस्पताला की स्थापना आदि प्रस्ताव पारित हुये अधिवेशन में महासभा अध्यक्ष, अमरचंद पहाड़िया, श्री पूनमचंद गंगवाल आदि विशेष रूप से भाग लिया।

राजस्थान प्रांतीय महासभा का अधिवेशन

जयपुर नगर में गणधराचार्य कुंथुसागर जी महाराज के सानिध्य में दिनांक २५.६.६२ को राजस्थान प्रांतीय महासभा का अधिवेशन श्री राजमल जी कासलीवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अनेक वक्ताओं ने महासभा की रीति नीति का समर्थन किया तथा उसे पूरे समाज की प्रतिनिधि संस्था बनाने पर जोर दिया।

आर.के.जैन
महाराष्ट्र प्रांतीय अध्यक्ष मनोनीत

कोल्हापुर में दिनांक २२ मई, १९९३ को महासभा के केन्द्रीय उपाध्यक्ष कर्मठ समाजसेवी श्री आर.के.जैन को महासभा अध्यक्ष श्री सेठी जी ने महासभा की महाराष्ट्र प्रान्तीय समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। श्री जैन के निर्वाचन का सभी ओर से स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री बाबू पाटिल को महासभा महाराष्ट्र शाखा का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

पं.नाथूलाल जी शास्त्री पुरस्कृत

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इंदौर द्वारा पं. नाथूलाल जी शास्त्री को उनकी कृति प्रतिष्ठा प्रदीप को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कृत ग्रंथ के यशस्वी लेखक को २५,०००/- नकद राशि, रजत प्रशस्ति पत्र, शाल आदि ओढ़ा कर सम्मान किया गया।

महाराष्ट्र का प्रांतीय संगठन सक्रिय

पूर्वांचल अध्यक्ष श्री राजकुमार सेठी के नेतृत्व में अगस्त ६३ के अंतिम सप्ताह में आसाम प्रान्त के दौरे पर गया और रंगिया, गोहाटी, रांची आदि नगरों में जाकर श्रवणबेलगोला में होने वाले महामस्तकाभिषेक के संबंध में जानकारी दी तथा अधिक से अधिक संख्या में श्रवणबेलगोला पहुंचकर भगवन बाहुबली की वंदना, दर्शन एवं अभिषेक करने के लिए प्रेरित किया।

दिनांक १२ सितम्बर, १९९३ को नेमगिरि (जिन्तूर) क्षेत्र पर पूज्य मुनि देवनंदी जी महाराज के सानिध्य में महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा का अधिवशन सम्पन्न हुआ। जिसमें महाराष्ट्र महासभा के संगटन कैसा हो, तीर्थक्षेत्र जीर्णोद्धार, पाठशाला, शास्त्र स्वाध्याय का प्रचार प्रसार कैसे हो, शाकाहार का प्रचार जैसे आदि विषयों पर गंभीरता से चर्चा की गयी एवं निर्णय लिये गये। अनेक समाज सेवियां ने महासभा फण्ड में मुक्त हस्त से अर्थ का सहयोग दिया तथा महासभा के पास १० लाख का ध्रुव फण्ड हो, यह निर्णय लिया गया। अधिवेशन में नागपुर, नादेड, औरंगाबाद, परभणी, हिंगोली,

परतनाड़ा, नांदगांव, इन्दापुर, अकलूज, फलटण, कोल्हापुर, पुणे, सतारा आदि नगरों से समाज सेवियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन में भी पी.यू. जैन की स्मृति छायी रही और उन्हें मरणोपरांत श्रावक शिरोमणि की उपाधि से सम्मानित किया गया। बम्बई नगर से आर.के. जैन के नेतृत्व में २०० से अधिक लोग पधारे थे।

आचार्य कल्याणसागर जी महाराज का निधन

णमोकार मंत्र वाले बाबा के नाम से विख्यात परम पूज्य आचार्य श्री कल्याणसागर जी महाराज का वही पार्श्वनाथ चोपाटी स्थित णमोकार साधना स्थली पर दि. २१.१०.६३ गुरुवार को प्रातः ६.५ पर समाधिमरणपूर्वक स्वर्गवास हो गया।

आचार्य नेमिसागर महाराज का निधन

परम तपस्वी आचार्य १०८ नेमिसागर जी महाराज का दिनांक २० नवम्बर ६४ को समाधिपूर्वक एक को निधन हो गया। आपक निधन से समाज की गहरी क्षति माना गया।

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का समाधिकरण

सन्मति दिवकर करूणामूति एवं जैन समाज के वरिष्ठ आचार्य विमलसागर जी महाराज का समाधिमरण सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी में दिनांक २६ दिसम्बर ६४ को ४.१० पर हो गया। आपके स्वर्गवास से समाज के इतिहास का एक पृ ट सदा के लिये बन्द हो गया सारे देश में जैन समाज ने ोक सभाएं आयोजित करके अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित की। महासभा के अध्यक्ष, महामंत्री एवं दूसरे पदाधिकारियों ने आचार्य श्री के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया।

उम्मेदमल पांड्या का पत्र

महासभा के वरि ट उपाध्यक्ष श्री उम्मेदमल पांड्या ने केन्द्रीय गृहमंत्री श्री एस.बी. चव्हाण को दिनांक १८.१.६५ को पत्र लिखकर श्री सम्मेदशिखर जी के सम्बन्ध में बिहार सरकार द्वारा पारित अध्यापदेश पर तुरन्त निर्णय लेने की प्रार्थना की। मंत्री महोदय को भेजा गया पत्र निम्न प्रकार है-

१८.०१.१६६५

प्रति ठा में,

माननीय श्री एस.बी.चहवाण

गृहमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आदरणीय महोदय,

संदर्भ- श्री सम्मेदशिखर जी (पारसनाथ पर्वत)

बिहार सरकार के लोकतांत्रिक अध्यादेश को अकारण रोकना

विशेष- सन्दर्भ के लिए पुस्तिका संचलन

श्री सम्मेद शिखर जी (पारसनाथ पर्वत) जैनों का उतना ही पवित्र तीर्थ है जितना हिन्दुओं के लिए काशी।

मान्यवर

बिहार सरकार ने श्री सम्मेदशिखर जी कुव्यवस्था से खिन्न होकर श्री वै णोदेवी, श्री बद्रीनाथ तथा जगन्नाथपुरी आदि तीर्थों की तरह ही पारसनाथ पर्वत के लिए प्रबंधबोर्ड गठित करने का निर्णय लिया और आज से दस माह पूर्व एक अध्यादेश प्रस्तावित कर अपने संकल्प की पूर्ति की, किन्तु हमें बताया गया है कि श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनों के प्रभाव में आकर आपने फोन पर आदेश दिया बिहार के महामहिम राज्यपाल से उक्त अध्यादेश नयी दिल्ली मंगाकर ठण्डे बस्ते में डाल दिया।

केन्द्र सरकार के इस रवैये के खिलाफ मई में दिगम्बर जैन समाज की ओर से एक विशाल रैली निकाली गयी जिसमें लाखों की संख्या में देश के कोने-कोने से स्त्री पुरुष व बच्चे शामिल हुए। हालांकि यह रैली पूर्णतया अहिंसक थी और आपको ज्ञापन भी दिया था, फिर भी आपने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

इसके पश्चात देश के प्रत्येक ग्राम व नगर से दिगम्बर जैन समुदाय द्वारा आपको ज्ञापन भेजे गये वह भी ठंडे बस्ते में डाल दिये गये पिछले दिनों दिगम्बर जैन समाजा ने अनेक नगरों में सामूहिक उपवास आयोजित किए जिसमें दिगम्बर जैनियों ने भारी संख्या में भाग लेकर अपनी भावनाएं व्यक्त की। ४.१२.६४ को दिल्ली में भी राजघाट पर सामूहिक उपवास रखा गया। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश के सभी नगरों में सत्य अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बलिदान दिवस ३० जनवरी ६५ को सामूहिक उपवास का कार्यक्रम बनाया गया है, जिससे कि आप अहिंसावादी दिगम्बर जैन समाज की आहत भावनाओं को दृष्टिगत कर अध्यादेश के विषय में निर्णय लें ताकि गांधीजी के लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हो सके। यदि अध्यादेश त्रुटिपूर्ण है तो इसकी त्रुटियों को दूर करने के लिए वापिस भेजें। और यदि अध्यादेश लोकतंत्र के हित में है, तो इसे पारित करें ; हमारे पास कई लाख हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन देश के कोने-कोने से दिगम्बर जैन समाज ने आपको देने के लिये भेजे हैं। कृपया हमें कोई समय निश्चित कर दे ताकि लाखों लोगों के हस्ताक्षरित ज्ञापन आपको दे सके और आप उन लाखों दैनिक यात्रियों के कष्ट को दूर कर सकें जो रात में उठकरनंगे पैरों पर्वत की वंदना करते हैं। यहां यह लिखना भी न्यायपूर्ण होगा कि दिगबर जैन समाज सदैव ही रा ट्रीय निर्माण में संलग्न रहा है। चाहे वह स्वतंत्रता आंदोलन हो या देश के निर्माण का कोई उपक्रम हो। यह समाज गांधीजी के अहिंसक आंदोलन का सदैव समर्थक रहा है और देश पर आपत्तियों के समय सबसे आगे रहा है।

आपकी उदासीनता ने दिगम्बर समाज के असंख्य लोगों को पीड़ा पहुंचाई है। लोग हमसे प्रश्न करते हैं कि वह कौन सा कारण है कि हमारे गृहमंत्री जी ने अध्यादेश को रोक रखा है, हम उन्हें क्या उत्तर दे यह हमारी समझ में नहीं आ रहा। आपको भली प्रकार स्मरण है कि जिन तीर्थों में बोर्ड का गठन हुआ है वहां-वहां का विकास तो हुआ है अपितु यात्रियों को सुविधाएं भी मिली हैं फिर क्या कारण है कि आप श्री सम्मेदशिखर जी की अव्यवस्था पर मौन हैं और उदासीन भी।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्यादेश पर तुरन्त निर्णय लेंगे और हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन देने हेतु अपनी सुविधा के अनुरूप समय देंगे हम आशा करते हैं कि हमें न्याय अवश्य मिलेगा। आपके उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

साभिवादन

भवदीय

उम्मेदमल जैन पाण्ड्या

कार्याध्यक्ष

श्री सम्मेदशिखर जी आंदोलन समिति

जैन बालाश्रम, दरियांगज, नई दिल्ली-११०००२

डा. पं. लालबहादुर शास्त्री का निधन

शताब्दी वर्ष में महासभा प्रमुख पंडित उच्चकोटि के विद्वान, पंडित राज

डा. लालबहादुर शास्त्री का निधन ६ जून १६६५ को देहली में हो गया। शास्त्री जी महासभा के प्रबंधकारिणी में सैद्धान्तिक परमर्शदाता विद्वान थे।

महासभा का शताब्दी समारोह

महासभाध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी ने जैन गजट मे प्रकाशित एक पत्र के अनुसार महासभा शताब्दी समारोह का शुभारंभ माघ शुक्ल पंचमी (बसन्त पंचमी) वीर निर्वाण संवत २५२६ दिनांक ४ फरवरी १६६५ को धर्मनगरी धर्मस्थल (कर्नाटक) में आयोजित करने का संकल्प प्रकाशित किया।

इस अवसर पर निम्न शताब्दी महोत्सव समिति का गठन निम्न प्रकार किया गया-

श्री उम्मेदमल पांड्या- परामर्श प्रमुख
श्री आर.के.जैन- अध्यक्ष
श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन- महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया- अध्यक्ष वित्त विभाग
गजराज गंगवाल- उपाध्यक्ष वित्त विभाग
भरतकुमार काला- मंत्री बम्बई
कुलदीप कोठारी- संयुक्त मंत्री कोटा
निर्वाणचंद्र जैन- प्रचारमंत्री
भोजग्राम में शताब्दी समारोह-

धर्मस्थल में आयोजित शताब्दी समारोह के समान ही चारित्र चक्रवती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की जन्म स्थली भोजग्राम में दिनांक ६५ को सम्पन्न हुआ। जहां सैकड़ों हजारों महासभा प्रेमियों ने भोज ग्राम पहुंच कर आचार्य शांतिसागर जी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की और महासभा के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। साथ ही महासभा के झण्डे के नीचे समाजसेवा में बढ़ते रहने का संकल्प लिया।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र लूणवा में महासभा का शताब्दी समारोह दिनांक २२ जून १६६५ को सम्पन्न हुआ।

महासभा के परामर्श प्रस्ताव श्री उम्मेदमल पांड्या द्वारा झण्डारोहण के पश्चात माल्यार्पण एवं स्वागत समारोह का आयोजन हुआ। श्री पांड्या जी सहित अन्य वक्ताओं ने महासभा की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा शताब्दी समारोह के पूर्ण सफल होने के लिये सहयोग की अपेक्षा की गयी। इस अवसर पर एक पंच दिवसीय सर्वोदय ज्ञान संस्कार शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें २०० विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कलकत्ता महानगर में शताब्दी समारोह

शताब्दी समारोह आयोजनों की श्रृंखला में पश्चिम बंगाल प्रांतीय महासभा द्वारा कलकत्ता महानगर में दिनांक ८ जून से १८ जून तक वृहद शास्त्रीय विद्वत प्रशिक्षण एवं धर्म शिक्षण शिविर का आयोजन, समारोह में शताधिका विद्वानों का समागम एवं सैकड़ो हजारों श्रेष्ठीजनों की उपस्थित तथा दिनांक १७ जनवरी को शताब्दी समारोह का आयोजन समारोह के मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुए।

दिनांक १७ जून को महासभाकी प्रबंधकारिणी कमेटी की बैठक एवं दोपहर १० बजे से महासभा एवं शास्त्री परिषद का खुला अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमें महासभाध्यक्ष सेठजी सहित अनेक वक्ताओं ने महासभा के गौरवपूर्ण इतिहास एवं उसकी देन पर प्रकाश डाला गया। दिनांक १८ जून को बंगाल महासभा द्वारा प्रेषित सेठी ट्रस्ट द्वारा दिया जाने वाला १ लाख रूपये का आचार्य श्री शांतिसागर शाकाहार पुरस्कार डा. कल्याणमल गंगवाल पूना को एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। इसके साथ ही साहित्य पुरस्कार आचार्य श्री वर्धमानसागर पुरस्कार पं. पदमचंद जी शास्त्री दिल्ली को तथा साहित्य पर ही आचार्य विद्यासागर पुरस्कार श्री सदानंद अग्रवाल एवं श्री श्रीनिवास तिलगता को भव्य समारोह में प्रदान किये। आचार्य वर्धमानसागर पुरस्कार पश्चिम बंगाल महासभा द्वारा दिया जाता है तथा आचार्य विद्यासागर पुरस्कार श्री ज्ञानीराम हरकचंद सरावगी चेरीटेबल ट्रस्ट एवं श्रीमती लाडादेवी सेठी ट्रस्ट के सौजन्य से दिया गया।

पश्चिम बंगाल महासभा द्वारा इस शताब्दी वर्ष में सैकड़ों वर्ष प्राचीन दिगम्बर जैन प्रतिमाएं जो मुरनिया जिले में बिखरी पड़ी हुई थी के जीर्णोद्धार एवं संग्रहालय में स्थापना हेतु संग्रहालय का निर्माण कार्य पूर्ण होने वाला है। पाकवीरा में मंदिर जीर्णोद्धार का कार्य भी पूरी गति में है।

शताब्दी समारोह में विभिन आयोजनों में शिविर कुलपति प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन शिविर संयोजक डा श्री श्रेयांस कुमार जैन, सेठ हरकचंद पांड्या एवं सेठ अमरचंद जी पहाड़िया संरक्षक श्री राजकुमार सेठी अध्यक्ष, श्री महावीर प्रसाद गंगवल महामंत्री, शांतिलाल बाकलीवाल कार्याध्यक्ष, श्री भागचंद पहाड़िया स्वागताध्यक्ष एवं अन्य कितने ही कार्यकर्ताओं का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

आसाम प्रदेश में महासभा शताब्दी समारोह

कलकत्ता महानगर में शताब्दी समारोह के आयोजन के पश्चात १२-१३-१४ अगस्त ६५ को आसाम प्रदेश की राजधानी गुवाहाटी में महासभा के शताब्दी समारोह का आयोजन पूर्वांचल समिति द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह का उद्‌घाटन महामहिम माननीय श्री लोकनाथमिश्र राज्यपाल असम द्वारा १३ अगस्त ६५ को किया गया। समारोह समिति स्वास्ति श्री भट्टारक चारूकीर्ति श्री श्रवणबेलगोला के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री दिगम्बर जैन युवा विचार संघ गुवाहाटी द्वारा जैन बुलेटिन महासभ ।ताब्दी विशे ांक प्रकाशित किया गया जिसमें सम्पादक श्री राकेश सेठ टिल्लू सह सम्पादक श्री सुरेन्द पहाड़िया, अनिल सरावगी एवं राजकुमार जी जैन तथा सलाहकार सम्पादक श्री कपूरचंद पाटनी थे। पूर्वांचल प्रदेश के महासभा को वर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी सहित श्री भंवरलाल जी बाकलीवाल, राय साहिब चांदमल सरावगी, सेठ लखमीचंद जी छाबड़ा ये चार अध्यक्ष दिये।

शताब्दी समारोह में पूर्वांचल प्रदेश के एवं कलकत्ता समाज भी अच्छी संख्या में उपस्थित हुआ। महासभा की पूर्वांचल समिति के अध्यक्ष श्री हुकमचंद सरावगी एवं महामंत्री श्री राजकुमार सेठी ने समारोह को सफल बनाने में पूर्ण सफलता प्राप्त की।

ललितपुर (उत्तरप्रदेश) में शताब्दी समारोह

ललितपुर में उ.प्र. प्रांतीय महासभा द्वारा यहां दिनांक १ अक्टूबर से ३ अक्टूबर तक आयोजित श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का शताब्दी समारोह महोत्सव परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में विविध आयोजनों के साथ भव्यतापूर्वक

सानंद सम्पन्न हो गया। दिनांक १ अक्टूबर को उ.प्र. के राज्यपाल महामहिम श्री मोतीलाल जी वोरा ने द्वीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया।

समारोह में प्रसिद्ध गीतकार एवं संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन को ५१,०००/- रूपये के आचार्य श्री महावीर कीर्ति समाजसेवा पुरस्कार से, वरिष्ठ विद्वान श्री पं. श्यामसुन्दरलाल शास्त्री को २१,०००/- रूपये के स्व. आचार्य श्री विमलसागर विद्वत पुरस्कार से, श्री राजेश दीक्षित को २१ हजार रूपये के स्व. मुनिश्रेष्ठ सुधर्मसागर विद्वत पुरस्कार से, बहिन चन्द्र कुमारी जैन को ११,०००/- रूपये के स्व. मातु श्री चन्दाबाई स्मृति पुरस्कार से तथा श्री पं. सुरेशचंद्र जैन को ११,०००/- रूपये के सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समारोह में शताब्दी समारोह के मार्गदर्शक प्रमुख सर्वश्री उम्मेदमल जी पांड्या, महासभा के महामंत्री त्रिलोकचंद जी कोठारी, शताब्दी समारोह के वित्त अध्यक्ष श्री शिखरचंद जी पहाड़िया, महामंत्री शताब्दी समारोह प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, महासभा के कोषाध्यक्ष सुमेरचंद जी पाटनी, महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं प्रमुख श्रेष्ठी सेठ निरंजनलाल जी बैनाड़ा, वैयावृत्त विभाग के मंत्री पन्नालाल जी सेठी, संयुक्त महामंत्री निर्वाणचंद जी जैन, प्रधान सम्पादिका जैन महिलादर्श डा. नीलम जी जैन, उपाध्यक्ष सेठ शंकरलाल, अध्यक्ष उ.प्र. मदनलाल जी बैनाड़ा, महामंत्री उ.प्र. श्रेयांस कुमार जी जैन, मंत्री (शताब्दी समारोह) भरत जी काला, महामंत्री बिहार हरिप्रसाद जी पहाड़िया, महामंत्री गुजरात श्री मीठालाल कोठारी, मंत्री विदेश विभाग प्रकाशचंद छाबड़ा बम्बई, छत्तीसगढ़ महासभा शाखा के अध्यक्ष श्री नेमीचंद जैन अकलतरा, श्री कुमुद सोनी अजमेर सहित अनेक प्रांतों से महासभा के उच्च पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पधारे।

कचनेर (महाराष्ट्र) में शताब्दी समारोह

चमत्कारपूर्ण अतिशयों से प्रसिद्ध समस्त भारतवर्ष का अनन्य श्रद्धा स्थान श्री १००८ भगवान चिन्तामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर-औरंगाबाद पर महान धर्म प्रभावक पूज्य प्रज्ञाश्रमण सिद्धान्त ज्ञानयोगी मुनि श्री १०८ देवनंदी जी महाराज तथा धर्म प्रचारक पूज्य भट्टारक श्री जिनसेन स्वामी और श्री लक्ष्मीसेन स्वामी जी कोल्हापुर तथा संल्लेखना क्षपकराज पूज्य मुनि १०८ चारित्रयसागर जी महाराज एवं समस्त मुनिसंघ के मंगलमय सानिध्य में आयोजित दिगम्बर जैन समाज की सबसे पुरानी धार्मिक संस्था श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के शताब्दी महोत्सव को लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने संबोधित करते हुए कहा कि हमारे देश में प्रचलित लोकशाही शासन प्रणाली का मूल स्त्रोत हजारों वर्ष पुरानी हमारी संस्कृति में है। अनेकांत जैन संस्कृति का प्राण है और लोकशाही का ढांचा भले ही विदेश से लाया गया होगा परंतु उसकी आत्मा मन इसी भूमि पर हजारों-हजारों साल से जीवित थी और है। अनेकांत ही उसकी आत्मा है। हम एक ऐसा समाज निर्माण करना चाहते हैं जहां समता हो और शांति हो और यह अपरिग्रह के बिना कतई संभव नहीं है। आज सारा विश्व अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। आर्थिक उन्नति और मानसिक शांति तथा पर्यावरण यह दो सबसे बड़ी समस्याएं हैं जिस पर किस प्रकार विजय प्राप्त की जा सकती है। यह बात हजारों वर्ष पूर्व जैनाचार्यों ने बता दी है। जैनाचार्यों ने उनके ग्रंथों में जो विचार प्रकट किये हैं वह सारे ब्रह्माण्ड विश्व का कल्याण करने वाले विचार हैं। उसमें मनुष्य, जीव जन्तु निर्जीव वस्तु, भूमि, वनस्पति, सूर्य किरण, ज्ञान आदि सभी का व्यापक व उदात्त विचार जैनाचार्यों ने किया है। जीओ और जीने दो इस एक सूत्र का पालन करने से भी सारी मानव जाति सुखी हो सकती है।

महासभा के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए श्री पाटिल ने कहा कि मैं महासभा का बहुत ही हृदय से आभारी हूं कि उन्होंने मुझे यहां आमंत्रित महामुनियों के आशीर्वाद प्राप्त करने का मौका दिया है। महासभा ने जो कार्य १०० वर्ष में किए हैं, वह आगे भी अच्छी तरह से होते रहें। महासभा को बहुत कुछ करने के अवसर संसार में प्राप्त है, वह सदैव की भांति प्रगति करती रहे- यही मेरी शुभकामना है।

महाराष्ट्र शासन के गृह निर्माण मंत्री माननीय श्री चंद्रकांत खैरे ने कहा कि साधु संतों के आग्रहपूर्ण निवेदन पर तथा जनता की बार-बार मांग पर वर्तमान सरकार द्वारा गौवंश हत्या बंदी का कानून महाराष्ट्र में लाया गया है, यद्यपि सामाजिक संगठन व कार्यकर्ताओं को गौहत्या तथा अहिंसा के विरोध में सतत आवाज उठानी पड़ेगी, केवल कानून से कुछ नहीं होगा। कचनेर क्षेत्र और इस संभाग में किसी भी प्रकार की प्राणी की हिंसा न होने देना तथा शराब की दुकानें न खुले, इस मांग पर सरकार पूरा विचार करेगी, ऐसा मैं आश्वासन देता हूं। महाराष्ट्र राज्य के रोजगार योजना मंत्री श्री हरिभाउ बागड़े ने अपने भाषण में कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। अर्थनीति का आधार ही खेती है। खेती करने वाला बैल व कृषियों का पालन पोषण करने वाली गाय यह हमारा पशुधन है। उसकी रक्षा करना परम आवश्यक है। गौवंश हत्या बंदी यह पुराना ही कानून था, उसकी कई रूकावटें थी, वह हम इस कानून से बंद कर रहे हैं।

दोनों महानुभावों ने महासभा के प्रति अपनी शुभ कामना प्रकट करते हुए कहा कि महासभा अपने उद्देश्यों में सदैव अग्रसर रहे। शताब्दी समारोह के राष्ट्रीय अध्यक्ष और महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा के अध्यक्ष श्री आर.के.जैन ने अपने प्रस्तावना भाषण में कहा कि जैन समाज अल्पसंख्यक समाज है, उसको अल्पसंख्यक में समाविष्ट किया जाए ऐसी जोरदार मांग अपने समस्त समाज की ओर से की। आगामी लोकसभा चुनावों से पूर्व हमारी यह मांग पूर्ण करें यह प्रार्थना श्री जैन ने पाटिल साहब से की। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी ने महासभा के इतिहास पर प्रकाश डाला और महाराष्ट्र महासभा शातब्दी समारोह के कार्याध्यक्ष श्री डी.यू.जैन ने महाराष्ट्र महासभा के योगदान पर प्रकाश डाला।

शताब्दी समारोह के महामंत्री प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी ने देश में वर्तमान में स्थान स्थान पर खोले जा रहे कट्टीखाने, शराब खाने तथा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक चीजों के उत्पादन पर कड़ा प्रहार करते हुए इसे रोकने की जोरदार अपील की। कचनेर तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष श्री डी.बी. कासलीवाल ने कहा कि कचनेर क्षेत्र पर शीघ्र ही जैन विद्यापीठ खोलने का विचार हो रहा है।

अंत में पूज्य प्रज्ञाश्रमण मुनि श्री देवनंदी जी महाराज ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि जैन तत्वज्ञान को घर घर तक पहुंचाने का कार्य होना चाहिए। उसमें समस्त मानव जाति के कल्याण की बात है। शिवराज पाटिल कल्याणकारी राज्यकर्ता हैं। शिवराज याने शिवाचे राज्य यानि कल्याणकर्ता का राज्य है। वे भारत के प्रथम नागरिक पद पर विभूषित हों। उनके जैसा विद्या से विभूषित आध्यात्मिक व्यक्ति भविष्य में भी इसी पद पर रहे यही हमारी शुभकामना है।

तदनन्तर महासभा के उन्नयन में महाराष्ट्र के जिन महानुभावों ने सभापति बनकर योगदान दिया, उनके परिवार का सम्मान किया गया जिसमें

प्रमुख थे स्व. रावजी सखाराम दोषी के सुपुत्र श्री अरविंद भाई दोषी, स्व. श्री गेंदमल जी की सुपुत्री श्रीमती गुणमला झवेरी तथा स्व. मोती सा लाड के सुपुत्र श्री गुलाबसा लाड। इनका भी श्री पाटिल द्वारा माला, श्रीफल, शाल तथा चांदी का सम्मान पत्र भेंटकर सम्मान किया गया। स्व. श्री पी.यू.जैन ठोले का सम्मान उनके सहोदर भाई श्री धरमचंद टोलिया को प्रदान किया गया। मुनि सेवा भावी ब्रह्मचारिणी चित्राबाई दिगे का तथा महासभा के वर्तमान अध्यक्ष सेवाभावी निष्ठावान अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी का सम्मान भी श्री पाटिल जी के द्वारा विशेष स्मृति प्रदान कर दिया गया महाराष्ट्र महासभा का भी केन्द्रीय शताब्दी महोत्सव समिति ने श्री शिवराज पाटिल द्वारा विशेष गौरव पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया। इस सम्मान को स्वीकार किया श्री आर.के. जैन, श्री शिखरचंद पहाड़िया, श्री भरतकुमार काला और श्री डी.यू.जैन ने तदनंतर मुख्य अतिथि श्री शिवराज पाटिल का माला, श्रीफल भेंट तथा चांदी का गौरव पत्र भेंट कर श्री शिखरचंद पहाड़िया द्वारा सम्मान किया गया। महाराष्ट्र के मंत्री महोदय जो विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे, का श्री डी.यू. जैन, श्री तनसुखलाल ठोले द्वारा क्रमशः शाल, माला, श्रीफल भेंट तथा गौरव पत्र भेंटकर सम्मान किया गया। सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन का भी पुष्पहार, श्रीफल और शाल भेंटकर श्री पाटिल द्वारा सम्मान किया गया।

दिगम्बर जैन सिद्धान्त प्रसारक मंडल कासार सिरसी की ओर से शताब्दी समारोह पर प्रकाशित काल निर्देशिका (कलेण्डर) का भी पाटिल द्वारा विमोचन किया गया। श्री कोचुरे द्वारा सम्पादित प्रज्ञाश्रमण स्तुति कैसेट का भी विमोचन हुआ। पूज्य मुनि श्री द्वारा सम्पादित भक्तामर विधान ग्रन्थ का विमोचन श्री पाटिल द्वारा पूज्य मुनि श्री के सानिध्य में किया गया। तदुपरांत अतिथियों का भाषण होकर पूज्य मुनि श्री का आशीर्वचन हुआ। अंत में महाराष्ट्र महासभा शताब्दी महोत्सव के प्रचार मंत्री श्री भरतकुमार काला ने सभी का आभार प्रकट किया।

संतों का सम्मान करो, अनादर मत करो

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी में महासभा का शताब्दी महोत्सव

श्री मध्यलोक शोध संस्थान की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर परम पावन महान सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का केन्द्रीय शताब्दी महोत्सव परमपूज्य आचार्य श्री १०८ संभवसागर जी महाराज ससंघ, परम पूज्य आचार्य श्री १०८ भरतसागर जी महाराज ससंघ एवं परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री १०५ सुपार्श्वमती माताजी के ससंघ सानिध्य में सम्पन्न हो गया।

महोत्सव में बाल ब्र. डा. प्रमिला जैन का (संघस्था पूज्य आर्यिका रत्न श्री सुपार्श्वमती माताजी) आर्यिका रत्न श्री इंदुमती माताजी स्मृति पुरस्कार से तथा प्रसिद्ध विद्वान डा. राजाराम जी जैन आरा को देवकुमार जी जैन रईस आरा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार श्री डा. विश्वनाथ चौधरी पावापुरी (नालंदा) को श्री गणेशप्रसाद वर्णी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार के प्रदाता थे महान भक्त तीर्थ जीर्णोद्धार दानवीर स्व. सेठ श्री सागरमल जी पांड्या गिरिडीह की स्मृति में उनके परिवारीजन।

उक्त पुरस्कार बिहार प्रांतीय महासभा के सौजन्य से प्रदान किये गये। समारोह में बिहार प्रांतीय महासभा के अध्यक्ष रायबहादुर श्री हरकचंद जी पांड्या, रांची को उनकी उल्लेखनीय समाज एवं धर्म की सेवाओं के लिए शताब्दी महोत्सव समिति की ओर से राज्यपाल श्री किदवई साहब ने शाल ओढ़ाकर माल्यार्पण कर तथा प्रशस्ति पत्र भेंट कर उनका अभिनंदन किया।

महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री पूनमचंद जी गंगवाल झरिया, महासभा के वैयावृत्त विभाग के मंत्री श्री पन्नालाल जी सेठी तथा अहिंसा संदेश के सम्पादक तथा बिहार प्रांतीय महासभा के प्रचार मंत्री श्री रत्नेश कुमार जी रांची का भी शाल ओढ़ाकर माल्यार्पण कर तथा प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मान किया गया।

बिहार प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री ए.आर. किदवई जी ने सभा मंडप में उपस्थित विशाल जन समुदाय को संबोधित करते हुये श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के शताब्दी महोत्सव के लिए अपनी मुबारकबाद दी।

राज्यपाल जी ने कहा कि आज यदि जंग होती है सारी दुनियां को चंद मिनटों में ही नष्ट किया जा सकता है। अतः दुनिया के सामने इतना खतरा है तो एक ऐसे पैगाम की जरूरत है, जिसका नाम जैन धर्म है। दुनिया को आज अहिंसा की, इंसानियत की पहले से ज्यादा जरूरत है। सभी देशों को इसकी जरूरत है।

राज्यपाल जी ने मध्यलोक शोध संस्थान के निर्माण पर काफी प्रसन्नता व्यक्त की तथा कहा कि जैन फिलास्फी को इस प्रकार लिखा जावे ताकि सारी दुनिया इसको जान सके। जैन धर्म हमें एक ऐसी धरोहर मिली है कि हम दुनिया की समस्याओं को उससे हल कर सकते हैं।

श्री किदवई जी ने हमेशा जीवन में प्रति वर्ष ३ फरवरी को शाकाहारी रहने का नियम पूज्य आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी से लिया। इस अवसर पर इस पुरस्कार से जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रति मेरी आस्था बलवती हो गयी है। मेरे जैसे अल्पज्ञ जैनेत्तर व्यक्ति को पुरस्कार देकर यह सिद्ध कर दिया गया है कि जैन धर्म किसी जाति सम्प्रदाय का धर्म नहीं है। वह जैन धर्म में आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। यह अहिंसावादी विचार धारा वाले व्यक्ति का धर्म है। यह मानव धर्म है, मानवीय मूल्यों की रक्षा करने वाला धर्म है। यह समता समन्वयवादिता का धर्म है। यह धर्म केवल मनुष्य के लिए ही नहीं, अपितु प्राणी मात्र का धर्म है। अतः यह विशाल उदारवादी धर्म है। इस धर्म के अनेकांतवाद, स्याद्वाद, सर्वज्ञवाद आदि विश्व की समस्त गुत्थियों को सुलझाने वाला मौलिक सिद्धांत है।

एक सर्वेक्षण

महासभा इतिहास के चार अध्याय लिखना आरंभ करने के पूर्व हमने महासभा प्रशंसकों एवं समाज के सामान्य व्यक्ति से यह जानना चाहा कि महासभा के प्रति उनके क्या विचार हैं तथा क्या वे उसकी रीति नीति के समर्थक हैं अथवा दूसरा विचार रखते हैं। इस संबंध में हमें कितने ही महानुभावों ने पत्र लिखकर हमारी इस योजना का स्वागत किया। कुछ महानुभावों ने अपने आपको महासभा के लिये समर्पित रहना लिखा। कुछ महानुभावों ने केवल अपना परिचय ही भेज दिया। महासभा के प्रति उनके क्या विचार हैं यह कुछ नहीं लिखा। कुछ महानुभावों ने आलोचना भी लिखी। फिर भी यहां हम सभी महानुभावों के विचारों को संकलन कर उन्हें

दे रहे हैं।

समाज के वयोवृद्ध यशस्वी समाजसेवी एवं महासभा के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री माणकचंद पालीवाल कोटा लिखते हैं कि महासभा हमेशा जैन मुनियों की सेवा में तत्पर रही है। जैन तीर्थ क्षेत्रों के जीर्णोद्धार में काफी कार्य किया है। हमारी धार्मिक परम्परा को जीवित रखने के लिये विधवा विवाह अन्तर्जातीय विवाह का डटकर विरोध किया है। जैन बंधुओं से हमेशा जैन

आगम के अनुकूल चलने का आग्रह किया है। अब हम महासभा से आशा रखते हैं कि वर्तमान समाज में उभरकर आयी दहेज प्रथा व मृत्यु भोज का डटकर विरोध करें। मुनियों की व सज्जातित्व की रक्षा ही जैन धर्म की सुरक्षा है।

छतरपुर (मध्यप्रदेश) के निवासी पं. धर्मचंद मोदी शास्त्री काव्यतीर्थ ने एक शिकायत की है कि बुन्देलखंड में महासभा की गतिविधियां अत्यन्त सीमित होने के कारण वे महासभा से जुड़ नहीं सके फिर भी उन्होंने लिखा है कि भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित चतुर्विध संघ को उर्जा प्रदान करने में महासभा की अहम भूमिका नजर अंदाज करना संभव नहीं है। मुनि एवं आर्यिका संघों के क्षीण हो रहे प्रभाव को पुनः स्थापित करने में महासभा सदैव सक्रिय रही है।

वयोवृद्ध पंडित मिश्रीलाल जी जैन शास्त्री बरकतनगर जयपुर ने एक लम्बा पत्र लिखकर महासभा के इतिहास लेखन का स्वागत किया है तथा महासभा के नियम ६ का कट्टर समर्थन करते हुए कुछ नेताओं के नाम भी गिनाये हैं जो अपनी बहुमूल्य सेवाओं से महासभा की बागडोर संभाल रहे उनमें सर सेठ हुकमचंद जी कासलीवाल इन्दौर, सर सेठ भागचंद जी सोनी अजमेर, राय साहब चांदमल जी पांड्या गोहाटी के नाम उल्लेखनीय बतलाये हैं। मध्यप्रदेश के जैन समाज के लोकप्रिय समाजसेवी श्री पं. सत्यंधर कुमार सेठी उज्जैन ने लिखा हैं कि यद्यपि वे महासभा के सदस्य तो नहीं हैं। लेकिन वे स्वीकार करते हैं कि दिगम्बर जैन समाज में महासभा की सेवायें ऐतिहासिक रही हैं और जब कभी धार्मिक व सामाजिक जीवन में संकट के बादल छाये हैं तब तब महासभा ने अपने कदम बढ़ाकर धर्म व समाज की सेवा की है।

महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं बिहार प्रांतीय महासभा के अध्यक्ष रायबहादुर हरकचंद सरावगी रांची से लिखते हैं कि महासभा का अतीत गौरवपूर्ण रहा है, उसी प्रकार भविष्य भी उज्जवल रहेगा।

पं. महेन्द्र कुमार जी महेश ऋषभदेव का महासभा से बहुत गहरा संबंध रहा है। उन्होंने उपदेशक बन महासभा के लिये धन का भी संग्रह किया था तथा महासभा के अधिवेशन सम्पन्न करवाने के लिये महासभा अध्यक्ष पर दबाव भी डलवाया था। उन्होंने अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट करते हुए जीवन के अंतिम क्षण तक महासभा व समाज को नहीं भूलूं, ऐसी आशा प्रकट की। उन्होंने वर्तमान अध्यक्ष श्री सेठी जी के आमंत्रण को स्वीकार नहीं किया जा सका इसका उन्हें खेद भी है।

राजस्थान प्रांतीय महासभा के पूर्व मंत्री श्री धर्मचंद जी मोदी महासभा के वर्षों से जुड़े हुए थे। वे महासभा के सदस्य एवं पदाधिकारी बनने पर अपना गौरव मानते हैं। वे लिखते हैं महासभा जिस लक्ष्य को लेकर चल रही है वह भावी पीढ़ी के लिये जैनागम की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में सहायक सिद्ध होगी। वे लिखते हैं कि समाज का हर सामान्य व्यक्ति इस संस्था से जुड़ा रहे।

श्री मोतीलाल जी शाह पलसदेवपुर (महाराष्ट्र) महासभा के महाराष्ट्र शाखा के उपाध्यक्ष हैं। उनकी मान्यता है कि महासभा द्वारा जो कार्य चल रहे हैं उनमें गति मिलनी चाहिये तथा जैन समाज की नयी पीढ़ी को संस्कारयुक्त बनाने की बहुत जरूरत है। श्री शाह के पूरे परिवार का कहना है कि महासभा मेरी है।

श्री सिंघई महेश कुमार जैन पत्रकार ग्राम लार (बंजरया) टीकमगढ़ लिखते हैं कि महासभा द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को सफल बनाने के लिये समज में संगठनों की महती आवश्यकता है। वैसे महासभा की सभी योजनायें कल्याणकारी योजनायें हैं।

यशस्वी विद्वान डा. शेखरचन्द्र जैन अहमदाबाद ने तो महासभा पर एक विस्तृत आलेख लिखकर भेजा है। उनके अनुसर महासभा देव शास्त्र गुरू के प्रति समर्पित रही है, शास्त्रों का प्रकाशन तीर्थों एवं मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं सोनगढ़ के लिये सजग प्रहरी का कार्य करती है। उनकी मान्यता के अनुसार दिगम्बरत्व पर आये आंधी तूफान में यह संस्था पथ का कार्य करती रही है और आगे भी करती रहेगी।

जैन धर्म एवं सिद्धान्त के महान विद्वान पं. जवाहरलाल जी भीण्डर लिखते हैं कि उन्हें महासभा का सदस्य बनने के लिये कभी नहीं कहा गया लेकिन वे बिना सदस्य बने ही कट्टर मुनिभक्त तथा जैन गजट के प्रति समर्पित हैं। वे लिखते हैं कि महासभा का अतीत चन्द्रवत निर्मल तथा सूर्य सदृश महाप्रतापी तथा युधिष्ठिर एवं राजा हरिशचन्द्र एवं रामचन्द्र सदृश सत्य धर्मरत, सत्यनिष्ठ, वचन परायण रहा है पर हां वर्तमान में इसे निश्चित ही कुछ बदलने की जरूरत है।

श्री रतनलाल जी नागपुर महासभा के आजवीन सदस्य हैं। लिखते हैं कि कुछ वर्षों से मृतप्राय पड़ी हुई थी उसे वर्तमान नेतृत्व में सर्वश्री निर्मल कुमार जी सेठी, त्रिलोकचंद जी कोठारी, श्री पूनमचंद जी गंगवाल, उम्मेदमल जी पांड्या एवं सुमेरचंद जी पाटनी जैसे महानुभावों ने इसे नवजीवन प्रदान किया है। मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया है वह अत्यधिक प्रशसनीय है।

आगरा के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं यशस्वी समाजसेवी श्री निरंजनलाल जी बैनाड़ा लिखते हैं कि महासभा में दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों की आस्था बनाये रखने में विशेष प्रयास किये हैं। तीर्थों की सुरक्षा के लिये भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा ने जो सेवा की है वह प्रशंसनीय है। महासभा एक मुनिभक्त संथा है जिसका किसी व्यक्ति विशेष से द्वेषभाव नहीं रहता हैं।

जैन साहित्य के अन्वेषक विद्वान पं. अनूपचंद जी न्यायतीर्थ ने लिखा है कि वे सन् १६८१ से महासभा के अधिवेशनों में सम्मिलित होकर उसके विचारों से सहमत हैं। वे वर्तमान में महासभा द्वारा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के नेतृत्व से वे पूर्ण सहमत हैं तथा महासभा को हस्तलिखित ग्रंथों की सूची बनवाने, मूर्तिलेखों को प्रकाशित कराने, पाण्डुलिपियों को युवकों को पढ़ना सिखाने, शोधग्रंथों को प्रकाशन कराने आदि कार्यों को कराने की प्रेरणा दी है।

आगरा के यशस्वी समाजसेवी श्री मदनलाल जी बैनाड़ा लिखते हैं कि महासभा का अतीत जैसा भी रहा हो, पर वर्तमान पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। इसके प्रारूप में समयानुसार व्यवस्था करनी अति आवश्यक है। वर्तमान में समाज कार्य करते ही परिणाम देखना चाहता है। संगठन को भी वृहद रूप में ठोस होना चाहिये। समाज सेवा हेतु कुछ फंड एकत्रित करके समाज हित की योजनाओं पर कार्य होना चाहिए।

प्रसिद्ध साहित्य सेवी विद्वान सतना से श्री नीरज जैन लिखते हैं कि महासभा दिगम्बर जैनों की मूल में पुरानी सामाजिक संस्था तो है ही पर

मुनियों आर्यिकाओं की सेवा सुश्रुषा और उनके मंगल विहार आदि के प्रति चिन्ता करने और सहयोगी बनने वाली व इस शताब्दी के अधिकांश समय में दिगम्बर जैन समाज की एक मात्र संस्था रही है, उसका यह योगदान जैन संस्कृति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। महासभा की दूसरी विशेषता यह रही है कि अग्रवाल, खण्डेलवाल, परवार आदि सभी समाजों के विशिष्ट व्यक्तियों ने समय-समय पर इसकी बागडोर संभाल कर समाज का मार्गदर्शन किया है।

महासभा के केन्द्रीय मंत्री तथा अनेक दूसरी संस्थाओं से जुड़े हुए श्री राजकुमार जी सेठी महासभा के अतीत एवं वर्तमान की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि इसी संस्था से हमारी आर्ष परम्परा सुरक्षित है एवं भविष्य में भी रहेगी। इस वर्ष संस्था अपना शताब्दी समारोह मना रही है एवं ९०० वर्ष पश्चात भी अपना १०००वां वर्ष मनायेगी ऐसी मेरी पूर्ण आस्था एवं विश्वास है।

श्री गुलाबचंद रेनवाल (जयपुर)

श्री गुलाबचंद रेनवाल लिखते हैं कि उनका महासभा से कभी संबंध नहीं रहा क्योंकि आम जनता को उसको पदाधिकारियों ने कभी सहयोग ही नहीं चाहा लेकिन आज २५ वर्ष पहले महामंत्री का स्वरूप समस्त अखिल भारतीय जैन समाज के रूप में था ऐसी उनकी कल्पना है।

लेकिन इन्हीं के नाम राशि एवं गोत्री भाई श्री गुलाबचंद जी गंगवाल परतवाड़ा महाराष्ट्र प्रान्त के लिखते हैं कि महासभा ने हमेशा आर्ष परम्परानुसार धर्म और संस्कृति का अस्तित्व कायम रखने हेतु तथा तीर्थों का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार और संस्कृति का अस्तित्व कायम रखने हेतु तीर्थों का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार विशेष लक्ष्य रखते हुए कार्य किया इसी का यह फल है कि महासभा ने अपने १०० वर्ष पूरे कर लिये हैं। इस महासभा को सब ही आचार्यों एवं साधुओं का आशीर्वाद प्राप्त है।

श्री एस.सी.जैन पत्रकार एवं जैन गजट के प्रतिनिधि चिकलठाणा (औरंगाबाद) से लिखते हैं कि महासभा दिगम्बर जैन समाज की सांस्कृतिक, धर्म संरक्षिणी की दृष्टि से महत्वपूर्ण संस्था है। इसको अधिक से अधिक युवकों को सदस्य बनाने का लक्ष्य रहना चाहिए।

श्री कैलाश भूषण जिन्दल, गणेशगंज लखनऊ से लिखते हैं कि महासभा का अतीत एवं वर्तमान बहुत उज्जवल है। महासभा के प्रयास से ही मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव जी ने एक विधेयक पारित किया है जिसके द्वारा सम्मेदशिखर जी का प्रबंध और समस्त व्यवस्था दिगम्बर जैन और श्वेताम्बर आम्नायों के बराबर प्रतिनिधियों की समिति द्वारा होगा।

प्रतिष्ठाचार्य पं० फतेहसागर जी शास्त्री उदयपुर ने लिखा है कि भारतवर्ष की सबसे प्राचीन एवं आर्ष परम्परा की रक्षा करने वाली एकमात्र यही संस्था है। जिसने जैन संस्कृति एवं श्रमण संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन कर समाज का उत्थान किया है। पंडित जी को महासभा के सदस्य होने का गौरव है। उनके अनुसार वर्तमान में साधु समाज निर्भय होकर भारत में यत्र तत्र विहार कर जैन धर्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान का विकास किया है इसका श्रेय महासभा को ही है।

समाज के युवा प्रतिष्ठाचार्य पं. विमल कुमार जैन सौंरया संयुक्त महामंत्री स.भा.दि.जैन महासभा ने एक आलेख इतिहास के उज्जवल पृष्ठों में महासभा शीर्षक से भेजा है जिसमें महासभा के द्वारा अतीत में किये गये कार्यों पर अच्छा प्रकाश डाला है। आवेदक ने मुख्य अंश समाज की जागृति में जैन गजट का योगदान, चौरासी जातियों को कुलीन परम्परा के निर्वाहन में महासभा की अहं भूमिका, साधु वर्ग की मान मर्यादा बनाये रखने में महासभा की सिद्धहस्तता, सिद्धान्त की रक्षा में महासभा की अहं भूमिका, तीर्थों पर आधिपत्य की खोटी दूषित परम्परा आदि उपशीर्षकों पर विस्तृत चर्चा की है।

उक्त समीक्षाओं के अतिरिक्त कुछ महानुभावों ने महासभा की अभिवृद्धि के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की हैं तथा भावना दर्शायी है कि महासभा भविष्य में निरंतर विकास को प्राप्त हो तथा समाज महासभा से लाभान्वित होता रहे। ऐसे महानुभावों में पं. लाड़ली प्रसाद जी, सवाई माधोपुर, पंडित मल्लिनाथ जी शास्त्री सम्पादक जैन गजट मद्रास, प्रवर समाजसेवी श्री कपूरचंद जी जैन एडवोकेट गोहाटी, श्रीमती गीता जैन स्योहारा (उत्तर प्रदेश), डा. माणकचंद जैन बी.ए., सुभाषनगर, सागर, श्री बाबूलाल जैन छाबड़ा संगठन मंत्री महासभा उत्तर प्रदेश लखनऊ, श्री निर्मल जैन सतना, डा. महेन्द्र सागर प्रचंडिया अलीगढ़, श्री पदमचंद जैन धाकड़ा मद्रास, श्री सुभाष पदमाकर रणदेव डोविवली (वणिया), श्री धर्मप्रकाश जैन शास्त्री अवागढ़ (उत्तर प्रदेश), डा. नीलम जैन सहारनपुर, सम्पादिका जैन महिलादर्श, वरिष्ठ विद्वान पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य सागर, पं. बाबूलाल जी फणीश पावागिरी, पं. शिवचरणलाल जी जैन मैनपुरी, डा. प्रकाशचंद जी जैन इंदौर, प्रसिद्ध लेखक श्री रामजीत जैन एडवोकेट लश्कर, पं. राजकुमार जैन आगरा आदि लोगों ने शुभ कामना प्रकट की।

• •

नीतिपूर्ण दोहे

सम्यक् को धारण करो, मूल मंत्र यह जान।
भव-भव के बंधन कटें, ये ही तीर्थ महान।।

पानी पीवों छानकर, रोग निकट नहीं आय।
लोग कहें धरमात्मा, जीव जन्तु बच जाय।

झूठे पुरुषों से कभी, कोई न करता प्रीत।
सच्चे आदर पात हैं, जग जस लेते जीत।।

चोर नित्य चोरी करे, सहे सदा आघात।
इधर उधर छिपता फिरे, दुःख पावे दिन रात।।

सेय पराई नारिको, तन मन धन को खोत।
फिर भी सुख मिलता नहीं, मरे भयानक मौत।।

जोड़जोड़ संचय करे, ममता दुःख का भार।
मरना सबको एक दिन समता सुख आधार।।

न्यारे न्यारे पन्थ हैं, जिद की करते बात।
सच कोई ना खोजता, मारग कैसे पात।।

रात दिवस झगड़ा करें, कह कह चुभती बात।
घर को नरक बना दिया, शर्म जरा नहीं आत।।

बीड़ी, मदिरा, पीवना, नहीं भलों का काम।
भंग आदि की लत बुरी क्यों होते बदनाम।।

रोगी तन को ठीक कर, ब्रह्मचर्य को पाल।
बिन पैसों की दवा, दूर भगावे काल।।

हमारे प्रधान सम्पादक

विद्वद्वरेण्य पं. श्यामसुन्दरलाल जी शास्त्रीः एक परिचय

अपने समय के अप्रतिम विद्वान् गुरूणांगुरू स्वनामधन्य स्व. पं. गोपालदास जी बरैया की शिष्य-परम्परा में शास्त्री जी की गणना आज के शीर्षस्थ विद्वानों में की जाती है। अपने छात्र-जीवन से ही आप तीक्ष्ण बुद्धि एवं न्याय-तर्क-प्रवीण मेधा के धनी रहे हैं। जब आप एक छोटे बालक ही थे, तब युग-प्रवर्तक महान् सन्त आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का ससंघ आपके गांव गोंछ में शुभागमन हुआ था। आपकी विलक्षण प्रतिभा को देखकर इन्हें "भावी पंडित" कहकर पुकारा था। उनकी ही प्रशस्त प्रेरणा से आपको श्री गोपाल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, मुरैना में प्रवेश दिलाया गया था। समय की कसौटी पर इस प्रतिभा पुंज ने आचार्य श्री की परख को सार्थक सिद्ध कर दिखाया।

जीवन-परिचय और शिक्षा

आपका जन्म १ अगस्त १९१६ को ग्राम गोंछ (जिला फिरोजाबाद) में हुआ था। आपके पिता श्री ओंकारप्रसाद जी एक लोकप्रिय वैद्य थे। आपकी माता श्रीमती कटोरी देवी जैन एक धर्मप्राण महिला थीं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गोंछ और फिरोजाबाद की प्राथमिक पाठशालाओं में हुई। बाद में मुरैना के सुप्रसिद्ध महाविद्यालय से आपने न्याय-सिद्धान्त-व्याकरण एवं साहित्य विषय लेकर शास्त्री परषा मेरिट के साथ उत्तीर्ण की। आपकी वाग्विदग्धता, लगन और अध्यवसाय से आपके शिक्षा-गुरू न्यायालंकार पं. मक्खनलाल जी शास्त्री तथा अन्य आचार्यगण मुग्ध रहते थे। मुरैना में पढ़ते समय आपने "बाल केशरी" तथा "स्याद्वाद मार्तण्ड" शीर्षक पत्रिकाओं का कुशल सम्पादन भी किया था।

आप तीन भाई थे, जिनमें से मझले श्री वीरभान सर्राफ का सन् १९८९ में स्वर्गवास हो गया था। सबसे छोटे श्री उदयभान जैन सिविल कोर्ट, आगरा में लब्धप्रतिष्ट अधिवक्ता हैं। आपके भतीजे भी समाज-सेवा में अग्रणी हैं। एक श्री लोकेन्द्रपाल जैन आपके द्वारा संस्थापित श्री पी.डी.जैन इण्टर कालेज के मंत्री हैं और दूसरे श्री माधव जैन इलाहाबाद-हाईकोर्ट में वकील हैं।

शास्त्रीजी ने विवाह-बंधन स्वीकार नहीं किया। जैन ग्रन्थों के तलस्पर्शी अध्ययन ने उन्हें समाजसेवा के लिए बलिष्ठ बना दिया था। उनका पूरा जीवन साहित्य, समाज और शिक्षा-जगत की अहर्निश सेवा करते हुए व्यतीत हुआ है। नौकरी करना उन्हें कभी सुहाया ही नहीं, इसलिए वह शिक्षा पूरी करने के बाद सन् १९३७ से ही वस्त्र-व्यवसाय में संलग्न रहे। 'एक दाम एक भाव' के लिए उनकी दुकान की नगर में अपनी एक साख है। वह शास्त्र-प्रवचन में जितने प्रामाणिक हैं, उतने ही प्रामाणिक अपने व्यवसाय में भी हैं। कथनी-करनी की एकरूपता उनके जीवन की एक श्लाघ्य विशेषता है।

जिनवाणी-प्रचार एवं स्वागत-सम्मान

जैन भारती के प्रचार-प्रसार के लिए आपने प्रायः सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है। आप जब भी किसी सभा में बोलते हैं तो हजारों लोग मंत्रमुग्ध होकर आपको सुनते हैं। अपने धाराप्रवाह भाषण में विषय-वस्तु को स्पष्ट करने के लिए आप आगम के उद्धरणों की झड़ी-सी लगा देते हैं। शास्त्रों की हजारों गाथायें आपको कण्ठस्थ हैं। सम्पूर्ण जन-सभा आपकी उत्कट प्रतिभा को देखकर हतप्रभ रह जाती है। बोलते समय लगता है कि मानो साक्षात् सरस्वती ही आपके कण्ठ में विराजमान रहती है। आपके दृष्टान्त भी आगम सम्मत, सटीक और चुटीले होते हैं। अनेक स्थानों पर आपने एकान्त मिथ्यात्व द्वारा आगम के अवर्णवाद पर ऐसी करारी चोट की है कि प्रतिपक्षी विद्वान को निरूत्तर होना पड़ा है। आपके प्रबल और पुष्ट तर्कों के सामने एकान्तवादी टिक ही नहीं पाते हैं।

कलकत्ता, बम्बई, पावागढ़ आदि स्थानों की जैन समाज ने आपके पाण्डित्य से प्रभावित होकर उन्हें वाणीभूषण, विद्यावारिधि, सिद्धान्तविज्ञ-शिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियों से अलंकृत किया है। सच तो यह है कि आपकी योग्यता के सामने ये उपाधियां सामान्य ही प्रतीत होती हैं। वैसे भी आपने स्वयं कभी अपने नाम के साथ इनका प्रयोग नहीं किया। यह उनकी निरभिमानता का द्योतक है। शास्त्री जी ने कभी अपने ज्ञान को भुनाने की कोशिश भी नहीं की। किसी समाज ने श्रद्धापूर्वक यदि कभी कोई भेंट दी भी तो आप उसे अपनी प्रिय संस्थाओं या पत्रों आदि को अर्पित करते रहे हैं। अपनी इस निःस्पृहता के बल पर ही आप आज दिन तक बोलने में निर्भीक और अक्खड़ रह सके हैं। किसी व्यक्ति या संस्था विशेष को खुश करने के लिए ठकुरसुहाती कहना आपके स्वभाव में नहीं है। आपकी आगम-निष्ठा पर कोई उंगली नहीं उठा सकता।

साधु-चरणों में भी आपकी गहरी आस्था है। विभिन्न साधु-संघों में विभिन्न धर्म-ग्रन्थों का स्वाध्याय करने-कराने में आप स्वयं को धन्य अनुभव करते रहे हैं। सन् १९३८ में स्व. श्री मल्लिसागर जी महाराज का और सन् १९७३ में आर्यिका विशुद्धमती माताजी का वर्षायोग इस नगर में हुआ था। आपने दोनों संघों को क्रमशः राजवार्तिक एवं सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराया था। आचार्यश्री संभवसागर जी ने तो यहां चातुर्मास ही इस शर्त पर स्थापित करना स्वीकार किया था कि शास्त्री जी उन्हें स्वाध्याय करायेंगे। आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के संघस्थ साधुगण भी आपके श्रीमुख से जैन ग्रन्थों के हर्द को समझने के लिए सदैव सचेष्ट रहे हैं। साधु-समागम में ग्रन्थ-वाचना के दायित्व का निर्वाह करने में आपकी तुलना पण्डित-प्रवर आशाधरजी से की जा सकती है।

किसी भी सभा में शास्त्री जी की उपस्थिति को उस सभा की सफलता की गारंटी माना जाता रहा है। ललितपुर (उत्तर प्रदेश) और फलटण (महाराष्ट्र) में आयोजित अखिल भारतवर्षीय दि.जैन शास्त्रि परिषद् के ऐतिहासिक अधिवेशनों में आपके भाषणों की काफी धूम रही। दोनों ही स्थानों पर हजारों की संख्या में उपस्थित श्रोता-समुदाय आपको तथा आपके वरद शिष्य इन पंक्तियों के लेखक को सुनने के लिए अत्यधिक उत्कण्ठित रहता था। प्रबुद्धजनों में आप दोनों के ही प्रवचनों को टेप करने की होड़ देखते ही बनती थी।

जब इन्दिरा गांधी भी उनसे प्रभावित हुईं

भारत की अखण्डता, एकताम्कता और संगठनप्रियता के सम्पोषण हेतु फतेहपुर सीकरी में तत्कालीन प्रधानमंत्री प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गांधी के सानिध्य में 'यादगारे सुलह कुल' नाम से एक सर्वधर्म-सम्मेलन सन् १६७६ में आयोजन किया गया था। इसमें सनातन, इस्लाम, ईसाई, जैन और पारसी धर्म के चोटी के विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। जैन धर्म का प्रतिनिधित्व आपने किया था। सभी धर्मों के विद्वानों को दस-दस मिनट का समय बोलने हेतु निर्धारित था किन्तु जब आप बोल चुके और अपने प्रवचन को विराम देने ही वाले थे कि इन्दिरा जी के संकेत पर आपको दस मिनट और बोलने के लिए कहा गया। यथार्थ में इन्दिरा जी आपके अभिभाषण से बहुत प्रभावित थीं।

समाज-सेवा

फिरोजाबाद उत्तर भारत का एक प्रमुख जैन केन्द्र है। यहां का दो शताब्दी पुराना ऐतिहासिक जैन मेला दूर-दूर तक प्रसिद्ध रहा है। आप अपनी युवावस्था से ही उससे सम्बद्ध रहे हैं। सन् १६५५, १६५८ और १६५६ में आप उसके महामंत्री रहे। १६५६ में नगर में प्रथम पंचकल्याणक महोत्सव भी आपके ही नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। आज भी जैन मेला के आप मुख्य संरक्षक एवं परामर्शदाता हैं।

सभी सामाजिक गतिविधियों, चाहे वे किसी साधु-संघ के वर्षायोग से संबंधित हों या किसी मंदिर के विकास से, में आपकी प्रमुख एवं सक्रिय भूमिका रहती है। स्थानीय नशियाजी-स्थित श्री रत्नत्रय दि.जैन मंदिर, गली लोहियान-स्थित पार्श्वनाथ-चौबीसी मंदिर तथा अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभ में नवनिर्मित स्वाध्याय कक्षा आपकी ही कल्पना के साकार रूप हैं। पूज्य मुनि श्री कुन्थुसागर जी की सल्लेखना के समय निर्यापकाचार्य की दायित्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह भी आपने कुशलता से किया। इस युग के एक उत्कृष्ट संत बहुभाषाविद स्व. आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज में आपकी अनन्य भक्ति रही है। प्रायः सभी साधु-संघों में आपका निरंतर और नियमित आवागमन होता रहा है। किसी भी सामाजिक या धार्मिक गतिरोध के समय आपकी राय को महत्व देकर सन्तजन समाधान के उपाय सुझाते रहे हैं।

ऐतिहासिक सत्याग्रह का नेतृत्व

नगर के प्रसिद्ध रामलीला-ग्राउंड के निकट ही जैन मेला का एक विशाल भू-भाग अवस्थित है। यह खुला और आकर्षक स्थल शहर के हृदय की तरह है। सन् १६६६ में स्थानीय एक उद्योगपति ने इस भूमि के कुछ भाग पर अनधिकृत निर्माण करने का प्रयास किया था। इस दुस्साहस के विरोध में जैन समाज ने एक प्रबल सत्याग्रह शास्त्री जी के नेतृत्व में किया। पहली बार लगभग तीन सौ स्त्री-पुरूष इस सत्याग्रह-आंदोलन में जेल गए थे। विपक्ष ने लूटपाट और डकैती जैसे जघन्य आरोपों में प्रमुख-प्रमुख लोगों के नाम वारण्ट निकलवा दिए थे। शास्त्री जी के नाम भी वारंट था। आंदोलन के आठवें दिन उन्होंने सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व किया। उस दिन का जत्था सबसे बड़ा था। १६ महिलाओं और ४६ पुरूषों ने उस दिन गिरफ्तारी दी। मेला-भूमि पर नगर के लगभग दस-बारह हजार जैन-अजैन लोगों ने गगनचुंबी नारों के साथ इन्हें जेल जाते देखा। यह भारी भीड़ आपकी लोकप्रियता की सूचना दे रही थी।

इस सत्याग्रह के फलस्वरूप प्रतिपक्ष को अनधिकृत कब्जा हटाना पड़ा था। झूठे आरोपों से भी सभी लोगों को मुक्ति मिली थी। शास्त्री जी तथा उनके सहयोगियों के साहस और शौर्य ने शायर चकबस्त के इन अल्फाजों को सही साबित कर दिया:-

अहले हिम्मत मंजिले मकसूद तक आ ही गए
बन्दये तकदीर किस्मत का गिला करते रहे

राष्ट्रसंत पूज्य आचार्य विद्यानंद जी ने एक बार कहा था कि तीर्थक्षेत्र कुम्भोज बाहुबली में भी ऐसी ही एक परिस्थिति उत्पन्न होने पर उन्हें फिरोजाबाद के इस संघर्ष का स्मरण हो आया और वह सत्याग्रह पर बैठ गए। तब कहीं जाकर क्षेत्र का संकट टल सका।

शिक्षा-जगत के मालवीय

शिक्षा के प्रचार-प्रसार में शास्त्री जी की भूमिका स्वनामधन्य स्व. पंडित मदनमोहन मालवीय के समान रही है। अपने प्रबल पुरूषार्थ से उन्होंने स्वतंत्रता के तुरंत बाद जैन-जगत के अपने समय के एक उद्भट विद्वान् स्व. पं. पन्नालाल जी न्यायदिवाकर की पुण्य स्मृति में जिस संस्था का बीजारोपण किया था, वह आज वटवृक्ष की तरह श्री पी.डी.जैन इंटर कॉलिज के रूप में नगर की शान बढ़ा रही है। आज वह प्रदेशीय स्तर की एक लोकप्रिय संस्था है। यहां लगभग ढाई हजार छात्र प्रतिवर्ष शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन की नई दिशा की संरचना करते हैं। आप उसके संस्थापक मंत्री और प्रमुख सूत्रधार रहे हैं। यह संस्था उनके द्वारा रचित एक महाकाव्य के सदृश ही है।

साहित्य-सेवी

विद्यालंकार स्व. पं. इंद्रलाल जी शास्त्री के शब्दों में- "पं० श्यामसुन्दरलाल जी शास्त्री एक बहुश्रुत, स्वाध्यायशील, प्रौढ़ वक्ता एवं लोकप्रिय विद्वान् हैं। महापुरूषों की गुणगाथा का मनोहर गान करने से वह पण्डितोत्तम और भव्योत्तम भी हैं। उनकी रचनाओं में ओज, माधुर्य, कान्ति और प्रसाद गुणों का समावेश रहता है।"

शास्त्री जी की तीन रचनायें उपलब्ध हैं- १. षट्कर्मसमुच्चयः २. आचार्य सधर्मसागर चरित्र एवं ३. श्री विमलसागर भक्तामर स्तोत्र। इस पुस्तक-त्रयी के अतिरिक्त त्रिकालवंद्य आचार्य शांतिसागर जी, वीरसागर जी, शिवसागर जी, मल्लिसागर जी, महावीरकीर्ति जी, विमलसागर जी प्रभृति की संस्कृत भाषा में रचित पूजाओं के रूप में अनेक स्फुट रचनायें भी प्रकाशित हुई हैं। संस्कृत में रचना करने का आपको अच्छा अभ्यास रहा है। हिन्दी पद्य-रचना भी आप भावपूर्ण ललित शब्दों में करते हैं। आपकी कवित्व-शक्ति और वैदुष्य सराहनीय है।

प्रथम रचना का प्रकाशन सन् १६३६ में श्री १०८ मल्लिसागर ग्रन्थमाला, मेरठ से हुआ था। इस पुस्तक की भूमिका आपके शिक्षा-गुरू एवं इस युग के धुरंधर विद्वान् न्यायालंकार पं. मक्खनलाल जी शास्त्री ने लिखी है तथा इसका हिन्दी-अनुवाद शताधिक संस्कृत-ग्रन्थों के यशस्वी टीकाकार स्व. पं. लालाराम जी शास्त्री ने किया है। भूमिका में न्यायालंकार जी ने शास्त्री जी की प्रशंसा करते हुए उन्हें अत्यन्त व्युत्पन्न एवं अपने सुयोग्य होनहार शिष्य के रूप में स्मरण किया है। ग्रन्थ की प्रशस्ति के अनुसार ढाई सौ श्लोक प्रमाण इस ग्रन्थ की रचना उन्होंने स्वान्तः सुखाय की है। अपनी लघुता प्रकट करते हुए वह लिखते हैं:-

न स्वीयशक्ता न च नैजभावो।
न चास्मि विद्वानपि नार्थविज्ञः।। शेष पृष्ठ ५५ पर

महासभा का वैभव

- स्व. श्री गणेशप्रसाद वर्णी

प्राचीन पद्धति के संरक्षक श्रीमान पं. गोपाल दास जी बरैया के प्रयत्न एवं पूर्ण हस्तदान के द्वारा ही महासभा स्थापित एवं पल्लवित हुई है। आपके सिवाय महासभा की स्थापना में श्रीमान स्वर्गीय मुकुण्डराम जी मुंशी मुरादाबाद, श्रीमान पं. चुन्नीलाल जी और स्वर्गीय पं. प्यारेलाल जी अलीगढ़ वालों का भी विशाल हाथ था। महासभा के प्रधानमंत्री स्व. डिप्टी चंपतराय जी थे और सभापति स्व. नर रत्न राजा लक्ष्मणदास जी साहब मथुरा। उस समय जबकि मथुरा में महासभा की बैठक हुआ करती थी तब उसका बहुत ही प्रभाव नजर आता था। पुराने जैन गजट की फाइलें इसका प्रमाण हैं।

उस समय जैन गजट के सम्पादक श्री सूरजभान जी वकील थे और श्री करोड़ीमल जी महासभा के मुनीम थे। महासभा के अधिवेशनों में प्रायः बड़े-बड़े श्रीमानों और पंडितों का समुदाय उपस्थित रहता था। कार्तिक वदी में मथुरा का मेला होता है। राजा साहब की ओर से मेला का प्रबंध रहता था। किसी यात्री को किसी प्रकार का कष्ट उठाना नहीं पड़ता था। राजा साहब स्वयं डेरे-डेरे पर जाकर लोगों को तसल्ली देते थे और बड़ी नम्रता के साथ कहा करते थे कि 'यदि कुछ कष्ट हुआ तो क्षमा करना। मेले ठेले हैं, हम लोग कहां तक प्रबंध कर सकते हैं?' आपकी सरलता और सभ्यता से आपके प्रति जनता के हृदय में जो अनुराग उत्पन्न होता था, उसका वर्णन कौन कर सकता है।

मेला में शास्त्र प्रवचन का उत्तम प्रबंध रहता था। प्रायः बड़े-बड़े पंडित जनता को शास्त्र प्रवचन के द्वारा जैन धर्म का मर्म समझाते थे, जिसे श्रवण कर जनता की जैन धर्म प्रगाढ़ श्रद्धा हो जाती थी। नाना प्रकार के प्रश्नों का उत्तर अनायास हो जाता था। वक्ताओं में श्रीमान् स्व. पं. गोपालदास जी बरैया, श्रीमान प्यारेलाल अलीगढ़, श्रीमान पं. शांतिलाल जी आगरा और शांतिमूर्ति, संस्कृत के पूर्ण ज्ञाता एवं अलौकिक प्रतिभाशाली पं. बलदेवदास जी प्रमुख थे। इसके सिवाय अन्य अनेक गण्यमान्य पं. वर्ग के द्वारा भी मेला की अपूर्व शोभा होती थी। साथ में भाषा के धुरंधर विद्वानों का भी समुदाय रहता था, जैसे कि लश्कर निवासी श्रीमान स्व. पं. लक्ष्मीचंद जी साहब। इनकी व्याख्यान शैली को सुनकर श्रोताओं को चकाचौंध आ जाती थी। जिस वस्तु का आप वर्णन करते थे, उसे पूर्ण कर ही स्वांस लेते थे। जब आप स्वर्ग का वर्णन करने लगते थे, तब एक-एक विमान, उनके चैत्यालय और वहां की देवों की विभूति को सुनकर यह अनुमान होता था कि इनकी धारणा शक्ति की महिमा विलक्षण है।

इसी प्रकार श्रीमान पं. चुन्नीलाल जी साहब तथा पं. बलदेव दास जी कलकत्ता वाले भी जैन धर्म के धुरंधर विद्वान थे। यही नहीं, कितने ही ऐसे भी महानुभाव मेला में पधारते थे जो धनशाली भी थे और विद्वान भी अपूर्व थे, जैसे श्रीमान पं. मेवाराम जी रानी वाले तथा श्रीमान् स्व. पं. जम्बूप्रसाद जी। बहुत से महानुभाव ऐसे भी होते थे, जो आंग्ल विद्या के पूर्ण मर्मज्ञ होने के साथ ही साथ पंडित भी थे, जैसे कि श्रीमान स्व. बैरिस्टर चम्पतराय जी साहब तथा श्रीमान पं. अजितप्रसाद जी साहब। आप लोगों को जैन धर्म पर पूर्ण विश्वास ही नहीं था पाण्डित्य भी था। बैरिस्टर जुगमंगल दास जी साहब अंग्रेजी के पूर्ण मर्मज्ञ थे। आपकी वक्तत्व शक्ति इतनी उच्चतम थी कि जब आप बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने के लिये विलायत गये तब बड़े-बड़े लार्डवंश के लड़के आपके मुख से अंग्रेजी सुनने की अभिलाषा हृदय में रखकर आपके पास आते थे। अंग्रेजी की तरह ही आपका जैन धर्म विषयक पांडित्य भी अगाध था।

श्रीमान अर्जुनदास जी सेठी भी एक विशिष्ट विद्वान थे। आप गोम्मटसार आदि ग्रंथों के मर्मज्ञ विद्वान थे। आपके प्रश्नों का उत्तर बरैया जी ही देने में समर्थ थे। इन विद्वानों के सामने बड़े-बड़े धुरंधर भी वाद करने में झिझकते थे।

मथुरा और महासभा उन दिनों पर्यायवाची थे। यहां आने पर चतुर्थ काल की स्मृति आ जाती थी।

[मेरी जीवन-गाथा (प्रथम भाग) : पृष्ठ ५७ से ६०]

शेष ५४ का . . .

समन्ततस्सूरिगिरस्समेत्य,
समुच्चयोऽकारि मयाल्पबुद्धया।।

शब्द-पारगामी विद्वत्ता के धनी होकर भी यह/ऐसा लघुता-प्रदर्शन उनके बड़प्पन का ही सूचक है।

तृतीय रचना में तपोधन आचार्यरत्न श्री विमलसागर जी महाराज का गुण-स्तवन किया गया है। इस स्तोत्र की विशेषता यह है कि इसमें घर-घर में नित्य पठनीय भक्तामर स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक के प्रथम चरण के चार अक्षर लेकर शेष की पूर्ति शास्त्री जी ने स्वयं की है। उनकी इस विशिष्ट कृतित्व-शक्ति से शब्द-भण्डार पर उनके असाधारण अधिकार का परिचय मिलता है।

उनकी सभी रचनाओं में विद्वत्ता, आगमनिष्ठा और तत्वश्रद्धा की त्रिवेणी के दर्शन होते हैं। काव्यरस, ज्ञानरस और भक्तिरस का प्रवाह उनमें देखते ही बनता है।

सम्प्रति वह जैन समाज की सर्वाधिक प्राचीन संस्था श्री भारतवर्षीय दि. जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के साप्ताहिक मुखपत्र "जैन गजट" के प्रधान सम्पादक हैं। उन्होंने अब तक जितने भी सैद्धान्तिक अग्रलेख लिखे हैं, उनकी प्रामाणिकता को कभी कोई चुनौती नहीं दी जा सकी है। कवि, वक्ता और लेखक इन तीनों रूपों में वह सर्वमान्य हैं।

- नरेन्द्र प्रकाश जैन
(सम्पादक)

जैन गजट की महत्ता

- पं. स्व. छोटेलाल बरैया 'धर्मालंकार', उज्जैन

जैन गजट श्री भा.दि.जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का मुख पत्र है। इस पत्र की नीति प्रारंभिक काल से ही महासभा के उद्देश्यों के अनुकूल धर्म प्रचार, सिद्धान्त पोषण एवं सिद्धान्त अविरूद्ध समाज सुधार के लिये जनसाधारण को प्रेरणा प्रदान करने की रही है। उसी रेखा पर जैन गजट आज भी चल रहा है। उसके लेख पढ़ने योग्य रहते हैं। उसके लेखों से जन साधारण की धार्मिक श्रद्धा पुष्ट होती है और जैन सिद्धान्त का समर्थन तथा सम्पोषण होता है। वह समाज का सही पथ प्रदर्शक और सबसे पुराना पत्र है।

इस पत्र का सम्पादन कुशल सम्पादकों के द्वारा होता चला आ रहा है। सम्पादन सम्बंधी उनकी जागरूकता, प्रत्युत्पन्नमतित्व एवं पाण्डित्य जैन गजट के समय में अद्वितीय रही है, क्योंकि पत्रिका या पत्रिकाओं में सम्पादकीय के अतिरिक्त अपने कहने या लिखने योग्य अन्य कोई वस्तु सम्पादक की नहीं रहती है फिर भी उसमें प्रकाशित सामग्री सम्पादक की ही होती है। कारण स्पष्ट है कि इन प्रकाशित सभी सामग्री का दायित्व सम्पादक के ऊपर रहता है। उसके विचारों और भावनाओं के विपरीत एक पंक्ति भी प्रकाशन का अवसर प्राप्त नहीं कर सकती।

पत्र या पत्रिकाओं में विषय का चयन, रचनाओं का संकलन, उनका क्रम, साज-सज्जा आदि सभी बातों से सम्पादक की रूचि और सभी आदर्श प्रियता का परिचय मिलता है। अतः जैन गजट की सम्पादन कला सुरूचिपूर्ण थी जिससे व्यक्ति सभी सिद्धांतों का यथेष्ट रूप में निर्वाह करते थे।

जैन गजट की पुरानी फाइलों को देखने से प्रतीत होता है कि पत्रकारिता की दृष्टि से जैन गजट का मूल्य वर्तमान पत्रों से कम नहीं था। इसके सम्पादक गण महासभा के उद्देश्यों के अनुसार लेखों/रचनाओं के चयन में पूर्ण सतर्क थे। सम्पादकीय लेखों में उनके व्यक्तित्व का पूर्ण आभार प्राप्त होता था। वे तत्कालीन समाज की गतिविधियों को अच्छी तरह से जानते थे। सामाजिक आन्दोलनों पर प्रकाश डालते हुये धर्म के अविरूद्ध उनकी लेखनी ओजस्वी हुआ करती थी। जैन गजट के प्रकाशन काल में नवचेतना का आविर्भाव था। इस नवचेतना की पृष्ठभूमि के रूप में जैन गजट धार्मिक अलख जगाने में रहा है। जिनका विवरण हमें जैन गजट की फाइलों में देखने को मिलता है। यदि हम पुरानी फाइलों का अवलोकन करें तब हमें आश्चर्य होगा कि वास्तव में जैन गजट ने सभी क्षेत्रों में (धार्मिक/सामाजिक शिक्षा आदि) में अभूतपूर्व योगदान प्रदान किया है। यह सब श्रेय इस पत्र के चतुर सम्पादकों का ही है जिनके द्वारा महासभा का मस्तक सदैव ऊंचा रहा है और यह सभी अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुई हैं।

जैन गजट समाज का प्रतिनिधित्व करते हुये समाज में फैली हुई कुरीतियां धार्मिकता से विरूद्ध जनों को सन्मार्ग दर्शन और धार्मिक पाठशालाओं विद्यालयों के संचालित करने के लिये सदैव प्रयत्नशील रहा है। वास्तव में जैन गजट की दूरदर्शिता रही है कि वह समाज के हित के लिए प्रत्येक आवश्यक विषय को ऊहापोह पूर्वक समाज के सन्मुख रखता रहा। दूसरों द्वारा उसके उद्देश्यों पर किसी भी प्रकार का आक्षेप होता था तो सहिष्णुता पूर्वक सभ्य और परिनिष्ठित भाषा में उसका प्रतिवाद करता रहा है और इस नीति का आज भी पालन कर रहा है।

इस लम्बे अन्तराल में इस जैन गजट की कई बार कायापलट हुई है। और अनेक सम्पादकों के सम्पादकत्व में इसका प्रादुर्भाव हुआ है, किन्तु इस जैन गजट के सबसे प्रथम सम्पादक श्रीयुत बाबू सूरजभान जी वकील देवबन्द (सहारनपुर) था।

यद्यपि आपके समय में जैन गजट ने अच्छी तरक्की की थी, आप एक निरभिमानी कुशल व्यक्ति थे, आपने पूर्व समय में एक नहीं अनेक कार्य किये थे जिससे समाज का यथार्थ सुधार हुआ था। परन्तु खेद का विषय है कि आपके विचारों में ऐसा परिवर्तन हुआ था कि पौराणिक ग्रन्थों को मिथ्यासिद्धि करने के कारण आपको जैन गजट की सम्पादकी से पृथक होना पड़ा। जैन गजट पर कोई कम आपत्तियां नहीं आई। इसका अनुभव प्रायः सभी महानुभावों को है।

जैन गजट आपत्तियों को सहन करता हुआ अब तक अपना काम निःसंकोच रीति से करता चला आ रहा है। उसका प्रधान कारण यही है कि समाज उसे पूर्ण सहानुभूतिपूर्वक अपनाये हुए है। जैन गजट की नीति सदैव आर्षमार्ग की पोषक रही है एवं धर्म और धर्मायतनों की रक्षा एवं वृद्धि करना तथा देवशास्त्र गुरूओं पर होने वाले अवर्णवादों का समुचित विधि से निराकरण करना उसका मुख्य ध्येय है।

कभी-कभी समाज में धर्म विरूद्ध आवाज को उठते हुए सुनकर उसे कड़ी सत्य समालोचनाएं भी करनी पड़ी हैं। जिससे कुछ हमारे मित्र असंतुष्ट भी हुए हैं, परन्तु वैसी आलोचनाओं से धार्मिक समाज ने धर्म एवं समाज का हित समझा है।

उसने सिद्धान्त की अनेक ऐसी बातें आगम प्रमाण से प्रकट की हैं। जिनको पहले अनेक विद्वान भी गलत जानते थे, जैसा कि द्रव्य लिंगी मुनि को मिथ्यादृष्टि समझा जाता था परन्तु जैन गजट ने आगम प्रमाण देकर स्पष्ट बतलाया है कि भावों से असंयत सम्यग्दृष्टि तथा अणुव्रती सम्यग्दृष्टि निर्ग्रन्थ मुनि धारक मुनि भी द्रव्य लिंगी होता है। इस बात से यह गलत धारणा हो गयी है कि इसके सिवाय जैन गजट ने यह भी आगम प्रमाण से बतलाया कि सर्वज्ञ का ज्ञान पदार्थ की पर्यायों को उन्हीं नियत अनियत पर्यायों के अनुसार नियत अनियत के रूप में जानता है इत्यादि विवादस्थ बातों के विषय में जैन गजट ने आर्ष आगम प्रमाणों द्वारा सरल सुबोध भाषा में जो स्पष्टीकरण सभी पुरूषों के भी समक्ष में आया है और उससे उनकी ठीक सैद्धान्तिक एवं धार्मिक श्रद्धा दृढ़ हुई है।

जैन गजट इसी प्रकार समाज की सेवा करता रहे इसके लिए यह परम आवश्यक है कि उसकी स्थिति सुदृढ़ हो। इत्यादि-

इस विषय पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है परन्तु विषय बहुत बढ़ जाने के कारण यहां प्रकाश संक्षिप्त ही डाला गया है।

महासभा का मुख पत्र जैन गजट का विशेष रूप से प्रचार प्रसार करते हुये सभा में महामंत्री श्रीमान त्रिलोकचंद जी कोठारी एवं अन्य पदाधिकारी

भोजग्राम में शांतिपथ दर्शन रथयात्रा उद्घाटन समारोह में मंच परविराजमान श्री निर्मल कुमार जी सेठी

महासभा कोषाध्यक्ष लखनऊ निवासी स्व. श्री सुमेरचंद जी पाटनी

धार्मिक शिक्षण शिविर में परीक्षार्थी परीक्षा देते हुये।

मुम्बई महानगरी में शताब्दी समारोह में विशाल जनसमूह।

धर्म प्रभावना में अहिंसा रैली का दृश्य।

मध्यप्रदेश प्रांतीय महासभा अधिवेशन में आचार्य श्री विद्यासागर जी के सानिध्य में सभा को सम्बोधित करते हुये महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी सभा में पंडित पन्नालाल जी साहित्याचार्य आदि गणमान्य श्रेष्ठीगण की उपस्थिति।

महासभा अधिवेशन में आचार्य विद्यासागर जी के सानिध्य में महासभा महिला कार्यकर्ता का संबोधन।

महासभा अधिवेशन में प्रसिद्ध संगीतकार श्री रविन्द्र जैन, महासभा पदाधिकारी श्री नरेन्द्र प्रकाश जी एवं श्री प्रकाशचंद जी छाबड़ा के साथ।

साहित्य प्रकाशन में जैनागम का महान ग्रंथ तिलोयपण्णत्ती का विमोचन भीण्डर नगरी में आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज एवं आर्यिका श्री विशुद्धमती मातजी के सानिध्य में।

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज विद्यानंद जी महाराज के सानिध्य में श्री निर्मल कुमार जी महासभा पदाधिकारी पूनमचंद जी गंगवाल का स्वागत करते हुये।

श्री महावीर जी क्षेत्र का रथयात्रा समय का विशाल दृश्य।

सन् १९८१ में महाराष्ट्र के नागपुर नगरी में तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के सानिध्य में महासभा अधिवेशन में श्री निर्मल कुमार जी, महामंत्री श्री त्रिलोकचंद कोठारी, श्री भरत काला, श्री कन्हैयालाल जी खेडकर आदि

इक्कीसवीं सदी और महासभा से हमारी अपेक्षायें

– डाक्टर संजीव प्रचंडिया 'ज्ञानेन्द्र'

रथ को खींचने वाले घोड़े जो
थक जाते हैं दौड़ते-दौड़ते,
पर सारथी
वहीं टिका रहता है
उसकी दौड़ उसके मन पर
टिक जाती है।
शायद यह एक विडम्बना है,
कि समय को समय के साथ चलना है।

स्खलित जीवन
चर्य्या विघटित
'मानक' जैसे फिसल गए हैं,
और घोड़ों की 'रास'
शायद छूट गयी है।
हम दिशा-हीन बने रथ-चक्र पर
आरूढ़ हैं,
हमारी स्मृतियाँ
हमारे ही एलबम में कैद हो गयी हैं।

धर्म जैसे दब गया है
मंदिरों के घंटों पर,
मकड़ी के जालों ने
अपने घर बना लिये हैं।
दूर-दूर तक अंधेरा फैल गया है,
हिंसा, झूठ, और बर्बरता
मानों पग-पग पर
पसर गयी है।
पापों से कभी न भरने वाली गगरी
शायद भर गयी है।

तभी-'महासभा' का सिंहनाद हुआ।
धर्म-संरक्षण और जन-जन में
जागरण का विगुल बज उठा
'जिन आचरण का पाठ'
घर-घर में अलख की तरह जल उठा।
घर-घर में अलख की तरह जल उठा।

'संस्कार' संगठन की पहली सीढ़ी है
आज हम उस सीढ़ी पर चढ़ने लगे
कहीं उससे च्युत न हो जाएं
या समय की बहती हवाओं से
चढ़ते-चढ़ते फिसल न जाएं
इसीलिए हमें सजग रहना है
अपनी ही संस्कृति में
आचरण के चरण को सहेजना है
धर्म-संरक्षण हेतु
एक नहीं, अनेक प्रयास करने हैं
सबसे पहिले तो
कथनी और करनी में एक-सार लाना है
घट-घट में धर्म के मर्म को पहुंचाना है
चिरंजीवी होने के लिए
शायद, 'महासभा' के उद्देश्यों/आदर्शों को
एक बार फिर से जगाना है।
एक बार फिर से जगाना है।।

– मंगल कलश,
३६४ सर्वोदय नगर,
आगरा रोड,
अलीगढ़- २०२००१

नीतिपूर्ण दोहे

भीतर से धर्मी बनो छोड़ो मायाचार।
करनी-कथनी एक हो, यही धर्म का सार।।

चक्रवर्ती की संपदा, इन्द्र सारिखे भोग।
काक बीट सम गिनत हैं, सम्यक्दृष्टि लोग।।

कर्तव्य सदा करते रहो, होनी है सो होय।
मत झूठी चिन्ता करो, अंतर पड़े न कोय।।

क्रोध भयंकर है बुरा, समझो इसको आप।
मिनटों मे झट मारता, गिने न मां अरू बाप।।

गौरवशाली है महासभा के सौ वर्ष का इतिहास

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के सौ वर्ष के इतिहास को देखा जाए तो समूचा दिगम्बर जैन समाज इस पर गर्व कर सकता है। अपने विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं के माध्यम से महासभा ने जैन समाज की उन्नति में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह अविस्मिरणीय है।

सौ वर्ष पूर्व जब जैन समाज बिखरा हुआ था तब इस समाज को संगठित करने के लिए भगवान जम्बू स्वामी की निर्वाण स्थली मथुरा चौरासी में सेठ लक्ष्मणदास जी की अध्यक्षता में महासभा की नींव डाली गई। उसके बाद महासभा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और वह निरंतर प्रगति के पथ पर बढ़ती हुई दिगम्बर जैन समाज को संगठित करने एवं मजबूत बनाने के लिए कृत संकल्परत है।

महासभा ने दिगम्बर जैन समाज को संगठित करने के लिए काफी संघर्ष किया है। उस सतत् संघर्ष का ही परिणाम है कि आज महासभा ने अपना सर्वस्व लगाकर दिगम्बर जैन समाज को संगठित करने एवं इसे विशेष पहचान दिलवाने में सफलता प्राप्त की है। उसके अलावा महासभा ने अहिंसा व जैन धर्म की प्रभावना में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महासभा के मुख्य उद्देश्य दिगम्बर जैन समाज में धार्मिक तथा धर्मसम्मत लौकिक विद्या का प्रचार तथा तीर्थ रक्षा का सुप्रबंध एवं जीर्णोद्धार सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति, वाणिज्य व्यवसाय की वृद्धि का उपाय, पारस्परिक झगड़ों का पंचायत द्वारा निर्णय तथा समाज का संरक्षण आदि प्रमुख हैं। इन्हीं उद्देश्यों पर चलते हुए महासभा सतत् प्रगति के पथ पर अग्रसर है तथा समाज का सक्रिय सहयोग पाकर एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुकी है। आज समूचा दिगम्बर जैन समाज उसी की छत्रछाया में फलता-फूलता अपनी धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों को निरंतर आगे बढ़ा रहा है।

एक समय ऐसा भी था जब दिगम्बर जैन समाज को उद्योग एवं व्यवसाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बावजूद विशेष महत्व नहीं दिया जाता यहां तक कि समाज के प्रमुख पर्व महावीर जयंती तक की सरकारी छुट्टी भी नहीं होती थी। महासभा ने विशेष प्रयास करके न केवल महावीर जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित करवाया बल्कि जैन समाज को भी देश के व्यवसाय व राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया। इसके अलावा महासभा दिगम्बर जैन समाज पर आने वाले उपसर्गों से भी निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

दिगम्बर जैन समाज को संगठित करने के साथ-साथ महासभा उसके मूल धार्मिक सिद्धान्तों, रीति-रिवाजों एवं प्राचीन संस्कृतियों की रक्षा के लिए भी कृत संकल्पित है। महासभा दिगम्बर जैन संस्थाओं में सर्वाधिक प्राचीनतम संस्था है तथा यह निष्पक्ष रूप से समस्त दिगम्बर जैन समाज के उत्थान में लगी हुई है।

सेठ लक्ष्मणदास के सभापतित्व में गठित की गई श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा स्व. सरसेठ हुकमचंद, स्व. सरसेठ भागचंद सोनी, स्व. सरसेठ रामकुमार, सेठ भंवरीलाल बाकलीवाल, रायसाहब चांदमल पाण्ड्या, सेठ लिखमीचंद छाबड़ा, साहू सलेखचंद, द्वारकादास, लाला जम्बू प्रसाद, बैरिस्टर चम्पतराय, रावसाहब पन्नालाल, दामोदरदास एवं पं. श्रीलाल पाटनी के कुशल हाथों से गुजर कर अब निर्मलकुमार सेठी के कुशल नेतृत्व में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है।

हाल ही में महासभा ने प्राचीन मंदिर जीर्णोद्धार का जो बीड़ा उठाया है वह एक महत्वपूर्ण कदम है। दिगम्बर जैन धर्म एक अनादि धर्म है। सैकड़ों प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर आज इतिहास व देश की सांस्कृतिक विरासत की अनमोल धरोहर हैं। इनके ऊपर आज केवल जैन समाज को ही नहीं बल्कि प्रत्येक देशवासी को गर्व है। लेकिन उचित रखरखाव के अभाव में ये मंदिर खण्डहर होते जा रहे हैं। आज समाज का ध्यान इन मंदिरों की तरफ बिल्कुल भी नहीं है। किसी को भी इनकी चिंता नहीं है। इनमें से अनेक मंदिरों में तो नियमित पूजा-प्रक्षाल की व्यवस्था तक नहीं है। ऐसे में महासभा ने इनके जीर्णोद्धार का जो बीड़ा उठाया है वह समूचे दिगम्बर जैन समाज के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। महासभा के इस कदम से न केवल दिगम्बर जैन समाज की इस अनमोल विरासत की रक्षा हो सकेगी बल्कि आगे आने वाली पीढ़ी जो कि धर्म से विमुख होती जा रही है उसे भी धर्म की प्राचीन संस्कृति का ज्ञान मिलता रहेगा। वह भी महासभा के मूल उद्देश्यों एवं उसके कार्यों का अनुसरण करती रहेगी।

- डा. ब्र. प्रमिला जैन (सह-सम्पादिका)
(संघस्थ- आर्यिका गणिनी श्री सुपार्श्वमती माताजी)

धर्म नारों में रहने/रखने के लिए नहीं है, बल्कि जीवन में आचरित करने के लिए है।

-विद्यावारिधि डा. महेन्द्र सागर प्रचंडिया, अलीगढ़

संवाद संपादक का पूर्व और अपूर्व रूप है। संपाद शब्द का अर्थ और अभिप्राय है कार्य साधन तथा प्राप्ति। संपाद का कर्त्ता कहलाता है संपादक। संपादक शब्द का सामान्य अर्थ है पूरा करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, उत्पन्न करने वाला तथा प्राप्त करने वाला ! दरअसल संपादक वह व्यक्ति होता है जो दूसरे की रचना शुद्ध कर प्रकाशन के योग्य बनाता है

सामयिक दैनिक आदि पत्र का संपादन-संचालन करने वाला व्यक्ति विशेष वस्तुतः कहलाता है संपादक। इस निष्कर्ष पर खरे उतरने वाले संपादकों में स्वनाम धन्य स्वर्गीय सेठ श्री मिश्रीलाल जी वेद का नाम बड़े महत्व का है। वे जैन गजट के पहले और यशस्वी संपादक थे।

आज लगभग अस्सी और पचासी बर्ष पूर्व जैन गजट का प्रकाशन और संपादन अलीगढ़, उत्तर प्रदेश से होता है। अलीगढ़ के यशस्वी आर्ष विद्या के प्रखर विद्वान पंडित प्यारेलाल जी पाटनी ने जैन भूगोल तीन भागों में रचा था और तत्काल में उसकी विश्व विद्यालयी स्तर पर खूब-धूम मची थी। समय समय पर जैन गजट में भी उसकी खूब चर्चा प्रकाशित होती रही। पंडित प्यारेलाल जी पाटनी के सुपुत्र पंडित श्री लाल जी पाटनी समाज के विख्यात विद्वान थे। स्थानीय और देश के बिभिन्न प्रान्तों से आगत आमंत्रणों पर वे प्रवचनार्थ प्रायः आया-जाया करते थे। जैन गजट के वे प्रकाशक के दायित्व का निर्वाह करते थे। सम्पादक थे सेठ श्री मिश्रीलाल जी वेद। उस समय जैन गजट में तत्कालीन समाज में होने वाली धार्मिक और सांस्कृतिक घटनाओं के वृत और विवरण प्रकाशित होते थे। स्तरीय लेख और कविताएँ तथा कहानियाँ प्रकाशित हुआ करती थी। उस समय का प्रमुख समाचार था-'श्रीमत सरसेठ हुकमचन्द्र जी काशलीवाल को 'सरसेठ' की उपाधि से समलंकृत किया जाना।

मेरठ, उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध विद्वान बाबू अजित प्रसाद जी जैन ने 'जैन गजट' का बखूबी सम्पादन कर तब अखबार नबीसी का यशस्वी दरजा हासिल किया था। बड़ी बिशेषता यह थी कि जैन गजट का अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन किया जाना ताकि तत्कालीन अंग्रेजी भाषा-भाषियों को जैन जगत् के समाचारों से अवगत कराया जा सके। उल्लेखनीय बात यह है कि उस समय जैन धर्म और संस्कृति के महामनीषी बाबू जुगल किशोर जी मुख्त्यार विरचित मेरी भावना ' का अंग्रेजी भाषा में सर्वप्रथम अनुवाद जैन गजट में प्रकट हुआ। कालान्तर में उसका व्यवस्थित और संशोधित अंग्रेजी में अनुवाद अखिल विश्व जैन मिशन के संस्थापक तथा संचालक, इतिहासविद् बाबू कामता प्रसाद जी जैन अलीगंज ने किया, जिसका देश और विदेश में प्रचुर परिमाण में प्रसार-प्रचार हुआ।

जबसे मेरे हाथों ने कलम गही 'जैन गजट' का प्रकाशन और सम्पादन तब अजमेर से होने लगा था। श्रीमंत श्रीपति जी और प्रियवर पंडित श्री अभय कुमार जैन बखूबी जैन गजट का सम्पादन प्रकाशन कर रहे थे। धर्म और धार्मिक समुदाय और समाज के मुखिया स्वनामधन्य श्री मंत सरसेठ श्री भागचंद जी सोनी का संरक्षण प्राप्त कर जैन गजट ने तब खूब धूम मचा रखी थी। अनेक स्तरीय विशेषांक निकाले गये थे। समय ने करबट ली और इससे जैन गजट प्रभावित हुआ। जैन गजट तब अजमेर से उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ पहुंचा। श्रीमंत सेठ निर्मल कुमार जी सेठी महासभा के नये निपुण अध्यक्ष मनोनीत किये गये।

हस्तिनापुर में पूजनीया आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती जी के सान्निध्य में एक बैठक सम्पन्न हुई तब श्री सेठी जी ने अलीगढ़ से मुझे भी आमंत्रित किया था। जैन शास्त्र-भण्डारों तथा वाचनालय के पुराने शास्त्र खजाने की खोज खबर लेकर मैंने जैन गजट की एक प्राचीन प्रति खोज निकाली थी। उसकी फोटोस्टेट कराकर मैं हस्तिनापुर पहुंचा। मेरा वक्तव्य रखा गया। मुझे स्मरण है रानी मिल के नियामक श्रेष्ठि श्रीमानू शिखर चन्द्र जी जैन तथा कोटा के सेठ श्री त्रिलोक चन्द्र जी कोठारी आदि भाईयों ने तब मेरी पीठ थपथपायी थी, और श्रोताओं ने मुझे शान्तिपूर्वक सुना और सराहा था। जैन गजट की पुरानी प्रति देखकर सभी लोग प्रायः प्रसन्न और उत्साहित थे। श्रीमंत सेठी जी ने जैन गजट को सभालने का प्रस्ताव रखा था पर तत्कालीन विश्वविद्यालयी जैन शोध प्रोजेक्ट मेरे हाथ में था। अतः अपनी असमर्थता व्यक्त कर मैने क्षमा मांग ली थी।

मुझे याद पड़ता है जैन गजट के संपादक का कार्यभार निर्वहरण करने के लिए पंडित श्री कुंजीलाल जी शास्त्री को नियुक्त किया गया था। उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में जैन गजट का सुंदर संपादन और प्रकाशन किया था। वे असमय में ही महायात्रा पर चले गए। समाज के मूर्धन्य मनीषी पंडितरत्न श्री श्यामसुन्दरलाल जी शास्त्री से जैन गजट को संभालने की प्रार्थना की गयी। वे तब जैन गजट के प्रधान सम्पादक बनाये गये। ज्ञान और वय वृद्ध पंडित जी ने अपने प्रिय शिष्य प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जी जैन को सम्पादन कला में भी दीक्षित कर उन्हें अपना सहयोगी सम्पादक बनाया। तब से जैन गजट का मानो कायाकल्प ही होने लगा। आदरणीय शास्त्री जी के कुशल निर्देशन में प्रबुद्ध प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन ने जैन गजट को सुन्दर से सुन्दरतम बनाने के लिये नित्य और निरन्तर प्रयास किये और प्रसन्नता की बात यह है कि उन्हें बराबर सफलता प्राप्त होती रही।

पत्रिका के सफल सम्पादन और प्रकाशन में दो बातों की परम आवश्यकता होती है। आर्थिक संकट से उबारने और दूसरे उसे सुधी साम्रगी सबारने से सम्पन्न करना। प्रकाशनगत आर्थिक आदि समस्याओं का समाधान श्रीमंत सेठ श्री निर्मल कुमार जी सेठी द्वारा

शेष पृष्ठ ६१ पर....

जैन महिलारत्न मां श्री चन्दाबाई- एक श्रद्धांजलि

जैन महिलादर्श ने इस वर्ष अपने प्रकाशन के ७५ वर्ष पूरे कर लिये हैं। किसी भी पत्रिका के लिये अपने प्रकाशन के ७५ वर्ष पूरे कर लेना अत्यन्त गौरव की बात है। सन् १६२२ में जैन-नारी-जागरण की अग्रदूत परम श्रद्धेया मां श्री चन्दाबाई ने इस पत्र का प्रकाशन आरा (बिहार) से प्रारंभ किया था। बाल ब्रह्मचारिणी, परम विदुषी, समाज सेविका पंडिता श्री चन्दाबाई जी न केवल जैन समाज की ही वरन् समग्र भारतीय राष्ट्र की इस शताब्दी की एक महान विभूति थी। अपने तेजस्वी एवं प्रौढ़ प्रज्ञा से युक्त व्यक्तित्व तथा चिरकालीन समाजसेवा एवं धर्मप्रेम के लिये वे सादर वंदनीय हैं। देश और जाति के लिये गौरव की सजीव मूर्ति इन आदर्श महिला रत्न ने अपने जीवन, कार्यों और विचारों से महिला का सच्चा आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत किया था, तथा नारी शिक्षा और नारी-जागृति को भारी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्रदान किया था।

इस बुद्धिवाद के अतिरेकपूर्ण युग में शिक्षित व्यक्तियों में पवित्र श्रद्धा तथा संयम के प्रति आकर्षण शून्य सरीखा होता जा रहा है। वाणी से चरित्र रक्षण के बारे में अनगणित बार उच्चारण होता है। किन्तु उसका जीवन से तनिक भी सपर्क नहीं रहता है। महापुराण में भगवज्जिनसेन स्वामी ने लिखा है कि सम्राट भरतेश्वर ने अपने स्वप्नों में एक यह भी स्वप्न देखा था कि एक वृक्ष है, जो बिल्कुल शुष्क हो गया है। उसका फल भगवान ऋषभदेव ने बताया था कि आगे पुरूष तथा स्त्री समाज में सदाचार में शिथिलता उत्पन्न होगी। उनके महत्वास्पद शब्द ये है- पुंसां स्त्रीणां वचारित्रच्युतिः शुष्क द्रुमेक्षणात्। आज यही बात दृष्टिगोचर हो रही है। आध्यात्मिक अंधियारी के इस समय मे ऐसे सौभाग्यशाली नर या नारी विरले हैं, जिनका लक्ष्य समीचीन श्रद्धामूलक ज्ञान और सदाचार का पालन हो। संपन्न परिवार से संबधित व्यक्तियों की प्रवृत्ति तो धर्म से और विमुख होती जाती है; ऐसे विशिष्ट, जड़वाद से जर्जरित जमाने में उनका दर्शन दुर्लभ है, जो अपने अध्यात्मवाद के प्रदीप को प्रदीप्त रखते हुये मार्ग-भ्रष्ट लोगों का पथ-प्रदर्शन करते हैं।

ऐसी विशिष्ट आत्माओं में पंडिता चंदाबाई जी का नाम आदर पूर्वक लिया जा सकता है। अपने पतिदेव बाबू धर्मकुमार जी का छोटी अवस्था में ही निधन होने के उपरांत आपने धर्म को ही अपना जीवनाधार मानकर उसके लिये अपने आपको उत्सर्ग कर दिया था। इसी से आर्तध्यान को बढ़ाने वाली सामग्री को उन्होंने कुशलता पूर्वक आत्मकल्याणकारी और धर्म ध्यान का केन्द्र बना लिया था। वैष्णव परिवार में जन्म धारण करने वाली इन महिला के हृदय में जिनवाणी माता की उज्जवल और आदर्श भक्ति का अद्भुत विकास हुआ। आपने स्वाध्याय के द्वारा ग्रंथों का मार्मिक बोध प्राप्त किया और सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण कर इस दुर्लभ मनुष्य जन्म की विशिष्ट निधि से अपनी आत्मा को समलंकृत किया। देव, गुरू, शास्त्र में इनकी प्रगाढ़ भक्ति थी। परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के समीप आपने अनेक व्रत धारण किये,और उनको अनेक बार आहार दान देने का अपूर्व लाभ प्राप्त किया था।

आचार्य अमृतचन्द्र सूरि ने लिखा है कि पहले रत्नत्रय की ज्योति द्वारा अपने जीवन को प्रकाशित करो, पश्चात् अन्य कुमार्ग रतों को सत्पथ में लाने का प्रयत्न करो। पंडित जी ने ऐसा ही कार्य किया था। उनके पवित्र व्यक्तित्व के कारण आरा का जैन बालाश्रम आज समस्त भारत की उच्चकोटि की महिला संस्थाओं में गिना जाता है।

सन! १६५२ में हरिजन मंदिर प्रवेश बिल को लेकर समस्त जैन समाज में एक हलचल मच गई थी। परमपूज्य १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने बम्बई विधानसभा में उपस्थित उक्त बिल को रद्द हो जाने पर अन्नाहार का त्याग कर दिया था। आचार्य महाराज की विदुषी शिष्या मां श्री चन्दाबाई ने जैन संस्कृति पर अचानक आये इस संकट को दूर करने के लिये खूब दौड़धूप की। आपने अपने कई सम्पादकीय वक्तव्यों द्वारा जैन महिलादर्श में उक्त बिल को रद्द करने की आवश्कता पर जोर दिया तथा संगठित होकर जैन समाज को सामूहिक प्रयत्न करने के लिये ललकारा। आप इसी उद्देश्य को लेकर कई बार स्वयं दिल्ली गईं और वहां तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद तथा प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू से भेंट की और उक्त बिल के संबंध में यथार्थ निर्णय करने के अधिकार की मांग की। आपने दृढ़तापूर्वक निर्भय होकर कहा कि जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है, यह वस्तु-स्वभाव का विवेचन करता है। इसके प्रवर्तक कोई देव नहीं हैं, यह अनादिकालीन है। सर्वदा समय-समय पर तीर्थंकरों का जन्म होता रहता है। ये तीर्थंकर अपनी साधना द्वारा स्वयं शुद्ध, बुद्ध और हितोपदेशी बनकर पथ भ्रष्ट जनता को स्वभाव का उपदेश देते हैं। हिन्दू धर्म के अंतर्गत जैन धर्म को कभी नहीं माना जा सकता है। यह सर्वथा स्वतंत्र है, अतएव हिन्दुओं के लिये जो कानून जैनों पर लागू नहीं होने चाहिये। हरिजन जैन मंदिरों को पूज्य नहीं मानते, आज तक कभी भी उन्होंने जैन मंदिरों में दर्शन, पूजन नहीं किये हैं और न उनके आराध्यों की मूर्तियां जैन मंदिर में हैं। अतएव हरिजन-मंदिर प्रवेश बिल जैनों पर लागू नहीं होना चाहिये। मां श्री की उक्त बातों का राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री पर गहरा प्रभाव पड़ा; फलस्वरूप हरिजन बिल मंदिर प्रवेश बिल से जैन मंदिर पृथक कर दिये गये।

१६४८ में सर्चलाइट में एक समाचार छपा था कि जार्ज बर्नार्ड शॉ (प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार) 'जैन मत का उत्थान' विषय पुस्तक लिख रहे हैं तथा इस कार्य में योगदान देने के लिये उन्होंने महात्मा गांधी के पुत्र देवदास गांधी को बुलाया है तो आपने विचार किया कि इस कार्य में सहयोग देने के लिये किसी अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता जैन विद्वान को अवश्य भेजना चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये आपने तत्काल जैन समाज के श्रीमानों और धीमानों के पास पत्र लिखे। आपने निकटवर्ती व्यक्तियों से कहा कि जैन समाज से सहयोग न भी मिले तो भी मैं अपने पास से खर्च देकर किसी अच्छे धर्मशास्त्र विद्वान को भेजूंगी, जो जैन धर्म की अच्छी जानकारी डा. शॉ को करा सके।

मां श्री ने अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला परिषद के तत्वावधान में, उस संस्था का मुख पत्र जैन महिलादर्श नामक उपयेगी हिन्दी मासिक पत्रिका का सम्पादन सन् १६२२ से ही प्रारंभ कर दिया था। मां श्री के वरद कंधों पर इस पत्रिका का सम्पादन भार कैसे चला आया इसकी भी एक

कहानी है। सन् १९२२ में अ.भा.दि.जैन महिला परिषद का ११वां अधिवेशन लखनऊ में हुआ। उस अधिवेशन में अन्य प्रस्तावों के अतिरिक्त एक प्रस्ताव था मासिक पत्र निकालने का, जिसका संक्षिप्त रूप नीचे दिया जाता है-

धार्मिक शिक्षा एवं वास्तविक विवेक के अभाव में वर्तमान जैन महिला समाज भौतिक पदार्थों के चकाचौंध में आकर अस्त-व्यस्त हो रहा है. . . अतएव यह परिषद प्रस्ताव करती है कि एक मासिक पत्रिका निकालकर जैन नारियों में जैन संस्कृति की भावनायें प्रस्फुटित की जाय, जिससे जैन समाज अपने खोये हुये गौरव को पुनः प्राप्त कर सके. . .अतएव कुरीति अच्छेदन में धार्मिक एवं लौकिक ज्ञान की योजना के लिये जैन महिलादर्श नामक मासिक पत्रिका निकाला जाय।

प्रस्ताव का यह रूप जैन महिलादर्श के जीवन का दृढ़ संकल्प बन गया, जिससे पत्रिका सर्वदा नियत समय पर प्रकाशित होती रही प्रस्ताव, अपने उद्देश्य की पवित्रता के कारण, सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ, पर प्रश्न था कि इसका सम्पादन भार किसके बलशाली कंधों पर पर डाला जाय। यदि कोई महिला विदुषी थी तो उनमें हिन्दी की पर्याप्त योग्यता नहीं थी, और यदि किसी भी भाषा की योग्यता थी, तो उसमें वह विद्वता नहीं थी, जो एक पत्र के सम्पादन और संचालन के लिये अपेक्षित थी। यह मणि-कंचन योग यदि किसी में था तो श्री ब्र. पं.चन्दाबाई जी में। अतएव इनके लाख ना करने पर भी सम्पादन भार इन्हीं को दे दिया गया। श्री ललिता बहन, मगन बहन और कंकू बहन ने जोरदार शब्दों में आपके सम्पादिका बनने के प्रस्ताव का समर्थन, अनुमोदन किया। अतएव मां श्री को महिला समाज की आज्ञा स्वीकार करनी पड़ी।

सन् १९२१-२२ का समय एक तूफान का समय था। महात्मा गांधी असयोग आंदोलन की रणभेरी बजा चुके थे। समाज में अजब तहलका मचा था. देश में चारों ओर क्रांति की लहर उमड़ती दिखलाई पड़ती थी। ऐसी ही झंझापूर्ण मुहूर्त में जैन महिलादर्श का जन्म हुआ। उन दिनों कोई महिला पत्र निकालना हंसी खेल नहीं था; कुंआ खोदना और तब प्यास बुझाने जैसा काम था। जैन महिलादर्श में केवल स्त्रियों के ही लेख प्रकाशित हो सकते थे, ऐसा नियम था। उन दिनों हिन्दी के स्वल्प प्रचार के कारण लेखक तो मिलते ही नहीं थे, लेखिकाओं का मिलना और भी दुर्लभ था। इन विषम परिस्थितियों में सम्पादन की कठिनाइयों का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इसी संदर्भ में पं. चन्दाबाई जी ने जैन महिलादर्श के रजत जयंती अंक के सम्पादकीय में इस प्रकार लिखा था- 'उस समय समाज में शिक्षित देवियां इनी-गिनी ही दिखलाई पड़ती थीं। जो शिक्षिता थी, वे या तो लिखने का साहस ही नहीं करतीं अथवा अशुद्ध और अस्पष्ट लिख कर भेज देती थी, जिससे सारा कासारा निबंध बदलना पड़ता था. . . यद्यपि यह समय सम्पादिका की परीक्षा का था, लेकिन तो भी जैनधर्म के प्रसाद से आरंभिक कठिनाइयां फूल बन गई और आदर्श दिनों दिन वृद्धिंगत होने लगा।

आपने अपने संपादकीय लेखों द्वारा नारियों में नवचेतना फूंकने के लिये शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया था। महिला सुधार के तीन मंत्र शीर्षक एक सम्पादकीय में आपने लिखा था- महिला समाज के सुधार के तीन मूल मंत्र हैं- शिक्षा, समाचार और आत्म-विश्वास। आज की शिक्षिता युवतियों को देखकर तरस आता है, वे पच्चीस वर्ष की उम्र में ही बड़ी बूढ़ी मालूम पड़ने लगती हैं. . आज की शिक्षा में संयम का नामोनिशान भी नहीं है. . .समाज में जितनी नई पाठशालायें खुल रही हैं उनमें नारी शिक्षा का ऐसा प्रचार किया जाय जिससे नारी की सर्वांगीण उन्नति हो सके।

इस महिलारत्न की प्रशंसा में माननीया राजकुमार अमृत कौर ने एकबार लिखा था- "पंण्डिता जी के निःस्वार्थ एवं उत्कृष्ट कार्य में महती सफलता की कामना करती हूं। काश! पंडिता जी सरीखी भारतीय महिला के कुछ काल के खोये प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करने के लिये और महिलायें होती।" जैन महिलादर्श के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में हम इसकी स्वनामधन्य संस्थापिका-सम्पादिका महिलारत्न मां श्री चन्दाबाई के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा कामना करते हैं कि उनका आदर्श सभी भारतीय महिलाओं का पथ-प्रदर्शक बने। आज की नारी उनसे प्रेरणा प्राप्त करके अधिकाधिक सेवा और समुन्नति के पथ पर अग्रसर हो।

- कपूरचंद पाटनी, सह-सम्पादक

पेज ५९ का शेष. . .

अपनी सूझ-बूझ और कार्यकुशलता से पूर्ण किया गया और पत्रिका का प्रमाणिक और सामयिक समाचारों का संयोजन तथा समयोपयोगी धार्मिक लेखों, कविताओं आदि साहित्यक विधाओं में सुधी सामग्री को जुटाने में प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जी जैन का प्रयास सर्वथा अनुशंसनीय रहा । इस दायित्व के निर्वाह करने में वे सदा प्रमाद मुक्त रहे ।

सफल सम्पादन में सुधी सामग्री का चयन मात्र करना ही नहीं होता बड़ा काम यह होता है कि कमजोर और अस्तरीय सामग्री में यथेच्छ सुधार-संशोधन कर उसे स्तरीय स्वरूप प्रदान कर उसका सम्पादन करना। प्राचार्य जी ने इस दिशा में आदर्श की स्थापना की है। प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाशजी जैन की बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने समाज के प्रबुध्द लेखकों, विद्वान और कवियों से सम्पर्क साध कर उनसे महत्वपूर्ण रचनाओं द्वारा जैन गजट की शोभा और शक्ति का संवर्द्धन किया है ।

समय समय पर धार्मिक द्वन्द्व और द्वेष जन्य समस्याओं के समाधान हेतु पत्र की नीति की रक्षा करते हुये लोकोपयोगी समाधान सम्पृक्त सम्पादकीय लिखना वस्तुतः किसी भी सम्पादक की सूझ-बूझ का परिचायक होता है। भाई श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन इस विद्या के भी धनी है।

उनके सम्पादन काल में जैन गजट के माध्यम से देश के मूर्धन्य मनीषियों के जैन धर्म और संस्कृति से सम्बन्धित मूल्यवान विचारों का समय समय पर प्रकाशन हुआ है। इससे जैन गजट का वैचारिक दायरा दरिया में परिवर्तित हुआ है। जैन गजट के समय-समय पर प्रकाशित विविध विशेषांकों की सुधी सामग्री पुस्तकालयों और वाचनालयों की शोभा और शक्ति के रूप में समाहत रही है ।

पत्र का समय समय पर नियमित प्रकाशन और स्तरीय सामग्री से सम्पृक्त जैन गजट ने साप्ताहिक पत्रों में आदर पूर्वक स्थान बनाया है। इसके विकास में जहां एक ओर प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाशजी जैन का हाथ रहा है। वहीं समाज के वयोवृध्द विद्वान पंडित मल्लिनाथ जी शास्त्री, विद्यारत्न श्री सुल्तान सिंह जी जैन, पं० तेज कुमार काला आदि विद्वानों तथा समाज के सुधी लेखकों, कवियों का आत्मिक सहयोग भी उल्लेखनीय रहा है । 'जैन गजट' अपनी नीति-रीति के पोषण में सक्रिय तथा सावधान रहते हुये समाज को सुधी सामग्री जुटाने में निरन्तर प्रगति करता रहे, यही हमारी मंगल कामना और भावना है।

महासभा के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान

- भरतकुमार काला, मुम्बई

आर्षमार्गानुकूल धर्म व समाज का संरक्षण करते हुए दृढ़तापूर्वक मार्गदर्शन करने में अगसर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा भारतवर्ष की एक धार्मिक संस्था है, जिसको सन् १९९४ में १०० वर्ष पूरे हुए हैं।

धर्माभिमुखी महासभा का शताब्दी समारोह भारतवर्ष में उत्साह से मनाया जा रहा है। ४ फरवरी १९९५ से धर्म स्थल (कर्नाटक) से शुभारंभित यह महोत्सव कोडरमा (बिहार), भोजग्राम (कर्नाटक), कलकत्ता (बंगाल), गुवाहाटी (आसाम), ललितपुर (उत्तर प्रदेश) में भव्यता के साथ सम्पन्न हुए हैं।

श्री १००८ भगवान चिन्तामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर (औरंगाबाद) महाराष्ट्र में दिनांक ३, ४, ५ नवम्बर १९९३ को पूज्य प्रज्ञाश्रमण मुनि श्री १०८ देवनंदी जी महाराज के सानिध्य में शताब्दी समारोह सम्पन्न हुआ।

महाराष्ट्र की दिगम्बर जैन समाज महासभा की स्थापना से लेकर आज तक महासभा के उन्नयन में सदैव अग्रसर रही है। बम्बई के स्व. सेठ श्री माणिकचंद हिराचंद, सोलापुर के स्व. श्री सेठ हिराचंद नेमचंद, कोल्हापुर के स्व. श्री भूपाल अण्णाजी जिरगे आदि श्रेष्ठी जनों ने भूमिका निभाई है। जम्बूस्वामी की निर्वाण भूमि चौरासी मथुरा (उ.प्र.) के कार्तिकी मेले में उपस्थित हो श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा की स्थापना में अहम भूमिका निभाई है। ई. सं. १८९५-९६ में महासभा के अंतर्गत स्थापित धार्मिक परीक्षालय बोर्ड के प्रथम महामंत्री का पदभार स्व. सेठ श्री माणिकचंद हिराचंद ने भूषित किया है। भारत की समस्त दिगम्बर जैन पाठशालाओं को इस बोर्ड से जोड़ा गया था।

ई.सं. १९०२ में महासभा ने तीर्थों के सुप्रबंध हेतु जिस भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना की थी उसका सर्वप्रथम सभापति बनने का सौभाग्य बम्बई के स्व. सेठ श्री माणिकचंद हीराचंद को प्राप्त हुआ, इन्हीं के भाई स्व. सेठ श्री नवलचंद जी के नेतृत्व में तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर पर गंधर्व नाले से कुंथुनाथ टोंक तक सीढ़ियों के निर्माण का कार्य शुरू किया गया था।

महासभा की प्रान्तीय शाखा खोलने का सर्वप्रथम अहोभाग्य बम्बई को ही प्राप्त है। स्व. सेठ श्री माणिकचंद जी के सत्प्रयत्न से ही बम्बई प्रांतीय सभा की स्थापना १८९९ में हुई थी और जैन मित्र नामक पत्रिका का शुभारंभ किया गया था। स्व. श्री अण्णा साहिब ने भी महासभा से प्रेरणा प्राप्त कर १८९९ के आसपास दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा की स्थापना की।

ई.सं. १९१० में तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी पर सम्पन्न महासभा अधिवेशन में स्थापित श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद की स्थापना में भी बम्बई की महिलाओं का योगदान स्मरणीय है। इस परिषद की सर्वप्रथम मंत्री का गौरव बम्बई की विदुषी स्व. श्रीमती मगनबाई को है स्व. सेठ श्री माणिकचंद हिराचंद जी की सुपुत्री, इन्होंने भारत भर में भ्रमण कर जैन महिलाश्रम, जैन पाठशालाओं का निर्माण किया। स्व. श्रीमती कंकुबाई (सुपुत्री स्व. सेठ श्री हिराचंद नेमचंद) सोलापुर इनका इस कार्य में समर्पित सहयोग था। जैन महिलादर्श पत्रिका की स्थापना में भी इनकी अनन्य भूमिका थी।

बम्बई, फलटण, अकलूज, सोलापुर आदि नगर महासभा के प्रचार-प्रसार के मुख्य केन्द्र थे। पाठशालाओं का निर्माण कार्य धर्म का प्रचार और प्रसार साथ ही श्राविकाश्रम आदि के निर्माण में महाराष्ट्र सबसे आगे था।

महान धर्म प्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज द्वारा जिनमंदिरों के मूल स्वरूप की सुरक्षा हेतु चलाये गये आंदोलन में महासभा अंतर्गत महासभा का अनन्य ऐतिहासिक योगदान रहा है।

दिगम्बर जैन मुनियों के बिहार में प्रतिबंध जैसे कांड का सफलतापूर्वक सामना कर केवल महाराष्ट्र में ही नहीं अपितु भारत भर में प्रतिबंध को हटवाने में महाराष्ट्र की महासभा प्रेमी समाज का भारी सहयोग था।

बम्बई के स्व. सेठ श्री पूनमचंद जी घासीराम जी ने चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का ससंघ दक्षिण महाराष्ट्र कुंभोज बाहुबली से उत्तर भारत की ओर बिहार करवाकर धर्म की अपूर्व प्रभावना की थी जिसमें महासभा की अनन्य प्रेरणा थी।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज के बाद उनके पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, आचार्यकल्प चन्द्रसागर जी महाराज, आचार्य श्री नेमिसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज (दक्षिण), आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज, जिन्होंने महासभा को अपने आशीर्वाद से भूषित किया, वे सभी इसी महाराष्ट्र की धरोहर है।

बम्बई के स्व. सेठ श्री माणिकचंद हिराचंद जी के अलावा सोलापुर के स्व. सेठ श्री रावजी सखाराम दोशी, नागपुर के स्व. सेठ मोतीसाव गुलाबसाव नागपुर, स्व. सेठ श्री गेंदमल जी झवेरी बम्बई ने महासभा का सभापतित्व पद भूषित कर महासभा को गौरवांवित किया है।

महासभा के उन्नयन में स्व. सेठ श्री सुखनंदन जी बम्बई एवं श्री तात्या सहेब चोपड़े, कोल्हापुर, स्व. श्री जितगौडा पाटिल मांगुरकर, स्व. श्री फतेहचंद जी, स्व. श्री कल्काप्पा भरमाप्पा निरवे शास्त्री, कोल्हापुर, पं. बंशीधर शास्त्री, सोलापुर, पं. पन्नालाल जी बाकलीवाल

शेष पृष्ठ ६८ पर. . .

महासभा का यह इतिहास है

—उमेश जैन, फिरोजाबाद

कार्य कुशलता कर्मठता पर जिसका दृढ़ विश्वास है ।
ऐसा ही कुछ महासभा का अपना यह इतिहास है ।।

आर्यावर्त क्षेत्र यह पावन तीर्थों का उदगम् स्थल
मानसरोवर कैलाश शिखर से बहती सरितायें निर्मल
जिसके कण कण में बिखरे हैं तप त्याग ज्ञान के मुक्ताकण
अध्याय ज्ञान की चर्चाऐ करते हैं जिसके ज्ञानी जन,
मिलता सदा विश्व को जिससे जीवन का परम प्रकाश है ।

ऐसी इस पावन माटी में, जिन धर्म मार्ग अनुरागी जन
जीवन यापन कर रहते हैं कर देव शास्त्र गुरू का अर्चन ।
हर नगर ग्राम पुर पत्तन में यह बसे धर्म के अनुरागी
सम्पर्क सूत्र में बंधे सभी यह इच्छा जब उस मन में जागी
सम्मानित होगा जिन मार्ग तभी तब होगा धर्म विकास है ।।

तव राजा लक्ष्मणदास संगठित करने का संकल्प लिये
सौ बर्ष पूर्व जब निकले थे इतिहास आज का लिये हुये
तब से अब तक इस धारा में कितने नाम जुड़े आदर्शों के
लिख गये हजारों पृष्ठ आज तक इसमें संरक्षण संघर्षों के
बढ़ती जाती है इसकी वय जितनी बढ़ता उतना ही विश्वास है ।।

इसके कर्मठ स्तम्भों ने तन मन धन किए समर्पण हैं
जो जुड़े नाम सौ बर्षों में उनके कृतित्व आज भी दर्पण है
मुनि मार्ग सुरक्षित रहे सदा हो तीर्थ हमारे निष्कंटक
साधर्मी निर्भय रहें सदा जीवन हो सबके निश्चिंतक
महासभा के इन कृतित्वों का यह बिखरा गंध सुवाष है ।।

हो वर्तमान जिसका 'निर्मल' उसका आगत उज्जवल ही होगा
यह बर्ष हमारी पीढ़ी को निश्चय ही पथ दर्शक होगा
यह भरत आज के युग का है जिसने हर जर्जर तीर्थ सम्भाला है
नव रूप दिया इतिहासों को हर पथ में भरा उजाला है ।
दिया संगठन को नवतम जिसने जब विश्वास है ।

हम आज संगठन गरिमा का करते हैं शत्‌शत्‌ अभिवन्दन
बिखरे इसकी गंध युगों तक ज्यों महके पूजा का चन्दन
यह बढ़ते चरण रहे अविरल बाधाएँ नत्‌ हो चरणों में
गुरू देव शास्त्र की श्रद्धाऐं जीवन्त रहे मन वचनों में
यह एक सदी की गौरव गाथा, उज्जवल यह इतिहास है ।

****

धन्य हो गया भारत देश

—हुकमचन्द सौगानी

जन्म लिया
इस धरा पर तुमने,
धन्य हो गया
भारत देश।
सदियों से
सुख देते आए,
श्री महावीर
तुम्हारे संदेश।
रूप तुम्हारा
कितना भोला,
धारण किया
दिगम्बर चोला।
उध्दारक वाणी से
तुम्हारी
मिला हमें
आत्म परिवेश।
गुरूवर्य हमारे मुनिवर हैं,
मानें उनका यह आदेश।
सबसे प्यार करें,
जीवन में भूलें सारे राग-द्वेष।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
पथ में कितने घिरे अंधेरे
याद रहे तजकर सब जाना,
निज ज्ञान रहेगा शेष।

**जैसी संगति मिलती है
तदनुरूप ही
मति ढल/परिवर्तित हो
जाती है**

भारतवर्ष के विख्यात विद्वान पंडित

स्व. पं. तनसुखलाल जी काला, मुंबई

- एम.सी.जैन, पत्रकार, चिकलठाणा (महाराष्ट्र)

श्री पं. तनसुखलाल जी काला के साथ लेखक पत्रकार श्री एम.सी.जैन

भारतवर्ष में पं० मक्खनलाल जी शास्त्री खूबचंद शास्त्री, इंद्र कुमार विद्यासागर, पं. कामता प्रसाद जी जैन, वर्धमान पार्श्वनाथ जी शास्त्री आदि अनेक विद्वान पंडितों में स्व. पं. तनसुखलाल जी काला मुंबई का अपना एक विशेष स्थान था। संस्कृत हिंदी और अंग्रेजी भाषा के वे जानकार अधिकारी विद्वान थे। भारतवर्ष में जहां भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें होती वहां पर तनसुखलाल जी काला को विशेष रूप से निमंत्रित किया जाता था। जैन धर्म ग्रन्थें का उनका विशेष अभ्यास होने के कारण उनका हिंदी वक्तव्य सुनने के लिये भाविक जनता आतुर रहती थी।

पं. तनसुखलाल जी काला का जन्म २ दिसंबर १८९६ को हुआ था। आपकी कर्म और धर्म भूमि मुंबई ही रही है। प्रख्यात विद्वान तथा जैन दर्शन के संपादक पं. तेजपाल जी काला नांदगांव (महा.) तथा कवि ब्र. पं. माणिकचंद जी काला मुबंई आपके भाई थे।

पं. तनसुखलाल जी काला अपने आकर्षक व्यक्तित्व के लिये समस्त भारत में विख्यात थे। पीली पगड़ी, सफेद शर्ट और धोती और शेरवाणी से वे बहुत ही आकर्षक विद्वान पंडित लगते थे। गुलाब पुष्प जैसा उनका चेहरा होने से वे लाखों में एक लगते थे। हिंदी भाषा के विद्वान होने से उनकी ख्याति समस्त भारतवर्ष में फैली थी।

आचार्य सम्राट धर्मदिवाकर महान तपस्वी दिगंबर जैन मुनि आचार्य शांतिसागर जी महाराज के वे परम भक्त थे।

१९५० के करीब लगभग भारत स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक नेताओं के कारण हरिजन समाज ने जैन मंदिर में प्रवेश करना चाहा जिससे जैन समाज में भारत वर्ष में तहलका मच गया। जैन सभ्यता संस्कृति, पूजा पद्धति अत्यंत भिन्न होने से हिंदू और जैन भिन्न संस्कृति होने के कारण मंदिर प्रवेश एक जटिल समस्या बन गयी। इतिहास की ओर देखो तो कोल्हापुर, फलटण, खिद्रापुर, मैसूर आदि अनेक स्थानों के जैन मंदिर अजैन समाज के कब्जे में चले गये।

हरिजन मंदिर प्रवेश के कारण समाज में रोष निर्माण हुआ। आचार्य शांतिसागर महाराज ने दृढ़ता से कदम उठाये। धर्म रक्षण के लिये अन्न त्याग दिया जिससे दिग.जैन समाज में हलचल मच गई। आचार्य शांतिसागर जी महाराज ने आदेश दिया कि समाज के उच्च्य पदस्थ नेता, विद्वान पं. जवाहरलाल नेहरू, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि नेताओं से मिलकर जैन धर्म मंदिर पर आये संकट से उन्हें अवगत कराये।

पं. तनसुखलाल जी काला, सरसेठ भागचंद जी सोनी, शिरगुरकर पाटिल आदि उस समय के मुंबई प्रांत के मुख्यमंत्री बाबा साहेब खेर और महामंत्री श्री मोरार जी देसाई से मिले तथा शीघ्र ही पं. तनसुखलाल जी काला के नेतृत्व में पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार बलदेव सिंह, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि नेताओं से मिले। उन्होंने पं. तनसुखलाल जी काला के नाम जैन समाज को पत्र दिये तथा उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया। पं. तनसुखलाल जी काला जी ने अत्यंत प्रभावी ढंग से समस्या को इन नेताओं के सामने रखने से शीघ्र ही कदम उठाये गये।

लगभग इसी तरह मुंबई उच्च्य न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री एम.सी.छागला और न्यायमूर्ति गजेंद्र गडकर जी ने महत्वपूर्ण निकाल दिया कि जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है। वह हिंदू नहीं है (जबरदस्ती कुण्याचाही मंदिरादि कुणाश प्रवेश देता येजार नाही)- जबरदस्ती हिंसा को मंदिर प्रवेश नहीं करना चाहिये।

इस घोषणा से दिगंबर जैन समाज में प्रसन्नता की लहर फैल गई और १६ अगस्त १९५१ को आचार्य शांतिसागर जी महाराज ने अन्न ग्रहण किया। आचार्य शांतिसागर जी महाराज की प्रेरणा से उस समय पं. तनसुखलाल जी काला ने जो कदम उठाया उससे धर्म और संस्कृति की रक्षा हुई है। पं. तनसुखलाल जी काला अत्यंत धार्मिक, मित्रभाषी तथा विद्वान थे। विद्वत्ता उनकी मधुर भाषा में झलकती थी।

पं. तनसुखलाल जी काला धर्म, संस्कृति और आगम के रक्षक थे। २८ अक्टूबर सन् १९८४ को उनका देहावसान हुआ।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

'महासभा भविष्य में भी धर्म की रक्षा एवं प्रसार का कार्य निरन्तर करती रहे जैसे यह अब तक करती आई है। धर्म के विरुद्ध किसी कार्य में वह प्रवृत्त न हो, बस यही मेरा संदेश है।'

- आचार्य शांति सागर महाराज

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Shanti Roadways

AG-66, Sanjay Gandhi Transport Nagar
New Delhi - 110 042
Phone : 78926001, 7892602 (O),
2517585, 2522946 (R)

U.P. Border

A/9, A/10, Rawal Pindi Garden
Chikamberpur, Ghaziabad
Ph. : 91-628346

Head Office

5, Nawab Lane Calcutta
Ph. : 2392474, 2395535 (O), 4735848 (R)

BRANCHES & ASSOCIATES

AHMEDABAD -	✆ : 5328221/22 (O)
AMRITSAR -	✆ : 540204 (O), 275806 (R)
BALOTRA -	✆ : 20350 (O)
BANGLORE -	✆ : 2223981 (O)
BAREILLY -	✆ : 479892 (O), 423198, 425797 (R)
BEAWAR -	✆ : 20118 (O)
BILWARA -	✆ : 26074, 22568 (O)
BHIWANDI -	✆ : 23840 (O)
FARIDABAD -	✆ : 292937 (O), 280792 (R)
GORAKHPUR -	✆ : 333772 (O), 336318 (R)
GWALIOR -	✆ : 321285, 328385 (O)
HYDERABAD -	✆ : 525237 (O)
JAIPUR -	✆ : 669306, 669604 (O)
JALANDHAR -	✆ : 255128 (O)
JODHPUR -	✆ : 33417 (O)
KANPUR -	✆ : 270678 (O), 312008 (R)
KOTA -	✆ : 424969 (O)
LUDHIANA -	✆ : 862537
MADRAS -	✆ : 8548752, 8548836 (O)
MUMBAI -	✆ : 3717015, 3759834 (O), 3861061 (R)
MEERUT -	✆ : 510296 (O)
NAGAUR -	✆ : 2743, 2796 (O), 2664 (R)
PALI -	✆ : 2239 (O)
PANIPAT-	✆ : 20845 (O)
PHAJWARA -	✆ : 60327 (O)
PILKHUWA -	✆ : 322122 (O)

Daily parcel service from all over Punjab, Haryana and Delhi to Calcutta and back.

राष्ट्र गौरव सर सेठ भागचंद सोनी

- कमल कुमार जैन, अजमेर

सिर पर आकर्षक हल्के गुलाबी रंग की पगड़ी बांधे, लम्बा कोट और धोती पहने तथा अपने लम्बे कद पुष्ट परन्तु सुन्दर कसरती शरीर और सुदर्शन हंसमुख प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी सर सेठ भागचंद जी सोनी अब नहीं रहे, यह सुनकर मुझे यकायक विश्वास नहीं हुआ।

सर सेठ सोनी का जन्म ११ नवम्बर सन् १९०४ को भारत के उस प्रसिद्ध घराने में हुआ जिसने अपनी सेवाओं द्वारा लगभग दो शताब्दी तक भारतीय जनता का उपकार किया।

आपके पिता श्री राय बहादुर सेठ टीकमचंद सोनी एवं माता श्रीमती रूपवती देवी थी। आपके बड़े पुत्र सर सेठ सा. थे एवं द्वितीय पुत्र दुलीचंद युवावस्था के प्रारंभ में दिवंगत हो गया था। स्वनामधन्य प्रतिभावान व्यक्तित्व के धनी सर सेट सोनी की शिक्षा अजमेर के गवर्नमेन्ट हाईस्कूल तोपदड़ा में हुई थी।

आपका प्रथम विवाह इन्दौर के सेठ हुकुमचंद कासलीवाल की सुपुत्री स्व. तारादेवी के साथ हुआ। आपसे एक पुत्र स्व. प्रभाचंद सोनी एवं एक पुत्री सौ. चांदराजबाई प्रभाकर हुई।

सर सेठ सोनी का दूसरा विवाह बुरहानपुर निवासी सेठ केशरीमल लुहाड़िया की सुपुत्री श्रीमती रत्नप्रभा देवी से हुआ। आपसे दो पुत्र हैं श्री निर्मल कुमारे सोनी एवं श्री सुशील चंद सोनी। एक कन्या श्रीमती राजनंदिनी है।

अपने पिता जी के सन् १९३४ में देहावसान के पश्चात् जीवन के तीन दशक समाप्त होने पर सर सेठ सा. जुहारमल गंभीरमल फर्म के उत्तराधिकारी हुए। रा.ब.सेठ मूलचंद नेमीचंद माईनिंग ने भारत में पन्ने की प्रथम खोज का श्रेय इसी फर्म को है।

अंग्रेजी शासन काल में आप बी.बी. एड. सी आई रेलवे के ट्रेजरार रहे और देशी रियासती रेलवे जोधपुर और उदयपुर राज्य के खजांची भी रहे। राज्य सरकार आप पर विश्वास रखती थी अतएव आप भरतपुर, धौलपुर, शाहपुरा स्टेट के ट्रेजरार भी रहे। सर सेठ सोनी ने ग्वालियर, जोधपुर, भरतपुर रेजीडेन्सी के खजांची पद पर भी कार्य किया।

आप १९३५ में अजमेर मेरवाड़ा प्रदेश की ओर से केन्द्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के मेम्बर चुने गये और आपने इस असेम्बली में ७ मार्च १९३९ को भाषण देते हुए अजमेर में हवाई अड्डा बनाये जाने की प्रथम बार आपने मांग रखी। सन् १९३७-४० में अजमेर जिले में अकाल पड़ा था। इस क्षेत्र के लोकसभा के प्रतिनिधि होने के नाते आपने सरकार पर अपने प्रभाव का पूरा उपयोग किया। सभी पीड़ित लोगों को काम दिलाया और उस काल में जब हर वस्तु सस्ती थी आपने सरकार से ३१ लाख ७६ हजार रुपये स्वीकृत कराये। यह तो सरकार से मिलने वाली सहायता थी। आपने जनता को प्रेरणा देकर जन सहयोग से सहायता के अनेक प्रयत्न कराये और किये तथा अपना भी सक्रिय सहयोग दिया।

सेठ साहब की यह राजनैतिक चातुर्यता थी कि उनसे अंग्रेज भी मिलते थे और अंग्रेजों को भारत से भगाने वाले देश भक्त भी मिलते थे। उनके परम मित्रों में स्व. हरिभाऊ उपाध्याय, राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास, प्रोफेसर गोकुल लाल असावा, स्वतंत्रता के प्रमुख योद्धा अर्जुनलाल सेठी, बाबा नृसिंह दास चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय आदि थे। वे इनको भी हर प्रकार से सहायता देकर अपने साथ रखते थे। अनेक बार उन्होंने अंग्रेजों से अपनी मित्रता को भी दांव पर लगाकर स्वतंत्रता सेनानियों की सहायता की।

पंडित जवाहरलाल नेहरू को उस समय आपने अपने यहां ठहराया जब कांग्रेस का अंग्रेजों से संघर्ष चरम सीमा पर था।

वे व्यवसाय और देश प्रेम को दो अलग अलग क्षेत्र मानते थे, एक दूसरे को बाधक नहीं बनने देते थे। उन्होंने देश भक्ति के हर उपयुक्त अवसर पर निर्भीक होकर साहस के साथ परिचय दिया।

अंग्रेजों के सम्मुख भी सर सेठ सोनी ने दबंग और स्वाभिमानी होकर अपने व्यक्तित्व की ऐसी छाप छोड़ रखी थी कि वे कभी उनसे कुछ कहने का साहस ही नहीं कर सके। सर सेठ सोनी सबसे पहले अपने आपको एक भारतीय मानते थे और उसी अनुरूप कार्य करते थे। जनता के हित को सर्वोपरि समझ कर उचित बात के लिये वे अंग्रेज सरकार तथा अधिकारियों से भी उलझने में नहीं हिचकिचाते थे।

क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आपका लगन और उत्साह प्रशंसनीय रहा। आप फुटबाल और क्रिकेट एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य रहे तथा राजपूताना ओलम्पिक एसोसिएशन के भी कई वर्षों तक सभापति रहे। संगीत में भी आपको बहुत रूचि थी।

वक्तृत्व कला में आपका कोई सानी नहीं था। आप बहुत ही प्रभावक तथा आकर्षक शैली के द्वारा सुनने वाले को मंत्रमुग्ध कर देते थे। साहित्य, फोटोग्राफी, उद्यानप्रियता व हिन्दी, उर्दू की कविताओं में आपकी विशेष रूचि थी। किसी भी विषय का सूक्ष्म विश्लेषण करना और किसी निष्कर्ष पर पहुंचना ही आपकी ज्ञान गरिमा का लक्ष्य था। आपने अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में टीकमचंद जैन हाईस्कूल की स्थापना की तथा वर्षों तक संचालन किया। श्री भाग्य मातेश्वरी दि.जैन कन्या पाठशाला अब भी आपके संरक्षण में आपके द्वारा संचालित है।

सेठ साहब राजस्थान ज्वैलर्स एसोसिएशन, राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स के वर्षों तक अध्यक्ष रहे तथा श्री जैन औषधालय, भारतवर्षीय दिग. जैन महासभा एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बई के संरक्षक आदि पदों पर भी कार्य किया।

सर सेठ सोनी जैन समाज की ही नहीं अपितु देश की अनुपम निधि थे। उनका भव्य विशाल व्यक्तित्व सघन वट वृक्ष की भांति चिरंतन सद्भाव तथा सोहार्द को प्रस्फुटित करने वाला था। ऐसे महामानव की स्मृति को चिरस्थाई करने के लिए अजमेर प्रशासन को उनके नाम कालोनी आदि बनाये जाने आदि की घोषणा करनी चाहिए। मैं मानवों में महामानव को श्रद्धावनत् श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा कामना करता हूं कि उनकी आत्मा सद्गति को प्राप्त हो।

एकान्तवाद के ज्वार को रोकने में महासभा का अवदान

- डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, बड़ौत

जैन धर्म-दर्शन में एकान्तवाद को बिलकुल भी स्थान नहीं है। इस धर्म-दर्शन का आधार अनेकान्तवाद है। अनेकान्तवाद सिद्धान्त के द्वारा ही जैनदर्शन सदैव गौरव को प्राप्त रहा है। समय समय पर कुछ ऐकान्तिक विचारधाराएं उत्पन्न होती रहीं हैं तो अनेकान्तवाद के माध्यम से उन्हें निर्मूल कर दिया जाता रहा है। बीसवीं शती में भी श्री कानजी भाई ने अपनी ऐकान्तिक विचारधारा को जैन धर्म और समाज में स्थापित करना चाही। प्रारंभ में भोली समाज को उनकी कृत्रिम अध्यात्म शैली रुचिकर प्रतीत हुई किन्तु प्रबुद्ध वर्ग को समझने में देर नहीं लगी, उन्होंने जान लिया कि यह तो हमें क्रिया धर्म से हटाकर मात्र शब्दाडम्बर में ही भ्रमित करने की धारा है अतः दिगम्बर वीतरागी निर्ग्रन्थ मुनिराजों एवं आगम शास्त्रों के ज्ञाता विद्वानों ने कृत्रिम अध्यात्मवादी रीति का प्रबल विरोध करना प्रारंभ किया।

इनके साथ ही कुछ सामाजिक संस्थाओं और कुछ विद्वत् संस्थाओं ने भी देव-शास्त्र-गुरु का अवर्णवाद करने वाले ऐकान्तिक विचारकों के विचारों से आसहमति प्रकट करते हुए उनका विरोध करना शुरू किया। सामाजिक संस्थाओं में प्राचीनतम संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा की अग्रणी भूमिका एकान्तवादी विचारधारा के उन्मूलन में रही। यह मूलतः आर्षमार्गी संस्था है। देव-शास्त्र-गुरू में विशेष भक्ति रखने वाली होने से अपनी पुरातन विरासत को न भुलाकर मूलाम्नाय के संरक्षण-सुरक्षण में क्रियाशील हुई। इसकी क्रियाशीलता का विशेष प्रभाव हुआ क्योंकि सामाजिक क्षेत्र में जितनी भी संस्थाएं कार्य कर रहीं हैं उनमें भारतवर्षीय दि.जैन महासभा प्रमुख है। इस संस्था के द्वारा किया गया कार्य महत्व रखता है क्योंकि जैन समाज का बहुभाग इससे जुड़ा हुआ है।

महासभा को धर्मसभा कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। धर्मसभा में नैतिकता और धार्मिकता को ही स्वीकार किया जाता है, वही महासभा में भी है। महासभा ने धर्म विरूद्ध कार्यों को कभी नहीं स्वीकारा है। जब विधवा विवाह और विजातीय विवाह जैसी सामाजिक बुराईयां बढ़ीं तो महासभा ने डटकर विरोध किया। सज्जातीयत्व को बढ़ावा दिया। धर्म विरूद्ध कार्य को रोकने में महासभा ने सतत प्रयत्न किये। सुधार के नाम पर किए गये मिथ्या एवं अनार्ष प्रचार को रोका। मुनिनिन्दकों के मुंह बंद किये। मुनिधर्म की महती प्रभावना की।

एकान्तमार्ग को सयुक्तिक निरसन हेतु जैनागम के अभ्यासी विद्वानों को संरक्षण, पोषण, पुरस्करण करके महासभा ने धर्ममार्ग की विशेष प्रभावना की।

पुण्योदय से जिनके पास प्रतिष्ठा एवं सम्पत्ति है, उन्हें धर्म की हानि के समय चुप नहीं बैठना चाहिए जैसा कि कहा गया है-

धर्म निर्मूल विध्वंसं सहन्ते न प्रभावकाः।
बिना सावद्यलेशेन न स्याद्धर्म प्रभावना।।

उक्त नीति का अनुपालन करने वाली महासभा ने श्री कानजी भाई और उनके समर्थकों द्वारा फैलाये जा रहे एकान्तवाद को उखाड़ फेंकने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। लोगों के द्वारा कहा गया कि आपस में फूट पड़ेगी, रिश्तेदारियां टूटेंगी, समाज में मनोमालिन्य बढ़ेगा अतः महासभा को किसी का विरोध नहीं करना चाहिए। महासभा के कार्यकर्ताओं में धार्मिक श्रद्धा के साथ धर्म की जानकारी भी है अतएव उन्होंने आचार्य शुभचन्द्र के निम्न सूत्रवाक्य का अक्षरशः पालन किया-

धर्मनाशे क्रिया ध्वंसे सुसिद्धान्त विप्लवे।
अपृष्टैरपि वक्तव्याः सुसिद्धान्त प्रकाशने।।

जब धर्म का नाश हो, क्रिया का विध्वंस हो, सिद्धान्त को नष्ट किया जा रहा हो तो बिना बुलाये ही बोलना चाहिए और सिद्धान्त का प्रकाशन करना चाहिए। इसीलिए जब जैन धर्म के अन्दर ही अज्ञान और एकान्त धर्म की चादर विस्तृत होने लगी। आचारण विहीन लोगों के द्वारा दिन प्रतिदिन देव-शास्त्र-गुरु का अवर्णवाद किया जाने लगा। सस्ते साहित्य और चमक दमक के कार्यक्रमों के द्वारा समाज को लुभाया जाने लगा। समाज को मुनिराजों के पास जाने से रोका जाने लगा। पूजा पाठ का निषेध किया जाने लगा। पुण्य की निन्दा की जाने लगी। पुण्य-पाप को समान बताकर आगम का अपलाप किया जाने लगा। अध्यात्म ग्रन्थों को पठन-पाठन का विषय बनाते हुए अध्यात्म की मर्यादा का अतिक्रमण किया जाने लगा। दिगम्बर मुनियों के प्रति निन्दक शब्दों का व्यवहार किया जाने लगा, तब महासभा के कार्यकर्ताओं ने तन-मन-धन से समर्पित होकर उक्त आगम विरोधी एकान्ती क्रियाओं को जड़मूल से उखाड़ने का संकल्प लिया। श्रेष्ठी श्री निर्मलकुमार सेठी, श्री उम्मेदमल पाण्ड्या, श्री पूनमचंद्र गंगवाल, श्री आर.के.जैन आदि समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने दिगम्बर मुनिराजों एवं विद्वानों से सत्परामर्श ग्रहण कर भगवान् महावीर के २५००वें निर्वाणोत्सव वर्ष में समाज के मध्य विशेष जागृति पैदा की और मिथ्यामार्ग की ओर बढ़ती हुई प्रवृत्ति को अंकुश लगाया।

दिगम्बर आचार्यों/मुनिराजों/आर्यिकाओं/त्यागी वर्ग ने भी भारतवर्षीय दि.जैन महासभा को समय समय पर एकान्त के ज्वार को रोकने के आदेश प्रदान किए। चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज, आचार्यवर्य श्री धर्मसागर महाराज, आचार्य श्री देशभूषण महाराज, आचार्य श्री महावीरकीर्ति महाराज, आचार्य श्री विद्यानंद महाराज आदि के आदेशों का अक्षरशः अनुपालन कर समाज को संगठित किया और समाज से आग्रहपूर्वक अपनी प्राचीन परम्परा से जुड़े रहने का अनुरोध किया, जिसमें महासभा को पूर्ण सफलता मिली। महासभा ने अधर्म परिहार और धर्मरक्षा के लक्ष्य की सिद्धि की। इसी का परिणाम है कि वर्तमान समय में निग्रन्थ दिगम्बर मुनिराजों के द्वारा धर्म की महती प्रभावना हो रही है।

समाज के मध्य देव-शास्त्र-गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा भक्ति है। पूजा-पाठ के द्वारा धर्म की प्रभावना हो रही है। जगह जगह पंचकल्याणक महोत्सव, विशाल विधानों के आयोजन भी जिनधर्म यश पताका फहराने में योगदान कर रहे हैं। श्रावक श्रावकधर्म का भलीभांति पालन कर रहे हैं। श्रावकाचारों, पुराणों का स्वाध्याय अध्यात्मग्रन्थों के समान ही हो रहा है। मुनिधर्म और श्रावकधर्म दोनों अपनी अपनी मर्यादा की अपेक्षा चल रहे हैं। त्यागधर्म का महत्व, दान का महत्व, वैराग्य का महत्व समझा जा रहा है।

शेष पेज ६७ पर. ...

- प्रो. डॉ. भागचन्द्र 'भास्कर', नागपुर

महासभा आज अपना शताब्दी समारोह मनाने जा रही है। यह एक ऐसा स्वर्णिम अवसर है जब हम उसके द्वारा सामाजिक अभ्युत्थान के क्षेत्र में किये गये योगदान का लेखा जोखा कर उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं।

महासभा का मूल उद्देश्य जैन परम्परा के मूल रूप को सुरक्षित और संवर्धित करना रहा है। उसने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में बहुत सारे पड़ाव बनाये, पगडंडियां बनाईं। उन सबने मिलकर एक सुन्दर महापथ का निर्माण किया। उस निर्माण ने न जाने कितने आहूतियां लीं, बलिदान लिये, समर्पण लिये। तब कहीं उस धर्म संरक्षिणी सभा का रूप महासभा के रूप में हमारे सामने आ सका।

महासभा ने उस समय अपना काम शुरू किया जब आर्यसमाजी आन्दोलन अपनी तेज गति पर था। शास्त्रार्थ के माध्यम से वह अपना अस्तित्व पुख्ता कर रहा था। महासभा ने उसकी अहंकार भरी ललकार को स्वीकारा और एकान्तवाद के ज्वार को रोकने के लिए कमर कस ली। खूब शास्त्रार्थ हुए। किये और अनेकान्तवाद के सहारे उन पर विजय भी प्राप्त की।

यहां हम महासभा के समूचे योगदान की चर्चा नहीं करेंगे। पर ऐसे योगदान की ओर संकेत अवश्य करना चाहेंगे जिसका सम्बन्ध शैक्षणिक क्षेत्र से रहा हो।

कुशल उद्योगपति और कर्मठ समाजसेवी श्री निर्मलकुमार सेठी ने जबसे महासभा का कार्यभार अध्यक्ष के रूप में संभाला है, उसका रूप-स्वरूप ही बदल गया। सेठी जी का उत्साह, उनकी कार्यक्षमता और सबको मिलाकर चलने की प्रवृत्ति ने महासभा की काया-पलट कर दी।

सन् १९८२ के आसपास की बात है। उन्होंने मुझे शिक्षानीति का निर्देशक बना दिया और इच्छा व्यक्त की कि वर्तमान शिक्षा की विविध गतिविधियों का आकलन कर महासभा की ऐसी शिक्षा नीति तैयार की जाये जिससे समाज का हर वर्ग लाभान्वित हो सके।

देश के कोने-कोने में जाकर मैंने कुछ प्रमुख जैनेतर शैक्षणिक संस्थानों का सर्वेक्षण किया और छह माह के ही भीतर एक रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी। सेठी जी ने उसे स्वीकार भी कर लिया जैन गजट में उसका प्रकाशन भी हुआ और विज्ञ पाठकों से उसकी प्रतिक्रिया भी मांगी गई थी। आज लगभग पन्द्रह वर्ष हो गये। उसका कितना उपयोग हो सका, कहा नहीं जा सकता। आज वह रिपोर्ट हमारे सामने है भी नहीं। होती तो उसके पुनः प्रकाशन के लिए आग्रह भी करता।

जहां तक मुझे ध्यान आ रहा है, जैन धर्म इतिहास, संस्कृति, दर्शन, साहित्य और पुरातत्त्व के संदर्भ में एक अच्छा सा सिलेबस तैयार किया गया था और समाज के सभी परीक्षालयों तथा विद्यालयों को समान्यात्मता के आधार पर एक करने के सूत्र प्रस्तुत किय गये थे। दुर्भाग्य से उस पर कोई विशेष चिन्तन नहीं हो सका। पर उसके व्यावहारिक रूप ने सेठी जी को प्रभावित अवश्य किया। फलतः परीक्षालय, प्रकाशन, विद्वत्समुदाय, श्रावक और साधु वर्ग में जीवन्तता लाने के लिये सेठी जी ने जी-तोड़ प्रयत्न किया और उसमें वे काफी सफल भी हुए।

महासभा परीक्षालय एक लम्बे समय से कार्य कर रहा है। कतिपय क्षेत्रों में वह आज भी लोकप्रिय बना हुआ है। बम्बई परीक्षालय को तो लोग अब भूल से गये हैं। पर महासभा अपना विस्तार करती जा रही है। इसके पीछे श्रद्धेय पं. नाथूराम जी शास्त्री तथा सेठी जी की सक्रियता काम कर रही है।

एकान्तवाद के निरसन और साधु संस्था के स्थितीकरण में भी महासभा ने अभूतपूर्व कार्य किया है। अनेकान्तवादी जैनधर्म और दर्शन जिस एकान्तवाद की ओर बड़ी तेजी से बढ़ रहा था उस पर नकेल लगाने का श्रेय महासभा को ही जाता है। उसी के प्रभाव से आज समूचा विद्वत् समुदाय महासभा से जुड़ा हुआ है। एकान्तवादियों के पास ऐसा कोई समुदाय नहीं है और उस ओर कोई जाने का साहस भी नहीं कर पाता।

शैक्षणिक गतिविधियों की परिधि में प्रकाशन भी आता है। महासभा ने इस क्षेत्र को भी समृद्ध किया है। उसने बालादर्श निकालकर बालकों के संस्कारों को सुदृढ़ किया, जैन महिलादर्श से महिला वर्ग को समुन्नत किया और जैन गजट से समाज के अन्य सभी वर्गों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। साधु वर्ग के लिए भी उसने अनेक बार सोचने के लिए बाध्य कर दिया। बीसों पुस्तकों को प्रकाशित कर ज्ञान के क्षेत्र को पल्लवित करने का भी उसने जो बीड़ा उठाया वह निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इसके अतिरिक्त विदेशों में जैनधर्म का प्रचार, प्राचीन जैन तीर्थों का जीर्णोद्धार, तीर्थों की सुरक्षा, आदि जैसे क्षेत्रों में भी महासभा ने अभूतपूर्व योगदान दिया है। इसके लिए सेठी जी और उनकी सारी टीम के प्रति समूचा जैन समाज सदैव कृतज्ञ रहेगा।

- न्यू एक्सटेंशन एरिया
सदर, नागपुर- ४४०००१ फोन नं.- ५४७७२६

शेष पृष्ठ ६६ का. . .

अब स्वाध्यायी चारों अनुयोगों को समान रूप से समादर प्रदान करते हैं। पुण्य के महत्व को समझते हुए पुण्यकार्यों में लोगों की गहरी अभिरुचि बढ़ी है अतः निस्संदेह कहा जा सकता है कि एकान्तियों की मिथ्या मान्यताओं को रोकने में महासभा पूर्ण रूप से सफल रही है।

एकान्तवाद निरसन में महासभा और शास्त्रि-परिषद् का विशेष योगदान है। इन दोनों संस्थाओं ने मिलकर भी अनेक कार्य किये हैं उनमें एकान्तवाद उन्मूलन का कार्य विशेष है। महासभा तीर्थ संवर्द्धन सामाजिक अभ्युत्थान, सामाजिक एकता आदि कार्यों को भी प्रमुखता से कर रही है। इन सभी कार्यों में एकान्तवाद को उन्मूलित कर अनेकान्तवाद की प्रभावना विशेष महत्वपूर्ण है।

> सत्पथ पर चलने वाला पथिक तन-मन-धन की ओर मुड़कर नहीं देखता

शेष पृष्ठ ६२ का . .

बम्बई, स्व. पं. धन्नालाल जी कासलीवाल बम्बई, स्व. पं. तनसुखलाल बम्बई, स्व. पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री सोलापुर, स्व. पं. मोतीलाल कोठारी, फलटण, स्व. पं. जिनदास फडकुले सोलापुर, स्व. श्री गंगाराम आरावाडे, स्व. सेठ श्री चंदुलाल सर्राफ बारामती, पं. तेजपाल काला नांदगांव, स्व. सेठ श्री निरंजनलाल जी जैन बम्बई, स्व. सेठ श्री चंदुलाल कस्तूरचंद, पूज्य भट्टारक श्री जिनसेन स्वामी नान्दनी, पूज्य भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन स्वामी कोल्हापुर आदि ने अपना स्मरणीय योगदान प्रदान किया है।

वर्तमान में भी महासभा तथा उनके कार्यों को गतिमान बनाये रखने में भी महासभा का उल्लेखनीय योगदान है। वर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के नेतृत्व में सभी प्रांतों में महासभा की शाखाओं को गतिमान करने के संकल्प को क्रियान्वित करने में भी महाराष्ट्र ने सराहनीय अग्रसर भूमिका अदा की है। १९९२ में महासभा के महाराष्ट्र शाखा की पुनर्गठित कर उसे पुनर्जीवित किया। धर्मप्रचार व समाज जागरण में स्मरणीय कार्य किया। सरदार श्री चंदूलाल हिराचंद के अध्यक्ष काल में संपूर्ण महाराष्ट्र में महासभा का भ्रमण हुआ। ठोलिया के नेतृत्व में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेमिगिरि जिन्तूर के जीर्णोद्धार में योगदान हुआ। युवारत्न स्व. श्री प्रेमचंद (श्री पी.यू. जैन ठोलिया) के नेतृत्व में मुक्तागिरि, मांगीतुंगी, जटवाड़ा आदि तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार को पुष्ट किया। अनेकों मंदिरों में स्वाध्याय हेतु शास्त्र व अलमारियां भेंट की। वर्तमान में श्री आर.के.जैन सभापति के नेतृत्व में महाराष्ट्र महासभा धर्म संरक्षण के कार्य को कर रहा है। वह सब आपके सामने है।

कचनेर पैठण जिन्तूर आदि क्षेत्रों का विकास किया गया। महासभा का १९२३ का अधिवेशन बम्बई, १९३४ का अधिवेशन सोनपुर, १९५२ का अधिवेशन फलटण में, १९८६ का अधिवेशन फलटण में तथा १९९२ का अधिवेशन मांगीतुंगी में ऐतिहासिक ढंग से सम्पन्न हुआ।

जैन गजट, जैन महिलादर्श, जैन बालादर्श पत्रिका के महाराष्ट्र भर में सदस्य बनाये गये हैं। महाराष्ट्र में नागपुर संभाग में विदर्भ संभागीय महासभा का गठन किया गया और यह कमेटी भी महासभा के उन्नयन में सक्रिय है।

इस तरह से महासभा के उन्नयन में महाराष्ट्र सदा ही अग्रणी भूमिका निभाता आया है। महाराष्ट्र की धर्मनिष्ठ समाज का सहयोग ही महासभा का संबल है। वह सदैव मिलता आया है व भविष्य में भी मिलेगा।

आयें शताब्दी महोत्सव के मांगलिक प्रसंग पर हम पुनः संकल्प कर अधिक दृढ़ता व एकता के साथ धर्म संरक्षण व समाज जागरण का कार्य करने का प्रण करें।

महासभा शताब्दी समारोह समापन पर समारोह महामंत्री प्राचार्य

श्री नरेन्द्रप्रकाश के प्रति हृदयोद्गार

चाणक्य आज भी शोभित है

- शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी

यदि निर्मल सेठी चन्द्रगुप्त सक्रिय नरेन्द्र सम्बोधित है।
उनका प्रकाश प्राचार्यरूप चाणक्य आज भी शोभित है। (१) चाण०
प्राची के वर प्राचीन परम प्राचार्य चणक-निस्पृह सुत ने।
परिग्रह की चकाचौंक से हट दीपक प्रकाश अपनाया था।
निज स्वार्थ पूर्ति से विरक्त हो नृप-राष्ट्र-नीति को मान दिया।
ऐसा ही सरल सादगी का उपमान आज भी शोभित है। (२) चाण०
वह नहीं नरेन्द्र किन्तु उनके सम्मान रूप पथ दर्शक हैं।
यदि सेठी हैं अध्यक्ष वृषभ वाहन के मार्ग निदेशक हैं।
है महासभा गौरवशाली जिनमार्ग प्राण संचेतन में।
निर्ग्रन्थ धर्म के प्राण तत्व अर्जित चेतनमय शोभित हैं। (३) चाण०
निर्मल प्रतीक कर्तव्यों के प्राचार्य दिशा के बोधक हैं।
शास्त्री परिषद का धुरा धरे मूर्तिक सम्पादन जीवित है।।
जोड़ी का जोड़ मनोरम है हम सब भी गौरववान हुए।
वाहक संवादक 'जैन गजट' के गुण संचारक शोभित हैं। (४) चाणक्य-
लेखन वाणी से थके नहीं ज्ञानाराधन से हटे नहीं।
संक्लेशों से अपमानों से घबराकर तम से भगे नहीं।
इनके गुण गौरव वर्णन से संस्थाओं का गौरव होता।
शत वर्षों का चिर महासभा-इतिहास आज भी शोभित है। (५) चाण०
अचरज है सुहाग नगरी में कुटिया का सादा जीवन है।
यह नहीं कल्पना कवि मन की यह तो यथार्थ का दर्पण है।
इसमें प्रतिविम्बित होती है प्रतिमानों की गौरव गाथा।
निर्ग्रन्थ धर्म की शुभ्र का ध्वजा का मान स्वयं में शोभित है।।
चाणक्य आज भी शोभित है।।

साधक की साधना आस्था के तारों पर अंगुलियों की चलती है

एक विनम्र प्रणाम मेरा भी

संस्कृत भाषा के कवियों की 'जातेति कन्या महती हि चिन्ता' तथा 'कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टम्' सरीखी उक्तियां इस बात की सूचक हैं कि यहां कन्या को पुत्र की तुलना में हमेशा हेय दृष्टि से देखा गया है। पुत्र-जन्म का तो उत्सव मनाया जाता है किन्तु कन्या का जन्म होते ही घर में चिन्ता व्याप्त हो जाती है। इस समाज में किसी कन्या का पिता होना कष्ट की बात समझी जाती है। यह दृष्टि संकुचित तो है ही, मनुष्य के स्वार्थपूर्ण सोच पर भी आधारित है। इसका ही एक परिणाम यह देखने को मिलता रहा कि सदियों तक इस देश में कन्याओं की उपेक्षा होती रही। शिक्षा और संस्कारों के द्वारा उनके सर्वांगीण विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। उनका जीवन झाडू-पोंछा और चूल्हा-चक्की के घेरे में सिमट कर रह गया। कन्याओं की इस दयनीय दशा से द्रवित होकर ही राष्ट्रकवि को यह लिखना पड़ा:-

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
है आंचल में दूध और आंखों में पानी'

इतिहास साक्षी है कि इस बीच कुछ ऐसी तेजस्विनी कन्यायें जन्मीं, जिन्हें हीन दशा में रहना और जीना स्वीकार नहीं हुआ। उन्होंने स्वयं के पुरुषार्थ से अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए ऐसा प्रशस्त श्रम और स्वाध्याय किया कि स्वार्थी मानव समाज को उनके सामने अपना सिर झुकाना पड़ा। सुदूर अतीत की बात तो जानें दें, हमारी इसी सदी में महिला-रत्न मगनबाई, चन्दाबाई, कृष्णाबाई और कमलाबाई के उदाहरण हमारे सामने हैं। इन्होंने स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांति ही उपस्थित कर दी। ये ऐसी अभागिन नारियां थीं, जो जवानी की चौखट पर पांव रखते ही विधवा हो गई थीं लेकिन इस मनहूस घड़ी ने उनके भीतर एक ऐसी जिजीविषा और टीस उत्पन्न कर दी कि उन्होंने वैधव्य को भी वरदान में बदलकर संसार को आश्चर्यचकित कर दिया। दुःख की खराद पर चढ़कर इनका जीवन अनमोल बन गया। इनमें से मातुश्री कमलाबाई तो आज भी अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में ज्ञान का अलख जगा रही हैं। पद्मश्री सुमतिबेन शहा (सोलापुर) के शैक्षिक अवदान को भी कभी भुलाया नहीं जा सकता।

यही नहीं, कुछ नारियों ने तो अपनी निर्मल साधना, उत्कट तपस्या और गम्भीर अध्ययन-अध्यवसाय से समाज में सर्वोच्च स्थान तक प्राप्त कर लिया। पूज्य आर्यिका ज्ञानमती, विशुद्धमती (तिलोयपण्णत्ति की टीकाकार), सुपार्श्वमती, जिनमती, आदिमती आदि कुछ ऐसे ही नाम हैं। इसी श्रृंखला में अत्यन्त आदर के साथ स्मरण किया जाता है पूज्य गणिनी आर्यिका विशुद्धमती (लश्कर वाली) माताजी का भी नाम। आज से पचास वर्ष पूर्व लश्कर (ग्वालियर) के एक धर्मप्रेमी परिवार में इनका जन्म हुआ था। वे बाल ब्रह्मचारिणी हैं। उन्होंने मात्र चार वर्ष की उम्र से ही अपनी त्यागोन्मुखी प्रवृत्ति का परिचय देना शुरू कर दिया। चार वर्ष की छोटी-सी उम्र में सभी कन्दमूलों के त्याग का नियम, चौदह वर्ष की उम्र में पूर्ण ब्रह्मचर्य, सोलह वर्ष की उम्र में सप्तम प्रतिमा के व्रत तथा बीस वर्ष की आयु में जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यह जीव अपने पिछले जन्मों से ही पवित्र संस्कार लेकर आया है।

आपके ज्ञान का क्षयोपशम उत्कृष्ट है। हमें अपने नगर में उनके पुनीत चरणों में बैठकर चार महीनों तक उनके प्रवचनामृत का पान करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। चारों अनुयोगों में करणानुयोग सबसे अधिक कठिन माना जाता है। पुरुषों की भी उसमें गहरी पैठ नहीं हो पाती किन्तु आप उस पर न केवल साधिकार बोलती ही हैं बल्कि प्रबुद्ध श्रोताओं की जिज्ञासाओं का बड़ा ही सटीक समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। आचार्य उमास्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्र पर आपके प्रवचन जन-जन का मन मोह लेते हैं। सूत्र-प्रवचन के समय श्रोताओं की तन्मयता प्रायः कम ही देखी जाती है किन्तु आपको वे सुधीपात शान्ति के साथ दत्तचित्त होकर सुनते हैं। आपकी वक्तृत्व-शैली में एक अनोखा सम्मोहन है। एक लेखिका के रूप में भी आपका अवदान प्रशंसनीय है।

आपका संघ एक बड़ा संघ है और उसमें केवल महिलायें ही हैं। हमारे अपने क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) को संयम और वैराग्य के सन्दर्भ में बुन्देलखण्ड की तरह उर्वरा नहीं माना जाता किन्तु इसे हम माताजी का विशेष प्रभाव ही मानेंगे कि उनके संघ में उत्तरप्रदेश और उसमें भी मुख्यतः आगरा मण्डल से शामिल होने वाली कन्याओं की संख्या सर्वाधिक है। हम तो इसे ऐसा मानते हैं, मानो माताजी ने ऊसर भूमि में लहलहाती खेती का चमत्कार प्रस्तुत कर दिया हो।

पूज्य माताजी धैर्य और साहस की सजीव प्रतिमा ही हैं। पिछले दिनों तीव्र अशुभ कर्मोदय से एक दुर्घटना में गंभीर रूप से आहत होकर भी उसके पीड़ादायक प्रभाव को उन्होंने अपनी गजब की शान्ति और समता में पगी सहनशीलता से जिस तरह निस्तेज और पराजित किया, वैसे उदाहरण कम ही देखने को मिलेंगे।

प्रातः स्मरणीया पूज्य माताजी ने अपनी स्वर्णिम साधना से अनगिनत भव्य जीवों का उद्धार किया है। भोगासक्त जीवों को उत्कृष्ट योग-मार्ग में प्रवृत्त करना एक महनीय कार्य है। गृहस्थावस्था के उनके माता-पिता पर भी उनके तपःपूत जीवन का प्रभाव पड़े बिना न रहा। पिता श्री गुलजारीलाल जी के क्षु. आदिसागर जी के रूप में और माता श्रीदेवी के आर्यिका शिवमती जी के रूप में जिन्होंने दर्शन किए हैं, उन्हें इस सत्य को स्वीकार करने में कोई हिचक हो ही नहीं सकती। 'आप तिरहिं, पर तारहीं' यही तो है उनका उदात्त व्यक्तित्व।

पूज्य माताजी के वैराग्योन्मुख, तप-त्याग की गरिमा से आलोकित एवं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी व्यक्तित्व को हम शतशः बार नमन करते हुए उनके स्वस्थ और सुदीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हैं, ताकि हम सरीखे संसारी जीवों को उनकी प्रशस्त चर्या और सदुपदेशों से सन्मार्ग पर चलते रहने की निरन्तर प्रेरणा मिलती रहे।

– नरेन्द्रप्रकाश जैन
अध्यक्ष– अ. भा. दि. जैन शास्त्रि परिषद

विनयांजलि

मालपुरा (राजस्थान) में आयोजित त्रिदिवसीय स्वर्ण जयन्ती अभिनन्दन समारोह (दि० १७, १८ एवं १९ जनवरी) के अवसर पर पूज्य विदुषी माताजी के प्रति समस्त महासभा-परिवार अपनी विनम्र विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए स्वयं में गौरव का अनुभव करता है।

– निर्मल कुमार सेठी (अध्यक्ष)
– [illegible] (महामंत्री)

पंचशील के परिपालन की अपील

महासभा एक मुनि भक्त संस्था है। उसका किसी से द्वेष नहीं किन्तु धर्म में मलिनता लाने वाले भी उसे स्वीकार नहीं। उसकी नीति है- आगम के अनुसार बुद्धि हो, बुद्धि के अनुसार आगम नहीं।

हम तो विनम्रतापूर्वक सभी सामाजिक संस्थाओं के कर्णधारों से इस पंचशील के परिपालन का पुरजोर आग्रह करते हैं:-

१. किसी भी संस्था के किसी भी कार्यकर्ता का अपमान नहीं करना चाहिये। दूसरों को सम्मान देकर ही कोई सम्मान का पात्र बनता है। वैचारिक सहिष्णुता ही नेतृत्व का सबसे बड़ा गुण है।

२. संस्थाओं के मुखपत्रों में एक-दूसरे की नीतिगत आलोचना बनाये रखना चाहिये। अपनी बात को आपेक्षात्मक आकार न देकर सुझाव के रूप में रखना अधिक श्रेयष्कर होता है।

३. जिनागम में सापेक्ष नयवाद को ही हितकर कहा गया है, इस सत्य और तथ्य को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिये। एकान्तवाद नयपक्ष का अजीर्ण है और अजीर्ण एक बीमारी है। बीमारी से बचना हमारा कर्तव्य है।

४. संस्थागत विवादों को सामाजिक संगठन और एकता में बाधक नहीं बनने देना चाहिये। हमें चर्चा इस तरह करनी चाहिये कि उससे विवाद मिटकर संवाद उत्पन्न हो। विवाद धर्म मूलक होने चाहिये, कषायमूलक नहीं।

५. तेरापंथ-बीसपंथ और सजातीय-अन्तर्जातीय विवाह सरीखे मुद्दों की माध्यस्थ वृत्ति से समाज में शांति बनी रहती है। क्यों हम आये दिन व्यर्थ की छेड़छाड़ करें? जहां जैसा प्रचलन हो, वहां वैसा चलन चलता रहे। हमें अपनी ओर से कोई जोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिये।

महासभा में कमियां नहीं हैं या उसके नेतृत्व से कभी कोई गलती नहीं होती ऐसा हम नहीं कहते। दूसरे लोग अपने को दूध का धुला माने तो मानें। हमारे विचार से तो भूलें सबसे हो सकती हैं। भूलना मनुष्य का स्वभाव जो है। सर्वथा निर्दोष इस संसार में कौन है? हर संस्था से चूकें होती हैं। कुछ लोग कषाय या द्वेष पूर्वक गलतियां करते हैं तो कुछ लोगों से अज्ञानवश भूलें जो हो जाती हैं। अज्ञान से होने वाली भूलों में हमें व्यक्ति के अभिप्राय को देखना चाहिये, उसकी भाषा को नहीं। कभी-कभी भाषा को लेकर भी बात का बतंगढ़ बन जाता है। यदि अभिप्राय में कोई खोट न हो तो कलह से बचना चाहिए। कषायजन्य भूलें करने वालों को यदि सम्यक आलोचना भी हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं किन्तु किसी संस्था को आरोपित करने से पहले हमें दस बार अवश्य सोचना चाहिये। एक बात यदि यह भी ध्यान में रहे कि आलोचना कहीं निन्दा की शक्ल तो नहीं धारण कर रही है, तब तो बहुत ही अच्छा हो। बस, यही हमारा नम्र निवेदन है।

(जैन गजट- सम्पादकीय २३ मार्च, ८९)
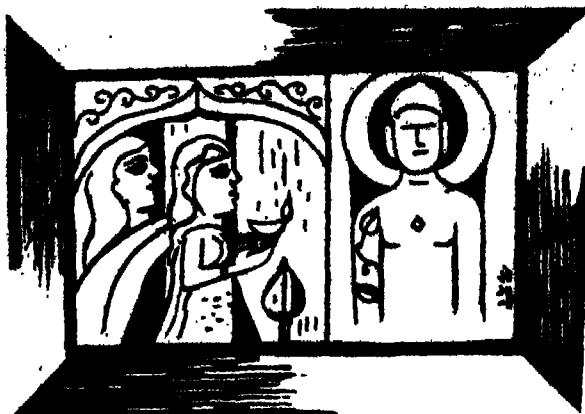
एक दीप जलाकर आये हैं

—हुकमचंद सोगानी

महावीर धाम की पावन रज लेकर आये हैं,
सत्य— अहिंसा की महिमा गाने आये हैं।
खुद जियो और जीने दो सबको कहाने आये हैं,
हिंसा— क्रोध की बातें तजकर प्रेम भरी स्वर लायें हैं।
महावीर के तीन शिखर पर सम्यक
दर्शन, ज्ञान, चरित्रा के झंडे लहराये हैं,
कोटि— कोटि मानव ने यहां से रत्नत्राय फल पाये हैं ।
अपरिग्रह का पथ अपनाकर संग्रह की उस तृष्णा को,
दर किनारे करने आयें हैं।
तृप्ति उसके द्वारा मिली है, मन—आंगन में कली खिली है,
नित्य नियम की पूजा से शुद्ध हृदय कर आये हैं ।
दिल जैसे एक मंदिर है,
अतिशय बिंब सजाकर इसमें हर्षित होकर आये हैं।
श्री महावीर जी की वेदी पर,
एक दीप जलाकर आये हैं।

कांटों से द्वेष रखकर फूल की सुगंध से वंचित रहना अज्ञान है तथा कांटों से बचाव कर सुरभि का सेवन करना विज्ञता की निशानी है, जो विरलों में होती है ।

महासभा अतुलनीय

- डा. सुशील जैन, मैनपुरी

जिस प्रकार दस दिशाओं के होते हुये भी प्राचीन दिशा का महत्व रत्नाकर के होने से अलग ही है और सूर्योदय पर सभी इस दिशा को नमन करते ही हैं, जिस प्रकार मनुष्य तो बहुत होते हैं पर तीर्थंकर एक ही होते हैं उसी प्रकार देश, समाज की संस्थायें तो बहुत हैं पर सभी में महासभा का अपना एक विशिष्ट स्थान है और आज समाज ने भी महासभा के महत्व को स्वीकार कर लिया है। वास्तव में महासभा ने इतना अधिक समाज व धर्म के लिये उपयोगी कार्य किया है कि अन्य संस्थाओं के मुकाबले महासभा अतुलनीय है।

मथुरा से प्रारंभ हुई महासभा अपने जीवन के सौ वर्ष पूरे कर चुकी है। प्रारंभ की विशेष सक्रियता तथा कुछ ढीलापन आने के बाद सन् ८१ से जब श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक के पावन सुअवसर पर माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने इसका अध्यक्ष पद संभाला तब से इन सत्रह वर्षों में तो महासभा निरंतर ही प्रगति पथ पर अग्रसर होती गयी है। श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने अपना तन मन धन तो महासभा के माध्यम से समाज के लिये अर्पण कर ही दिया है पर एक कुशल कैप्टेन के रूप में उन्होंने महासभा रूपी टीम को न केवल संगठित ही किया है अपितु उसे नवस्फूर्ति नव उत्साह नव संचार दिया है। पर्यूषण के दस उपवास करना, तीर्थों के लिये दो वर्ष तक अपना व्यवसाय छोड़ देना, जीवन के संयम तप त्याग दान जो उन्होंने जीवन में जो उतारा है उनका पुण्य महासभा को फलदायी हो रहा है। हाल ही में श्रावक चक्रवर्ती पद की उपाधि से उनको विभूषित किया गया जो सर्वथा उपयोगी ही है।

महासभा ने सदैव सम्यानुकूल कार्य किया है। दिन में जब एकांतवादी सोनगढ़ विचारधारा दिगम्बरत्व को नष्ट करने के षड्यंत्र में थी महासभा ने इसके लिये जो कार्य किया वह किसी से छिपा नहीं है। और उसी का प्रयास है कि आज एकान्तवाद समाप्त प्रायः है। हाल ही में तीर्थों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता जब महसूस की गयी तो महासभा ने इस ओर ध्यान दिया तथा तीर्थ संरक्षिणी महासभा के माध्यम से अल्पकाल में ही लगभग ४५ लाख रूपया एकत्रित करके तीर्थों के जीर्णोद्धार में लगा दिया और यह एक महती आवश्यकता है। वास्तव में अब नवीन मंदिरों का निर्माण बंद होकर प्राचीन तीर्थों की रक्षा व जीर्णोद्धार की महती आवश्यकता है और इस हेतु महासभा ने समाज का ध्यान आकृष्ट किया है। अपने शताब्दी वर्ष में विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं का सम्मान करके भी महासभा ने एक प्रशंसनीय कार्य किया है। शाकाहार के लिये महासभा का जीव दया विभाग सतत् प्रयत्नशील है।

महासभा का मुख पत्र जैन गजट आज सभी जैन पत्रों में सर्वोपरि है। परिवारों में अब जैन गजट की प्रतीक्षा होने लगी है तथा आते ही सभी लोग देखते हैं कि जैन गजट क्या नवीन समाचार लाया है। जहां अधिकांश पत्र पत्रिकायें किसी व्यक्ति विशेष के साथ बंधकर रह गयी हैं उनमें उनके अतिरिक्त प्रायः दूसरे के समाचार स्पष्ट प्रकाशित नहीं होते वहां जैन गजट में सभी संघों, सभी प्रकार के समाचारों को समानता के साथ प्रकाशित करके सभी के प्रति अपना समभाव तथा आस्था प्रगट की है उसी का यह सफल है कि आज जैन गजट का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। मेरी इच्छा है कि जैन गजट तो हर परिवार में नियम से पहुंचना ही चाहिये। पत्र के संपादक श्री पं. नरेन्द्र प्रकाश जी जैन इस हेतु विशेष बधाई के पात्र हैं।

महासभा के इस शताब्दी वर्ष के समापन के शुभअवसर पर मैं कामना करता हूं कि महासभा जयवन्त हो। आगे यह उत्तरोत्तर प्रगति करते हुये दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे तथा महासभा जैन समाज की ही पर्याय बन जावे। हम सभी का कर्तव्य है कि हम सभी तन मन धन से श्री सेठी जी के साथ जुड़कर उनको पूर्ण संबल प्रदान करें। महासभा का गौरवशाली अतीत रहा है, गौरवशाली वर्तमान है तथा सभी आचार्यों के आशीर्वाद से तथा हम सभी के समर्पण से उसका अत्यंत गौरवशाली भविष्य भी होगा ऐसा पूर्ण विश्वास है। आइये हम सब महासभा के इस महाअभियान में जुड़कर समाज के उत्थान में सहायक बनें।

महासभा शताब्दी समारोह पर अध्यक्ष श्री सेठी जी के प्रति

महासभा जीवन्त हुई है

- शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी

तन मन को विश्राम नहीं है, अन्य काम की चाह नहीं है।
महासभा ही आसमान है, बस अन्तर में ज्योति यही है। (१)
चीर कलेजे को यदि देखो देव-धर्म-गुरुवास यही है।
जीर्ण शीर्ण तीर्थों के प्रति जिस मानस में रसधार बही है। (२)
मुनि आर्या श्रावक गण के प्रति वात्सल्य का भाव सही है।
ऋषि अपवाद न सह सकता जो व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व वही है। (३)
अनेकान्त का जागृत प्रहरी जिनको तन की फिक्र नहीं है।
तीर्थ संघ सेवा का व्रत ले नर जीवन की राह यही है। (४)
महासभा का मूर्तिक चेतन जिसमें जड़ता नाम नहीं है।
मान और अपमान सखा जिसके उर में आसमान नहीं है। (५)
साधु प्रतिष्ठा के सम्मुख सब कुछ अर्पण की बात कही है।
जिस जीवन से जीवन लेकर महासभा जीवन्त हुई है। (६)
कानजी मत-निरसन व्रत जिसका वह मत जिन अनुकूल नहीं है।
तन-मन-धन सब वार दिया है, क्या है? जो कुछ दिया नहीं है। (७)
तब थका नहीं कार्यों से कार्य पंक्ति ही हार गई है।
सुख सुविधायें पीछे जिनके सुख सुविधा की चाह नहीं है। (८)
हर जैनी का घर जिसका घर निर्मल जी का वास वही है।
पत्नी सुत परिवार छोड़कर धर्म प्रेम की राह यही है। (९)
सेठी हम सब साथ तुम्हारे चिर जीवो बस चाह यही है।
महासभा के स्वर्णिम युग तुम आज लेखनी हार गयी है। (१०)
आज लेखनी हार गयी है।।

महाराष्ट्र प्रान्त धर्म संरक्षिणी महासभा का प्राण

श्री सन्मति सेवा दल

हिंगोली महाराष्ट्र नगर में सन्मति सेवा दल का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ उस समय महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी की ओर से तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष रूपये ५०,०००, महासभा महाराष्ट्र उपाध्यक्ष श्री बाबूभाई गांधी, महासभा प्रेमी श्री नीलम कुमार जी अजमेरा की ओर से क्रमशः ५१,००० रूपये, महाराष्ट्र महासभा की ओर से ११,१११/- रूपये एवं स्व. पी.यू.जैन की स्मृति में महासभा की ओर से प्रतिवर्ष एक पुरस्कार सेवादल को प्रदान करने की स्वीकृतियां प्राप्त।

महाराष्ट्र प्रान्त के मराठवाड़ा संभाग के एक छोटे नगर में कासार सिरशी ग्राम के एक निरन्तर मन में वैराग्य रखने वाले शून्य श्रावक श्रीमान् जीवनदादा पाटिल के नेतृत्व में विद्यासागर जी महाराज के शिष्य श्री १०८ चिन्मयसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से मराठवाड़ा संभाग में श्री सन्मति सेवा दल का कार्य धर्म संरक्षिणी महासभा के सौलन्नता में फलीभूत हो रहा है। वर्तमान में सन्मति सेवा दल की लगभग १०५ शाखायें कार्यरत हैं। हर माह के तीसरे हफ्ते में सन्मति सेवा दल की कार्यकर्ताओं की मीटिंग आयोजित की जाती है। इस मीटिंग हेतु देव शास्त्र एवं गुरू कवि सानिध्य बना रहा ऐसा प्रयास रहता है। इस संस्था के माध्यम से जैन युवकों में धर्म प्रभावना की आस्था एवं मुनि संस्था के प्रति महत्ता प्रगति पथ की ओर है भारत भर में जहां भी कहीं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो, साधु संघ हों किसी भी प्रकार की सेवा के लिये सन्मति सेवा दल के कार्याध्यक्ष श्री जीवनदादा पाटिल से स्वयंसेवक हेतु सहायता मांगी जाती है तो उसकी हर संभव पूर्ति की जाती है। इस संस्था की स्थापना हेतु लगभग ४ वर्ष पूरे हो चुके हैं। संस्था के माध्यम से धर्म शिक्षण शिविर, विद्वानों का प्रवचन, अध्ययन हेतु शिविर युवकों का बैंड सहित कला पथक आदि विशेष कार्य फलीभूत करने में काफी सफलता मिली है। इस संस्था का नेतृत्व कार्याध्यक्ष के रूप में श्रीमान जीवन दादा पाटिल, अध्यक्ष श्री बाबू भाई गांधी, अकलूज, श्री नीलम अजमेरा, उस्मानाबाद, श्री भरतकाला मुम्बई आदि के नेतृत्व में चल रहा है।

श्रीमान जीवन दादा पाटिल एक ऐसे महान श्रावक हैं जो कि घर तथा परिवार की न चिन्ता करते हुये माह में लगभग १५ से २० दिन सभी शाखाओं से सम्पर्क हेतु प्रवास में रहते हैं। सभाओं में वैराग्यता है भविष्य में इनके मुनि रक्षा के भाव हैं। हम आशा करते हैं कि श्री जीवन दादा पाटिल को मुनि दीक्षा के पूर्व ही समस्त महाराष्ट्र में सन्मति सेवा दल की शाखायें कार्यरत हो जायेंगी तथा उन जैसे कार्यकर्ता उस सेवादल की शाखा के माध्यम से भविष्य में संस्था का कार्य सुचारू रूप से करता रहे इस हेतु मिल सकेंगे और इस माध्यम से महाराष्ट्र प्रान्त में महासभा का प्रचार प्रसार भविष्य में प्रगति बोध की ओर रूचिगर होता रहेगा ऐसी आशा करते हैं।

\- श्रीकांत पंवरे

संघर्षमय जीवन का उपसंहार नियम रूप से हर्षमय होता है

महिमा महासभा की भारी

\-हजारीलाल काका, सकरार (झांसी)

हो रही गली गली जय कार महिमा महासभा की भारी,
महासभा की भारी ये है आर्ष मार्ग हितकारी।

धन्य धन्य वे लोग जिन्होंने इसकी शंख लगाई,
माली बनकर जिनने अब तक रक्षा कीनी भाई,
अच्छा किया धर्म प्रचार महिमा महासभा की भारी।

विगत दिनों में कई महापुरुषों ने दिये सहारे,
अब निर्मल कुमार जी सेठी हैं इसके रखवारे,
तनमन कर दीना न्यौछार महिमा महासभा की भारी।

भारतभर में महासभा ने अच्छा जश्न मनाया,
श्री आर.के.जैन पहाड़िया शिखरचंद की माया,
इनको धन्यवाद सौ बार महिमा महासभा की भारी।

श्री उम्मेदमल जी पाण्ड्या ने दिया मार्गदर्शन है,
पंडित श्री नरेन्द्र प्रकाश ने मोह लिया हर मन है,
इनका हर भाषण हितकार महिमा महासभा की भारी।

जैन गजट की हुई तरक्की सच-मुच इनके द्वारा,
जबसे प्राचार्य श्री ने इसका काम संवारा,
हर दम सेवा को तैयार महिमा महासभा की भारी।

जिन-जिन ने भी योग दिया सब हैं कर्तव्य परायण,
पूरे नाम गिनायें तो बन जायेगी रामायण
सबने दिया बड़ा ही प्यार महिमा महासभा की भारी।

हंसनशील स्वभावाला बालक-सम बावल/उतावला होता है। उसमें कार्य अकार्य का विवेक तथा धीरता-गंभीरता भी नहीं होती।
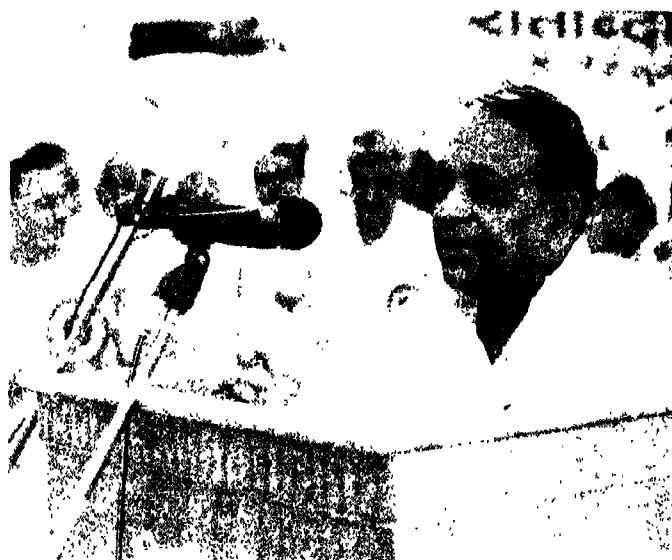
मुम्बई महानगरी में शताब्दी समारोह में महाराष्ट्र प्रांतीय अध्यक्ष श्री आर.के.जैन सभा को सम्बोधित करते हुये।

महाराष्ट्र की सोलापुर नगरी में पद्म श्री पंडिता सुमतिबाई शाह की तरफ से श्री निर्मल कुमार सेठी को श्रावक शिरोमणी, उपाधि प्रदान की गयी उस समय स्वागत समारोह का विहंगम दृश्य।

बिहार प्रदेश शताब्दी समारोह का महामंत्री हरिप्रसाद पहाड़िया, एवं श्री महावीर प्रसाद छाबड़ा।

जैन गजट के वर्तमान में प्रधान सम्पादक वाणी भूषण श्री श्यामसुन्दर लाल जी शास्त्री का शाल श्रीफल द्वारा स्वागत करते हुये महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी।

महामंत्री त्रिलोकचंद जी कोठारी प्रसन्न मुद्रा में।

पश्चिम बंगाल शाखा की तरफ से शताब्दी वर्ष समारोह की बेला में स्वागत गीत गाते हुये संगीत कलाकार।

श्रवणबेगोला सहस्राब्दी महोत्सव के समय महासभा अधिवेशन का दृश्य उपस्थित मुनि संघ के साथ महासभा पदाधिकारी।
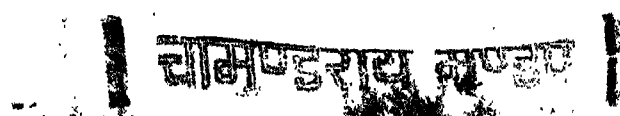
कलकत्ता नगरी में महासभा पदाधिकारी श्री भागचंद जी पहाड़िया- पहाड़िया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा अनाथ बच्चों को फल वितरण के समय उपस्थित मदर टेरेसा।
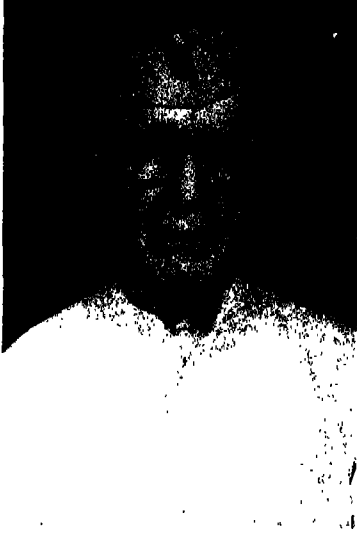
जैन गजट सम्पादक मंडल

पं० श्याम सुन्दर लाल जी शास्त्री
प्रधान सम्पादक

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन
सम्पादक

पं० मल्लीनाथ शास्त्री
चेन्नई

श्री भरतकाला, मुम्बई

डॉ० प्रमिला जैन

डॉ० चेतन प्रकाश पाटनी

श्री कपूर चंद पाटनी, गोहाटी
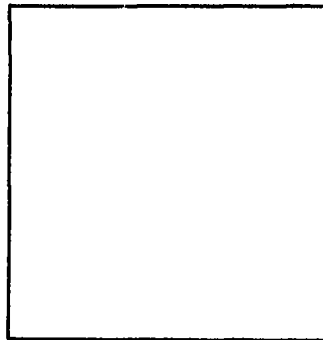
जैन महिला दर्श, सम्पादक मण्डल

डा० नीलम जैन
प्रधान सम्पादिका

डॉ० श्रीमती [illegible] जैन
आरा

श्रीमती शैलबाला [illegible]
मुम्बई

शशि प्रभा शशांक

जैन गजट प्रकाशक
सुरेश जैन

जैन गजट पूर्व प्रकाशक श्री अजीत प्रसाद जी जैन

जैन महिला दर्श एवं मराठी जैन गजट सम्पादक मण्डल के फोटो उपलब्ध न होने के कारण प्रकाशित नहीं कर सके।

– क्षमा प्रार्थी

सेठी जी श्रावक शिरोमणी समाजरत्न उपाधि से अलंकृत

- जिनेन्द्र लुपकर

श्राविका संस्थानगर सोलापुर में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जी सेठी का सत्कार समारोह आयोजित किया गया। प्रारंभ में ब्र. विद्युल्लता जैन द्वारा उनका परिचय कराया गया तथा श्री सेठी जी को 'श्रावक शिरोमणी समाजरत्न' की उपाधि का सम्मान पत्र संस्था द्वारा अर्पित किया गया। आपने "समाजरत्न' की पदवी को सार्थक किया।

सोलापुर में 'श्राविका' संस्था जो विविध कार्य कर रही है उससे आप बहुत प्रभावित हुए। विशेष करके पद्मश्री पं. सुमतिबाई शहा एक महिला होकर भी विशाल आयोजनों का संचालन कर रही हैं। यह जैन समाज के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि भारत के विभिन्न भागों में जो जैन संस्थायें कार्यरत हैं उनके पदाधिकारियों को इस संस्था का अवश्य निरीक्षण करना चाहिये। 'श्राविका संस्थानगर' अन्य संस्थाओं के लिए केवल प्रेरक ही नहीं मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर रही है। सोलापुर की 'जीवराज ग्रन्थमाला' ने जैन सिद्धान्त के अत्यन्त प्राचीन मूल ग्रंथों का प्रकाशन करके जैन ग्रंथावली को समृद्ध किया है। जैन जगत के प्रथम संस्थापक सोलापुर के श्री. वर्धमान शास्त्री की आपने याद की। संक्षेप में सोलापुर की धार्मिक गतिविधियों को देखकर आप अत्यन्त प्रभावित हुए। श्री भा.दि.जैन महासभा का परिचय देते हुये आपने कहा कि जैन संस्कृति की प्राचीन उज्ज्वल परम्परा को विश्व को अवगत कराने के लिए इस संस्था की स्थापना हुई है। इस संस्था ने साहित्यिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विशेष करके जैन संस्कृति के सभी क्षेत्रों में अभी तक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। साहित्य व कला के संरक्षण के संबंध में अपने विचार प्रगट करते हुये आपने कहा कि अमेरिका, पोलेंड, स्वीडन, जापान ने अपने शहरों को आधुनिक रूप देते हुए भी प्राचीन मूर्तियों, शिलालेखों एवं ग्रन्थों का संरक्षण किया है। इतना ही नहीं वे पर्यटकों को प्राचीन वस्तुओं को ही सर्वश्रेष्ठ वस्तुओं के रूप में दिखाते हैं। इसके विपरीत हमारे कुछ पुजारियों ने, श्रावकों ने प्राचीन विद्वानों के अमूल्य ग्रन्थों को कौड़ियों के मोल विदेशियों को बेचा है। जो ग्रन्थ १ लाख रु. तक देकर विदेशी खरीदते हैं वह कितना कीमती हो सकता है। मंदिरों में, घरों में, पुराने ग्रंथालयों में प्राचीन ग्रंथों को चूहे कुतर रहे हैं और दीमक चिपट रही है। इनका संरक्षण करना जैन समाज का प्रमुख कार्य है। पहाड़ों में दुर्गम, स्थानों में स्थित जैन मंदिरों में अन्य धर्मों के लोग तोड़ फोड़ कर रहे हैं, विकृत रूप दे रहे हैं। यह बदलने का कार्य प्राचीनकाल से आज तक चल रहा है। प्राचीनकाल के मंदिरों का संरक्षण के विभिन्न उपक्रमों का प्रचार सम्पूर्ण भारत में करना चाहिये। अन्य संस्थाओं को करना हमारा कर्तव्य है। कई विदेशी विद्वान जैन धर्म के सिद्धांतों को जानने के लिये उत्सुक हैं। अतः महासभा के अन्तर्गत विदेश विभाग प्रारंभ करके विदेशी विद्वानों को जैन तत्वज्ञान के प्रमुख ग्रंथ भेजने की बात विचाराधीन है।

वर्तमानकाल में दि. जैनों के मंदिरों पर तीर्थक्षेत्रों पर जो आक्रमण हो रहे हैं उसकी ओर समाज व सरकार का ध्यान दिलाते हुए आपने कहा कि हमने किसी के धर्म पर आक्रमण नहीं किया। किसी को अपने धर्म पर आक्रमण नहीं करने दिया। किसी को अपने धर्म में लेने की जबरदस्ती नहीं की। फिर हमारे दि. जैन धर्म पर आक्रमण क्यों? महावीर और बुद्ध जैसे अहिंसावादी देश में सरकार की ओर से कट्टीखाने चलाये जायें इससे दूसरी शर्म की बात नहीं हो सकती है। कम से कम सरकार ऐसी संस्थाओं को आर्थिक सहायता न दे जो संस्था 'अहिंसा धर्म' का पालन नहीं करती। संक्षेप में जीव हिंसा करती है। यह हमारा अधिकार है क्योंकि मुख्य रूप से व्यापारी जैन समाज करोड़ों रुपये कर रूप में सरकार को देता है। जैन धर्म पर आक्रमण करने वालों से जैनों को संरक्षण देकर सरकार को धर्म निरपेक्षता का पालन करना चाहियें

अंत में उन्होंने विद्यार्थियों को समय के सदुपयोग का उपदेश देकर अपना संपूर्ण ध्यान विद्याध्ययन की ओर लगाने के लिये कहा। श्राविका संस्थानगर एक सर्वांगपूर्ण संस्था है। इसकी संस्थापिका मा. सुमतिबाई शहा व सुश्री विद्युल्लता शहा को अपनी संस्था के विविध उपक्रमों का प्रचार सम्पूर्ण भारत में करना चाहिए। अन्य संस्थाओं को भी प्रेरित करना चाहिये। इस शुभ अवसर पर सांगली के आमदार श्री चव्हाण जी भी पधारे थे। किसी संस्था का अध्यक्ष किस प्रकार का सर्वांग पूर्ण अध्ययनशील, विशाल दृष्टि वाला व उत्कृष्ट वक्ता होना चाहिये। इसका उदाहरण श्री निर्मल कुमार जी सेठी के रूप में सोलापुर वासियों को देखने को और सुनने को मिला। सभी ने उनके भाषणों की, उनके विद्वत्तापूर्ण विचारों की प्रशंसा की।

संस्था का कार्य निरीक्षण के अनंतर श्रीमान सेठी जी ने ग्यारह हजार रुपया की दानराशि घोषित की। जिसका तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया। दूसरे दिन सेठी जी मोहोल पू. वीरसागर जी के दर्शन करके बाहुबली कुम्भोज के लिये रवाना हुये। स्वनाम धन्य श्री निर्मल कुमार जी सेठी कर्मठ होनहार तथा क्रियाशील कार्यकर्ता हैं। उनके हाथ महासभा के नेतृत्व की बागडोर आई है जिसमें समाज धर्म, संस्कृति का उज्जवल भविष्य छिपा हुआ स्पष्ट प्रतीत होता है।

नीतिपूर्ण दोहे

जुवा खेलना मांस मद, वेश्या गमन शिकार।
चोरी परनारी रमण, सातों व्यसन निवार।।
काम क्रोध मद लोभ से, हिय के अन्धे चार।
नयन अन्ध इनमें भला, करे न पर अपकार।।
अपनी संस्कृति सभ्यता, जो खोवत नादान।
उस मानव को होत नहीं, किसी जगह सम्मान।।
मात पिता की चाकरी, यह भी तीरथ जान।
सुख पावे प्राणी सदा, सुन लो देकर कान।।
मधुर वचन ही बोलिये, करे सभी सम्मान।
वशीकरण यह मंत्र है, निश्चय कर यह मान।।
काम नित्य खोटे करे, खोजे सुख का मेल।
फिरता चक्कर काटता, ज्यूं घाणी का बैल।।

ब्र० कमलाबाई जी का परिचय व उनके प्रति उद्गार

त्याग, तपस्या और ममता की मूर्ति ब्र. कमलाबाई जी श्री महावीर जी को 'रोटरी इंटरनेशनल साक्षरता इंडिया अवार्ड, १९९८' से सम्मानित होने पर हार्दिक अभिनन्दन

परिचय

ब्र. कमलाबाई जी का जन्म श्रावण शुक्ल नवमी संवत् १९८० को कुचामनसिटी (राजस्थान) के संभ्रांत जैन परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री रामपाल जी और माता श्री लाड़ाबाई प्रारंभ से ही धार्मिक वातावरण प्रिय रही थीं। चार बहिनों तथा दो भाइयों की संतति में मैं सबसे छोटी पुत्री थीं। १२ वर्ष की अवस्था में ही उनका विवाह हो गया था। दुर्भाग्य कि १४ वर्ष की अल्पायु में इनके पति का निधन हो गया और इन्हें वैधव्य से मुकाबला करना पड़ा।

इन्होंने गुरूओं से संस्कृत, मराठी और हिंन्दी भाषायें सीखीं एवं पू. सूर्यसागर, वीरसागर, शिवसागर, धर्मसागर जी महाराज की प्रेरणा से धार्मिक शिक्षा ग्रहण की एवं बनारस की शास्त्री, न्यायतीर्थ तथा सोलापुर की कर्म काण्ड की परीक्षा उत्तीर्ण कर जिनवाणी के स्वाध्याय में प्रवृत हुईं।

बाल विधवाओं के प्रति होने वाले पारिवारिक और सामाजिक व्यवहार विशेष कर पिछड़ी जातियों में होने वाले दुर्व्यवहार को समाप्त करने का भाव व स्त्री शिक्षा के प्रचार प्रसार के संकल्प को स्वर्गीय चैनसुखदास के जागरूक वक्तव्यों के अनुसार ले लिया। इन्हीं दिनों सं. २००० के लगभग इनका श्री महावीर जी आगमन हुआ। यहां की अतिशयता और निष्पृह व्यवस्था देखकर अपना संकल्प वहां पूरा करने का निश्चय किया और सन् १९५३ में इस क्षेत्र की पिछड़ी जातियों में स्त्री शिक्षा प्रसार की दृष्टि से दि. जैन आ.म. विद्यालय की स्थापना की जो आज भारतभर में अपना अहं स्थान रखता है। विद्यालय का निजी भवन, छात्रावास जिसमें लगभग एक हजार बालिकाओं को शिक्षा एवं लगभग ३५० छात्राओं के आवास की समुचित व्यवस्था है। सभी आधुनिक साधनों यथा- भवन, फर्नीचर, पुस्तकालय आदि से सुसज्जित यह विद्यालय ग्यारहवीं कक्षा तक राजस्थान शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त है किन्तु बी.ए. तक की परीक्षाएं दिलाने की व्यवस्था है। लड़कियों के लिए भोजन बनाना, हस्तकला, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई की अतिरिक्त व्यवस्था है।

यह विद्यालय मेरे जीवन के लिए अनुभव की महान प्रयोगशाला सिद्ध हुआ है। यहां से प्राप्त किया हुआ व्यवहारिक ज्ञान अनुभव के अनमोल मोती मेरे अंचल में भरे पड़े हैं जिनकी कान्ति मुझे पग पग पर तामसी गुणों का विकीर्ण करने में सहायक सिद्ध होती है।

मैं ममतामयी मां ब्र. कमलाबाई जी के स्नेह में इतनी सराबोर हूं कि उन्हें छोड़ पाना मेरे लिए असंभव ही नहीं कठिन अवश्य है। आपके पारस व्यक्तित्व ने मुझ पत्थर को हीरे का रूप दिया है। आपके सहयोग से मैं पी. एच.डी. की उपाधि के योग्य बन सकी।

- डॉ. सरोज जैन, स. अध्यापिका

- मुझे प्रारंभ से ही ममतामयी ब्र. कमलाबाई जी के संरक्षण में इस संस्था की सेवा का अवसर मिला है। बाई जी की कर्तव्यनिष्ठा, लगन, दृढ़ निश्चय, अनुशासन प्रिय एवं पुत्रवत स्नेह ने मुझे सदैव इस विद्यालय के प्रति निष्ठापूर्वक कर्तव्य निर्वाह के लिए प्रेरित किया है। विद्यालय के इस विशाल रूप में ब्र. कमलाबाई जी के अथक परिश्रम एवं त्याग की स्पष्ट झलक है। नारी उत्थान हेतु आपने अपना सम्पूर्ण जीवन विद्यालय हेतु समर्पित कर दिया है। आपके जीवन का लक्ष्य ही पीड़ित, दलित, असहाय एवं अशिक्षित महिलाओं एवं बालिकाओं को प्ररित कर जीवन में आत्म निर्भर बनाना है। मैंने बहुत समीप से आपकी रचनात्मक शक्ति एवं भावनात्मक दृढ़ विश्वास को देखा है, जिसका परिणाम नवनिर्मित एवं सम्पूर्ण सुविधाओं से सम्पन्न विद्यालय का छात्रावास है, जिसमें लमग ३०० छात्राओं के रहने की व्यवस्था है।

निसंदेह मेरी दृष्टि में नारी जागरण आंदोलन में ब्र. कमलाबाई जी की जो भूमिका रही है वह प्रेरक तथा अनुकरणीय है। ऐसी संस्थाओं के माध्यम से ही हम समाज में फैली विकृतियों, जैसे- दहेज प्रथा, बहु विवाह आदि के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

- ब्रजमोहन लाल, प्रधानाचार्य

चारित्र-ममता तथा लोक कल्याण की भावनाओं को एक साथ अपने आप में आत्मसात किये हुए ब्र. श्री कमलाबाई जी देश की उन गिनी-चुनी विभूतियों में से हैं, जिन्होंने एक परम्परावादी परिवार में जन्म लिया, बाल्यावस्था में ही विवाह हो जाने के शीघ्र बाद वैधव्य की पीड़ा को भोगा। उस समय विधवाओं के प्रति समाज के निर्मम व्यवहार को देख बाई जी के कोमल हृदय में उनके कल्याण का बीज कहीं अंकुरित हो गया। अपने दुख को भूल उन्होंने श्री महावीर जी के मुमुक्षु महिलाश्रम में अध्ययन करने के बाद स्वयं आदर्श महिला विद्यालय की स्थापना कर नारी को अपमान एवं उपेक्षापूर्ण जीवन से उभारने का संकल्प लिया।

राजस्थान के कुचामन सिटी कस्बे में श्री रामपाल पाटोदी के यहां श्रावण शुक्ला ९, विक्रम सं. १९८० को जन्मी कमलाबाई जी स्वयं करूणा की मूर्ति हैं। लेखक को लगभग तीन दशकों से उन्हें समीप से देखने का अनुभव है। यद्यपि उन्होंने स्वयं किसी बालक को जन्म नहीं दिया, किन्तु आज सैकड़ों बालिकाओं को उनके मातृत्व की छाया में जो पोषण-संरक्षण मिल रहा है, उस सुख की कल्पना वे ही कर सकती हैं। १ जनवरी ५३ को केवल २६ बालिकाओं को लेकर उनके द्वारा स्थापित आदर्श महिला विद्यालय आज अपने संघर्षमय जीवन के ३९ वर्ष पूरे कर ४०वें में प्रवेश कर चुका है। बाई जी के मन में जहां विधवाओं को सम्मानजनक जीवन जीने की योग्यता दिलाने की तीव्र इच्छा थी, उनका यह भी संकल्प था कि विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाली बालिकाओं पर भारतीय संस्कृति की छाप हो तथा वे पाश्चात्य रंग में नहीं रंगें और वे भावी जीवन में आदर्श गृहणी, आदर्श मां तथा आदर्श नागरिक सिद्ध हो सकें। भारत के इस प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र के आसपास आदिवासी मीणाओं की पर्याप्त जनसंख्या है और कमलाबाई जी

शेष पृष्ठ ७६ पर. . .

जैन गजट की यात्रा-कथा

'जैन गजट' हिन्दी का सबसे पुराना जैन पत्र है। दिसम्बर सन् १८९५ में इसका जन्म हुआ था। अब यह पत्र अपनी शताब्दी पूरी कर चुका है। बहुत कम पत्रों को इतना लम्बा जीवन मिल पाता है। पिछले १०३ वर्षों में इसने अपने जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। गिरावट के दिनों में इसकी ग्राहक संख्या तीन सौ के न्यूनतम बिन्दु तक सिमटकर रह गई थी। आज यह ७१०० घरों में पहुंच रहा है। यह प्रसार-संख्या एक कीर्तिमान है।

देवबन्द के बाबू सूरजभानु जी वकील इसके प्रथम सम्पादक थे। उन्होंने केवल डेढ़ वर्ष तक इसका संपादन किया। उनके समय की सबसे उल्लेखनीय बात यह रही है कि उन्होंने पहले ही वर्ष उसे दस दिनों के लिए 'दैनिक' कर दिया था और ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि पर्यूषण पर्व के दस दिनों में ग्राहकों को प्रतिदिन 'जैन गजट' स्वाध्याय के लिए सुलभ होता रहा। यह एक बहुत ही बड़ी बात थी। ऐसा फिर कभी नहीं हो सका।

बाबूजी के हट जाने के बाद जैन गजट का स्तर एवं प्रसार एकदम घट गया। महासभा के अधिवेशनों में इस पर बड़ी चिन्ता व्यक्त की जाने लगी। एक सुयोग्य सम्पादक की तलाश शुरू हुई। तब श्री पं. जुगुलकिशोर जी मुख्तार को १ जुलाई सन् १९०७ को इसके संपादन का दायित्व सौंपा गया। ३१ दिसम्बर १९०९ तक वह इस पद पर रहे। ढाई वर्ष की इस अवधि में गजट की प्रसार-संख्या पांच गुनी (१५००) हो गयी। उनके समय में उच्च कोटि के लेख प्रकाशित होने लगे। एक उदाहरण उल्लेख्य है। उन दिनों आगरा से 'आर्यमित्र' नाम- से एक पत्र निकलता था। उसमें प्रायः जैन धर्म विरोधी लेख छपा करते थे। बाबूजी ने जैन गजट में उसके जवाब में आय-लीला शीर्षक से एक लेखमाला शुरू की, जो २९ अंकों में समाप्त हुई। आर्यमित्र की बोलती बंद हो गई। पाठक ढूढ़-ढूंढ़कर जैन गजट पढ़ने लगे। इन दिनों वह खूब चमका।

जैन गजट के इस उत्कर्ष का एक कारण यह भी रहा कि तब यह देवबन्द से छपता था और इसके सम्पादक मुख्तार साहब भी देवबंद में रहते थे। इससे पत्र पर उनकी देखरेख बराबर बनी रहती थी। बाद में दोनों के बीच में दूरी हो गई। पत्र कहीं छपता था और संपादक कहीं रहते थे इससे अन्तर तो पड़ता ही है। संपादक का पत्र से नियमित जुड़े रहना बहुत महत्व रखता है। फिर एक बात यह भी है कि उन दिनों संपादक परिश्रम भी खूब करते थे। उन दिनों स्व. बाबू ज्योति प्रसाद जी जैन (जो मुनीम जी या एडीटर साहब के नाम से मशहूर थे), एक पत्र जैन-प्रदीप के नाम से निकालते थे, जिसके वह प्रकाशक और चेयरमैन दोनों थे। डाक लाना, उत्तर देना, लेख लिखना, प्रूफ देखना, पत्र पर पते की चिटें और टिकटें चिपकाना तथा उसे डाक में छोड़ना.ये सब काम वह अकेले ही करते थे। घाटा सहकर भी उसे चलाते थे। अब कहां मिलेंगे लगन के पक्के और धुन के धनी ऐसे लोग तथा किसके पास है अब इतना समय।

बीच में कुछ समय के लिए जैन गजट का प्रकाशन लखनऊ से भी होने लगा था। यहां दो-तीन वर्ष के परिश्रम से यह पाक्षिक से साप्ताहिक हो गया था। अंग्रेजी जैन गजट का प्रकाशन भी तब यहीं से शुरू हुआ था। बैरिस्टर श्री जुगमंदिरलाल जी जैनी ने सन् १९०४ में उसके संपादन का कार्य अपने हाथ में लिया था। अपने निधन से एक वर्ष पूर्व उन्होंने एक धर्मनिधि स्थापित की थी, जिसमें से अंग्रेजी जैन गजट को भी निरंतर सहायता मिलती थी। सन् १९५० तक वह अजिताश्रम, लखनऊ से ही छपता रहा। बैरिस्टर साहब के अतिरिक्त श्री अजित प्रसाद जी वकील एवं बाबू ज्योतिप्रसाद जी जैन का भी अंग्रेजी जैन गजट के संपादन एवं सामग्री संचयन में अच्छा योगदान रहा है। आज हिन्दी जैन गजट पुनः लखनऊ से प्रकाशित हो रहा है। उसकी ग्राहक संख्या तेजी से बढ़ी है। महासभा के उत्साही युवा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी को इतने से संतोष नहीं है। वह चाहते हैं कि कोई भी ऐसा नगर या ग्राम जहां जैन लोग रहते थे इसकी पहुंच से बाहर न रहे, कम से कम दस हजार ग्राहक तो उसके होने ही चाहिये। इस वर्षान्त तक वह इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना चाहते हैं। यदि ऐसा हो सका तो लखनऊ के जैन इतिहास की यह एक बड़ी घटना मानी जायेगी। महासभा के व्यापक कार्यक्षेत्र एवं शक्ति का भी इससे परिचय मिलेगा।

सन् १९२३ में महासभा एवं जैन गजट के सामने एक बड़ी चुनौती आ खड़ी हुई। जिस वर्ष कांग्रेस का जन्म हुआ, उसी वर्ष महासभा भी अस्तित्व में आई। जिस तरह तब कांग्रेस पूरे देश में एकमात्र राजनैतिक पार्टी थी, उसी प्रकार सन् १९२२ तक अखिल जैन समाज पर महासभा का पूर्ण वर्चस्व था। पहले इस महासभा का इतना गौरव था कि इसके उत्सव में लोग बड़े श्रद्धा और भक्ति से भाग लेते थे। श्रीमान् पं. सुमेरचंद जी दिवाकर के शब्दों में जब इसका एक-एक वार्षिक उत्सव पंचकल्याणक का आनंद प्रदान करता था। सन् १९२३ में दिल्ली- अधिवेशन में पारस्परिक मतभेद मुखर हो उठे और उसका परिणाम विघटन के रूप में सामने आया। उसी अधिवेशन में ही एक अलग पण्डाल में दि.जैन परिषद की स्थापना की घोषणा कर दी गई। दस्सा-पूजाधिकार, विधवा और विजातीय विवाह, अस्पृश्यता निवारण आदि मुद्दों पर असहमति के नाम पर स्व. ब्र. शीतलप्रसाद जी, रायबहादुर जुगमिन्दर दास जी, बैरिस्टर चंपतराय जी प्रभृति सुधारक प्रवृत्ति के लोग उधर चले गये। परिषद ने अपना नया पत्र वीर निकालने का निश्चय किया। तब से दोनों संस्थायें समाज में काम कर रही है और दोनों के मध्य नोंकझोंक भी चलती रही है। पहले इसका माध्यम वीर था। उसके निस्तेज होने पर अब यह कार्य समन्वयवाणी ने संभाल लिया है। जयपुर से प्रकाशित इस नये पत्र का तो उद्देश्य ही मुनियों और महासभा पर आक्रमण करना है। पुराने समय में सनातन जैन, जैन पत्रिका, जैन जगत आदि में भी महासभा के विरोध में गर्मागर्म चर्चायें छपती थी। महासभा और जैन गजट ऐसे घनघोर प्रहारों के बाद भी अपनी नीति पर अडिग है और सिद्धांतों से समझौता करने को तैयार नहीं है। यह एक मौके की बात है।

चौरासी (मथुरा) के चातुर्मास में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने कहा था- दि.जैन धर्म संरक्षिणी महासभा को हमारा आशीर्वाद है, क्योंकि यह धर्म संकट में कभी डिगी नहीं है। आगे भी यह धर्म से नहीं डिगेगी, ऐसी आशा है। महासभा और उसके मुखपत्र जैन गजट ने अद्यावधि उनकी आशा के अनुरूप चलते रहने का भरसक प्रयत्न किया है। अपने उत्कर्ष और अपकर्ष दोनों में जैन गजट की

सच्चे देव शास्त्र, गुरु की श्रद्धा में कोई अन्तर नहीं आया है। तीर्थ रक्षा, साधु रक्षा और धर्म रक्षा में यह सदा अग्रणी रहा है। देश के कुछ भागों में जब नग्न दि.जैन मुनियों के विहार पर रोक लगाने का आदेश जारी हुआ तथा देश के शीर्षस्थ राजनेता सरदार पटेल सरीखों ने नग्नत्व के विरुद्ध दबे शब्दों में कुछ कह दिया, तब जैन गजट ने अपने लेखों से ऐसा वातावरण बनाया, जिससे उन्हें अपनी धारणा बदलनी पड़ी तथा मुनियों के विहार पर रोक हटा ली गई। तीर्थराज सम्मेदशिखर संबंधी विवाद में जैन गजट ने अहंभूमिका का निर्वाह किया महासभा के अन्तर्गत एक पृथक उपसमिति का गठन तीर्थ की सुरक्षा के लिए जोरदार उपाय तलाशने के लिए किया गया। महासभा ने हरिजन मंदिर प्रदेश एक्ट का तीव्र विरोध किया। आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने अनशन तप के अद्भुत प्रभाव तथा जैन समाज, महासभा और जैन गजट की तत्परतापूर्ण संयुक्त पैरवी के फलस्वरूप बंबई हाईकोर्ट का जो निर्णय हुआ, उससे महासभा और जैन गजट की आगमोक्त विचारधारा की पुष्टि हुई। सोनगढ़ के पोपडम और निश्चय प्रधान एकान्तमूलक प्रचार से मूल आम्नाय को कितनी और कैसी क्षति पहुंचेगी, इस संदर्भ में जैन गजट ने तर्कपूर्ण एवं व्यविस्थित अभियान चलाया, जो आज तक जारी है। सर्वश्री स्व. पं. इन्द्रलाल जी शास्त्री, पं. मक्खनलाल जी शास्त्री एवं सम्पादक श्रीमान पं. अजित कुमार जी शास्त्री ने जो प्रमाणिक लेख लिखे, आज विरोधी भी उनकी प्रशंसा करते हैं। आचार-विचार की शुद्धता सात व्यसनों के त्याग, शाकाहार के प्रचार और नैतिक जागरण के लिए 'जैन गजट' हमेशा अपनी बुलन्द आवाज उठाता रहा है। इस प्रकार जैन पत्रकारिता के इतिहास में जैन गजट ने अपनी एक अलग पहचान बनाये रखने में सफलता प्राप्त की है।

श्री सेठी जी की भावना के अनुरूप महासभा युवा एवं प्रौढ़ कार्यकर्ताओं को, जो इस समय पूरे देश में फैले हुए हैं, अधिक से अधिक ग्राहक बनाने के अभियान में तन-मन से जुट जाना चाहिए। कार्यकर्ता यह देखें कि उनके नगर के सभी मंदिरों और वाचनालयों में यह पहुंच रहा है या नहीं।

कुछ सम्पन्न लोग अपनी ओर से कुछ साधर्मी भाइयों का ग्राहक-शुल्क स्वयं भरकर उन्हें जैन गजट उपहार में भेंट कर सकते हैं। वे स्वयं तो स्थायी सदस्य बनेंगे ही, सभी साधर्मी भाई वार्षिक ग्राहक बनकर इसके माध्यम से ज्ञान-प्रसार-यज्ञ में भागीदार बनें। मात्र सौ रुपये वार्षिक में जैन गजट इस समय वर्ष में ६०० पृष्ठ की सामग्री, जो पुस्तकालय में लगभग ढाई हजार पृष्ठों के बराबर होती है, दे रहा है। बाजार में इतने पृष्ठों की कीमत सौ-सवा सौ रुपयों से कम हो ही नहीं सकती। अतः ग्राहक को कोई घाटा नहीं है। ग्राहक-शुल्क से अखबार चलते भी नहीं है। विज्ञापन भी प्रायः जैन पत्रों को नहीं मिलते। घाटे की पूर्ति दान से होती है। हमारी इच्छा है कि सन् २००० से पूर्व इसका इतना ध्रुवफण्ड जमा हो जाय कि उसके ब्याज से इसके घाटे की पूर्ति हमेशा होती रहे। तब तक यदि एक स्वतंत्र प्रेस भी स्थापित हो सके तो महासभा के शताब्दी-समारोह की यह एक बड़ी उपलब्धि मानी जायेगी।

- नरेन्द्रप्रकाश जैन

'संस्कार' संगठन की पहली सीढ़ी है

- प्रचंडिया

मंगल कलश ३९४, सर्वोदय नगर
आगरा रोड, अलीगढ़ - २०२००१

आज हम उस सीढ़ी पर चढ़ने लगे है
कहीं उससे च्युत न हो जाएं या
समय की बहती हवाओं से
चढ़ते-चढ़ते फिसल न जाएं ।
इसीलिए हमें सजग रहना है ।
अपनी ही संस्कृति में
आचरण के चरण को सहेजना है
धर्म संरक्षण हेतु
एक नहीं अनेक प्रयास करने हैं ।
सबसे पहले तो
कथनी और करनी में एक सार लाना है
घट-घट में धर्म के मर्म को पहुंचाना है
चिरजीवी होने के लिये
शायद 'महासभा' के उद्देश्यों/आदर्शों को
एक बार फिर से जगाना है ।
एक बार फिर से जगाना है ।।

पृष्ठ ७४ का शेष. . .

कमलाबाई जी द्वारा लगाये गये इस वटवृक्ष के नीचे आश्रय पाकर अनेक विधवा बहिनों, अनेक जैन-अजैन बहिनों को, बालिकाओं तथा सैकड़ों आदिवासी छात्राओं ने उन्नति की सीढ़ियां चढ़ने में सफलता प्राप्त की है।

कमलाबाई जी के मन में जहां मां की ममता है, कठोर अनुशासन तथा चारित्र के लिए देखभाल उनके स्वाभाविक गुण हैं। वे न तो अनुशासनहीनता बर्दाश्त कर सकती हैं और न ही शैथिल्य यही कारण है कि उनकी कड़ी नजर की शिकार बालिका कुछ क्षणों बाद ही उनकी आंखों में मां के प्यार का सागर हिलोरें मारती देखती है। और अपने जन्म स्थल से सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने आपको बाई जी के संरक्षण में सुरक्षित एवं आनंदित अनुभव करती है।

संक्षेप में यदि यह कहा जाय कि श्री महावीर जी तीर्थ पर भगवान श्री वीर के दर्शनों के बाद यदि कोई दूसरी संस्था है तो आदर्श महिला विद्यालय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह इस पिछड़े क्षेत्र की जनता का सौभाग्य है कि इस पवित्र तीर्थ के निवासी होने के साथ साथ उन्हें कमलाबाई जी जैसी त्यागी विदुषी प्राप्त हुई है जो तीर्थ की आध्यात्मिक चेतना के साथ साथ शैक्षणिक चेतना का भार अपने सबल कंधों पर संभाले हुए है। बाई जी की सेवाओं के लिए कई बार इनका सम्मान अभिनंदन कर समाज तथा जन प्रतिनिधियों ने अपना आभार भी व्यक्त किया है किन्तु यह तो मात्र सामान्य श्रद्धा प्रदर्शन ही है। बाई जी की सेवाओं का मूल्यांकन तो आने वाली पीढ़ियां ही कर सकेंगी।

- गजानंद डेरोलिया

महासभा आगमपंथी है

- नरेन्द्रप्रकाश जैन

दि. जैन समाज में कोई तो तेरापंथी है और कोई बीसपंथी। बीच में एक साढ़े सोलह पंथ भी चला था, पर अब उसकी चर्चा सुनाई नहीं देती। तेरा बीस को लेकर जैन पत्रों में पहले भी नोंक झोंक चलती रहती है, अब भी कुछ लोग यदाकदा चुभते वाक्य लिख दिया करते हैं। इसमें कोई नई बात भी नहीं है। हमने तो जबसे होश संभाला है तब से प्रायः एक दूसरे के माल को खोटा बताकर अपनी दुकान चलाते हुये ही लोगों को देखा है। तेरापंथ और बीसपंथ के प्रकरण में यह दृष्टव्य है कि झगड़े प्रायः बीसपंथ पर ही होते हैं। बीसपंथियों को तेरापंथ से कोई खास गिला नहीं है। इधर कुछ सोनगढ़ी भी तेरापंथ की आड़ में अपनी रोटियां सेकने लगे हैं।

तेरापंथ और बीसपंथ ये काल्पनिक नाम हैं। हमारे पूर्वाचार्यों ने आगम ग्रंथों में कहीं इन शब्दों का प्रयोग नहीं किया। पिछले ढाई-तीन सौ वर्षों से ही ये शब्द चलन में आये हैं। जब लोग तेरा बीस के नाम पर झगड़ने लगे तो पूज्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज ने एक बड़ा अच्छा समाधान दिया। उन्होंने कहा कि बीसपंथ श्रावकों के लिए और तेरापंथ मुनियों के लिए है। पांच अणुव्रत, चार शिक्षाव्रत, तीन गुणव्रत और आठ मूलगुण ये बीस व्रत श्रावकों द्वारा पालनीय हैं तथा पंच महाव्रत पंच समिति और त्रिगुप्तिरूप त्रयोदश प्रकार के चरित्र को पाने वाले मुनि कहलाते हैं। बीसपंथ 'कामद' और तेरहपंथ मोक्षद है। आगम में इसके अलावा अन्य कोई तेरह या बीसपंथ नहीं है।

तेरह और बीस शब्द संख्यावाचक हैं इन सब व्याख्याओं में उलझना हमें इष्ट नहीं है। हम तो केवल इतना जानते हैं कि तेरापंथ और बीसपंथ में कोई धर्म भेद नहीं है। दोनों ही पंथों के मानने वालों जिनेन्द्रदेव, वीतरागवाणी और निर्ग्रन्थ गुरु के अनन्य भक्त और धर्मात्मा हैं। उनकी पूजा-पाठ और अभिषेक की पद्धति में अंतर हो सकता है किन्तु दोनों की सैद्धान्तिक मान्यतायें एक हैं। रत्नत्रय में सबकी अटूट आस्था है। सर्वज्ञभाषित तत्वों पर दोनों ही अटलविश्वास रखते हैं। वीतरागता की प्राप्ति ही दोनों का चरम लक्ष्य है। फिर समझ में नहीं आता कि तेरा और बीस के नाम पर समाज में खींचतान बनाये रखने में कौन-सी तुक है।

तेरापंथ और बीसपंथ के नाम पर जो सवाल उछाले जाते हैं उनमें मुख्य हैं-

स्त्रियां अभिषेक कर सकती हैं या नहीं?

अभिषेक जल से करना उचित है या नहीं?

भगवान के चरणों में केसर-चन्दन लगाने का विधान है या नहीं?

उपासना खड़े होकर करें या बैठकर?

आगम और परम्परा से इन प्रश्नों का उत्तर हां में भी मिलता है और नहीं में भी। इस संबंध में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियां देखी जाती हैं। उत्तर भारत में कोई जल से और कोई पंचामृत से अभिषेक करती है। दक्षिण में सर्वत्र पंचामृताभिषेक का प्रचलन है। विश्व विख्यात भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली का महामस्तकाभिषेक दूध, दही, घृत, इक्षुरस और सर्वौषधि से होता है। प्रति बारह वर्ष बाद होने वाले इस आयोजन में तेरापंथी और बीसपंथी सभी (अनपढ़ से लेकर विद्वान तक) दूर-दूर से आकर शामिल होते हैं। स्त्रियों द्वारा अभिषेक किये जाने पर वहां कोई आपत्ति नहीं करता। उनका कहना है कि जो दीक्षा का अधिकारी है तथा मुनियों को आहारदानादि दे सकता है वह जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक भी कर सकता है। शास्त्रों में फल चढ़ाने तथा श्री जी के चरणों में केसर-चंदन लगाने के प्रकरण मिलते हैं। अवस्था और शक्ति के अनुसार बैठकर या खड़े होकर पूजन करने पर बहस करना व्यर्थ है, मुख्यता मन के उत्साह और भावों की होती है।

इन सब विषयों पर विद्वानों में पहले काफी चर्चा हो चुकी है। बहुत कुछ लिखा गया है। पुनः विस्तार में जाना बेकार की माथापच्ची होगी। उससे कोई लाभ की प्राप्त होने वाला है नहीं। पूजा पद्धति में अंतर होने से गृहस्थ के सम्यक्त्व और व्रतों में कोई दोष नहीं लगता। हां इतना अवश्य ध्यान में रखना होगा कि हमारी सम्पूर्ण क्रियायें विवेकपूर्वक होनी चाहिये। विवेकरहित क्रियायें जो चाहे तेरापंथियों की हों चाहे बीस पंथियों की,वे पापबंध का ही कारण हैं। विवेक से हमारा प्रयोजन है कि अभिषेक में प्रयुक्त जल, दूध दही, घृत आदि शुद्ध अर्थात् मुनियों द्वारा ग्रहण करने योग्य हों। फल पके हुये हों, हरितकाय न हों, रजस्वला-अवस्था में स्त्रियां अभिषेक न करें आदि।

जहां जैसी मान्यता हो, वहां उस तरह लोगों को ये क्रियायें करने देना चाहिये। किसी प्रकार का आग्रह या जोर जबरदस्ती उचित नहीं है। उससे कषाय उत्पन्न होती है। आपस में तनाव बढ़ता है। सन् १९८१ की बात है, हम दक्षिण यात्रा पर थे। श्रवणबेलगोला में परम पूज्य ऐलाचार्य जी के पास बैठे थे तभी बड़ौदा की एक बहिन ने पूछा- महाराज जी क्या स्त्रियां प्रक्षाल कर सकती हैं? महाराज जी का सधा हुआ उत्तर था-'इधर तो करती हैं/कर सकती हैं किन्तु उधर यदि रिवाज न हो तो मत करना। उस बहन ने पुनः पूछा क्या शास्त्रों में स्त्री-प्रक्षाल का निषेध नहीं है? इस पर उन्होंने विनोद पूर्वक कहा- है भी और नहीं भी है। इसलिए कि स्त्रियों को यदि पूरी तरह पूजाभिषेक का अधिकार मिल गया तो पुरुष दर्शन करना ही छोड़ देंगे। वहां बैठे सब लोग हंस पड़े। सभी साधुओं को इस विषय में इसी तरह अनाग्रही होना चाहिये। गृहस्थों की क्रियाओं में साधुओं द्वारा प्रेरणा करना ठीक नहीं है। किसी की जिज्ञासा का समाधान करना अलग बात है।

आज तीर्थों पर पूजा-पाठ और अभिषेक की क्रियाओं में शुद्धि अशुद्धि पर कौन ध्यान देता है। श्री महावीर जी में पुजारी और दर्शनार्थी सब गड्डमुड्ड होकर चलते हैं। भारी भीड़ के कारण उनके मध्य एक अंगुल की दूरी भी नहीं रह पाती। सब एक-दूसरे को धकियाते हुए और अभिषेक पूजा करते हुये देखे जाते हैं। क्या वे प्रासुक होते हैं? यथार्थ में तीर्थक्षेत्रों पर भक्ति की प्रधानता होती है। वहां की इन विषमताओं पर प्रायः विद्वानों का भी ध्यान नहीं जाता। वहां वे भी उसी तरह पूजा-पाठ करने को विवश होते हैं। वे ही विद्वान जब हाथ धोकर बीसपंथ के पीछे पड़ जाते हैं तो आश्चर्य होता।

महासभा तेरापंथ और बीसपंथ को विवाद का विषय नहीं मानती। ऐसा

शेष पृष्ठ ७९ पर. . .

जैन गजट द्वारा कानजी पंथ का विरोध क्यों?

जैन गजट अ.भा.दि.जैन धर्म संरक्षिणी महासभा का मुख पत्र है। सच्चे देव शास्त्र गुरू का अवर्णवाद न होने देना उसका पहला और मुख्य संकल्प है। आज उस संकल्प की पूर्ति के मार्ग में हमारे सामने अनेक चुनौतियां खड़ी की जा रही हैं। हम उनके समक्ष न झुकने के अपने निश्चय को पुनः दुहराते हैं।

सोनगढ़-विचारधारा ने सच्चे देव-शास्त्र-गुरू की सदैव अवमानना की है। सूर्यकीर्ति के नाम से उसने एक कपोल कल्पित नये तीर्थंकर के परमाराध्य बनकर प्रकट हुये हैं। विवाह शादियों के निमंत्रण पत्रों पर अवतरित होकर वह नव दम्पत्तियों को दीर्घ संसार का आशीर्वाद देते हैं तथा यह घोषित करते हैं कि जो जीवन भर अव्रती और असंयमी बने रहकर भोगों को भोगते हुए मोक्ष पाने की अभिलाषा रखते हों, वे इनकी शरण में आ जायें। उनके इस दुस्साहस का देशव्यापी विरोध भी हुआ है किन्तु वे बेशर्मी से उसका औचित्य सिद्ध करने में प्राणपन से जुटे हुये हैं। जयपुर ग्रुप ने पहले तो इसके विरोध का नाटक किया था किन्तु अब वह भी इस ओर से न केवल वीतराग ही है, बल्कि प्रकारान्तर से विरोध करने वालों को ही कोसते हुए उसे देखा जाता है। कारण स्पष्ट है कि सोनगढ़ का खुला विरोध जयपुर-ग्रुप को हमेशा महंगा पड़ा है।

जैन गजट मानता है कि सोनगढ़ और जयपुर के मुमुक्षु एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इनका टकराव सत्तामूलकथा। वैचारिक मतभेद इनमें कतई नहीं है। सोनगढ़ और जयपुर की समस्त चल-अचल विभूति स्वामी जी के ही प्रभाव का परिणाम थी। आज जिसके पल्ले जो पड़े की नीति के आधार पर दोनों धड़ों ने अपना अपना स्वतंत्र वर्चस्व कायम कर लिया है। इसलिये उनमें बंटवारे का कोई झंझट ही नहीं रह गया है। वैचारिक धरातल पर दोनों पहले भी एक थे और आज भी एक हैं। दोनों ही निश्चय एकांत के प्रबल पोषक हैं और एकान्त दृष्टिकोण को हमारे शास्त्रों में मिथ्यात्व कहा गया है।

सोनगढ़ और जयपुर के तथाकथित मुमुक्षु दोनों ही सहोदर भाई हैं। दोनों के जनक समयसार के अनवरत पाठी एवं आजीवन अव्रती श्री कानजी स्वामी हैं। वह स्वयं तो अव्रती रहे हैं, उन्होंने अन्य किसी को भी व्रती बनने की प्रेरणा नहीं की। उनके सभी अनुयायी व्रत-संयम ग्रहण करने के मामले में नियतवादी और रोजी रोटी कमाने के संदर्भ में पुरूषार्थवादी बने हुये हैं। क्रमबद्ध पर्याय का गढ़ा हुआ उनका सिद्धान्त एक ऐसा मुखौटा है, जिससे वीतरागता का अभिनय करने में उन्हें सुभीता रहता है। स्वामी जी के जसलोक से परलोक प्रयाण के बाद इन दोनों भाइयों में सम्पत्ति के स्वामित्व और उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर अस्थायी द्वन्द्व हुआ था, जो अब पाकिस्तान और बंगलादेश के विभाजन की आत्म स्वीकृति की तरह शान्त हो चुका है।

स्वामी जी के मुख से बहुत सी बातें ऐसी निकल जाती थीं, जिन्हें पचाना जैन समाज के लिए कठिन होता था। उनकी रागजनित कषाय बहुत गहरी थी। उदाहरण के लिये चम्पा बहिन के प्रति उनका लगाव इतना गहरा था कि उन्होंने उनकी तुलना राजुलमती से की और राजुल के व्यक्तित्व को उनके सामने बहुत बौना बनाने की धृष्टता की। उन्होंने मोह-मदिरा के नशे में यहां तक फतवा दे दिया कि चम्पा जी के तलवे चाटने से भी सम्यग्दर्शन हो सकता है। बहिन जी के बोलों पर उन्होंने समयसार की तरह ही प्रवचन किये और अब उनकी मनोभावना के अनुसार वहां उन बोलों को परमागम की तरह उत्कीर्ण भी करा दिया गया है। उसी का बदला चम्पाजी तीर्थंकर के रूप में उनकी मूर्तियां स्थापित कराके चुका रही हैं। लेकिन उनके शेखचिल्लीपन को बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए।

कानपंथियों की एक नीति है- जो मेरा है सो मेरा है ही, दूसरों के हिस्से में से हम कितना और हड़प सकते हैं मैं अपनी इस बात को थोड़ा और स्पष्ट करना चाहूंगा। जो मंदिर उन्होंने बनवाये हैं उन पर तो पूरा-पूरा अधिकार उनका है ही उन मंदिरों में आपको कानजी स्वामी और उनके अनुयायी पंडितों या संस्थाओं द्वारा प्रणीत या प्रकाशित साहित्य ही मिलेगा। स्वामी जी की विचारधारा से मेल न खाने वाले पुराने अन्य दिगम्बराचार्यों की मूल कृतियां अथवा जो स्वामी जी को अपना इष्ट नहीं मानते, ऐसे गैर सोनगढ़ी विद्वानों द्वारा लिखित साहित्य वह वहां नहीं रखने देते। हां, जिन मंदिरों पर उनका कोई अधिकार नहीं है, उनमें अपना साहित्य रखने की जिद वह अवश्य ही करते हैं ताकि वहां भी पैर जमाने और दखलंदाजी करने का अवसर उन्हें मिल सके।

उनकी संस्थाओं में वही व्यक्ति सदस्य हो सकते हैं, जो पूरी तरह स्वामी जी के मिशन के प्रति समर्पित हैं, वह समाज की सभी संस्थाओं का समर्थन तो चाहते हैं किन्तु अपनी संस्थाओं में उनकी भागीदारी के सारे दरवाजे और खिड़कियां बंद रखकर ही। एक निश्चित दूरी बनाये रखकर ही वह उनसे संवाद का रिश्ता जोड़ते या जोड़े हुए हैं। पुरानी तीर्थरक्षा कमेटी में तो वह सदस्य रहना चाहते हैं किन्तु अपनी खड़ी की हुई तथाकथित तीर्थरक्षा समिति में वह गैर सोनगढ़ियों की छाया को भी नहीं आने देंगे। वह सिर से पैर तक अलगाववादी हैं, इसके लिए दिमाग पर जरा भी जोर देने की आवश्यकता नहीं है। ढेरों प्रमाण हमारे सामने हैं।

श्री कानजी स्वामी प्रभावक व्यक्तित्व के धनी थे और उनका पुण्योदय भी बड़ा प्रबल था। उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से उसका उपयोग इस तरह से किया कि जिससे उनकी छवि एक मसीहा के रूप में उभरकर समाज के सामने आ सके। यह तो निश्चित है कि स्थानकवासी सम्प्रदाय को छोड़ने का कारण दिगम्बर धर्म के प्रति अनुराग नहीं था। उसके पीछे तो कुछ और ही बातें थी। इस सम्प्रदाय को छोड़ने के बाद कुछ दिनों तक वह अज्ञातवास में रहे थे। चूंकि स्थानकवासियों में उनकी वापिसी उनके प्रति उस समाज के प्रबल विरोध के कारण किसी भी प्रकार संभव नहीं थी, इसलिए दिगम्बरों में घुसपैठ करके एक नयापंथ चलाने का विचार उन्हें बाद में सूझा। इसके लिए उन्होंने ग्रंथराज समयसार को माध्यम बनाया और खूब जोर-शोर से यह प्रचारित कराया कि इस ग्रंथ को पढ़कर उनकी दृष्टि बदल गई है किन्तु वास्तविकता यह नहीं है।

स्वामी जी के मन में स्वयं को एक महन्त या मठाधीश की तरह पुजवाने की महत्वाकांक्षा हिलोरें मार रही थी। सुखिया और सुकुमार वह इतने थे कि संयम उनसे सध नहीं सकता था। असंयमी बने रहने पर भी अपने को पुजवाने की एक आशा उन्हें समयसार में दिखी। यह ग्रन्थ

निश्चयनय की मुख्यता से रचित है। स्वामी जी ने व्यवहार दृष्टि का सर्वथा लोप करते हुये इस ग्रंथ की इस तरह से व्याख्या की कि जिससे नियतिवाद का पोषण हो और आत्मविश्वास के लिए कुछ करने धरने से छुट्टी मिल जाए। सदियों से हमारे समाज में संयम और त्याग को आदर मिलता रहा है लेकिन उन्होंने पर्यायें क्रमबद्ध ही होती है, निमित्त सर्वथा अकिंचित्कर है, पुण्य भी पाप की तरह की बंध का कारण है, व्यवहार कदापि भूतार्थ नहीं है जैसे अनेक मनमाने सिद्धान्त गढ़कर उनका प्रचार का शुरू किया और संयम को संसार का आधार सिद्ध करने में अपनी सारी शक्ति खपा दी।

समाज के कुछ धनिकों को स्वामी जी की ये नई व्याख्यायें भा गई। दो नम्बर की ये नई कमाई करते और भोग भोगते हुये भी धर्मात्मा कहलाने का प्रमाण पत्र जब उन्हें स्वामी जी की ओर से मिलने लगा तो वे भी उनके इशारे पर पैसों की वर्षा करने लगे और इस प्रकार धन के रथ पर बैठकर उनका धर्म आगे बढ़ने लगा। उत्तर भारत में फिर भी उनका प्रचार वर्षों तक नहीं हुआ तो यहां के कुछ विद्वानों को भी पैसों के लालच से अपने अनुकूल कर लेने में उन्हें ज्यादा कठिनाई नहीं हुई।

स्वामी जी की व्याख्यान शैली सदैव एकान्त की ओर झुकी रही और उससे एक ऐसी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला, जो समाज के लिये विघटनकारी रही है। उन्होंने सबसे पहले मुनियों को अमान्य किया। हमारे देखने और सुनने में आज तक यह नहीं आया कि उन्होंने या उनके पक्के शिष्यों ने कभी किसी मुनि के चरणों में शीष झुकाया हो। हां, यदा-कदा उनका यह कर्तव्य अवश्य प्रचारित किया गया कि मुनि तो चलते फिरते सिद्ध हैं। यह तो ऐसे ही हुआ जैसे हमारी सरकार अपनी कार्य सिद्धि के लिए अक्सर महात्मा गांधी के नाम की दुहाई देती है किन्तु उने बताये मार्ग पर चलती नहीं है।

कानजी पंथियों ने मिशनरी तकनीक अपनाई है। उनके अनुयायी हर शहर में यद्यपि मुट्ठी भर ही हैं किन्तु उनमें संगठन खूब है। एक बार किसी मंदिर पर यदि उनका अधिकार हो जाए तो फिर वह उसे छोड़ते नहीं है आध्यात्मिक एकान्त की ओर ढले हुये इनके प्रवचनों को चंद लोगों पर ऐसा ही असर होता है जैसा कि अफीम का होता है। आज ऐसी नशीली दवाओं का आविष्कार हो चुका है। जिनके सेवन से किसी व्यक्ति की पुरानी धारणाओं और स्मृतियों को मिटाया जा सकता है। कानजी पंथियों को भी कुछ लोगों के मस्तिष्क से व्रतवान चारित्र के संबंध में आगम सम्मत मान्यताओं को धो देने में सफलता मिली है और उन्होंने उन्हें एकान्त मिथ्यात्व का पोषण करने के लिये विवश कर दिया है।

श्री कानजी स्वामी से हमें कोई चिढ़ नहीं हैं किन्तु उनके द्वारा पोषित प्रवृत्तियां न केवल अलगाववादी ही है बल्कि दिगम्बर जैनाचार्यों की मान्यताओं के प्रतिकूल भी है, इसलिए उनका विरोध आवश्यक है। अपने इस लेख को हम स्व. श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार कर आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व लिखी इन पंक्तियों से पूर्ण करना चाहेंगे:-

"कानजी स्वामी और उनके अनुयायियों की प्रवृत्तियों को देखकर लगता है कि कहीं जैन समाज में यह चौथा सम्प्रदाय तो कायम होने नहीं जा रहा है जो दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासी सम्प्रदायों की कुछ-कुछ ऊपरी बातों को लेकर तीनों के मूल में ही कुठाराघात करेगा और उन्हें आध्यात्मिकता के एकान्त गर्त में धकेल कर एकान्त मिथ्यादृष्टि में यत्नशील होगा, श्रावक तथा मुनिधर्म के रूप में सच्चारित्र एवं शुभ भावों का उत्थापन कर लोगों को केवल आत्मार्थी बनाने की चेष्टा में संलग्न रहेगा, उसके द्वारा शुद्धात्मा के गीत तो गाये जायेंगे परन्तु शुद्धात्मा तक पहुंचने का मार्ग पास में न होने से लोग "इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टाः" की दशा को प्राप्त होंगे और उन्हें अनाचार का डर नहीं रहेगा।"

तीस वर्ष पूर्व की गई यह भविष्यवाणी आज एक यथार्थ के रूप में हमारे सामने है। कानजी पंथ चाहे सोनगढ़ी आकार में हो या जयपुर की शक्ल में, समाज के लिए एक प्रबल चुनौती है और उनकी चालों से सदैव सजग रहने की आवश्यकता है। जैन गजट सदा की तरह ही अपने देवायतनों, ग्रन्थालयों और साधु संस्था पर उनकी ओर से आने वाले खतरों से समाज को सावधान करता रहेगा। यह उसका दायित्व भी है और कर्तव्य भी है।

(सम्पादकीय-सार: दिनांक १८ नवम्बर एवं २ दिसम्बर, १९८६)

पृष्ठ ७७ का शेष. . .

करो और ऐसा मत करो, इस प्रकार का उसका कोई आग्रह नहीं है। इस संदर्भ में वह तटस्थ दृष्टि रखती है। तेरा और बीस वास्तव में कोई पंथ नहीं, मात्र पद्धतियों के मानने वाले विद्वान हैं। कोई तेरापंथ को पसंद भी करता हो, तो भी बीसपंथ से किसी को कोई एलर्जी नहीं होनी चाहिए। महासभा वस्तुतः आगमपंथी है और उसका लक्ष्य धर्म की सुरक्षा है। धर्म कर्तव्य पालन का ही दूसरा नाम है। देव पूजा, गुरूसेवा, स्वाध्याय, संयम तप और दान ये षडावश्यक ही गृहस्थ के मुख्य कर्तव्य हैं। पूजा-अभिषेक कैसे करें, इस बारे में कोई निर्देश-आदेश न देकर महासभा इस बात पर जोर देती है कि ऐसा कोई काम न करें, जिससे पाप-बंध हो। पांच पापों अथवा चार कषायों से प्रत्येक प्राणी को बचना चाहिये। ये ही बंध के कारण हैं। अष्टान्हिका चतुर्दशी तथा अन्य पर्व तिथियों पर यथा शक्ति एकाशन-उपवासादि करना चाहिये। जो करते हों, उन्हें समुचित आदर दें। यही आगम-मार्ग है। कहा भी है:-

' जं सक्कई तं कीरइ जं पुण सक्कई तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो पावई-अजरामरं ठाणं।।

तेरापंथ-बीसपंथ के विवाद को उछालकर समाज के वातावरण को बोझिल बनाना हमारी दृष्टि में सर्वथा अवांछनीय है। आशा है, प्रबुद्धजन इस पर विचार करेंगे।

बीसवीं शती का अन्तिम दशक : महासभा का चरमोत्कर्षकाल

- डॉ० राजीव प्रचंडिया

कोई भी संस्था समाज में चिरंजीवी, लोकप्रिय व सर्वमान्य तभी रह सकती है जब वह धर्म व संस्कृति के संवर्धन में तथा समाज में एकता व शांति-सौहार्दता को बनाए-बचाए रखने में सतत सक्रिय व समर्पित होकर कार्य करती रहे। ऐसी ही जैन धर्म व संस्कृति से अनुप्राणित एक संस्था है जो गत चालीस पचास वर्षों में नहीं, सौ वर्षों का अपना इतिहास संजोए हुए है, जो अपने आपमें एक बड़ी बात है। समय-समय पर इसके द्वारा सम्पादित-संयोजित अनेक महत्वपूर्ण रचनात्मक व उपयोगी-उपादेयी कार्यों को समाज द्वारा बिना किसी लाग-लपेट के मुक्त कंठ से सराहा गया है। यह परिचित-सुपरिचित संस्था और कोई नहीं है श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा है।

अनेक अब्दियों से सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक उतार-चढ़ावों की शांति भाव से प्रेक्षा करती हुई यह संस्था अपने उद्देश्यों-लक्ष्यों पर सदा अडिग बनी रही और आज भी कृत संकल्पित है। परिणामतः आज इस संस्था की अपनी पहचान है। दिगम्बर जैन समाज की यह एक मात्र प्रभावी, व्यापक व गांव-गांव में समावृत्त यानी सम्पूर्ण देश और विदेशों में भी अपनी धाक जमाये हुए है। निश्चय ही यह संस्था जैन धर्म-संस्कृति से अनुप्राणित होकर अपने प्रयोजनों को असली जामा पहनाते हुए प्रगतिपथ पर सतत आरूढ़ है।

इस संस्था की बढ़ती हुई सम्यक् गतिविधियों को देखते हुए किसी के भी मन में यह प्रश्न अद्भुत होना सहज सम्भाव्य है कि क्या बीसवीं शती के अंतिम दशक में यह संस्था अपने चरमोत्कर्षकाल पर है। इस संदर्भ में पहले हमें चरमोत्कर्षकाल को समझना होगा। चरमोत्कर्षकाल का अर्थ अभिप्राय है जिस और जितनी अवधि में जो संस्था जिन उद्देश्यों को लेकर संस्थापित हुई हो उन उद्देश्यों को प्रभावक ढंग से पूरा करने में शत प्रतिशत यदि सफल है तो उस संस्था के लिए अवधि-काल चरमोत्कर्षकाल कहा जाएगा इस दृष्टि से महासभा के गत दस वर्षों के क्रियान्वयन को देखते हुए इस शती का अन्तिम दशक निश्चय ही इसके लिए चरमोत्कर्ष का काल कहा जाएगा और महासभा के लिए यह कथन किसी भी कोण से अत्युक्त भी न माना जाएगा। इस अवधि में महासभा ने जो उपलब्धियां अर्जित की हैं, बहुमुखी विकास अर्थात् दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति जो की है, रचनात्मक कार्य जो किया है और आज भी उन कार्यों को करने के लिए सदा तत्पर है,निश्चयेन वरेण्य है, प्रशंसनीय है। पर यह बात भी हमें खुले मन से स्वीकारनी होगी कि गत दस वर्षों में इस संस्था के द्वारा जो कार्य जिस ढंग से किए गए हैं वे कार्य कभी भी इतने प्रभावक और महत्वपूर्ण ढंग से अन्यकाल में इसके द्वारा सम्पन्न न हो सके, परिस्थितियां कुछ भी रही हों।

गत दशक में महासभा द्वारा अबाध एवं द्रुतगति से जो कार्य सम्पन्न हुए हैं जिनके कारण यह संस्था अपने चरमोत्कर्ष काल में कही जाने लगी है, कतिपय बिन्दुओं को छूने का इस लेख में प्रयासभर किया गया है।

धर्म जीवन का मूलाधार है। बिना धर्म के जीवन निस्सार है। जिस समाज में धर्म की प्रधानता न हो वह समाज निरापशुवत है और इस पशुता को समाज में प्रवेश न पाने देने के लिए महासभा ने आज से सौ वर्ष पूर्व धर्म-संरक्षण का जो बीड़ा उठाया उसका व्यापक प्रतिफल गत दस वर्षों में विशेष रूप से दृष्टव्य है। हमारे आराध्य जिन पर हम और हमारी पूरी परम्परा, सम्पूर्ण संस्कृति टिकी है, उन पर कोई, किसी प्रकार का व्याघात न हो, उपसर्गादि न आने पाए, महासभा ने अपने स्तर पर उनकी रक्षार्थ अनेक कारगर कदम उठाए।

हमारे सच्चे आराध्य हैं- देव, शास्त्र और गुरु। देव अर्थात् तीर्थंकर जहां-जहां मूर्तरूप में प्रतिष्ठित हैं अर्थात् तीर्थों एवं प्राचीन मंदिर-देवालयों को परकीय शक्ति व सत्ता से बचाए रखना, हमारे जो पहाड़ परकीय लोगों द्वारा कब्जाए हुए हैं, उनसे मुक्ति दिलाने हेतु ठोस योजनाएं, जो तीर्थ-मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो गए हैं। उनका जीर्णोद्धार कराना और पंचकल्याणकों आदि के माध्यम से उनमें आराध्य-मूर्तियों को पुनर्स्थापित करना कराना महासभा का मूल प्रयोजन है। समग्र समाज गत वर्षों में एक दयनीय स्थिति से गुजर रहा है। व्यक्ति स्वयं और उसका परिवार आज बेहद असुरक्षित है। ऐसी स्थिति में मंदिरों से अष्टधातु आदि की और बहुमूल्य प्राचीन भव्य प्रतिमाओं के चोरी हो जाने पर या खण्डित कर देने पर ऐसे कुचक्रों या कथित साजिशों से मूर्तियों को बचाए रखने और जो चली गई उनको शासन-प्रशासन आदि के माध्यम से खोज-बीनकर वापिस दिलाने में या यूं कहे आस्था और जैन मूर्तिकला को अक्षुण्ण बनाए रखने में महासभा की भूमिका किसी से प्रच्छन्न नहीं है, विशेषकर पिछले दस वर्षों में। इतना ही नहीं इन वर्षों में मंदिरों या तीर्थों में पूजा-प्रक्षालन तथा शास्त्र वाचन-प्रवचन आदि के लिए पुजारियों-पंडितों का जहां अभाव था और है वहां उनकी नियुक्ति कर उनके यथोचित सम्मानपूर्वक भरण-पोषण करने की यथाशक्ति व्यवस्था जुटाना अपने आपमें महासभा का यह एक भागीरथ कार्य माना जाएगा। यह बात ध्यातव्य है कि हमारे देव और उनके तीर्थादि देवालय यदि सुरक्षित हैं तो हम भी सुरक्षित हैं। उनकी पवित्रता को बनाए रखना हम सबका पुनीत कर्तव्य है।

जिनवाणी के अभाव में हमारी संस्कृति, हमारी परम्परा का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है, महासभा का यह सुनियोजित विचार निश्चय ही समयानुकूल एवं सटीक कहा जाएगा, इसी को ध्यान में रखते हुए महासभा ने गत दस वर्षों में बड़ी द्रुतगति से जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह है हमारे प्राचीन दुर्लभ हस्तलिखित शास्त्रों को संजीवित रखना तथा लुप्त-विलुप्त आगम को प्रकाश में लाना। जिनेन्द्र भगवान की दिव्य ध्वनि से प्रसूत गणधरों द्वारा लिपिबद्ध/संकलित जिनवाणी को वेस्टनों आदि में, मंदिरों-वाचनालयों में सुरक्षित रखना और जो जीर्ण-शीर्ण हो गए उनका बड़ी सावधानी पूर्वक मनीषी मुनिवृन्द के पवित्र सानिध्य में आर्ष आम्नाय के अधिकारी विद्वान-पंडितों के द्वारा तथा श्रेष्ठिवर्तों के सौजन्य से पुनर्प्रकाशन का बीड़ा उठाना साथ ही ताम्रपत्रों में आगम को संकलित-सुव्यवस्थित करने की भव्य योजना इस शती में महासभा का यह सचमुच श्लाघनीय कार्य है। इसके अतिरिक्त जैन धर्म व संस्कृति के अनुप्राणित होकर योग्य मनीषियों द्वारा सरल व सुबोध शैली में अनेक ट्रैक्ट्स का प्रकाशन और उनका वितरण भी अपने आपमें एक महत्वपूर्ण कार्य है।

आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज धर्मस्थल नगरी में प्रवेश करते समय साथ में धर्माधिकारी वीरेन्द्र हेगड़े, चारूकीर्ति भट्टारक श्रवणबेलगोला, चारूकीर्ति भट्टारक मूडबिद्री, पं. नीरज जी जैन, फोटो में उपर में भगवान बाहुबली का मनोहर दृश्य।

धर्मस्थल में श्री वीरेन्द्र हेगड़े का सम्मान करते हुये पदाधिकारी श्री उम्मेदमल जी पांड्या, श्री निर्मल कुमार जी सेठी आदि।

धर्मस्थल में श्री वीरेन्द्र हेगड़े निर्मल कुमार जी को प्रतीक भेंट करते हुये।

बाल ब्र. सुश्री कमलाबाई जैन आई कैम्प में रोगियों के साथ एव बृजमोहन जी आदि।

शाकाहार का प्रचार - - - अण्डों से हार्टअटैक

जैन सिद्धान्त शिक्षण शिविर समापन समारोह में उपस्थित महासंभा पदाधिकारी श्री मदनलाल जी बैनाड़ा, निर्मल कुमार जी, पं. श्री सुमति चन्द्र जैन शास्त्री, नरेन्द्र प्रकाश जी श्री हीरालाल बरैया, संजय जैन आदि।

कलकत्ता नगरी में शताब्दी समारोह पर बड़ा मंदिर जी में पंडित श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन प्रवचन करते हुये।

आई कैम्प में रोगियों के साथ पूछताछ करते हुये ब्र. कमलाबाई जी

ग्वालियर नगरी में जो शिविर लगा था उसमें शिविर कुलपति का स्वागत करते हुए श्री सतीश अजमेरा

श्री निरंजनलाल बैनाड़ा का स्वागत करते हुए श्री गौतम गोधा

स्वागताध्यक्ष द्वारा श्री मदनलाल बैनाड़ा का स्वागत

श्री सतीश चन्द्र जैन दीप प्रज्जवलन करते हुए
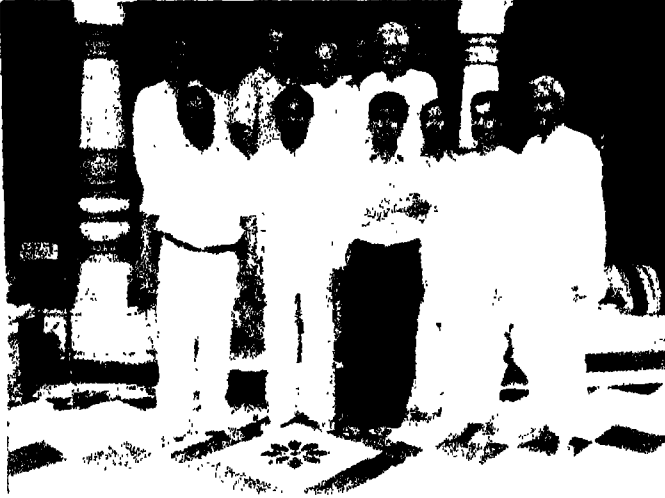
शिविर-कुलपति एवं शिविर-पदाधिकारीगण सर्वश्री गौतम गोधा, भोलानाथ जैन, पारसमल गंगवाल, प्रो० नरेन्द्रप्रकाश जैन, हीरालाल बरैया, लालमणि प्रसाद जैन, मुकेश जी, अनिल जी, संजय (बन्टी), चन्द्र प्रकाश जैन, कमलकुमार जैन एवं धर्मचन्द्र जैन शास्त्री

सभा-मंच पर उपस्थित महानुभाव का स्वागत करते हुए लालमणि जैन

ठाटीपुर कालोनी में छहढाला की कक्षा का एक दृश्य

झण्डारोहण करते हुए श्री निरंजनलाल बैनाड़ा

हमारे तीसरे आराध्य हैं जंगम तीर्थ अर्थात् द्रव्यलिंगी मुनि। इनका संरक्षण करना, महासभा का एक लक्ष्य है। महासभा संकल्पित है इस लक्ष्य को सार्थ करने में। जिस आस्था निष्ठा के साथ गत दस वर्षों में महासभा इसको पूरा करने में जुटी हुई है, वह अपने आपमें एक महान कार्य है। गत वर्षों में मुनियों पर स्वकीय/सजातीय या परकीय/विजातियों द्वारा आए विघ्न जो उपसर्ग होते रहे हैं या हो रहे हैं उनके रोकथाम के लिए महासभा ने शीर्षस्थ आचार्यों के साथ मिलकर गत वर्ष दिगम्बर जैन मुनियों के लिए जो आचार संहिता निर्धारित की है, उससे महासभा की सूझबूझ का परिचय मिलता है। महासभा का यह निर्णय भविष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। आचार संहिता में जो नियम बनाए गए हैं उनमें से कुछ हैं- मुनियों का एकल विहारी न होना, कम और अपरिपक्वों को जिनदीक्षा दें, जो भी दीक्षाएं दी जाएं वे बड़ी सोच-समझकर, परख-निरखकर दी जाएं। कोई भी द्रव्यलिंगी मुनि चन्दा-चिट्ठा से सरोकार न रखें आदि-आदि। इस संदर्भ में एक बात और वह यह कि जो मुनि-साधक आर्ष विद्याओं को पढ़ना-सीखना चाहें तो उन्हें इसके लिए अधिकृत विद्वान जुटाए जाएं।

महासभा ने गत दस वर्षों में एक कार्य और महत्वपूर्ण किया वह है कि आगम मनीषी, आर्षविद्या में पारंगत जो बुजुर्ग हैं, शिथिल हैं, उनके आत्मसम्मान को रखते हुए उन्हें संरक्षण देना और जो युवा विद्वान हैं उन्हें पुरस्कार, उपाधि देकर सम्प्रेरित करना साथ ही विदेशों में समय-समय पर ऐसे विद्वानों को भेजकर धर्म-दर्शन व संस्कृति का वहां के निवासी-प्रवासियों को परिज्ञान कराना।

गतवर्षों में महासभा ने समाज की गरीब और असहाय, अबलाओं-महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली योजनाओं को क्रियान्वित किया तथा बेरोजगार युवकों को रोजगार में मदद इस शर्त पर की कि ये सभी धर्म पूर्ण जीवनचर्या जिएं अर्थात् षट्रावश्यकों को यथासंभव पालन करते हुए नित्य देव दर्शन करें, रात्रिभोजन का त्याग करें तथा जल छानकर पीएं और मिथ्यात्व का सहारा न लें। इसके अतिरिक्त होनहार छात्र-छात्राओं को जो आई.ए.एस. जैसी उच्च प्रशासनिक सेवाओं में चयनित हुए हैं, या फिर विशिष्ट कलाओं, खेलों आदि क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किया है, उन सभी का सम्मान इस उद्देश्य से किए जाने की परम्परा डाली जिससे हमारी समाज के अन्य युवक-युवतियां इससे प्रोत्साहित हों, प्रेरित हों।

महासभा ने अपनी शाखाओं-प्रशाखाओं के माध्यम से गांव-गांव में जाकर लोगों को एक धारा में जोड़ा। जो परकीय सत्ता-शक्ति से घिरे थे उन्हें उनसे मुक्त कराकर मिथ्यात्व से उन्हें बचाया और यह अहसास दिलाया कि पूरा समाज आपके साथ है ऐसा सम्बल या सहारा देकर उनके मनोबल को ऊंचा उठाते हुए सद्मार्ग की ओर सम्प्रेरित करते हुए सम्यक्त्व की ओर लगाया। इसके अतिरिक्त सराक जातियों को भी प्रकाश में लाने का महासभा द्वारा विशेष रूप से गतवर्षों में यह बीड़ा उठाया गया।

महासभा द्वारा इन दस वर्षों में बड़ी तेजी से बालकों युवकों में जो चारित्रिक गिरावट आयी है उसके परिहार हेतु अनेक योग्य प्रशिक्षकों द्वारा अनेक बार अनेक स्थानों पर संस्कार-शिविर आदि लगाए गए जिनसे उन्हें सुसंस्कारित बनाया जा सका। महासभा द्वारा गत दस वर्षों के भीतर बालकों के लिए जैन बालादर्श मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी कराया गया जो आज भी निरंतर व नियमित प्रकाशित हो रही है। इसमें प्रकाशित सभी सामग्री जहां सरल व सुबोध शैली में होती है वहीं चार-अनुयोगों विशेषकर प्रथमानुयोग से मण्डित सामग्री का चयन भी अपनी विशिष्टता को लिए हुए है। यूं तो जैन गजट (साप्ताहिक) और जैन महिलादर्श (मासिक) भी इसके पुरातन प्रकाशन हैं पर गत दश वर्षों में इनमें जो सामग्री प्रकाशित हुई है, उससे समग्र समाज किसी न किसी रूप में अत्यधिक लाभान्वित हुआ है और हो रहा है। पूरे देश की साथ ही विदेश की दिगम्बर जैन समाज में हो रही गतिविधियों के समाचारों से निष्पक्षता के साथ लोगों को अवगत कराना जैन गजट का विशिष्ट महत्व है। जब कभी भी जिस रूप में जैनधर्म दर्शन या इसके सिद्धान्तों पर विसंगतियों या कुरीतियों का समाज में प्रचार प्रसार हुआ तब-तब उन पर निर्भीकता के साथ करारी चोट करते हुए जैन गजट की सम्पादकीय अवश्य ही इस दिशा प्रभावन्त मानी जाएगी।

अन्ततः इन दस वर्षों में महासभा ने समाज के लिए जो चहुंमुखी विकास किया है उसका समग्र विवरण इस संक्षिप्त आलेख में असंभव है तदपि कतिपय बिन्दुओं का उल्लेख कर समाज का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास भर है। साथ ही यहां यह बताना भी असंगत न होगा कि महासभा के विविधमुखी विकास का पूरा श्रेय यदि श्रीयुत् निर्मल कुमार जी सेठी को दिया जाए तो यह गलत न होगा क्योंकि महासभा के अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित होते ही आपने तबसे अब तक तन मन व धन से पूरी तरह से समर्पित होकर महासभा के माध्यम से समाजसेवी के रूप में समाज को एक नई दिशा और जागृति दी है, चेतना और क्रांति दी है। बड़े शांत भाव से, उदारदृष्टि से, सबकी ऊंच-नीच सुनते हुए समभावी होकर आप अपने मिशन में बराबर लगे हुए हैं और बीड़ा उठाए हुए हैं, वस्तुतः बड़ी बात है। आप अपने सरलस्वभावी, मृदुभाषी, दूरदर्शिता, व्यवहारपटुता और कार्यकुशलता से लोगों के दिलों में विशिष्ट स्थान बनाए हुए हैं। प्रत्येक विशेषकर युवा वर्ग के लिए तो आप एक प्रकार से प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। सही अर्थों में आप महासभा को ऊर्जा दे रहे हैं। आपकी सबसे बड़ी खूबी है कि आप महासभा को समय-समय पर अनेक अनूठी एवं समाजोपयोगी योजनाएं प्रस्तुत करते रहे हैं। आपके मन में बहुत वर्षों से महासभा के बैनर पर एक दिगम्बर जैन डीम्ड यूनीवर्सिटी खोलने का विचार चल रहा है, बस उपयुक्त स्थान के चयन का विचार चल रहा है, बस, उपयुक्त स्थान के चयन का निर्णय भर की देर है, इसके खोलने का एक मात्र उद्देश्य यही है कि हमारे बच्चे अपनी आम्नायानुरूपी जैन संस्कृति से प्रदीक्षित होते हुए उच्च शिक्षार्जन कर सकें। आगे आने वाले समय में आपके सत्कार्य निश्चित ही मील का पत्थर साबित होंगे। आप निश्चय ही महासभा के पर्याय हैं। महासभा आपको पाकर कृतकृत्य है।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी और उनकी टीम जिसमें जैन गजट के सम्पादक प्राचार्य श्रीयुत नरेन्द्रप्रकाश जी जैन प्रभृति विद्वानों की भूमिका सराहनीय रही है, के नेतृत्व में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रही यह संस्था जिसे समस्त दिगम्बर जैन साधु-संतों का आशीर्वाद प्राप्त है, इसी तरह अपने मिशन में सफलता प्राप्त करती रहेगी, इस विश्वास के साथ हमारी ओर से अनन्त मंगल कामनाएं ऐसी महान संस्था को समर्पित हैं।

- मंगल कलश, ३९४, सर्वोदय नगर
आगरा रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.) पिन कोड- २०२००१

परमार्थ कभी अर्थ/धन की तुला पर तौला नहीं जा सकता

इक्कीसवीं सदी : महासभा से समाज की अपेक्षायें

- शिवचरनलाल जैन

श्री भारतवर्षीय दि. जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा वस्तुतः दिगम्बर जैन समाज की मौलिक एवं प्रतिनिधि संस्था है। इसका स्वर्णिम, दीर्घ शतवर्षीय अतीत है। यह त्यागी, तपस्वी सन्तों से आशीर्वाद प्राप्त, मार्गदर्शन प्राप्त एवं सर्वप्रथम समाज का जीवन्त प्रेरणास्रोत है। जन्म से लेकर अद्यावधि निरन्तर यह समाज एवं धर्म के उत्थान में अग्रसर रही है। पूरी बीसवीं शताब्दी का जैन इतिहास महासभा का ही इतिहास है।

आगे इक्कीसवीं सदी दस्तक दे रही है। यह स्वाभाविक ही होगा कि अ.भारतवर्षीय दि.जैन समाज, जिसमें मुनिसंघ के साथ श्रावक वर्ग सम्मिलित हैं, के अन्तस् में अपने उत्थान हेतु महासभा से आशायें, अपेक्षायें हों। यह तत्व महासभा के शताब्दी महोत्सव समापन पर अवश्य ही गवेषणीय है। सर्वांगीण रूप से यह निर्विवाद अपेक्षा भी होगी कि महासभा अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपनी चिरन्तर पृष्ठभूमि-आधार पर नवीन निर्माण करने में सतत प्रयत्नशील हो। उद्देश्यों को बदलना तो कोई बुद्धिमानी नहीं है। इससे तो संस्था का मूलोच्छेद ही हो जाता है।

महासभा को साधु संरक्षण के पवित्र कार्य में दृढ़ता से कदम रखना होगा। वर्तमान में साधुता का जो अपवाद हो रहा है, संचार साधनों से भी साधु के सदोष आचार का जो वीभत्स रूप आम जनता के ज्ञानगोचर होता है उसका मूल कारण तो स्वयं उनका शिथिल सदोष आचार अधिकांश रूप में ज्ञात होता है। इसमें साधु संघ के परस्पर के मतवैभिन्य एवं अवात्सल्य भी गर्भित हैं। साथ ही मुनिविरोधी गतिविधियां, आगमविरूद्ध ज्ञानप्रचार तथा दिगम्बरत्व के प्रति विद्वेष भी समान रूप से उत्तरदायी हैं। इस समस्या का समाधान महासभा के द्वारा जैसे भी हो समाज का अपेक्षणीय है। अब तक प्रायः यह धारणा बलवती रही है कि मुनिसंस्थाओं की विसंगतियों के विषय में आचार्यादि साधु ही निर्णय कर सकते हैं। परन्तु वर्तमान तक इसके समाधान का अभाव यह प्रदर्शित करता है कि साधुसंघ के अतिरिक्त जागृत श्रावक वर्ग भी इस क्षेत्र में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करे। यह कार्य महासभा के इक्कीसवीं सदी के एजेण्डे में अपेक्षणीय है। साधु संघ के उपगूहन, सेवा, स्थितिकरण, संरक्षण में तो महासभा भी प्रशंसनीय संस्था है ही, श्रमण संस्कृति के मूल तत्व निरारम्भ और अपरिग्रह की रक्षा हेतु भी साधुवाद की पात्र होगी। दिगम्बर जैन मुनि संघ के विरोधी व्यक्ति या संगठनों के मात्र बहिष्कार से ही संतोष न करके उनके प्रति कठोर एवं दंडात्मक तथा औचित्यपूर्ण, वैधानिक आक्रामक कार्यवाही जैसी जहां अपेक्षित हो, करना अब महासभा के आवश्यकों में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

महासभा के उद्देश्यों का निष्कर्ष धर्मरक्षा का निष्कर्ष है वह सदैव धर्मरूपी निकष (कसौटी) पर सदैव खरी उतरी है। वर्तमान में सामाजिक विवाह आदि कार्यों में जो श्रावक के धर्म हनन रूप कार्य, दहेज, धन का दुरूपयोग, प्रदर्शन, अपव्यय, रात्रिभोज, कतिपय प्रसंगों में सुरा सेवन तथा अन्य मद्य सेवन के रूप दृष्टिगत होते हैं, उन पर प्रबल एवं सफल प्रहार करना होगा। इन कार्यों से सामाजिक विषमता, क्षोभ, हीन भावना तो उत्पन्न होती ही है साथ ही जैन के मुख्य चिन्ह देवदर्शन, गालित जल प्रयोग एवं रात्रिभोजन त्याग को ही जड़ से उखाड़ने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। निर्धन एवं निम्न मध्यम वर्ग को भी साथ लेकर चलना होगा। महासभा के अधिवेशन आदि के निर्णयों को धनिक वर्ग के साथ ही कमजोर वर्ग के अनुकूल करने की आवश्यकता है। इक्कीसवीं सदी का सूर्योदय श्रावक वर्ग के धर्म, अभ्युदय एवं प्रभावना के महत्वकार्य में ऊष्मा, ऊर्जा प्रदान करे यह लक्ष्य है।

वर्तमान दशक पंचकल्याणक आदि प्रतिष्ठाओं का कीर्तिमान दशक है। इन घोषित धार्मिक आयोजनों में लाखों क्या करोड़ों रूपया व्यय किया जा रहा है। इनमें मान बड़ाई का अनपेक्षित बोलबाला है। महासभा को इस ओर अवश्य ध्यान आकर्षित करना चाहिए। आवश्यक प्रतिष्ठायें धार्मिक विधि अनुसार सादगी से संपन्न हों इसमें किसी को आपत्ति नहीं है किन्तु फिजूलखर्ची में से धन बचाकर अन्य लोक कल्याण एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न हों यह भी कम महत्व का नहीं है। समाज के सभी प्रकार के विद्यालयों, छात्रावासों, अनाथाश्रमों, बाल मंदिर, पुस्तकालयों, नारी निकेतन आदि अभावग्रस्त संस्थाओं के ओवरहालिंग पर महासभा को त्वरित ध्यान देना अपेक्षित है। जिस प्रकार तीर्थ संरक्षण का कार्य माननीय अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी ने तीव्र गति से प्रारंभ किया एवं सभी महासभा का श्रेष्ठि वर्ग एवं प्रबुद्ध वर्ग इसमें उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर अग्रसर हुआ उसी प्रकार उपरोक्त शिक्षा तथा कल्याण कार्यों को शीघ्र करने की आवश्यकता है। महासभा में श्रेष्ठिवर्ग तन-मन-धन लगा रहा है वह चिन्तन कर धन का श्रेष्ठतर उपयोग करके महासभा को, दिगम्बर जैन समाज को ऊंचाइयों पर पहुंचा सकता है।

यह विदित ही है कि वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर महासमिति, परिषद भी कार्यरत है जिनका काम महासभा के समानान्तर ही दिखाई देता है। ये प्रतिद्वंदिता के ही पर्याय हैं। वर्तमान में महासमिति जिसका नाम है वह भ. महावीर के पच्चीस सौवें निर्वाण महोत्सव की भूमिका अदा करने वाली समिति थी कतिपय मत विभिन्नताओं और पारस्परिक मान सम्मान के प्रसंगों में यह कायम ही बनी रही। इसको तो अपने कार्य को पूर्ण करके सम्पूर्ण राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त करना चाहिए था तथा महासभा में ही विलीन होना चाहिए था। सभी मिलकर प्राचीन एवं प.पू. महर्षि शान्तिसागर जी की प्रेरणा और आशीर्वाद प्राप्त राष्ट्रीय महासभा से एकाकार होकर धर्म एवं समाज के रक्षण एवं संवर्द्धन में जुट जाते तो आज दिगम्बर जैन समाज की शान ही और होती। परिषद तो समाज सुधार का बीड़ा उठाकर सामने आई किन्तु बजाय समाज सुधार के वह आगम एवं धर्म विरोधी विधवा-विवाह और जाति प्रथा का निषेध आदि कार्यों को ही अपना चिन्ह बना बैठी। किन्तु जैन समाज ने तो उसे नकार ही दिया है। परिषद का अस्तित्व कागजों पर ही नजर आता है। उस समय भी जाति प्रथा को ही सर्वस्व रूप में न स्वीकार करने वाले पू. आ. ज्ञानसागर जी महाराज ने भी ब्र. शीतलप्रसाद जी की वर्ण-संकरता की निन्दा की थी और उसे धर्म विरोधी घोषित किया था। विधिवा विवाह के प्रचार को भी समाज के लिए अति नाशक बताया था। यहां मैं उनके द्वारा रचित श्लोक को उद्धृत करना चाहूंगा, दृष्टव्य है-

विवर्णतामेव विधान् प्रजास्वयं
निरम्बरेषु प्रविभार्ति विस्मयम्।
फलोपघाधारहरस्य शीतल-
प्रसाद एषोऽस्ति तमां भयंकरः।।२२।।

(वीरोदय महाकाव्य ९वां सर्ग)
सम्पादक- डा. हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री
प्रकाशक- गणेशीलाल रतनलाल कटारिया ब्यावर सन् १९६८

भावार्थ - यहां कवि ने अपने समय के प्रसिद्ध ब्र. शीतलप्रसाद जी की ओर व्यंग्य किया है, जो कि विधवा विवाह आदि का प्रचार कर लोगों में वर्ण-संकरता को फैला रहे थे तथा दिगम्बर जैनियों में अति आश्चर्य उत्पन्न कर रहे थे और अनेक धर्म विरोधी कार्यों से लोगों को धर्म के फल स्वर्ग आदि की प्राप्ति के मार्ग में रोड़ा अटका रहे थे। (ग्रन्थ से ही)

ज्ञातव्य है कि महासमिति का कानजी के सोनगढ़ पंथ और उसकी सिस्टर कंसर्न पर से मोहभंग हो चुका है एवं वह उनके दि. मुनि विरोधी मन्तव्य को भली प्रकार समझ चुकी है। वर्तमान में यह संस्था भी देश के सभी साधु संतों को सविनय मार्गदर्शक स्वीकार करती है। सोनगढ़ एवं टोडरमल स्मारक के एकान्त निश्चयाभासी तथा आर्षमार्ग मुनिमार्ग विरोधी साहित्य के विकृत रूप को समझ चुकी है। कहीं कहीं कुछ कानजी मत का पुट दृष्टिगोचर होता है वह भी समाप्तप्राय है। महासमिति में अर्थ सम्पन्न दूरदृष्टि, सूझबूझ के धनी, सक्रिय एवं प्रभावशाली महान व्यक्ति सम्मिलित हैं। श्रेष्ठ कार्य सम्पादन कर रहे हैं। किन्तु वह सब महासभा के समानान्तर एवं प्रतिद्वन्दिता रूप दृष्टिगोचर होते हैं। इक्कीसवीं सदी की सर्वप्रथम सामाजिक अपेक्षा यह होगी कि इन दोनों संस्थाओं का एकीकरण हो। जो भी, जैसे भी समाधान निकलना अति आवश्यक एवं दि.जैन समाज के हित में है। चूंकि यहां महासभा प्रकरण में है अतः इस पवित्र कार्य हेतु वह आगे आकर ससम्मान महासमिति के कर्णधारों को आमंत्रित कर अथवा अपेक्षित सयोजन कर समन्वय की दिशा में पहल करे। चूंकि दोनों संस्थायें प.पू. मुनिराजों, आर्यिकाओं के चरण कमलों की वंदना करते हैं, उनके प्रति समर्पित हैं, अतः उनका इस कार्य में सहयोग, आशीर्वाद, मार्गदर्शन आदि लेना अपेक्षित है। महासमिति को भी शीघ्र आगे आकर अवसर का मूल्यांकन करना चाहिए।

वर्तमान में समाज दो संस्थाओं की द्विविधा में पड़ा है किस संस्था से नाता जोड़े। नगरों, ग्रामों में दो दो संगठन मनोमालिन्य के कारण बने हैं। उन्नति का मार्ग अवरूद्ध है। इस समय तो दोनों संस्थाओं को अग्रवाल-खण्डेलवाल आदि जातिवाद तेरहपंथ-बीसपंथ आदि के मतभेदों को भुलाकर, अपने मान सम्मान को समाज-हित में अर्पित कर राष्ट्रव्यापी एकता को कायम रखना चाहिए। विघटन रूपी राक्षस को नष्ट करने हेतु आज दधीचि की हड्डियों के धनुष की आवश्यकता है। दधीचि कहां खोजें। किसी व्यक्ति या व्यक्ति वर्ग को अपने मान कषाय के अस्तित्व को मिटाकर समाज के देवत्व, संगठन, श्रावकत्व-श्रमणत्व की रक्षा करनी होगी।

समाज को एक अपेक्षा महासभा से यह भी है कि राष्ट्रीय-राजनैतिक दृष्टि से वह प्रभावशाली बनकर जैन समाज के हितों की रक्षा करे। उसके वर्तमान राजनैतिक प्रभाव को यद्यपि नकारा तो नहीं जा सकता किन्तु श्वेताम्बरों अथवा अन्य धर्मावलंबियों की अपेक्षा कमी नजर आती है। महासभा ने इस ओर प्रयत्न किया भी है। राष्ट्रीय हित संपादन में हाथ बंटाकर एवं अर्थार्पण द्वारा लोक कल्याण के कार्यों में यह संलग्न भी है परंतु इस प्रभाव की स्थिति में अभी भी कमी है। संभव है कि इसका समाधान भी महासमिति एवं महासभा के समन्वय में हो। राजनैतिक प्रभाव इतना होना चाहिए कि सरकार दि.जैन समाज के अहिंसा, शाकाहार, अनेकान्त, तीर्थरक्षा आदि की आवाज पर तत्काल अमल करे। जैन गजट को राष्ट्रीय जैन पत्र घोषित किया जावे।

महासभा साधु संतों की सेवक संस्था है। वर्तमान में सभी साधु-संतों ने शाकाहार, मांस निर्यात बंदीकरण, अहिंसा का विशेष उद्‌घोष किया है। वे इस हेतु विशेष तपस्या में संलग्न हैं। समाज को महासभा से यह अपेक्षा है कि इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से ही इस पवित्रतर कार्य में जुटकर महाश्रमण भ. महावीर और शिष्य वर्य साधु संतों के जैन धर्म के सिद्धातों के रक्षण हेतु मिशन बनकर कार्य करे।

एक नीतिकार का उल्लेख है-

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मं न तद् यत्र न सत्यमस्ति सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति।।

- वह सभा नहीं है जहां वृद्ध नहीं हैं, वे वृद्ध नहीं हैं जो धर्म का व्याख्यान नहीं करते, वह धर्म नहीं है जहां सत्य नहीं है, वह सत्य नहीं है जिसमें छल-कपट हो।

उपरोक्त दृष्टि से महासभा वस्तुतः वृद्ध सभा है। यहां तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध विद्वान् सदैव मार्गदर्शक हैं। महासभा ने सदैव विद्वानों का सम्मान किया है। इक्कीसवीं सदी में महासभा और अधिक विद्वद्वर्ग से अनुप्राणित होगी और होनी चाहिए।

वर्तमान में सज्जातित्व का प्रश्न गंभीर प्रश्न है। जैन धर्म जैन जाति की सुरक्षा पर टिका हुआ है।

महासभा का स्वर्णिम अतीत है। यह रजत, स्वर्ण और हीरक जयंतियों के कीर्तिमानों को पहले ही पार कर चुकी है। यह शताब्दी महोत्सव एक वर्ष की अवधि में विभिन्न उद्‌घोषों, अधिवेशनों, शिविरों, संगोष्ठियों के माध्यम से समाज में नवचेतना का संचार कर समापन पर आ पहुंचा है। यह संगठन ही नहीं अपितु दि.जैन समाज का दर्पण है जो चरित्र भी स्वच्छता से यथार्थप्रकाशित करता है। अगली शताब्दी इक्कीस गुना विकास लेकर एक उज्जवल इतिहास सृजित करे यह शुभ कामना है।

श्रमणधर्मसुरक्षायां या लीनास्ति संभवात्।
जीयात् महासभा नित्यं यावच्चन्द्रदिवाकरौ।।

जो अपने उदय से श्री श्रमण और धर्म रक्षा में तत्पर है वह महासभा, जब तक चन्द्र और सूर्य है, तब तक चिरजीवी हो।

- शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी

साधु संस्था एवं महासभा

- श्री शांतिलाल बड़जात्या, अजमेर, संगठन मंत्री- महासभा

दिगम्बर जिन धर्म में देव, शास्त्र, गुरू की पूर्णता से जिन शासन सबको कल्याणकारी होता है। जिनेन्द्र देव के प्रतिमाजी परम वन्दनीक हैं। शास्त्र श्रद्धास्पद है एवं गुरू मार्गदर्शक होते हैं। तीनों की शरण प्राप्तकर सांसारिक जीव अपना कल्याण करते हैं। अत्यंत प्राचीन अजमेर नगर के प्रथम जिनालय अजमेरी भट्टारकीय गादी के निज मंदिर जी से एक गुटका प्राप्त हुआ है जो विद्वजनों को पढ़ने योग्य है। उसमें ईसा की दसवीं शताब्दी तक जिन मंदिरों की प्रतिष्ठाओं का जीवनतुल्य उल्लेख है तथा हृदयस्पर्शी यह वर्णन है कि उन प्रतिष्ठाओं में सैकड़ों ही नहीं सहस्त्रों मुनिराजों ने अपना सानिध्य प्राप्त किया था।

भारत के पापकर्म के उदय से मुस्लिम आक्रन्ता लुटेरों ने इस देश की मूल संस्कृति को पूर्णता नष्ट भ्रष्ट करने में कुछ भी कसर नहीं रखी। ऐसा विकराल काल आ गया जब मात्र शास्त्रों में मुनिराजों के स्वरूप की पठन की बात रह गई। उत्तरी भारत में पूर्णतः जिन मुद्राओं का अभाव ही हो गया। मध्यकालीन महान आध्यात्मिक कवि एवं ग्रंथकार श्री ध्यानतरायजी, दौलमराम जी, बनारसीदास जी ने अपनी इस व्यथा का उल्लेख इस साहित्य में किया है। दक्षिण भारत में यदा, कदा गुफाओं में तप करते थे, संघ परम्परा समाप्त हो गई एवं शिथिलाचार पनप चुके थे।

ऐसे ही समय में १०३ वर्ष पूर्व आचार्य कुन्दकुन्द की जन्म जयन्ती एवं बसंत पंचमी को सम्पूर्ण भारत के प्रबुद्ध महानुभावों का साथ लेकर स्वनाम धन्य राजा लक्ष्मणदास टोंग्या ने श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा की स्थापना उत्तम मुहूर्त में सन् १८९४ में की। उस समय विराजित सकल भट्टारकीय गादियों का महासभा को पूर्णतः आशीर्वाद प्राप्त हुआ जो आज तक बना हुआ है।

सकल भारत के महान पुण्योदय से सन् १९२० की फागुन शुक्ला चतुर्दशी को कालान्तर में चारित्र चक्रवर्ती पद से विभूषित मुनिराज श्री १०८ श्री शांतिसागर जी महाराज की पावन मुनिदीक्षा यरनाल में (दक्षिण भारत) में दीक्षा गुरू देवप्पा स्वामी के कर कमलों के होने से साथ शास्त्रोक्त मुनि संस्था का शुभारंभ हो गया। दीक्षित होने के साथ ही उन्होंने वस्त्र धारण कर आहार पर जाने हेतु तथा उपाध्याय जी के बताये हुये निश्चित स्थान पर आहार लेने जाने का निषेध कर दिया। वे ऐसे प्रतापी हुये कि उनकी सौ प्रतिशत किया शास्त्रोक्त देखकर उन्हीं के दीक्षा गुरू देवप्पा स्वामी ने उनसे पुन: मुनि दीक्षा ग्रहण की। यह दो.हजार वर्ष के इतिहास का एक मात्र उदाहरण है।

उन् मुनिराज श्री शांतिसागर जी महाराज ने आश्विन शुक्ला ग्यारहस बुधवार को सन् १९२४ में समडोली महाराष्ट्र में दीक्षा प्रदान करते समय चतुर्विधि मुनिसंघ ने आचार्य पद से प्रतिष्ठित किया। सौभाग्य से यह वर्ष उनके पिच्छत्तरवां आचार्य प्रतिष्ठापन जयंति वर्ष है। उन महामना की अभूतपूर्व देन् से आज भारत बसुन्धरा में ७०० से अधिक पिच्छिकायें अपना आत्मकल्याण करती हुई अनगिनत जीवों का कल्याण कर रही है।

महासभा जो चाहती थी उसे अमृत वरदान प्राप्त हो गया। मुनिराज शांतिसागर जी तद्उपरांत आचार्य एवं सिद्धक्षेत्र गजपंथा में सन् १९३७ में चारित्र चक्रवर्ती पद से विभूषित आचार्य भगवन्त की सन् १९५५ के १८ सितम्बर भादवा सुदी २ तक महासभा ने उन गुरूदेव की एवं उनके शिष्य समुदाय की अक्षरशः आज्ञा का पालन कर अपना इतिहास गौरवमयी बनाया। ३६ वर्षीय अपने शासन काल में आचार्य श्री के पावन सानिध्य में महासभा के अध्यक्ष एवं संरक्षक राजा सर सेठ हुकमचंद जी एवं धर्मवीर जाति शिरोमणि सरसेठ भागचंद जी सोनी अजमेर, ब्यावर के राय साहब सेठ साहब श्री रामस्वरूप जी चम्पालाल जी, जयपुर के प्रसिद्ध जौहरी सेठ साहब श्री बनजीलाल ठोलिया सहित सारी महासभा गुरूचरणों में समर्पित थी तथा धर्म विरूद्ध जैसे जाति परम्परा लोग विधवा विवाह को समर्थन आदि किसी भी शास्त्र विरूद्ध एवं लोकविरूद्ध कार्य नहीं करने से आचार्य महाराज ने सदैव महासभा को शुभ आशीर्वाद दिया तथा इसीलिये समाधि से एक सप्ताह पूर्व महासभा के महामंत्री श्रीमान परसादीलाल जी पाटनी ने आचार्य श्री से महासभा हेतु निवेदन किया कि अब भारतवर्ष भर में आपकी कृपा से मुनिमुद्रा का विहार हो रहा है। कुशासन समाप्त हो गया है, धर्म पालन की स्वतंत्रता है ऐसे समय में महासभा को बंद कर देना चाहिये या आपकी क्या आज्ञा है। तो आचार्य श्री ने स्पष्ट आदेश दिया यावत् पंचमकाल दिगम्बर जिनधर्म रहेगा। धर्म संरक्षिणी महासभा को बने रहना है तथा देव, शास्त्र, गुरू एवं तीर्थों तथा जिनायतनों की सेवा करते रहना है। कदापि भी धर्म विरूद्ध कार्य भूलकर भी मत करिये। हमारा महासभा को आशीर्वाद है।

इस अमर आशीर्वाद ने महासभा को सदैव धर्म सेवा करने की जो प्रेरणा दी है उस अनुसार तदुपरांत महासभा सेवा में रत है तथा निज चारित्र पालन में सभी पदाधिकारी सजग हैं। परम पूज्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, परम पूज्य आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी, परम पूज्य आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, परम पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज, परम पूज्य आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज, परमपूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, (जो स्वयं अपनी पंडित अवस्था में महासभा के महान दृढ़ स्तम्भ थे।), परम पूज्य आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज, आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज, आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज सहित सभी दिवंगत आचार्यों ने एवं परम पूज्य आचार्य कल्प चन्द्र सागर जी महाराज, परम पूज्य आचार्य कल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज एवं स्वर्गीय सकल आचार्य मुनिगण, आर्यिका माताजी, ऐलकगण एवं क्षुल्लकगण ने सतत् शुभ आशीर्वाद प्रदान किये। जिनका विस्तृत विवरण जैन गजट में जाना जा सकता है। यहां देने से तो यह लेख माला कई सौ पृष्ठ की हो जावेगी।

इस भौतिकवादी टी.वी. एवं कुप्रचार के युग में किन्हीं भी महासभा के पदाधिकारी ने यह अपराध नहीं किया कि उसकी जो मूल मान्यता है, आगम की आज्ञा पालन करना, गुरू आज्ञा शिरोधार्य करना, इसमें किसी ने भी अपनी ओर से न तो मनगढ़ंत धारणा बनाई न ही सनातन चली आ रही जातीय, कुलशुद्धि की मान्यता करते हुये अपने स्वार्थों के कारण किसी अर्थ को बदली नहीं किया। कभी भी भूलकर कहीं भी दिगम्बर जैन जो वर्तमान में राम लक्ष्मण की तरह आम्नायवाद के मामले में स्नेह पूर्वक अपने अपने

शेष पृष्ठ ९३ पर. . .

महासभा और श्री निर्मल कुमार सेठी

महासभा दिगम्बर जैन समाज की १०० वर्ष पुरानी संस्था है। किसी समय यह सारे दिगम्बर जैन समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था थी। देश में जब सुधार का युग आया तो जैन समाज भी इससे अछूता न रहा। महासभा स्थितिपालक थी, समाज की बाबू पार्टी (जिसमें अच्छे-२ बैरिस्टर, वकील, सेठ, साहूकार थे) सुधार की पक्षपाती थी फलतः महासभा से उसकी पटरी नहीं बैठी और प्रतिक्रिया स्वरूप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का गठन हुआ। परिषद् के विचारों का इतना जोरदार प्रचार हुआ कि महासभा की आवाज कुछ दब सी गई। महासभा बूढ़ी संस्था सी जानी जाने लगी, किन्तु जबसे इसकी अध्यक्षता का कार्यभार श्री निर्मलकुमार सेठी ने सँभाला है, तबसे वे इसके उत्कर्ष के लिए लगातार सचेष्ट हैं। वे जहाँ कहीं भी जाते हैं, वहाँ महासभा की बैठक जरूर आयोजित करते हैं। उनका एक स्वप्न था कि जिस प्रकार कान्वेन्ट स्कूल या सरस्वती शिशु मन्दिर सब जगह छाये हुये हैं, उसी प्रकार जैन विद्यालयों की भी स्थापना हो, एतदर्थ उन्होंने जैन शिक्षा समिति का गठन भी किया था, उसमें एक सदस्य मैं भी था। डॉ० भागचन्द्र जैन 'भास्कर' ने समिति की संस्तुतियाँ भी पेश की थीं किन्तु सेठी जी दूसरे-दूसरे कार्यों में लग गए। उनकी वह योजना अभी साकार नहीं हुई। आजकल उन्होंने प्राचीन जैन तीर्थों के उद्धार का व्रत ले रखा है और फलस्वरूप कई क्षेत्रों का द्रुतगति से विकास हो रहा है। सेठी जी कट्टर मुनिभक्त हैं और साधुओं में निरन्तर जाते रहते हैं। जहाँ वे जाते हैं मुनि समागम हो तो मुनि महाराज को आहार अवश्य देते हैं। प्रगतिदिन पूजन भक्तिभाव से करते हैं। दशलक्षण पर्व में उन्होंने १० दिन के अनेक बार उपवास भी किए हैं। उनका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है। जैन गजट, जैन महिलादर्श और बालादर्श ये तीन पत्र उनकी छत्रछाया में फल फूल रहे हैं। इन पत्रों की प्रसार संख्या भी काफी बढ़ी है। सज्जातीयत्व की परिभाषा को लेकर अवश्य वे विवादों के घेरे में आ जाते हैं, किन्तु यह तो महासभा का अटल नियम है, जिसकी वकालत करना उस संस्था के अध्यक्ष होने के नाते उनका परम धर्म है। वैसे सेठी जी बड़ी उदार प्रवृति के हैं और समाज का उत्कर्ष कैसे हो, इसकी चिन्ता उन्हें अवश्य रहती है। वे एक अच्छे वक्ता भी हैं। कभी-कभी अति उत्साह में वे बहुत आगे निकल जाते हैं, किन्तु यथार्थ के धरातल पर उन्हें भी पीछे आना पड़ता है। समाज में वे मृदुभाषी के रूप में जाने जाते हैं और अपने व्यक्तित्व की छाप मिलने वाले पर अवश्य छोड़ते हैं। मैं उनके यशस्वी जीवन की कामना करता हूँ।

-डॉ० रमेशचन्द जैन
अध्यक्ष- भा.दि.जैन विद्वत् परिषद
जैन मन्दिर के पास, बिजनौर (उ०प्र०)

महासभा का वर्चस्व और प्रतिष्ठा

- स्व: पं. कुंजीलाल जी शास्त्री, (पूर्व सम्पादक)

भा.दि.जैन महासभा का नाम स्मरण होते ही उस गौरवशालिनी संस्था का चित्र मानस पटल पर अंकित हो जाता है, जिसने लगभग विगत एक सदी तक समाज को मार्गदर्शन दिया है। समय-समय पर उठने वाले झंझावातों ने धार्मिक आस्थाओं एवं मर्यादाओं की रक्षा की है। जैनत्व के संस्कारों को जाग्रत रखने में सावधानी बरती है। देव शास्त्र गुरू की श्रद्धा और भक्ति पर भीतर-बाहर से आने वाले प्रहारों को दृढ़ता के साथ रोका है। जिन कर्मठ नेताओं के कंधों पर इस महासभा का दायित्व रहा है उन्होंने अपनी शक्ति भर उसे निभाया है। यद्यपि यह भी सत्य है कि अंतराल में इसके अपवाद रहे हैं परन्तु यह निश्चित है कि महासभा द्वारा मान्य सिद्धांतों की जड़ समाज के अस्तित्व में बहुत गहरी बैठी हुई है जिससे इसका अस्तित्व ज्यों का त्यों स्थिर है। समय की प्रबलता से अनेक शाखा प्रशाखाओं ने अपने अलग अस्तित्व की घोषणा की परन्तु महासभा का वर्चस्व एवं उसके नाम की प्रतिष्ठा आज भी सुस्थिर है और इसका प्रमाण है आचार्य प्रवर शांति सागर जी महाराज द्वारा अपने अंतिम समय में महासभा की आवश्यकता के प्रति अपने विश्वास की स्पष्ट घोषणा। वर्तमान समय में महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी को परम पूज्य आचार्यों एवं साधुजनों ने जो अपना आंतरिक आशीर्वाद दिया है, उससे यह स्पष्ट परिलक्षित है कि संयमी साधुजनों का यह दृढ़ विश्वास है कि महासभा वह संस्था है जो समय के प्रवाह में बहती नहीं। उसका सिद्धान्त उतना ही कठिन है जितना रत्नत्रय का मोक्षमार्ग पाना। वस्तुतः किसी भी सामाजिक संगठन का दृढ़ आधार है- सच्चे देव, शास्त्र गुरू की भक्ति। यदि हमारा भक्तिमय मूल आधार ही विश्रृंखलित होता है तो निरूद्देश्य संगठन भी नहीं टिक सकता। जैन मात्र एक संज्ञा नहीं है। यह शब्द गुण विशेष का द्योतक है और वह गुण सच्चे देव शास्त्र गुरू की भक्ति ही है।

महासभा के वर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी परम्परागत ६ धार्मिक संस्कारी युवक हैं। उत्साही हैं, सम्पन्न हैं। उनमें कुछ करने की उमंग है। ये सारी बातें एक स्थान पर नहीं पाई जाती। महासभा के महामंत्री श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी (सम्प्रति संरक्षक) के मस्तिष्क में बहुत बड़ा स्वप्न है। यदि वह फलित हो जाता है तो निश्चित ही समाज का कायाकल्प हो जायेगा। इनके नेतृत्व में महासभा का जो पुनर्जागरण हो रहा है, वह समाज के भविष्य के लिए अत्यन्त शुभ है। जैनत्व और जैनाचार की गरिमा को पुनर्स्थापित करने में महासभा सफल हो, यही मेरी मंगल कामना है।

सत्य को कहा नहीं जा सकता, उसे तो महसूस किया जा सकता है।

महासभा - जीवदया

उत्तर प्रदेश प्रांतीय महासभा के जीवदया विभाग के महामंत्री श्री गंभीरचंद जी छाबड़ा सआदतगंज, लखनऊ समयानुसार जगह जगह शाकाहार की प्रदर्शनी लगाने की चेष्टा करते रहते हैं। उनकी प्रदर्शनी का भूतपूर्व राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा, श्री किदवई साहब आदि महानुभावों द्वारा उद्घाटन भी हुआ है। प्रदर्शनी में एक विजिटर्स बुक रखा जाता है। उस रजिस्टर में जज से लेकर मांसाहार त्याग करने वाले मुसलमान भाई तक सभी के अभिप्राय का संकलन है।

उनके इस कार्य की महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी जी ने सराहना की तथा जीवदया विभाग के कार्य में शीघ्र नई गतिशीलता लाने का प्रयास करने हेतु कहा है।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा जीव दया विभाग उत्तर प्रदेश शाखा के महामंत्री श्री गंभीरचंद जैन छाबड़ा सआदतगंज लखनऊ के द्वारा विभिन्न स्थानों में शाकाहार एवं जीवदया प्रदर्शनी हस्त निर्मित चित्रों एवं साहित्यों द्वारा लगाई गई। जिसकी सर्वत्र सराहना की गई, तथा तमाम लोगों ने इस प्रदर्शनी से लाभ लिया। २४१ लोगों ने आजीवन मांसाहार न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा की व प्रतिज्ञा पत्र भरे गये तथा महासभा जीव दया विभाग द्वारा प्रतिज्ञा प्रमाणपत्र उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करते हुये प्रदान किये गये।

शाकाहार एवं जीव दया प्रदर्शनी में निःशुल्क फोल्डर वितरित किये गये जिसमें निम्नलिखित समाजसेवी लोगों ने छपवाकर दिये।

१. श्री सुगनचंद बाबूलाल जैन ट्रस्ट, लखनऊ

२. श्रीमती प्रेमकुमारी जैन छाबड़ा धर्मपत्नी श्री गंभीरचंद्र जैन लखनऊ

३. श्री नरेशचंद सुभाषचंद जैन, सीतापुर

४. श्री कन्हैयालाल अशोक कुमार जैन, लखनऊ

शाकाहार एवं जीवदया प्रदर्शनी निम्नलिखित स्थानों पर लगाई गई।

१. श्री अन्नपूर्णा मंदिर, सआदतगंज लखनऊ- में दिनांक ७.१२.६५ से ६.१२.६५ तक लगाई गई, जिसका उद्घाटन श्री बसन्त लाल गुप्ता ने किया।

२. श्रीमद् भागवत पुराण कथा एवं ज्ञान यज्ञ आयोजन में लखनऊ स्थित कम्पनी बाग चौक लखनऊ में लगाई गई जो कि दिनांक २३.१२.६५ से ३.१.६६ तक चली जिसका उद्घाटन कमलेश जी महाराज ने किया।

३. श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सिधौली जिला सीतापुर में दि. २६.२.६६ से ३.३.६६ तक चली व इसका उद्घाटन माननीया डा. श्रीमती बीना बंसल ने किया व इनके साथ में इनके पति श्रीमान के.के.बंसल पुलिस महानिदेशक भी थे।

४. जैन बाग डालीगंज लखनऊ में आयोजित होली मेला में दि. ६.३.६६ को लगाई गई, जिसका उद्घाटन महामहिम श्री मोतीलाल वोरा राज्यपाल उ.प्र. ने दीप प्रज्वलित कर किया।

५. जयपुर राजस्थान में मुनि श्री १०८ सुधासागर महाराज जी के सानिध्य में जलेबी चौक में दि. ७.१२.६६ से ८.१२.६६ तक लगाई गई, जिसका उद्घाटन आदरणीय श्री गणेश कुमार जी राणा ने किया।

६. गीता जयन्ती समारोह में स्थान श्री अन्नपूर्णा मंदिर सआदतगंज लखनऊ में दि. २२.१२.६६ से २६.१२.६६ तक चली।

७. महावीर जयंती के शुभ अवसर पर लखनऊ में दि. २०.४.६७ को लगाई गई जिसका उद्घाटन महामहिम श्री रोमेश भण्डारी ने किया।

८. सत्य मंदिर स्थान इंदिरानगर लखनऊ में देवी मां कुसुम जी के सानिध्य में दि. २५.८.६७ को लगाई गई।

६. दया निधान पार्क लखनऊ में श्री देवी मां कुसुमजी के सानिध्य में दि. २५.६.६७ को लगाई गई।

१०. कस्तूरबा कन्या इण्टर कालेज लखनऊ में आयोजित बाल मेला में दि. ८.११.६७ को लगाई गई जिसका उद्घाटन नरेश चन्द्रा भू.पू. मंत्री नगर विकास उ.प्र. ने किया।

११. श्री अन्नपूर्णा मंदिर सआदतगंज लखनऊ में विष्णु महायज्ञ के अवसर पर दि. ७.१२.६७ को लगाई गई जिसका उद्घाटन डा. अरविंद कुमार जैन (स्वास्थ्य राज्यमंत्री) ने किया।

१२. श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर इंदिरा नगर लखनऊ में दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक २६.१.६८ को लगाई गई।

१३. भगवान महावीर के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सीतापुर में दि. ६.४.६८ को लगाई गई।

१४. भगवान पुष्पदंत जन्म जयंती के अवसर पर ग्राम खुखुन्दू जिला देवरिया में दि. २०.११.६८ को लगाई गई।

१५. पावानगर महावीर इण्टर कालेज फाजिलनगर जि. कुशीनगर में दि. २१.११.६८ को लगाई गई।

१६. श्रीमद् प्रज्ञापुराण कथा व संस्कार समारोह में शांतिकुंज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में १०.१२.६८ से १४.१२.६८ तक लगाई गई।

आशा को जीतो, क्योंकि आशा ही जगत् को बांधने/फंसाने वाली है

जैन-गजट के यशस्वी सम्पादक : प्राचार्य पं. नरेन्द्र प्रकाश जी

- डा. अशोक कुमार जैन

सहायक आचार्य जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राज.)

जैन सांस्कृतिक परम्परा की समुन्नति में विद्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह देश सदियों से गुणीजनों के प्रति श्रद्धावनत् रहा है। वर्तमान में जैन समाज में कुछ ऐसी सारस्वत विभूतियां हैं जो अपने चमत्कृत व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समाज को स्वतः आकृष्ट करती हैं। उनमें से ऐसी ही विभूति हैं प्राचार्य पं. नरेन्द्रप्रकाश जी, जो जैन गजट के यशस्वी सम्पादक हैं। निस्पृहता, निर्भीकता एवं विलक्षण पाण्डित्य के धनी प्राचार्य जी अपनी सशक्त लेखनी एवं वाणी से सम्यग् दिशा निर्देशन द्वारा समाज एवं धर्म की सेवा में अहर्निश संलग्न हैं। उनका समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरणादायी है जिनको हम निम्न बिन्दुओं में रेखांकित करने का प्रयास कर रहे हैं।

जीवन वृत्त एवं शिक्षा- प्राचार्य पं. नरेन्द्रप्रकाश जी का जन्म स्व. पं. रामस्वरूप शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य के यहां ३१.१२.१९३३ को आगरा जनपद के जटौआ ग्राम में हुआ। सतत ज्ञान की आराधना कर हिन्दी में एम.ए. तथा एल.टी. करने के पश्चात् सुहागनगरी फिरोजाबाद की सुप्रसिद्ध संस्था पी. डी.जैन इण्टर कालेज में अध्यापन का कार्य किया। अपनी कार्यकुशलता से इसी कालेज में प्राचार्य पद पर अधिष्ठित होकर संस्था के विकास में अवस्मरणीय योगदान दिया। आपका कार्यकाल संस्था का स्वर्णिम काल रहा है जिसमें संस्था ने निरंतर प्रगति के विविध आयाम स्थापित किया।

साहित्य साधक- पं. नरेन्द्रप्रकाश जी कुशल साहित्य साधक एवं सहृदय कवि हैं। अपनी विशिष्ट प्रतिभा से समाज को लाभान्वित करने हेतु अनेकों व्यस्तताओं के बाद भी साहित्य सृजन में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। कल्पद्रुम, मुनि विद्यानंद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, चन्द्रप्रभु-वैभव, फिरोजाबाद का रानीवाला परिवार, आचार्य विमलसागर परिचय आदि आपकी उल्लेखनीय कृतियां हैं। आचार्य विद्यासागर महाराज ने प्रवचनों का एवं अनेकों अभिनंदन ग्रंथों का संपादन किया जो समाज के लिए बहुमूल्य धरोहर है।

जैन संस्कृति के संरक्षक- पैत्रिक परम्परा से विरासत में प्राप्त सद्संस्कारों एवं विशिष्ट क्षयोपशम द्वारा शास्त्रों का स्वाध्याय कर ज्ञानार्जन कर पूरे देश में ज्ञान सुरभि से समाज को जिनवाणी के ज्ञान का रसास्वादन कराकर उपकृत कर रहे हैं। प्रतिवर्ष दशलक्षण पर्व, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आदि के पावन प्रसंगों पर अपनी ओजस्वी वाणी से जैन संस्कृति की सेवा में निरत हैं। विद्वानों की प्रतिनिधि संस्था अ.भा.दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद के गरिमामय अध्यक्ष पद पर आसीन हैं। आगम के दुरूहतम विषयों जैसे निमित्त-उपादान, निश्चय-व्यवहार, द्रव्य-गुण पर्याय का सरलता से हृदयंगम कराना अपनी शैली की विशेषता है। आपकी वाणी में ओज, स्पष्टवादिता एवं निर्भीकता का संगम है। समाज में व्याप्त शिथिलाचार के निराकरण हेतु सदैव प्रेरित करते रहते हैं।

प्रभावक व्यक्तित्व एवं कृतित्व- आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रभावक है। आपकी ज्ञान गरिमा से प्रभावित होकर समाज ने आपको समय-समय पर वाणीभूषण, विद्वत्‌रत्न, व्याख्यान वाचस्पति, वाणी के जादूगर आदि विशिष्ट उपाधियों से सम्मानित किया। श्रवणबेलगोला, मेरठ, महावीर जी आदि अनेकों स्थानों पर विद्वत् संगोष्ठियों का सफलतापूर्वक कुशल संयोजन किया। ललितपुर, सागर, कलकत्ता, मेरठ, ग्वालियर आदि स्थानों पर विद्वानों को प्रभावक ढंग से प्रशिक्षण दिया। आपकी वाणी में सम्मोहन की विशेष क्षमता है। आपके कृतित्व में संगठन की अद्भुत कला है। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के शताब्दी समारोह के महामंत्री पद पर रहकर विविध स्थानों पर प्रभावक कार्यक्रम कर सामाजिक एवं धार्मिक जागरण का प्रशस्त वातावरण निर्मित कर उल्लेखनीय कार्य किया है। फिरोजाबाद की स्थानीय संस्थाओं में भी विशिष्ट पदों पर आसीन होकर आप उनके बहुंमुखी विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कृतित्व का एक विशिष्ट पक्ष यह भी है कि विरोधी भी आपको समाधान प्राप्त करने हेतु उत्सुक रहते हैं।

कुशल सम्पादक- आपके कुशल सम्पादकत्व में अ.भा.दिगम्बर जैन महासभा का मुख पत्र जैन गजट प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान में प्रकाशित होने वाले जैन पत्रों में जैन गजट का शीर्ष स्थान हो गया है। आपके सम्पादकीय लेखों को पढ़ने हेतु समाज में उत्सुकता रहती है। आप धर्म व समाज के सच्चे हित चिंतक हैं। आगम विरूद्ध मान्यताओं का खण्डन कर समीचीन दृष्टि प्रदान करते हैं। आप जिस निर्भीकता के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं वस्तुतः वह दूसरे सम्पादकों के लिए अनुकरणीय है। सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचंद शास्त्री के बाद इस कड़ी में हम पं. नरेन्द्रप्रकाश जी को रख सकते हैं।

अभिनन्दनीय मनीषी- आपने अपनी विशिष्ट कार्यशैली के कारण विद्वत समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाया। जिनवाणी की सतत आराधना एवं सेवा के फलस्वरूप, श्रमण भारती मैनपुरी, अ.भा.दि.जैन शास्त्री परिषद, प्राकृत संस्थान श्रवणबेलगोला आदि संस्थाओं ने सम्मानित किया। अभी हाल में परम पूज्य उपाध्याय ज्ञानसागर महाराज के सानिध्य में तिजारा क्षेत्र पर बिहार के राज्यपाल सुन्दर सिंह भण्डारी द्वारा विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वस्तुतः आप जैसे मनीषी का सम्मान कर वह पुरस्कार ही सम्मानित हुआ है।

आपके व्यक्तित्व की अनेक विलक्षण विशेषतायें हैं जिनको शब्दों की सीमा में समेटना संभव नहीं है। आपके यशस्वी एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हुए यही भावना व्यक्त करता हूं कि आपका नेतृत्व समाज को अपनी ज्ञान आभा से ज्योतिर्मय करता रहे। महासभा के पदाधिकारियों को प्राचार्य पं. नरेन्द्रप्रकाश जी की जैन संस्कृति की विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष में अभिनंदन ग्रंथ समर्पित कर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहिए।

महासभा और पूर्वांचल

- कपूरचंद पाटनी, गुवाहाटी, सह-सम्पादक, जैन गजट

पूर्वांचल की समस्त दिगम्बर जैन समाज के लिये यह अत्यन्त गौरव की बात है कि दिगम्बर जैनियों की प्राचीनतम संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा को पूर्वांचल ने पिछले ४० वर्षों में वर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी समेत चार-चार सशक्त अध्यक्ष प्रदान किये हैं जिनके सफल नेतृत्व में महासभा ने सफलता की उन ऊंचाइयों को छुआ है जो किसी भी संस्था के लिये गौरव की बात हो सकती है। सबसे पहले पूर्वांचल के सर्वमान्य नेता, देव-शास्त्र-गुरू के परम भक्त, कट्टर आर्षमार्गी स्वनामधन्य श्रीमान् भंवरलाल जी बाकलीवाल ने सन् १९६४ में महासभा की बागडोर अपने सशक्त कंधों पर संभाली। उस समय महासभा की हालत अत्यन्त शोचनीय थी। समस्त समाज पंथ-भेद के कारण विभिन्न टुकड़ों में बंट गया था। एकान्तवाद का जोर बढ़ रहा था तथा महासभा घोर आर्थिक संकट के कारण निष्प्राण सी हो गई थी। ऐसे समय में श्रीमान् बाकलीवाल जी का अध्यक्ष पद संभालना महासभा के लिये वरदान साबित हुआ। आपके आने से निष्क्रिय महासभा क्रियाशील हुई और समाज में फिर से एकता उत्पन्न करने के बारे में सक्रिय विचार-विमर्श प्रारंभ हुआ। आर्थिक संकट में फंसी हुई महासभा को सर्वप्रथम आपने ही हस्तावलम्बन दिया। आपने स्वयं आर्थिक सहायता प्रदान की तथा अन्य लोगों को भी प्रेरित करके महासभा के कोष में वृद्धि कराई। 'जैन गजट' का कलेवर बढ़ाने में भी आपने बड़ा भारी सहयोग दिया। आज जो 'जैन गजट' पत्र एक उल्लेखनीय और प्रशस्य दशा में है उसका सर्वाधिक श्रेय आपको ही है।

श्री बाकलीवाल जी यह बात हृदय से चाहते थे कि समस्त भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज की जनता एक ही सम्मिलित संगठन की छत्र-छाया- में रहे और सब एक रहकर अपना ज्ञान, चारित्र और वैभव समुन्नत करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये वे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा को उपयुक्त इसलिये समझते थे कि भारतवर्ष के जैनों की सबसे प्राचीन प्रतिनिधि संस्था एक यही है। वे चाहते थे कि कुछ विचार भेद के कारण जो भारतवर्षीय अनेक संस्थायें बन गई हैं वे ऋषि प्रणीत और समाज हित के वास्तविक आलोक में आकर सब एक हो जावें और अपने वैमनस्य को समाप्त कर दें। इस संदर्भ में सन् १९६६ में मरसलगंज में श्रीमान् बाकलीवाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न महासभा के ६६ वें अधिवेशन में पारित प्रस्ताव दृष्टव्य है- "प्रायः यह देखा जा रहा है कि दिगम्बर जैन धर्मानुयायी बंधु विचार-भेद के कारण तेरह व बीस पंथ के प्रसंग को लेकर आपस में द्वेष फैलाते हैं तथा परस्पर में ही इसको लेकर खेंचतान करते हैं जिससे सामाजिक व धार्मिक संगठन को क्षति पहुंचने की संभावना होती रहती है। अतः श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का यह ६६वां अधिवेशन समाज से अनुरोध करता है कि वे आपस में धार्मिक मान्यता में कटुता न फैलावें और अपनी प्रक्रिया के अनुकूल पूजा पाठादि को करते हुये धार्मिक वात्सल्यता बनाये रखें।"

समाज में एकता लाने के लिये दिल्ली में एक कन्वेंशन कराने में भी आपका प्रमुख हाथ था। जब उस कन्वेंशन में यथोचित सफलता न मिली तो आपको भारी वेदना हुई थी। उनका कहना था कि राजनैतिक प्रभाव में आकर अपनी परम्परागत स्वस्थ और शुद्ध परम्परा एवं सदाचार पद्धति को बदलना ठीक नहीं। राजनीति तो भौतिकता पर आधारित है और उसका प्रकार बदलता रहता है परन्तु हमें हमारी परम्पराओं और प्रवृत्तियों को सदैव आध्यात्मिकता और सदाचार एवं उसके साधनों से नियंत्रित रखना चाहिये। संगठन बंधन के लिये होने चाहिये, स्वच्छंदता के लिये नहीं। स्वच्छंदता के लिये संगठन बनाना और उसका सहारा लेना एक प्रकार की प्रवंचना है।

भंवरलाल जी बाकलीवाल के असामयिक निधन के पश्चात् पूर्वांचल के ही सर्वमान्य नेता दानवीर राय साहब चांदमल जी पाण्ड्या ने महासभा की बागडोर संभली। आपके कार्यकाल में भी महासभा उन्नति के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ती रही। महासभा की आर्थिक अवस्था की उन्नति में आपका सर्वांगीण सहयोग रहा। जैन आगम और कुन्द कुन्दाचार्य प्रणीत जैन दर्शन में असीम श्रद्धा रखने वाले राव साहब चांदमल जी पाण्ड्या अपने चिन्तन, समय के सहयोग और विपुल औदार्य दान के कारण जैन समाज के अग्रणी नेता के रूप में सर्वत्र विख्यात थे। आपकी गुरूभक्ति श्लाघनीय और अनुकरणीय थी। मुनि संघों की परिचर्या तथा उनके सान्निध्य में रहकर धर्म साधना करने में वे सपत्नीक दत्त चित्त रहते थे। व्यापारिक गतिविधियों में सम्बद्ध रहते हुये भी राय साहब का अधिकांश समय महासभा के कार्यों को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में, उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने में तथा उसे एक सुदृढ़ स्वरूप प्रदान करने के उपायों में ही बीतता था। जैन जनगणना के व्यापक उद्देश्य की सम्पूर्ति के लिये आप निरंतर सचेष्ट रहे और इन कार्यों की पूर्ति हेतु आपने भारी आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया था। आपके कार्यकाल में भगवान महावीर स्वामी का २५००वां निर्वाण महोत्सव समस्त भारत में काफी धूमधाम से मनाया गया था। आपने निर्वाण महोत्सव की सफलता के लिये सक्रिय भूमिका अदा की थी। आपके अथक प्रयत्नों से ही पूर्वांचल में परम पूज्य आर्यिकारत्न इन्दुमति माताजी के नेतृत्व में आर्यिका संघ का सर्वप्रथम आगमन हुआ था। आर्यिका संघ के आगमन से समस्त पूर्वांचल में जैन धर्म की तथा महासभा की अभूतपूर्व उन्नति हुई थी। इसी समय अनेकों मंदिरों, चैत्यालयों का निर्माण हुआ था तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव और वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वांचल के

विभिन्न नगरों में सफलता पूर्वक आयोजित हुये थे।

राय साहब चांदमल जी पांड्या के असामयिक देहावसान के पश्चात् दिनांक १३-१४ मई १९७६ को अजमेर में हुई महासभा की बैठक में पूर्वांचल के कर्मठ लौह पुरुष लखमीचंद जी छाबड़ा को महासभा का अध्यक्ष चुना गया। आपके कार्यकाल में भी महासभा निरंतर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होती रही। आपकी अध्यक्षता में फलटण में जो अधिवेशन हुआ था उसमें एकान्तवादियों की गतिविधियों पर कड़ा विरोध प्रगट किया गया था। समस्त भारत की दिगम्बर जैन समाज ने एकांतवादी साहित्य के बहिष्कार करने का निर्णय लिया था। परम पूज्य इन्दुमति माताजी तथा परम पूज्य सुपार्श्वमति माताजी के चातुर्मासों को सफलतापूर्वक आयोजित कराने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। महासभा में आपका कार्यकाल एक ऐतिहासिक कार्यकाल के रूप में सदैव स्मरण किया जायेगा।

लखमीचंद जी छाबड़ा के पश्चात तिनसुकिया निवासी कर्मठ युवा उद्योगपति श्रीमान् निर्मलकुमार जी सेठी ने सन् १९८० में महासभा की बागडोर संभाली और आज तक अत्यन्त कुशलता पूर्वक महासभा को निरंतर उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ा रहे हैं। आप जैन समाज के सर्वोपरि नेता हैं। जबसे आपने महासभा की बागडोर अपने हाथ में संभाली है, पूरे भारत का सघन दौरा करके समाज में जो अलख जगाया है वह आपकी लोकप्रियता की एक बड़ी भारी उपलब्धि है। दिगम्बर जैन आचार्यों एवं साधु-संतों के आप कट्टर भक्त हैं और उनके प्रति किंचित भी अवमानना सहन नहीं करना आपका विशेष गुण है। पूरे समाज में सामंजस्य बना रहे तथा धार्मिक कार्यों में एवं अनुष्ठानों में सभी एक होकर उनका क्रियान्वय करते रहें यही आपकी सदैव अभिलाषा रहती हे। देश के कोने कोने में होने वाले पंचकल्याणकों, इन्द्रध्वज विधानों एवं अन्य समारोहों में समाज आपकी उपस्थिति अनिवार्य मानता है और आप भी ऐसे समर्पित श्रेष्ठी हैं कि अधिकांश आयोजनों में पहुंचकर आयोजकों का उत्साह बढ़ाते रहते हैं। सेठी जी जैन समाज के लिये कल्पतरू हैं। उनका समस्त जीवन समाज के लिये समर्पित रहता है तथा समाज में धर्म की जागृति कैसे होती रहे- इसी का चिन्तन चलता रहता है। समाज को आपसे बहुत अपेक्षायें हैं।

पिछले २०-२५ वर्षों में समूचे पूर्वांचल में जैन धर्म की स्थिति सुदृढ़ हुई है। केवल जनसंख्या में ही वृद्धि नहीं हुई है, अपितु नये-नये मंदिरों का निर्माण भी हुआ है। चैत्यालयों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। गौहाटी, विजयनगर, नलबाड़ी, खरूपेटिया, दिसपुर, डिबरूगढ़, डीमापुर आदि शहरों में पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें भी अत्यंत विशाल स्तर पर समारोह पूर्वक आयोजित की गई हैं। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज के सर्वमान्य नेताओं के रूप में जहां महासभा को पूर्वांचल ने चार-चार प्रतिभाशाली अध्यक्ष प्रदान किये हैं वहीं सर्वश्री हुकमचंद जी सरावगी पाण्ड्या, बैनरूप जी बाकलीवाल, राजकुमार जी सेठी, पन्नालाल जी सेठी, मांगीलाल जी छाबड़ा, तनसुखराय जी सेठी इम्फाल आदि आज भी महासभा की मशाल को प्रज्वलित किये हुये हैं। सन् १९९५ में गौहाटी में महासभा का शताब्दी समारोह अत्यन्त सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन असम के महामहिम राज्यपाल श्री लोकनाथ मिश्र ने किया था। पूर्वांचल के विभिन्न शहरों में वहां की स्थानीय जैन समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में लौकिक शिक्षा के साथ-साथ जैन धर्म की शिक्षायें भी प्रदान की जाती हैं जिसके कारण बच्चों में तथा महिलाओं में जैन धर्म की अभूतपूर्व ज्ञान-वृद्धि हुई है। पिछले दिनों श्री दिगम्बर जैन विद्यालय, गुवाहाटी का वार्षिक अधिवेशन विशाल स्तर पर अत्यन्त सफलता पूर्वक आयेजित किया गया था जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में गुवाहाटी उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश महामहिम नरेशचन्द्र जैन को निमंत्रित किया गया था। माननीय प्रधान न्यायाधीश महोदय ने अपने अभिभाषण में विद्यालय की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये कहा कि मुझे इस बात का आश्चर्य है तथा गौरव भी है कि आप लोग इस सुदूर पूर्वांचल में भी इतने बड़ी विशाल जैन स्कूल का संचालन कर रहे हैं। ध्यान रहे कि जैन विद्यालय गुवाहाटी में १०वीं कक्षा तक अंग्रेजी माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है तथा तीसरी कक्षा से नवमी कक्षा तक सभी छात्र-छात्राओं को अनिवार्य रूप से जैनधर्म की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। पूर्वांचल के विभिन्न शहरों में दि.जैन समाज के अनेकों शिक्षित नवयुवक डाक्टर, इंजीनियर, वकील, चार्टर्ड एकाउंटेंट, सरकारी अधिकारी इत्यादि कार्यरत हैं तथा विपरीत परिस्थितियों में भी समाज एवं धर्म की पताका फहरा रहे हैं। सन् १९७४-७५ में समूचे पूर्वांचल में भगवान महावीर का २५०० वां परि निर्वाण वर्ष बड़े जोश के साथ मनाया गया। धर्म चक्र का प्रवर्तन हुआ, ज्ञान-ज्योति रथ का प्रवर्तन हुआ। इस प्रकार पूर्वांचल प्रदेश जैन धर्म एवं जैन संस्कृति की दृष्टि से अनेकों प्रदेशों के बराबर आने लग गया है। समस्त पूर्वांचल प्रदेश दिगम्बर जैन महासभा का गढ़ समझा जाता है।

परमपूज्य इन्दुमति माताजी तथा परमपूज्य सुपार्श्वमति माताजी का इस अंचल में अत्यधिक प्रभाव है तथा इन्हीं आर्यिका माताओं के कारण से यहं की जनता में जैन धर्म के प्रति एक अभूतपूर्व जागृति हुई है। यही कारण है कि गौहाटी में तथा अन्य शहरों में पर्यूषण पर्व के अवसर पर सैकड़ों की संख्या में पुरूष, महिलायें और बच्चे दशलक्षण व्रत करके अपना आत्मकल्याण करते हैं। तीर्थ जीर्णोद्धार के कार्य में तथा अन्य सभी धार्मिक आयोजनों में पूर्वांचल की जैन समाज मुक्त हस्त से दान देने के लिये प्रसिद्ध है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि श्री महावीर जी में आयोजित महासभा का शताब्दी समापन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा तथा समाज में एकता और संगठन को मजबूत बनाने में अहम् भूमिका निभायेगा।

महासभा और साधु संस्था-परस्पर पूरक

- ब्र. विद्युल्लता शहा, श्राविका संस्थानगर, सोलापुर

किसी भी प्रवृत्ति की उदात्तता संस्कार के योग्य होती है और वे संस्कार प्रसारित होकर किसी समाज की संस्कृति का रूप धारण करते हैं। परतु यह तथ्य है कि उदात्त के अभाव में संस्कृति का सद्भाव हो ही नहीं सकता। भा.व.दिगंबर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा जैन समाज की एक अभिन्न प्रवृत्ति बन चुकी है। महासभा को अलग मानकर जैन समाज का विचार हम कर ही नहीं सकते। आज महासभा शताब्दी के कगार पर स्वाभिमान के साथ खड़ा है। उसने अपना सौ साल का इतिहास बड़ा जागृतिपूर्ण एवं समृद्धिपूर्ण रखा है। अपने इस दीर्घकाल में हजारों कार्यकर्ताओं का निर्माण किया। विद्वानों को प्रोत्सहित कर समाज प्रबोधन का एवं आर्ष मार्ग संरक्षण एवं प्रचार का कार्य सततता से करवाया। तीर्थ संरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य करने का निश्चय भी "तीर्थ संरक्षिणी" की स्थापना के साथ विद्यमान अध्यक्ष एवं महासभा के सर्वेसर्वा श्री निर्मलकुमार जी सेठी ने किया है। यहां पर यह ज्ञातव्य है कि महासभा के यथा-तथा राष्ट्रस्तरीय, राज्यस्तरीय तथा नैमित्तिक अधिवेशन होते रहते हैं उनसे समाज संघटन में मौलिक योगदान मिला है। तथा युवावर्ग इससे अधिकाधिक रूप से प्रभावित है और धर्म, तीर्थ तथा समाजोन्नति के कार्यों में बड़ी रूचि ले रहा है। मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका इस चतुर्विध संघ से महासभा जुड़ी हुई है, परस्पर पूरक प्रारंभ से बनी है।

महासभा के इस कार्य को चारित्र चक्रवर्ती स्व. आ. शांतिसागर जी महाराज, प्रथम पट्टशिष्य स्व.आ. वीरसागर महाराज एवं द्वितीय पट्टाधीश आ. शिवसागर जी महाराज के आशीर्वाद प्राप्त थे। आचार्यों की छत्र छाया में महासभा ने उदात्त उद्देश्यों को अंकुरित किया। समाज की दशा को सही दिशा दी। आचार, विचारों के लिए आगम प्रकाश दिखाया।

मेरी पूर्वाश्रमी की माता स्व. १०५ आर्यिका चंद्रमती माताजी के दीक्षा गुरू आचार्य वीरसागर जी महाराज ही थे। इनके विशाल ससंघ सानिध्य में महासभा ने अनेक नैमित्तिक चर्चासत्र, अधिवेशन अजमेर, टोंक, ब्यावर, निवाई आदि धर्मस्थानों पर संपन्न किए थे। ऐसे अधिवेशनों में बड़ी रूचि के साथ मुझे उपस्थित रहने का अनायास सुअवसर प्राप्त हुआ। समाज के नेता दानी तथा विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त होता था। महासभा के समर्पित महानुभाव स्व. भागचंद सोनी (अजमेर), श्री हीरालाल जी (निवाई वाले), मा.श्री. राणीवाला, आदि का कार्य सदा प्रेरक रहा है। सोलापुर के पं. वर्धमान शास्त्री का भी महासभा के लिए बड़ा योगदान रहा है।

उदार दाताओं के संदर्भ में पंडित जी अपने उपदेश में कहा करते थे कि पंडितों के कार्यों का, भाषणों का परिणाम तो समाज पर विलंब से होता है परंतु महान दानी लोगों का दान तो तत्काल कार्यरूप में आता है। इसीलिये 'दाता भवति वा न वा' यह सुभाषित बदल कर 'दाता भवति एवं' सिद्ध हुआ है। महासभा के अधिवेशनों के कारण स्वरूप स्व.आ.श्री वीरसागर जी महाराज के संघ में मुनिसेवा का सौभाग्य भी प्राप्त होता था। विद्वान साधुओं का सानिध्य मिलता था। स्व. ब्र. सूरजमलजी के सान्निध्य में महिनों आहारदान विहार में संघवास का मौका प्राप्त हुआ था।

द्वितीय पट्टाधीश आ. श्री शिवसागर जी महाराज तथा आ.धर्म सागर जी महाराज, प.पू. आ. अजितसागर जी महाराज अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी थे। आ. अजितसागर जी की तत्परता पूर्ण संशोधनवृत्ति, आचार्यकल्प पू. श्रुतसागर जी महाराज जी की अनुशासन प्रियता, विद्वानों के जोशपूर्ण भाषण, मुनि एवं आर्यिकाओं के विद्वत्तापूर्ण प्रवचन मेरे लिए ज्ञानामृत रूप भोजन था। आर्यिका सुपार्श्वमती जी, आ. ज्ञानमती जी, आर्यिका जिनमती, आर्यिका विशुद्धमती माताजी आदि चारित्रय संपन्न महाव्रतियों के सान्निध्य में प्राप्त स्वाध्याय के अनमोल सुनहरी क्षण मैं विस्मृत नहीं कर सकती। उन्हीं की प्रेरणा से सोलापुर श्राविका संस्था से हर छुट्टियों में संघ में जाने के लिये मन मयूर नाचता था।

इन सभी साधुओं का पुण्यमयी समागम जो मिला उसका निमित्त तो महासभा के कार्यों का आकर्षण ही था, कारण साधु परंपरा एवं आर्ष आगम को अक्षुण्ण रखने का महत्वपूर्ण कार्य आज महासभा द्वारा हो रहा है। आ. वर्धमानसागर जी महाराज, आ. विद्यासागर जी महाराज, पूज्य एलाचार्य जी, आ. कुंथुसागर महाराज, आ. देवनंदी महाराज आदि महान आचार्यों के मंगल आशीर्वाद महासभा को प्राप्त हैं इसीलिए यह शताब्दी की प्रवाहमयी नदी पार कर रही है। धर्म वत्सल श्री निर्मलकुमार जी सेठी जी ने तो महासभा के लिए अपना तन मन धन त्याग दिया है। "तीर्थ संरक्षिणी" की प्रवृत्ति की क्रियान्वितता के लिए उनका अथक प्रयास आज के नवयुवकों को एक ओर जहां लज्जा का अनुभव करा रहा है, दूसरी ओर युवकों के वे प्रेरणास्थान भी बन चुके हैं। "श्रावक चक्रवर्ती" उनके लिए सार्थ उपाधि है। आज की जिनायतनरक्षा के जीर्णोद्धार पूर्ण पुनरुज्जीवन के लिए समाज के युवावर्ग को यह बात प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

मुझे एक घटना का धुंदला-सा स्मरण हो रहा है, महासभा की पत्रिका 'जैन गजट' या महासभा की आजीवन सदस्या होने का प्रसंग था। मेरा या पं. सुमतीबाई जी का सदस्या होने के लिये 'महिला वर्गों' से नाम लेने में महासभा के उद्देश्यों में बाधाएं आ रही थी। किंतु मुनिसघ द्वारा प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलने पर महासभा के अधिकृत नेताओं ने पं. सुमतीबाई जी का और मेरा नाम स्वीकार किया। महिलाओं के प्रति उदात्त एवं वात्सल्यपुक्त कदम प्रगतिशील एवं अनुभवशील प्रवृत्ति का यह द्योतक है।

शताब्दी समापन का यह अवसर महासभा के लिए बड़े ही सौभाग्य का विषय है। महासभा अपनी तीर्थभक्ति, सायुभक्ति तथा जैन समाज जागृति की अपनी स्थायी प्रवृत्ति के लिए सार्वयुगीन महत्ता रखेगी, इसमें कोई संदेह नहीं। महासभा संचालित जैन महिलादर्श के, जैन बालादर्श के माध्यम से महासभा के साथ जुड़ी होने से महासभा की शताब्दी समारोह की सफलता का मुझे भी हार्दिक आनंद है।

साधु संस्था की सुरक्षा के लिये महासभा ने अपनी मजबूत नींव प्रारंभ से बनवाई है। साधुसंस्था के परम, कर्मठ कल्याणकारी आशीर्वाद, उपदेश द्वारा महासभा का शताब्दि का वृक्ष बहुआयामी कार्यों द्वारा सुपुष्पित, सुफलित हो रहा है। महासभा के लिये "संजीवेत शरदः शतम्" जैसी भावनाएं आए तो उचित ही है। "साधुसंस्था" एवं महासभा दोनों यावत् चंद्रदिवाकरी- जीयात् जैनं शासनम्, इस उक्ति को सार्थ करें।

शताब्दी समारोह जयवन्त हो

- विद्याभूषण पंडितरत्न मल्लिनाथ जैन शास्त्री, मद्रास

सज्जनो, अपना दि.जैन धर्म अनादिकाल से चलता आ रहा है। इसके उन्नायक भगवान ऋषभदेव थे। वे चतुर्थ काल के आदि में जन्म लिये थे। तीसरे काल तक तो भोगभूमि थी। तब तक धर्म-कर्म कुछ भी नहीं था। लोग भोग विलास करने में ही अपना समय बिताते थे। चतुर्थ काल के आदि में कर्मभूमि के जमाने में ही भगवान ऋषभदेव के द्वारा असि-मसि आदि षट्कर्मों की व्यवस्था चलाकर मानवों को आजीविका का रास्ता दिखाया गया। उसी के अनुसार लोक व्यवस्था आज तक चलती आ रही है।

जब भगवान घातिया कर्मों को नष्ट कर सर्वज्ञ बने तब उन्होंने श्रावक धर्म और यतिधर्म का स्वरूप बताकर आत्मकल्याण का मार्ग दिखाया। उसी के अनुसार बाकी तेईस तीर्थंकरों ने भगवान ऋषभदेव के द्वारा बताये गये उत्तम मार्ग को पार करते आये।

अब भगवान महावीर की धर्म परंपरा चलती आ रही हैं उसमें श्रावक और यतिधर्म का आचरण ज्यों का त्यों चल आ है।

प्रत्येक धर्म, प्रचार के बिना नहीं पनप सकता है। इसीलिये आचार्यों ने बताया है कि यदि सम्यक्त्व पाना है तो आठों अंगों का परिपालन करना अत्यत आवश्यक है। उस सम्यक्त्व के निस्संगादि आठों अंगों में प्रभावना अंग भी एक है। कोई व्यक्ति बाकी अंगों को पालन कर यदि प्रभावना अंग को नहीं पालेगा तो उसको सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। सम्यक्त्व के बिना मानव मोक्ष का पात्र नहीं बन सकता। अतः सम्यक्त्व प्राप्त करने के लिये प्रभावना अंग को भी पालने की बड़ी जरूरत है। इसी कारण से जैन धर्मावलम्बी गण प्रभावना के रूप में जैनधर्म का प्रचार-प्रसार करते आ रहे हैं।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये दि.जैन धर्मावलंबियों ने एक सौ साल के पहले श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के नाम से एक संस्था कायम की थी। उस समय जैन धर्म का प्रचार-प्रसार उतना नहीं था। ऐसी अवस्था में इस तरह की महत्वपूर्ण संस्था की बड़ी आवश्यकता थी। उस आवश्यकता की पूर्ति करते हुए यह महासभा संस्था आज तक महोन्नत रूप में वटवृक्ष का रूप धारण कर पनपती आ रही है।

नीतिकार का कहना यह है कि 'आयुर्वर्षशतं नृणां परिमितं' अर्थात् इस पंचमकाल में मानवों की आयु ज्यादा से ज्यादा एक सौ साल की है। परन्तु हमारी धर्म संरक्षिणी महासभा की आयु एक सौ से ज्यादा अर्थात् एक सौ एक वर्ष की है। यह बड़ी खुशी की बात है। इतने लम्बे समय तक यह संस्था निर्विघ्नता के साथ जो धर्म का प्रचार करती आ रही है और हम उसका शताब्दी समापन समारोह बड़े ठाट-बाट के साथ मना रहे है यह बड़ी खुशी की बात हैं तो और क्या है?

ऐसे इस महत्वपूर्ण के अधिनायक याने अध्यक्ष श्रीमान् दानवीर सर सेठ हुकमचंद जी और श्रीमान भागचंद्र जी सोनी आदि बड़े बड़े सम्पन्न, उदारशील, धर्म प्राण स्वरूप महान लोग रहकर संस्था के गौरव बढ़ाने के साथ-साथ धर्म एवं समाज की सुरक्षा करते आ रहे थे। बीच-बीच में हरिजन मंदिर प्रवेश आदि बहुत से संकटों को सामना करना पड़ा। अपने परमपूज्य त्रिकाल वन्द्य, दिगम्बर मुनि धर्म के उद्धारकर्ता, चारित्र चक्रवर्ती परमाचार्य १०८ श्री शांतिसागर जी महाराज हरिजन मंदिर बिल के विरोध में अनशन ग्रहण कर लिये थे। ऐसे पवित्र आत्मा की रक्षा एक चुनौती सी रही। उस बिल से आपने दि.जैन धर्म एवं मंदिरों को अलग कर अपने आचार्य परमदेव के जीवन की रक्षा कर ली गई थी। इस तरह कई बाते हैं। उन सबको महासभा ने निपटा कर धर्म की रक्षा की थी। यह बहुत प्रशंसनीय बात रही।

ऐसी महत्वपूर्ण संस्था का मुख पत्र जैन गजट है। इस साप्ताहिक पत्रिका के द्वारा धर्म का खूब प्रचार किया जाता है तथा सामाजिक कुरूतियें को भी हटाया जाता है।

वर्तमान में सर्वश्रेष्ठ उक्त संस्था का अधिनायक याने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रावक चक्रवर्ती श्रीमान निर्मलकुमार जी सेठी हैं। उनके कारण यह संस्था दिन-दूनी और रात चौगुनी के रूप में बढ़ रही है। खासकर सेठी जी ऊंचे धर्मात्मा हैं। अतीव संपन्न हैं अर्थात् करोड़पति हैं। आजकल पैसे वाले धनाढ्य लोग अपने जीवन को ऐश-आराम में बिता रहे हैं। उन लोगों को धर्म-कर्म के प्रतिकूल भी चिन्ता नहीं है। केवल पैसा कमाना और भोग भोगना है। ऐसे भोग विलासमय जमाने में सेठी जी अपने सारे कार-बार को छोड़-छाड़कर अपने जीवन को धर्म के लिये समर्पित कर चुके हैं। उनको धर्म ही प्राण है। धर्म के खिलाफ कहीं कुछ होता है तो वे महासभा द्वारा रोकने और निवारण करने के लिये सबसे आगे खड़े रहते हैं। उनको अपने जीवन के प्रतिमोह नहीं है और वे उसके लिये परवाह नहीं करने। उदाहरण के लिये समझिये कि उन्होंने पर्यूषण पर्व के समय दसों दिन का उपवास किया था। आजकल तीन या चार दिन का उपवास के लिये कहें तो लोग भाग जाते हैं। परन्तु वे महाशय निरीह वृत्ति से दस दिन का कठोर उपवास किये थे। यह प्रशंसनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय भी है।

इसके अलावा उन्होंने इस वर्ष को प्राचीन मंदिर जीर्णोद्धार वर्ष बना लिया। वह हमेशा इस सन्दर्भ में आगरा, शिवपुरी, मुरैना, भिण्ड आदि स्थानों में पधारकर प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार कार्य में लगे रहते हैं। परन्तु मद्रास प्रान्त पर उक्त त्यागी महापुरूष का पदार्पण अभी तक नहीं हुआ है। मैं समझता हूं कि महामना धर्म स्वरूपी सेठी जी मद्रास प्रान्त के अंदर भी जरूर पधारेंगे और प्राचीन मंदिर आदि की रक्षा करेंगे।

मद्रास प्रान्त के अंदर जैन धर्म सातवीं शताब्दी तक महोन्नत स्थिति पर था। बाद में मत द्वेष के कारण अन्य धर्मावलंबियों ने जैन धर्म को ह्रास कर नष्ट भ्रष्ट कर दिया। अब भी वहां अनगिनत खण्डहर और मूर्तियां अनाथ पड़ी हैं। उनको देखते ही रोना आता है। आयः मत द्वेष कितना भयंकर है। समय का परिवर्तन है, क्या करें? पश्चाताप करने के सिवाय और क्या किया जा सकता है।

अब हम ऐसे महत्वपूर्ण दि.जैन धर्म संरक्षिणी महासभा का शताब्दी समापन समारोह अतिशय क्षेत्र महावीर जी में परम पूज्य श्री १०८ वर्धमान सागर जी महाराज एवं परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री १०५ सुपार्श्वमती के ससंघ सानिध्य में सोल्लास मना रहे हैं। यह अत्यन्त हर्ष की बात है।

अंत में हम भगवान जिनेन्द्र देव के दिव्य चरणों में बारंबार सविनय प्रार्थना करते हैं कि प्रभो, हमारी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा दिन-दूनी, रात-चौगुनी के रूप में बढ़ने के साथ-साथ हजारों साल तक चिरंजीवी रहकर अत्युत्तम जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करती रहे जिससे महावीर वाणी की धारा अविचल रूप में गंगा की धारा के समान बहती रहे। शुभमस्तु।

गुरुवर विमल सागर

- डा. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य

समवलोक्य विपत्तिगंत जनं
भवति यस्य मनः करुणाप्लुप्तम्।
हरित यश्च तदापदमागतां
विमलसिन्धुमृषि विनमानि तम्।।१।।

जगति यस्य वचः प्रसरेऽद्भूता,
हितकारी क्षमतासुमतां मता।
उपकृता मनुजाः प्रणमन्ति यं,
विमलसिन्धुमृषिं विनयामि तम्।।२।।

श्रमण संघसुरक्षण-तत्परो,
विविधबोधकरः सुनृणां सताम्।
बुधवरा अपि यस्य पदानुगा,
विमलसिन्धुमृषि विनमामिंतम्।।३।।

फलति भावि कथा कथने पटु
दुंरिततापविदारण-वारिदः।
इह चयः प्रथितोऽस्तिंर क्षितौ,
विमलसिन्धुमृषिं विनमामि तम्।।४।।

सुकृतपुष्टिकारी वचसां तति,
निंखिलनृम्य इहाति तरां प्रिया।
भवति यस्य सदा सुखदायनी,
विमलसिन्धुमृषि विनमामि तम्।।५।।

विरति-पंचक-धारण-संरतं,
समिति-पंचक-पालन-तत्परम।
करण-पंचक-संजनोद्यतं,
विमलसिन्धुमृषिं विनमामि तम्।।६।।

जिनवचः प्रसर-प्रविसारणं,
प्रियतरं भवभीत-विदारणम्।
जगतिं यस्य वचः परिराजते
विमलसिन्धुमृषिं विनमामि तम्।।७।।

जयति साधु-समूह-सुवन्दितो,
भवति यः सुख-सन्ततिदायकः।
जनमनोरथपूर्तिकरं परं
विमलसिन्धुमृषि विनमामि तम्।।८।।

विमलसागर-सूर्यभिवन्दनं,
पठति यो मुदितेन ह्रदा सदा।
स लभते सुखसन्ततिमग्रिमा-
मिति वदन्ति बुधा वदतां वराः।।९।।

अभिवंदना

- आर्यिका श्री स्याद्वादमती जी

वात्सल्य रत्नाकर गुरुवर चरण में अभिवन्दना।
वात्सल्य रत्नाकर सुग्रन्थ कर में करते अर्पणा।।
वात्सल्य रत्नाकर में गोते लगाऊं रात दिन।
वात्सल्य रत्नाकर महानिधि प्राप्त हो भवि आज दिन।।

विमल सागर गुरुवर जी वन्दना अभिवन्दना।
वन्दना से कर रही है जगत की सब क्रन्दना।।
वन्दना से कट गई है चन्दना की बेड़िया।
वन्दना से नश गई हैं अन्जना की क्रन्दना।।

मूरत सुहानी मोहनी है वीतरागी सन्त की।
वाणी निखरती है मधुरिम शान्त छवि सुख क्रन्द की।
करते सदा तप की अनोखी साधना तुम रात दिन।
तेज तप अरु त्याग मूरत, वन्दना अभिवन्दना।।

दुखहारी, सुखकारी हो दयालु पारखी
शरण चरणों का लिया वह पा गया शिव भारती।
पाप पंक्ति धुल रही है गंग तेरी स्नान से
मल रहित तुम विमल गुरुवर, वन्दना अभिवन्दना।।

मुझको अब भारी लगते हैं अपने ही परिधान

- निर्मल जैन, सतना

जिनको जीवन भर दुलराया
बुला बुलाकर पास बिठाया
जिनके सुख-दुख में ही मैंने
अपना सब सुख-दुख बिसराया
वे सब अपने लगते जैसे
अब हो गये मेहमान
मुझको अब भारी लगते हैं
अपने ही परिधान

कैसे कहूं यहां क्या पाया
देने को क्या लेकर आया
इस जीवन में जैसे तैसे
मैंने सब का कर्ज चुकाया
होकर हल्का चाह रहा हूं
होना अब गतिमान
मुझको अब भारी लगते हैं
अपने ही परिधान

मैंने वे कुछ चित्र बनाये
कल्पनाओं के महल सजाये
उनको सतरंगी करने में
मैंने कितने वर्ष गंवाये
किंतु तूलिका ही थी अपनी
श्वेत-श्याम छविवान
मुझको अब भारी लगते हैं
अपने ही परिधान

पोथी पढ़ पढ़ ज्ञान कमाया
किन्तु आचरण बना न पाया
रहा नासमझ फिर भी मैंने
समझदारों में नाम लिखाया
पर उपदेश कुशल बहुतेरे
हो गई हैं पहिचान
मुझको अब भारी लगते हैं
अपने ही परिधान

जान गया यह जग है माया
फिर भी इसमें क्यों भरमाया
स्वयं बनोय घरघूलों को
भी मैं अब तक तोड़ न पाया
अंतस की कुछ शक्ति प्रगट हो
दो ऐसा वरदान
मुझको अब भारी लगते हैं
अपने ही परिधान

पेज ८४ का शेष. . .

मंदिर की आम्नाय पालते हुये संगठित शांति पूर्वक रह रहे हैं। उनको विघटित करने की एवं लड़ाने की कुचेष्टा की तथा पवित्र जिन धर्म को अपने स्वार्थों से विकृत करने के लिये जो एकान्तवादी धारा सोनगढ़ एवं टोडरमल स्मारक आदि के नाम से आई उनका पूर्ण अहिंसक मार्ग से विरोध कर जनसाधारण को सही मार्ग में स्थिर करने का उत्तम पुण्य संचय किया।

इसीलिये वर्तमान भारत वसुन्धरा के सभी त्यागीवर्ग का महासभा को शुभ आशीर्वाद है और महासभा का भी यही धर्म है कि पूर्ववत वह देव, शास्त्र, गुरु की सेवा में अडिग रहे, जैनत्व की रक्षा में प्रतिपल सजग रहे, तीर्थ जीर्णोद्धार में एवं प्राचीन जिनालयों एवं जिनवाणी की सुरक्षा में सदैव लगी रहे। सकल समाज संगठित हो अपनी कुल मर्यादा पूर्ववत् निभाते हुये अपना आत्म कल्याण करे। महासभा शताब्दी समारोह वर्ष के समापन में सकल गुरु चरणों में यह नमन करती है तथा उनकी आज्ञा शिरोधार्य करने में एवं आगम आज्ञा पालन करने की अपनी प्रतिज्ञा दोहराती है।

- संगठन मंत्रालय की ओर से
प्रेषक- मंगलचंद पाटनी, अजमेर

जैन गजट का प्रथम सेनानी सम्पादक और वर्तमान

- डा. अभय प्रकाश जैन, एन-१४, चेतकपुरी, ग्वालियर

यह कितने गौरव की बात है कि जैन समाज का एक साप्ताहिक पत्र अपने प्रकाशन के १०० वर्ष पूरे कर चुका है। इस पत्र का नाम जैन गजट हिन्दी साप्ताहिक है। इसके प्रथम संपादक १८६६ में बाबू सूरजभान वकील थे जिनकी यशपताका आज भी फहरा रही है। इस श्रृखला में इसके वर्तमान संपादक प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश जैन (फिरोजाबाद) हैं। ये ऐसे प्रखर हस्ताक्षर हैं जिन्हें जैन, जैनेतर पूर्वांचल क्षेत्र का हर बुद्धिजीवी जानता है। उनकी प्रखर चेतना और वाणी जन जन का गलिहार बन चुकी है। जैन गजट ने अपनी पत्रिकारिता से सारे देश को एक स्वस्थ रक्त संचार दिया है, जैन जागरण चेतना ने राष्ट्रीय जागृति के क्षणों में एक महत्वपूर्ण ठोस भूमिका निभाई है, हिंदी भाषा और साहित्य को इसने समृद्ध किया है। प्राचीन संस्कृति, कला, पुरातत्व को इसने भरापूरा बनाया है। इसने अनेकानेक तथ्य उद्घाटित किए हैं। जब इसके १०० वर्ष पूरे हुए तब कोई यह तलाशने वाला भी नहीं मिला कि पहले संपादक बाबू सूरजभान जैन ने इस पत्र को किन परिस्थितियों में शुरू किया था और किस अग्निपथ पर वह सेनानी चलकर अपने अभीष्ट तक पहुंचा था। जैन गजट का चरित्र सदैव प्रामाणिक/ निष्कलंक रहा है। इसकी शुभ्र धवल चूनर पर आज तक कोई दाग नहीं आया। जैन गजट पत्रकारिता की गौरव गाथा पर एक भी तथ्यपूर्ण आलेख अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। १८६५-१६६५ की मध्यावधि में जो इस पत्र ने किया है वह मूल्यांकन की अनुपस्थिति में भी महत्वपूर्ण है। वर्तमान में जब महासभा का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है तो जैन गजट साप्ताहिक के मूल्यांकन पर भी एक राष्ट्रीय पत्रकार संगोष्ठी का आयोजन जरूरी है। जैन गजट ने सदैव उन रूढ़ियों और अंधविश्वासों का खुलकर विरोध किया है जो मनुष्य को मनुष्य होने/बनने से लगातार रोक रहे हैं, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, मरणभोज, दहेज, सामाजिक अपव्यय, खर्चीली पूजाओं, अंधविश्वासों और अंधी विषाक्त परंपराओं के खिलाफ यह पत्र सदैव बागी बना रहा है। क्या अब यह संभव नहीं है कि सारा समाज जैन गजट पत्र की भी शताब्दी मनाऐ और उसके अब तक के कृतित्व का तटस्थ मूल्यांकन करे? इसे लेकर संगोष्ठी हो, परिचर्चायें हों, विचार विमर्श और मूल्यांकन हो तथा सारे देश में ऐसे पत्रकारिता शिविरों का भी आयोजन हो ताकि जैन पत्र पत्रिकाओं का क्षेत्र विस्तृत हो सके और कुछ नए आयाम खुल सकें। आशय यह है कि संपूर्ण देश को यह सूचना मिलनी चाहिए कि जैन साप्ताहिक पत्र भी शताधिक वर्ष से अनवरत प्रकाशित है और उसका भारतीय लोकजीवन को स्पष्ट असंदिग्ध एवं मूल्यवान योग रहा है। क्या भारतीय पत्रकारिता में जैनस्वर की कोई अस्मिता नहीं है। भीषण खूनखराबे में भी जैन गजट मानवीय मूल्यों के मतृत्व बोध, सादा जीवन उच्च विचार, अहिंसा जीवन पद्धति, शाकाहार का वैज्ञानिक समर्थक रहा है। जैन गजट की इस भूमिका पर लोगों का ध्यान नहीं है? प्रश्न वाहन है और असंदिग्ध उत्तर पाने की अकुलाहट में प्रस्तुत है। क्या यह उचित है कि संस्थागत पत्र पत्रिकाओं को अभिव्यक्ति की भी पूरी स्वतंत्रता न हो? हमारी विनम्र समझ से पूरी छूट होनी चाहिए तथा प्रयत्न किया जाना चाहिए जो वे विचार दे रही हैं या देना चाहती हैं उनमें कोई हस्तक्षेप न हो हां पत्रकारों को भी ध्यान देना होगा कि वे किसी रागद्वेष के कारण यह या वह न लिखें अपितु जो उनके कर्तव्य की परिधि में आता हो उसे ही अपने चरित्र का महाभाग बनाएं।

बड़ागांव (खेकड़ा) मेरठ में ४-५-६ नवम्बर, ६५ को आयोजित किए गए राष्ट्रीय जैन पत्रकार सम्मेलन का शुभारंभ सजगता की चौखट पर पहली दस्तक है जिसे बहन डा. नीलम जैन तथा डॉ. अनुपम जैन ने खटखटाया है। हमें ऐसे नवयुवकों/नवयुवतियों का आह्वान और सम्मान करना होगा। यही सच्ची श्रद्धांजलि बाबू सूरजभान जैन के पत्रकार जीवन के लिए होगी।

स्व.बाबू सूरजभान वकील का स्मरण इस समय प्रतीक रूप में कर सकते हैं। विचार का दीपक भीतर जल रहा है। धुंधला सा नन्हा सा टिमटिमाता, तेल उसमें कोई नहीं डालता, उसे बुझाने को हरेक की फूंक बेचैन है। दीपक में गर्मी है, वह जीवन के लिए संघर्ष करता है। उसकी लौ टिमटिमाती है, ठहर जाती है पर अंत में निराशा का कभी झोंका आता है वह बुझने को हो जाता है पता नहीं, हमारे समाज में रोज तरूण हृदयों मे विचारों के दीपक कितने जलते हैं और यों ही बुझ जाते हैं। काश वे सब जलते रह पाते तो आज हमारा जैन समाज दीपमालिका की तरह जगमग-जगमग दिखाई देता। जितने भी दिए बुझे हैं संरक्षण के अभाव में बुझे हैं।

सुना है, हां देखा भी है। दीपक हवा के झोंके से बुझ जाता है। हम नहीं चाहते कि प्रदीप जले, दोनों में शत्रुता है, पर वन में ज्वाला जलती है तो आंधी ही उसे चारों ओर फैलाकर कृतार्थ करती है। दोनों में अभिन्न मित्रता है। बाबू सूरजभान एक ज्वाला की तरह अपनी तरूणाई की मद भरी अंगड़ाइयों में समाज के अंधेरे आंगन में उभरे। विरोध की आंधियां उठी, फहराई पर वे दीपक न थे कि बुझ जाते, अज्ञान के दारूण दर्प को दहते चारों ओर फैल गए। भारी लक्कड़ के बोझ से दबकर छोटी चिनगारी बुझ जाती है पर होली की लपट इन्हीं लक्कड़ों की सीढ़ियों पर से चढ़कर आसमान के गले लग जाती है। पता नहीं बाबू जी साहब ने जन्म लिया, किस ज्योतिषी ने उनकी वाणी का लेख पढ़ा और उस सुकुमार शिशु को यह जलता नाम दिया- सूर्य की तरह वे अंधेरे में उगे उसे छिन्न भिन्न कर आसमान में आ चमके। इन सब परिस्थितियों का हम अध्ययन न करें, अपने मन में विरोध की आंधियों के झकोरों का वक्त तोल पायें, तो देवता की तरह हम बाबू सूरजभान की मूर्ति पूजा भले ही कर लें, उनके कार्यों का महत्व नहीं समझ सकते। तब उनके कार्य हमारे उत्सव-गीतों में स्वर भले ही भरें हमारे अंधेरे अंतर का आलोक और टूटे घुटनों का कल नहीं हो पाते। ऐसा हम कम सोचेंगे?

आजकल की तरह बेरोजगारी उस समय नहीं थी। वे चाहते तो आसानी से कलेक्टर/डिप्टी कलेक्टर/जज बन सकते थे। उनका जन्म नकुड़ जिला सहारनपुर में सन् १८७० में हुआ था। आपके पितामह लाला नागरमलजी तहसीलदार थे और पिता लाला खुशवंतराय जी नहर के जिलेदार थे। आजीविका के लिए सहारनपुर में वकालत का पेशा किया फिर देवबंद में, इससे उनको उद्वेग हुआ तो वकालत छोड़ने को तैयार हो गए

उन्हें तो जैन समाज के उत्थान का अग्रदूत बनना था, पत्नी के समझाने पर निश्चय किया कि आज से प्रतिज्ञा लेता हूं सिर्फ सच्चे मुकदमे ही लिया करूंगा। सच्चाई की खशबू फैली ऐसी फैली कि अंग्रेज सरकार को भी लोहा मानना पड़ा। उन दिनों तिथि त्योहारों पर ही लोग मंदिर जाते थे और उर्दू लिपि में णमोकार मंत्र, पद, विनती आदि लिख पढ़ लिया करते थे पर स्त्रियां रोज मंदिर जाया करती थीं।

सन् १८८४-८५ में मुरादाबाद के मुंशी मुकुन्दराय, पं. चुन्नीलाल के सम्पर्क में आकर जैन समाज की उन्नति के लिए जगह जगह भ्रमण करके जैन सभायें, जैन पाठशालाऐं स्थापित करना शुरू किया। मुंशी मुकुंदराय अच्छे वक्ता थे, उन्होंने ही मथुरा में जैन महासभा की स्थापना की, जिसका सभापति राजा लक्ष्मणदास सी.आई.ई. को बनाया और दूसरा काम यह किया कि पं. छेदीलाल जैन के नेतृत्व में एक जैन पाठशाला शुरू की जिससे जैन धर्म के विद्वान तैयार हो सकें। बाबू जी इन दोनों को अपना प्राणपण से गुरू मानते थे। १८९२ में बाबू सूरजभान ने जैन हितोपदेशक उर्दू में मासिक पत्र निकाला। इस पत्र में उपदेशक फण्ड स्थापित करने की अपील की गई, उसके मंत्री चम्पतराय डिप्टी मजिस्ट्रेट बनाए गए। चौधरी जियालाल जैन ज्योतिषी उक्त फण्ड को इकट्ठा करने के लिए प्रचारमंत्री बने। चौधरी जियालाल जैन से मेरे पिताजी के भी सम्पर्क रहे हैं। दीवाली की छुट्टियों में सरसावा के हकीम उग्रसेन के साथ बाबूजी ने भी इसकी इरफ से एक लम्बी यात्रा की, मुरादाबाद पहुंचने पर पता चला कि मथुरा में जैन महासभा स्थापित की गई थी। शोलापुर के स्व. सेठ हीराचंद नेमचंद जी ने महासभा के एक अधिवेशन में प्रस्ताव किया था कि जैन ग्रंथ छपने चाहिए। पं. प्यारेलाल ने सोचा कि यदि महासभा रही तो ऐसे-ऐसे जाने कितने बखेड़े खड़े होंगे उन्होंने इसे बंद बस्ते में सुला दिया।

बाबू सूरजभान को पता चला तो पं. चुन्नीलाल को साथ लेकर अनुमोदन किया और इटावा (उ.प्र.) जाकर आपने मुंशी चम्पतराय की भी अनुमति ले ली। अंततः मथुरा के मेले में महासभा पुनरूर्ज्जीवित हो गई। बाबू चम्पतराय महामंत्री बनाए गए और सभी ओर से एक साप्ताहिक पत्र निकालने का निश्चय किया गया जिसका नाम जैन गजट पसंद किया गया।

जैन गजट के सबसे पहले संपादक बाबू सूरजभान जी ही नियत किये गये, यह बात सन् १८९५- की है। यद्यपि लगभग डेढ़ वर्ष ही बाबू जी जैन गजट के संपादक रहे, परन्तु इतने ही समय में वह बहुत लोकप्रिय हो गया था और उसके लगभग ६०० ग्राहक बन गए। जैन गजट के जीवन की यह बात सबसे उल्लेखनीय रहेगी कि बाबू जी ने पहले ही साल उसे दस दिनों के लिए पर्यूषण पर दैनिक कर दिया, ऐसा प्रबंध किया कि ग्राहकों को दशलक्षण पर्व के दस दिन प्रतिदिन जैन गजट स्वाध्याय के लिए मिलता रहे। इस दैनिक पत्र से जो जैन धर्म प्रभावना बढ़ी इसकी मिसाल नहीं है। मंदिरों के बाहर अखबार आने के लिए लोग प्रतीक्षा करते देखे जाते थे और एक आदमी अखबार पढ़कर सुनाता था और सैकड़ों की संख्या में मूक बनकर जैन गजट को तीर्थंकर की वाणी मानकर सुनते थे। छपाई का यह उषाकाल था। बाबू जी जैन सिद्धान्त के ग्रंथों का भी प्रकाशन चाहते थे। ये सभी अखबार जिनवाणी की तरह पूज्यनीय माने जाते थे और जूता उतारकर सिर पर टोपी पहनकर सुने और सुनाये जाते थे। इस समय कैसा अजीब और हास्यास्पद लगता है। पढ़ने के बाद मंदिर में ही इन अखबारों को जिनवाणी की तरह ही विराजमान किया जाता था। जैन गजट हाथ धोकर शुद्ध कपड़े पहनकर छुआ जाता था। जैन ग्रंथ उस समय तक हाथ से ही लिखे जाते थे। सबसे पहली पहल मुंशी अमनसिंह एवं सेठ हीराचंद नेमिचंद आदि ने छोटे छोटे ग्रंथ छपवाकर कर की थी। इससे मतानुगत लोगों में बड़ी सनसनी फैली थी। लोग मरने मारने पर उतारू थे। जिनवाणी ग्रंथों का प्रकाशन होना विरोध का कारण बना और देश भर में उग्र से उग्रतर होता जा रहा था। चूंकि बाबू जी ही जैन गजट और जैन ग्रंथों के प्रकाशन के पुनरूस्कर्ता थे इसलिए मुंशी चंपतराय जी की सम्मति से उन्होंने बड़े अनमने भाव से इस्तीफा दे दिया पर उन्होंने 'उर्दू जैन हितोपदेशक' बराबर जारी रखा।

सहारनपुर के लाला उग्रसेन रईस बाबूजी को बहुत चाहते थे। उन्होंने ही बाबू जी को अपने यहां की जैन सभा का मंत्री बनाया परन्तु जब महासभा के मेले पर प्रकाशन और छापे का संगठित विरोध हुआ तब लाला उग्रसेन उठकर बोले सहारनपुर जिले का जिम्मा तो मैं लेता हूं कि वहां शास्त्र नहीं छपेंगे न छपने दिए जायेंगे इसी तरह यदि दूसरे प्रतिष्ठित लोग भी अपने-अपने आसपास का जिम्मा ले लें तो यह शास्त्र नहीं छपने पायेंगे और यह काम रूक जायेगा। यह बात बाबू सूरजभान जी को बहुत बुरी लगी वे उफन पड़े और टोपीधारी सेठों को ललकार कर कहा कि जैन धर्म सेठों की बपौती नहीं है। छपाई का काम तो सबसे पहले सहारनपुर में ही शुरू होगा, देखें किसमें हिम्मत है जो मुझे रोकता है? बात यहां तक बढ़ी कि सहारनपुर का अंग्रेज कलेक्टर बाबू जी के घर मिलने आया, बाबू जी को उस अंग्रेज कलेक्टर ने संरक्षण दिया और पीठ थपथपाई। इस प्रेरणा से नकुड़ के लाला निहालचंद जी की सम्मति से बाबू जी ने एक जैन ग्रंथ छपाने और प्रचार करने के लिए संस्था स्थापित की। लगभग १५००/- रूपया एकत्रित कर छपाई का काम शुरू किया गया।

सबसे पहले रत्नकरण्ड श्रावकाचार (वचनिका) प्रकाशित किया गया इस संस्था में बाबू ज्ञानचंद जैन भी शामिल थे। इसके बाद लाहौर से मोक्षमार्ग प्रकाश, आत्मानुशासन, हरिवंश पुराण, पद्मपुराण आदि अनेक बड़े-बड़े ग्रंथ प्रकाशित कराये।

रत्नकरण्ड छपने पर लाहौर में भारी तूफान मचा। बाबू जी के कपड़े सरे बाजार फाड़ दिए गए। जैन समाज के लोगों ने सामूहिक बंद का आह्वान किया। कई कई दिन बाजार बंद रहे। जगह-जगह जमकर विरोध किया गया। छपाने वाले ही नहीं सहानुभूति रखने वाले भी जाति बहिष्कृत कर दिए गए। खुले शास्त्रार्थ भी हुए लेकिन मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की। बाबूजी को अपना 'जैन हितोपदेशक' (उर्दू) बंद करना पड़ा। उसके बाद हिंदी भाषियों के लिए बाबू जी ने 'ज्ञान प्रकाशक' नाम का ग्रंथ निकाला।

कलकत्ते में जैन महासभा का अधिवेशन हुआ उसमें बाबूजी निष्काम भाव से सम्मिलित हुए। उन दिनों जैन गजट की बहुत दुर्दशा हो रही थी उसके लिए संपादक की जरूरत थी। कोई भी विद्वान या पंडित सपादक बनकर अपनी बेइज्जती और दुर्दशा नहीं कराना चाहता था, फिर उन्होंने अपने मित्र सहयोगी पं. जुगल किशोर मुख्तार को संपादक बनने के लिए मनाया और जैन गजट देवबंद से प्रकाशित होने लगा। देवबंद में आकर जैन गजट बाबू जी और मुख्तार साहब की देखरेख में खूब चमका। उसके २५०० ग्राहक बन गए। पं. जुगलकिशोर ने तीन वर्ष तक उसका संपादन किया और उसमें बाबू जी का पूरा-पूरा आशीर्वाद और सहयोग रहा।

१२ फरवरी १९१४ को बाबू जी ने अपनी चमकती वकालत छोड़ दी

और समाजसेवा में जीवन अर्पण कर दिया। बाबू जी की हालत अनेकों बार ऐसी भी हुई कि समाज के उत्सवों पर इस कारण नहीं पहुंच पाए कि जेब में सफर के लिए पैसे ही नहीं थे और समाज से लेना उचित नहीं समझा। आपके विचार समय से सदैव आगे चले और कलम भी समय से पहले और आगे चली इसलिए विद्रोह सहना पड़ा। कलम लोकप्रिय न हो पाई और अपनी निष्काम, निष्कपट, निस्वार्थ सेवा का वही पुरस्कार मिला जो अभी तक सभी समाज सुधारकों को मिलता रहा है।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद का लेख जैन गजट २४ मई १८९६ में प्रकाशित हुआ उस लेख का कुछ अंश इस प्रकार है-

'ऐ जैनी पंडितो! यह जैन धर्म आपके ही अधीन है इसकी रक्षा कीजिए, द्योति फैलाइए, सोतों को जगाइए और तन मन धन से परोपकार और शुद्धाचार लाने की कोशिश कीजिए, जिससे आपका यह लोक परलोक दोनों सुधरे।'

अठारह वर्ष की आयु में ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद के उपरोक्त लेखांश देखने योग्य हैं जो जैन गजट में अवतरित हुए।

आगरे के आर्यमित्र में उन दिनों जैन धर्म के विरूद्ध लगातार लेख निकल रहे थे। उनके प्रतिवाद स्वरूप बाबू सूरजमल जी ने "आर्यमित्र लीला" नाम की लेखमाला शुरू की जो २८ अंकों में समाप्त हुई। आर्यों का तत्वज्ञान, आर्यों की मुक्ति, ऋग्वेद के बनाने वाले ऋषि आदि लेख भी उसी समय लिखे गए।

जैन हितैषी में सन् १९३५ से १९४५ तक अनेकों लेख समाजोन्नति विषयक पुरानी फाइलों में देखे जा सकते हैं। आपके लेखों से समाज में तहलका मच जाता था। उनका सदैव विरोध किया गया और बड़े बड़े प्रतिवाद निकाले गए परंतु आपने उनका कभी उत्तर नहीं दिया। जिन दिनों उसके ग्रंथ प्रकाशन की नीति की आलोचना जमकर हो रही थी स्व. बाबा भागीरथी ने एक बहुआयामी पंडित से कहा कि तुम लोग किस मर्ज की दवा हो जो सूरजभान का मुकाबला करोगे? मैं अभी देखकर आया हूं वह तो पुस्तकों के ढेर पर बैठा है, शाम से सुबह कर दिया करता है और उसकी कलम विराम नहीं लेती, एक तुम हो कि तुमसे गाली गलौज करने के और कुछ नहीं होता।

उनका साहित्य निम्नानुसार है-

आपका मनमोहिनी नाटक सन् १९०६ में प्रकाशित हुआ था। रामदुलारी, लज्जावती का किस्सा, गृहदेवी, मंगलादेव, सती सतवंती, तारादेवी, असली और नकली, धर्मात्मा पुस्तकें उनकी ऐसी हैं जो मिथ्या विश्वासों से मुक्ति दिलाने वाली हैं। जैन हितैषी में (भाग १३ एवं १४) में वर्ण और जाति विचार, ब्राह्मणों की उत्पत्ति, आदिपुराण का अवलोकन, अलंकारों से देवी देवताओं की उत्पत्ति आदि लेख आज भी जीवंत हैं।

यह जैन धर्म का अमर सैनिक शैतान का अग्रदूत और घिनौना नीच घोषित किया गया, पर जो लांछनों से डर गया वह सुधारक क्या? उन्हें मार डालने की धमकी दी गई। दो बार देवबंद और सहारनपुर में बम से उड़ाने की कोशिश की गई। एक बार प्रेस में स्वयं पुलिस ने बम बरामद किया, तो वे ठहाका मारकर हंसे थे कि जैनत्व में मौत भी एक महोत्सव होती है?

पृथ्वी पर युग देवता और आकाश में भगवान हंस रहे थे। ज्ञान विजयी हुआ, अन्धश्रृद्धा पराजित हुई। आज उन विरोधियों के वंशधर छपे हुए 'शास्त्री जी' का पाठ करके कृतार्थ हो रहे हैं।

पंडित जुगल किशोर मुख्तार जिनकी मेरी भावना आज भी अमर है- ८ मई १८९६ के जैन गजट में देवबंद में जो उनका पहला आलेख छपा उसने तहलका मचा दिया था।

उनकी दो पंक्तियां-

सवस्व यों खोकर हुआ, तू दीन हीन अनाथ है।
कैसा पतन तेरा हुआ, तू रूढ़ियों का दास है।।

भाई साहबो, सब तरह विचार करने और दृष्टि फैलाने से मेरी सम्मति में तो यही लगता है सब अंधकार अविद्या का है और विद्यारूपी सूरज के प्रकाश होते सब भाग जायेगा, फिर न मालूम भाइयों ने और कौन सा उपाय इसके दूर करने का सोच रखा है जिससे कि इतना समय बीता गया है और यह दूर नहीं हुआ और इनके कारण जो जो नुकसान हुए हैं वह सबको विदित हैं।

इस लेख पर जैन गजट के संपादक श्री बाबू सूरजभान ने जो शीर्षक लगाया था, वह उस काल की हिन्दी पत्रकार कला का एक मनोरंजक उदाहरण है-

लाला जुगलकिशोर विद्यार्थी, सरसावा जिला सहारनपुर का लेख अवश्य पढ़िए-

सम्पादक के नाम जो पत्र जुगलकिशोर मुख्तार ने लिखा था, जैन गजट के इसी अंक में छपा है, उसका दर्शनीय ड्राफ्ट इस प्रकार है-

सरसावा १.५.८६

'श्रीमान बाबू सूरजभान साहिब,

जैसे कि लघु एक पुरुष व बड़े काम करने की प्रार्थना करे तो वह कैसे हो सकता है परंतु जैसे कि पान के संगत से तुच्छ पत्ता बादशाह तक पहुंच जाता है, इसी प्रकार मैं हकीम उग्रसेन की आज्ञानुसार और आप लोगों की सहायता से आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे उक्त उपरोक्त विषय को यदि आप अच्छा समझें तो सुधारकर अपने अमूल पत्र में ध्यान देवें। यद्यपि यह लेख योग्यता नहीं रखता परन्तु यदि आप स्थान देंगे तो मेरा मन भी प्रफुल्लित हो जावेगा और मैं आपको कोटिशः धन्यवाद दूंगा।

आप कृपापूर्वक प्रार्थना को पहले देखें पश्चात कुल लेख देखें। यदि एक पत्र में न आवेगा तो दो में छाप देवें।

- आपका आज्ञाकारी
जुगलकिशोर
विद्यार्थी

इस आलेख में मैं वह सब कुछ नहीं लिख पाया जो मुझे और लिखना चाहिए था। मैंने अपना धार्मिक, नैतिक कर्तव्य समझकर यह आलेख लिखा है एक वाक्य में बाबू सूरजभान का स्केच है- अंधेरा देखते ही दिया जलाने को तैयार। उन्होंने अंधेरा देखा और दीपक संजोने चले। अंधेरा अज्ञान का, अन्याय का और दीप ज्ञान का, सुधार का। बाबू सूरजभान साहब ने व्याख्यान दिए, अनेकानेक लेख लिखे पुस्तकें तैयार की और संस्थाएं खोलीं, पर सबका उद्देश्य एक है, अंधेरे के विरूद्ध युद्ध, वे अनथक योद्धा हैं। न थकना ही जैसे उनका उद्देश्य हो, जीवन मिशन हो। उनकी हर सांस में जैनत्व रचा बसा था। अपने मरने के दिन तक सुबह से ही जैन गुरुकुल में अध्यापन, दो घंटे कन्या पाठशाला में अध्यापन, २ घंटे स्वाध्याय शास्त्र प्रवचन और ६ से ८ घंटे गंभीर अध्ययन और अपनी खोजों पर लेख यह एक पिचहत्तर वर्ष के वृद्ध की दिनचर्या रही है।

वकील बाबू सूरजभान अपने मुवक्किलों के मुकदमे तो बहुत थोड़े दिन लड़े। वे कचहरियां उनके योग्य न थीं पर वे वकील जीवन भर रहे रात दिन मुकदमे लड़ते, न्याय की अदालत में, खोज के हाईकोर्ट में असत्य के विरुद्ध सत्य के मुकदमे, संस्कृति की संपदा पर कुरीतियों के कब्जे के विरुद्ध वे बराबर गरजते बरसते लिख और बहस करते रहे हैं। सच तो यह है कि इन मुकदमों की कहानी ही इस जुझारू नररत्न का जीवन चरित्र है।

उस समय जैन धर्म की पुस्तकें साम्प्रदायिक वातावरण की कशमकश से दर्शनीय और पूजनीय रह गई थीं। पर्व उत्सव त्यौहारों पर ही इनके दर्शन होते थे, बाबू जी की इन पुस्तकों के प्रति इतनी आत्मीय श्रद्धा न होती तो हमारे देश के इतिहास की तरह हमारा जैन साहित्य जो बचा है वह भी अप्राप्य होता।

भारत की राजनीति में दादाभाई नैरोजी और गद्य के नवविकास में प्रेमचंद का जो स्थान है जैन समाज की नवचेतना के इतिहास में बाबू सूरजभान का भी वही स्थान है। जैन समाज के वे ही ईश्वरचंद विद्यासागर हैं। पर इसमें संदेह नहीं, अजैन समाज की कौन कहे, जैन समाज में ही लोग उन्हें ठीक-ठीक नहीं जान पाये। हमारे देश में कुछ मठाधीश बन जाते हैं। कुछ सुधारक नए धर्म के संस्थापक बन जाते हैं। महिमा मंडन के स्थान पर निंदा का नमकीन ही उन्हें रास आया। हम करने के बाद भी अमर होने के लिए पत्थरों पर नाम खुदाने को बेचैन रहते हैं। उन्होंने जीते जी ही अपने को बेनाम रहकर जैसे अमरत्व का रसपान किया है।

जैन समाज/महासभा संगठित होकर उनकी अब जयंती मनाए। उनके व्यक्तित्व- कृतित्व पर संगोष्ठी करे। उन पर मौलिक शोध किए जायें, इसी में इस शताब्दी महोत्सव वर्ष की गरिमा है। क्या हम इस आलेख को शब्द दर शब्द पढ़ने की कोशिश करेंगे और हर शब्द के पीछे जो लेखक की भावना है उसका समादर करने का प्रयास करेंगे। जैन गजट के वर्तमान संपादक से मुझे महती आशाएं हैं। बाबू सूरजभान जी को तो मैंने नहीं देखा पर उनके गुणों को इन संपादक में जरूर दर्पण की तरह दमकते देखा है। बाबू सूरजभान वकील से प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश तक एक लंबा अध्याय है जिसके सेतु प्राचार्य जी बने हैं।

- मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि महासभा का शताब्दी समारोह २० जनवरी १९९९ को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में शान्तिवीर नगर पंचकल्याणक महोत्सव के शुभावसर पर आयोजित किया जा रहा है। इस मंगलमय शुभावसर पर मेरी शुभकामना है कि यह शताब्दी समारोह पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हो।

- पं. [illegible] प्रसाद जैन [illegible], [illegible]पुर

तीर्थों की सुरक्षा क्यों?

भारतवर्ष अनेकों धर्मों की प्रसव भूमि है। अतः भारत की संस्कृति आध्यात्मिक-जीवन से ओत-प्रोत है। आज का मानव भौतिक वातावरण से प्रभावित है। पाश्चात्य सभ्यता इसकी पुष्टि करती है। इसीलिए जीवन की दूसरा पहलू आध्यात्मिकता से उदासीन है। फिर भी इस संस्कृति के द्योतक तीर्थों की कमी नहीं है। अर्थात् आध्यात्मिक संस्कृति को जीवन्त रखने वाले तीर्थ एवं सिद्धक्षेत्रों का दर्शन आज भी दुर्लभ नहीं है। तीर्थ वे हैं- जहां से-आत्म साधना कर महापुरुष संसार जलधि से तिर गये हों व जहां से संपूर्ण आत्मसिद्धि पाया हो उन्हें तीर्थ व सिद्धक्षेत्र कहते हैं। प्रत्येक तीर्थंकरों के साथ करोड़ों मुनिगण यहां से मुक्ति पाए हैं, इसीलिए इस मिट्टी के कण-कण को पवित्र माना जाता है। जो भव्य इनका दर्शन करेगा उसका भव भाव भ्रमण संकुचित हो जाता है। शर्त यह है कि- इन क्षेत्रों का दर्शन रूढ़िमात्र न होकर आत्म साधना का लक्ष्य होना परमावश्यक है। किसी कवि ने कहा है, कि-

भाव सहित वंदे जो कोई, ताहि नरक पशुगति न होय

तीर्थ व सिद्धक्षेत्र- कैलाशगिरि, सम्मेदशिखरजी, पावापुरी, चंपापुरी और गिरनार आदि। ये पांचों तीर्थंकरों के मुक्तिस्थल हैं। इनके अलावा सोनागिरि, गजपंथा, खण्डगिरि, उदयगिरि जैसे सैकड़ों तीर्थ मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बुन्देलखण्ड, राजस्थान आदि प्रांतों में पाये जाते हैं। इन क्षेत्रों की सुरक्षा इसलिए आवश्यक है- कि प्रथम तो इनके दर्शन से आत्मसाधना की प्रेरणा मिलती है। यहां पहुंचते ही महान आत्माओं के गुण मन में घर कर लेते हैं, इससे विषय कषाय मंद पड़ जाते हैं। फलस्वरूप परिणाम निर्मल हो जाता है। वांछा रहित पुण्य बंध स्वयं हो जाता है। स्वर्गादि सुख तो अवश्यंभावी है। काललब्धि अनुकूल हो तो सम्यक्‌दर्शन भी प्रकट हो जाता है। क्योंकि सम्यक्‌दर्शन की प्राप्ति में तीर्थ व सिद्धक्षेत्र बाह्य निमित्त हैं।

भारत की प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति का इतिहास इन्हीं क्षेत्रों में निहित है। संस्कृति की प्राचीनता का महत्व ही कुछ और है। अतः उन दो कारणों को देखते हुए तीर्थों की सुरक्षा की आवश्यकता स्वयं विदित हो जाती है। शायद कोई ऐसा विचार करते हों कि इनकी सुरक्षा से हमें क्या फायदा? ऐसे विचार वालों को इतना मात्र कहना चाहता हूं कि- हमारे पूर्वज इनकी रक्षा करते आये इसीलिए हमें आत्मसाधना का मार्गदर्शन मिल रहा है। इसी प्रकार भावी पीढ़ी के मार्गदर्शन हेतु हमें भी तीर्थों की सुरक्षा करना परमावश्यक है, वरना भावी पीढ़ी हमें क्षमा नहीं करेगी। अतः आप सबसे विनीत अनुरोध है कि सम्पन्न सज्जन इस ओर भी आकर्षित होकर तन-मन-धन से तीर्थों की सुरक्षा में सहायक बनकर सुकृत लाभ प्राप्त करें।

- एम. के. जैन

कार्याध्यक्ष- तीर्थ संरक्षिणी महासभा

नं.३, तीसरी गली, वैलेक गार्डन, चेन्नई- ६००००६

महामन्त्री का प्रतिवेदन

महासभा : दिगम्बर जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था

आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने की अपील
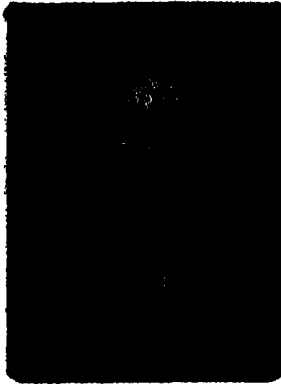
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा की स्थापना करीब १०४ वर्ष पहले की गई थी, जिसका उद्देश्य था- समाज का संगठन, तीर्थों की सुरक्षा, साधुओं का संरक्षण, शिक्षालयों की स्थापना और दिगम्बर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार। जब इस संस्था की स्थापना की गई थी, उस समय दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों की यही एक मात्र संस्था थी। धर्म समाज के लिये इसके द्वारा लिये गये निर्णय ही सर्वमान्य होते थे। जिस तरह सरकार द्वारा बनाये हुए नियमों का प्रकाशन गजट में अधिकारिक माना जाता है, उसी प्रकार महासभा द्वारा समाज और धर्म के सम्बन्ध में लिये गये निर्णय जैन गजट में प्रकाशित कर दिगम्बर जैन समाज को मार्गदर्शन दिया जाता रहा।

समाज के अनेक प्रतिष्ठित घरानों से इसके अध्यक्ष रहे हैं और कई प्रतिभाशाली व्यक्ति इसके महामंत्री और जैन गजट के संपादक भी रहे हैं। समय परिवर्तन के साथ समाज में अनेक-संस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ। महासभा की गतिविधियों में भी थोड़ी शिथिलता आई लेकिन जबसे महासभा की बागडोर युवा कर्मठशील श्री निर्मलकुमार जी सेठी के हाथ में आई, महासभा की गतिविधियों में पुनः चेतना आ गई और उन्होंने सारे भारतवर्ष में कार्यकर्ताओं की श्रृंखला तैयार करके महासभा का जाल सारे भारतवर्ष में फैला दिया। जितना अपना समय और धन श्री सेठी जी ने महासभा को प्रदान किया, वह अपने आप में एक कीर्तिमान है।

वर्तमान में महासभा ने तीर्थ-जीर्णोद्धार कार्य को अपने हाथ में लिया है। उससे समाज में बड़ी आशा जगी है। मुझ जैसे युवा व्यक्ति को महासभा की कार्यकारिणी ने महामंत्री का पद देकर जो मेरे पर विश्वास व्यक्त किया है, उसके लिये मैं महासभा के सभी महानुभावों का आभार प्रकट करता हूं। मेरे लिये यह कार्य एकदम नया है और इसे समझने में मुझे कुछ समय लगेगा, फिर भी मैं अपनी पूरी लगन के साथ इस जिम्मेवारी को पूरा करूंगा। मैं चाहता हूं कि महासभा के सभी प्रकाशन आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर चलें। महासभा का जो स्थायी चेरिटेबुल ट्रस्ट है, उसमें भी जिन महानुभावों ने दान की राशियां स्वीकृत कर रखी हैं, वे भी कृपया ट्रस्ट में बकाया राशि जमा करायें, ताकि महासभा की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके। महासभा द्वारा प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति देने की योजना भी प्रारंभ की जा रही है। छात्रवृत्ति राज्य इकाईयों की अनुशंसा पर प्रदान की जायेगी। महासभा के चेरिटेबुल ट्रस्ट द्वारा आचार्य धर्मसागर सेवा पुरस्कार भी प्रतिवर्ष दिया जा रहा है।

इस अवसर पर मैं यह विशेष रूप से राज्य इकाईयों से अनुरोध करना चाहता हूं कि जैन गजट को आर्थिक रूप से सक्षम करने के लिये ६०००/- के विज्ञापन समाज के ज्यादा से ज्यादा महानुभावों से प्राप्त करें, क्योंकि वर्तमान में जैन गजट ही सारे भारतवर्ष के जैन समाज को समाज की जानकारी देने का सर्वोत्तम माध्यम है।

- गजराज गंगवाल

महामंत्री- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

महासभा के सौ वर्ष : एक समीक्षा

- श्री रतनलाल बैनाड़ा, आगरा

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि महासभा के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं और उसका शताब्दी विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। देखा यह जाता है कि जिस किसी संस्था का विशेषांक निकलता है, उसमें उसकी उपलब्धियों की ही चर्चा पढ़ने में आती है। किसी भी विशेषांक में खुले हृदय से समीक्षात्मक लेख देखने को नहीं मिलते, जबकि हमेशा उन्नति समीक्षात्मक लेखों के द्वारा या अपनी कमियों को देखने से ही संभव हुआ करती है। मैं इस लेख में लीक से हटकर यह समीक्षात्मक लेख लिखने की कोशिश कर रहा हूँ, जिसमें मेरी दृष्टि में पिछले सौ वर्षों में जो कमियां रह गई हैं, उनको दूर कर उत्कर्ष की ओर ले जाना है। मेरी दृष्टि आलोचनात्मक नहीं, समीक्षात्मक है। आशा है पाठकगण इसी दृष्टि से इस लेख को पढ़ेंगे।

विगत सौ वर्षों में निःसंदेह महासभा ने बहुत प्रशंसनीय कार्यों का सम्पादन किया है, जैसेः- साधुओं का विहार करवाना, एकांत मत के बारे में समाज को उसकी कमियों या गल्तियों को बताना एवं उसके प्रभाव को रोकना तथा जीर्णोद्धार का कार्य कराना आदि।

अब नई सदी में महासभा को निम्न बिन्दुओं पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये-

१. महासभा का एक उद्देश्य महाविद्यालयों की स्थापना या उनका संरक्षण देना भी है। आज जो भी विद्यालय मोरेना, साढूमल, बरुआसागर, वाराणसी तथा सागर में चल रहे हैं, उनकी दशा अत्यंत दयनीय है। छात्रों की संख्या नगण्य है। छात्रों को अध्ययन कराने वाले शिक्षकगण या तो विषय में अनभिज्ञ हैं या पढ़ाते नहीं हैं। स्याद्वाद् विद्यालय वाराणसी में तो लगभग सभी शिक्षक अजैन हैं। छात्रों के रहने तथा भोजनपान की व्यवस्था एकदम निम्न स्तर की है। सभी विद्यालय, अनाथालय जैसे प्रतीत होते हैं। क्या इस ढंग से हमारे उद्देश्य की पूर्ति संभव है? क्या ऐसे विद्यालयों के द्वारा विद्वान उत्पन्न किये जा सकते हैं। उत्तर है, कभी नहीं। महासभा को चाहिए कि एक अलग विभाग बनाकर इन विद्यालयों के वर्तमान संचालन में आमूलभूत परिवर्तन करे, ताकि समाज को जैन धर्म में शिक्षित विद्वान्, जिनकी कमी समाज में अनुभव की जा रही है, मिलते रहें।

२. जैन गजट, महासभा का यह मुख पत्र है। यदि आज से कुछ वर्ष पहले के अंक उठाकर देखें जायें तो उनमें समाचार थोड़े स्थान में दिए जाते थे और पठनीय लेख अच्छी मात्रा में प्रकाशित होते थे, पर आज जैन गजट मात्र समाचार पत्र बनकर रह गया है। १०/२० अंकों में से शायद ही किसी एक अंक में कोई शोधपूर्ण लेख पढ़ने को मिलता है। बाकी सारा पत्र समाचारों से भरा रहता है। इस स्तर को अच्छा नहीं कहा जा सकता। पत्र में समाचार के लिए २/३ पृष्ठ अवश्य रखे जायें, शेष पृष्ठों में विद्वत्तापूर्ण एवं पठनीय सामग्री होनी चाहिए, जो वर्तमान विद्वानों द्वारा लिखित या आज से १००/५० वर्षों पुराने पत्रों में दिए हुए लेखों को पुनः प्रकाशित करके प्राप्त की जा सकती है।

३. महासभा का उद्देश्य समाज में फैली हुई गलत परंपराओं का सुधार कर वीतरागता का पोषण करना है, जिसके बारे में महासभा आजकल मौन है। अधिवेशनों में पारित प्रस्तावों पर कार्य भी होना चाहिए, हम यह देखें कि जैसे महासभा पदाधिकारी घर में रात्रि भोजन तो नहीं करते हैं तथा रात्रि में दावत आदि तो नहीं कराते हैं? इससे रात्रि भोजन को पोषण मिलता है।

महासभा के कुछ पदाधिकारीगण अन्य मत के देवी-देवताओं एवं साधुओं को पूजते पाये जाते हैं। यह परम्परा अनुचित है। इसे छोड़ना चाहिए। ऐसे हालातों में क्या समाज सुधार संभव है? महासभा का कर्तव्य है कि गलत परंपराओं को स्वयं तो छोड़े ही, समाज को भी उनसे अलग होने के लिये प्रेरित करे।

४. महासभा के अधिवेशनों में आधे से अधिक समय मात्र एक दूसरे को माला पहनाने तथा अभिनंदन पत्र या प्रतीक चिन्ह भेंट करने-कराने में बीत जाता है। यह देख-देखकर दर्शक बुरी तरह बोर हो जाते हैं। इस परस्परोपग्रह की प्रथा को बन्द करके रचनात्मक कार्यों पर ध्यान देना अधिक उचित होगा।

५. महासभा का एक उद्देश्य श्रमण संस्कृति का संरक्षण भी है। आज वर्तमान में साधुओं में शिथिलाचार शीर्ष स्थान पर पहुँचने जा रहा है। यदि कुछ साधु मोबाईल फोन रखने लगें या एक-दो साधु स्नान करने एवं टूथ-ब्रुश से मंजन करने लगें, कोई साधु हमारे यहाँ प्रचलित मंगलाचरण को ही बदल दें तो यह कार्य अनुचित ही कहलायेंगे। महासभा को ऐसे साधुओं के पास जाकर उन्हें मूलाचार में वर्णित साधु-संहिता पर खुलकर विचार करना चाहिए। महासभा के अधिवेशन में साधु शिथिलाचार के ऊपर प्रस्ताव भी आते हैं, प्रस्ताव मंजूर भी हो जाते हैं पर कोई कार्य दिखाई नहीं देता।

महासभा को चाहिए कि इस संबंध में उचित कार्यवाई करे, ताकि साधु परम्परा की महानता/पवित्रता एवं उच्चता पर कोई एक शब्द भी न कह सके।

आज सारी समाज को महासभा से बहुत अपेक्षाएँ हैं। महासभा में सामर्थ्य है कि वह समाज को बहुत कुछ दे सकती है। उसके लिए हमको उपयुक्त बातों पर अच्छी तरह विचार करके ऐसी योजनाएँ बनानी चाहिए, जिससे समाज को उचित लाभ मिले व धार्मिक संस्कृति का संरक्षण हो सके। समाज के पास धन की कमी नहीं है, पर सही योजनाबद्ध कार्य किए जायें तो सहायता देने वाले प्रसन्नता पूर्वक विपुल धनराशि दे सकते हैं। एक जरूरी बात यह भी है कि योजनाएं कम होनी चाहिए और जो योजना हो उसको विधिवत पूरा करना चाहिए। आइये, हम और आप सब मिलकर उपरोक्त बिन्दुओं पर निष्पक्ष और खुले हृदय से विचार करें और समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास करें।

अनीति पूर्वक कमाए हुए धन को दान करने पर भी वह सत्य-समीचीन रूप धारण नहीं कर सकता

महासभा का शताब्दी वर्ष
क्रान्ति वर्ष के रूप में सफल साबित हुआ

- सुमतिचंद शास्त्री मुरैना, उपाध्यक्ष- महासभा

बड़े हर्ष की बात है कि श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा जैसी प्रथम संगठन शक्ति जैसी महान संस्था ने बड़े बड़े उतार चढ़ाव के साथ अपने सौ वर्ष पूर्ण कर लिये और अब श्री अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में उसके शताब्दी समारोह का समापन परम पूज्य आचार्य शिरोमणि वर्द्धमानसागर जी महाराज एवं महान गणिनी आर्यिका परम पूज्य सुपार्श्वमती माताजी के सानिध्य में शान्तिवीर नगर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सुअवसर पर सम्पन्न हो रहा है।

महासभा का सौ वर्ष का इतिहास बड़ा ही ऐतिहासिक रहा है और इस महान संस्था ने बड़े-बड़े उल्लेखनीय कार्य भी किए। श्री सम्मेदशिखर के प्रसंग और उसके साथ ही इसी महासभा द्वारा तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना, संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना मथुरा और ब्यावर में की तथा उसका संचालन किया। अंग्रेजी में जैन गजट का प्रकाशन और उसके बाद हिन्दी में जैन गजट का प्रकाशन किया। इस दौरान महासभा को जिन महापुरूषों ने गति प्रदान की उनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम जैन समाज के अनभिशिक्त सम्राट स्व. सर सेठ हुकमचंद जी साहब का विशेष रूप से है।

इसके अलावा स्व. बैरिस्टर चम्पतराय जी, स्व. हुलासराय जी सहारनपुर, स्व. रावजी सखाराम दोसी सोलापुर, स्व. कुंवरसेन सिंघई सिवनी, स्व. भंवरीलाल जी बाकलीवाल, स्व. सर सेठ भागचंद जी अजमेर एवं महासभा को और अच्छी गति देने में प्रमुख रायबहादुर समाजगौरव स्व. श्री चांदमल साहब जी पाण्ड्या का नाम भी अध्यक्ष के रूप में सदैव लिया जाता रहेगा।

लेकिन महासभा का और पूरे भारत की दि.जैन समाज का यह परम सौभाग्य है कि महासभा की समाजसेवा के लिये समर्पित व्यक्तित्व का धनी, उदारचेता, निरभिमानी, देव शास्त्र गुरू का कट्टर भक्त त्यागी व्रती जैसा नौजवान अध्यक्ष यथा नाम तथा गुण निर्मल कुमार सेठी जैसा युवारत्न अध्यक्ष मिला और यहीं से शुरूआत हुई मृतप्राय: महासभा को जीवन्त बनाने की मुहिम और नई सांस्कृतिक- साहित्यिक- सामाजिक क्रांति का सूत्रपात भी हो गया और निम्न विवरण से श्री सेठी जी ने शताब्दी समारोह के मध्य सिद्ध कर दिया कि शताब्दी वर्ष वास्तव में एक क्रान्ति वर्ष के रूप में ही सफलता के साथ सिद्ध हुआ है।

साहित्यिक क्षेत्र में जैन गजट का श्रेष्ठ सम्पादन, संचालन और प्रकाशन आज दि. जैन समाज का सच्चा प्रतिनिधित्व कर रहा है और दूसरी ओर पूरी जैन समाज में नई जागृति पैदा की है। इसके साथ ही सर्वप्रथम महासभा ने एक साहित्यिक रत्न को भी जन्म दिया जो आज बालकोपयोगी जैन बालादर्श के नाम से जो आज अन्य बाल मासिकों में भी अपना नाम दर्ज करा चुका है और बुक स्टालों पर भी इसकी अच्छी छवि दिखाई देने लगी है और इसके प्रकाशक श्री प्रेमचंद्र जी विशेष बधाई के पात्र हैं। तीसरा रहा जैन महिलादर्श जो पहले महान विदुषी पूज्य ब्र. चन्दाबाई आरा के नेतृत्व में निकलता था फिर वर्षों बंद पड़ा रहा। सेठी जी ने अपनी बड़ी सूझबूझ के साथ उसे भी महासभा में ले लिया और वह भी अपनी सुरूचिपूर्ण सामग्री से महिलाओं में अत्यन्त प्रशंसनीय जागरण पैदा कर रहा है और इसके लिए महिलादर्श की प्रधान सम्पादिका श्रीमती डा. नीलम जैन विशेष बधाई की पात्र हैं।

यह हम भी आशा नहीं करते थे कि जैन गजट कभी प्रान्तीय भाषाओं में निकलेगा और अब इसी क्रांति वर्ष में एक नई क्रांति जैन गजट के मराठी संस्करण के प्रकाशन से शुरू हो गई। इसका पहला अंक सम्पादन और प्रकाशन की दृष्टि से बड़ा ही सराहनीय निकला है। इसके सम्पादक श्री भरतकुमार काला एवं प्रकाशक भी अभिनंदनीय हैं। हम आशा करते हैं कि दक्षिण के लिए एक और जैन गजट उपलब्ध होगा। तमिल और कन्नड़ भाषा का एक संयुक्त जैन गजट और प्रकाशित हो ताकि एकान्तवादियों की जो उधर घुसपैठ हो रही है वह रूक सके।

जहां एक जैन गजट का सवाल है उसने एकान्तवादियों, आर्यसमाजियों और दूसरे आगम विरूद्ध वातावरण पैदा करने वालों के विरूद्ध बहुत ही जबरदस्त लोहा लिया और इसके सम्पादकों में उल्लेखनीय नाम निस्पृही और निर्भीक महाविद्वान गुरूवर्य स्व. श्री मक्खनलाल जी शास्त्री न्यायालंकार का ही नाम आता है जिन्होंने एकान्तवादियों के दिगम्बरत्व को भारी क्षति पहुंचाने वाले प्रयासों को उजागर किया और समाज की आंखें खोली। उनके बाद मुरैना विद्यालय के एक जुझारू विद्वान स्वर्गीय पं. लालबहादुर जी शास्त्री ने भी बहुत ही स्पष्ट तथा दिल दहलाने वाला लेखों की श्रृंखला शुरू की जिससे एकान्तवादियों में तहलका मच गया। उनकी भाषा अब

ज्यादा कड़वी होने लगती तो जैन गजट के सम्पादक मुरैना के ही एक सरल स्वभावी विद्वान कुंजीलाल जी शास्त्री को गजट का सम्पादक बनाया गया। दुर्भाग्य है कि वे अल्प आयु में ही दिवंगत हो गये। वे मेरे अंग्रेजी में सहपाठी और संस्कृत में गुरू भी रहे। यह जैन गजट और मुरैना महाविद्यालय का परम सौभाग्य है कि गजट को यहां एक तरफ पहले मुरैना के एक विद्वान पं. अजित कुमार शास्त्री ने संभाला और आज भी मुरैना महाविद्यालय के पूर्व छात्र स्व. रामस्वरूप जी जैन फिरोजाबाद के सुपुत्र तथा यथा नाम तथा गुण प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश जी भी जैन गजट को समन्वयवादी के रूप में बड़ी प्रखरता और सरलता के साथ बना रहे हैं। वो श्री प्राचार्य जी नारियल भी हैं और बेर भी हैं इसमें कोई शक नहीं।

मुरैना के ही एक दूसरे विद्वान मेरे सहपाठी एवं मित्र श्री मल्लिनाथ शास्त्री भी सहायक सम्पादक के रूप में जैन गजट की अच्छी तरह सेवा कर रहे हैं और तमिलनाडु में आगम पंथ को आगे बढ़ा रहे हैं। वैसे साहित्यिक क्षेत्र में भी इस क्रान्ति वर्ष के दौरान महासभा ने बड़ी क्रान्ति की है। सोनगढ़ समीक्षा, चारित्र चक्रवर्ती आदि ग्रंथों का प्रकाशन भी श्रेयस्कर हुआ है।

महासभा ने अपनी संस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में प्रस्ताव नं. ९ (नौ) को आज तक टूटने नहीं दिया है और उस पर महासभा और उसके आधार प्राणपन से उसको कायम रखने में सफल हुए हैं। विजातीय विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह जैसे सज्जातित्व विरोधी एवं आगमविरूद्ध कार्यों के खिलाफ अपना अभियान आज भी जारी रखे हुए हैं। वास्तव में महासभा की पहिचान प्रस्ताव नं. ९ से ही है और संस्थायें तो प्रायः एक ही जैसी हैं। जिस दिन प्रस्ताव नं. ९ (नौ) महासभा के विधान से हट जायेगा, मिट जायेगा उस दिन महासभा समाप्त हो जावेगी।

सर्वाधिक उल्लेखनीय अन्तिम प्रयोग

शताब्दी समारोह अर्थात् क्रान्ति वर्ष में एक अन्तिम प्रयोग महासभा ने जैन पुरातत्व पर महान उपकार किया है कि जिस महासभा ने जिस तीर्थक्षेत्र कमेटी को जन्म दिया था वह तीर्थक्षेत्र कमेटी वह काम नहीं कर सकी जो अब महासभा द्वारा नवस्थापित तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने कर दिखाया है। यह महासभा कागजों और प्रस्तावों में ही नहीं अपितु सक्रिय रूप से विभिन्न प्राचीन मंदिरों, मूर्तियों, तीर्थों की सुरक्षा और जीर्णोद्धार करके अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिख रही है। मैने स्वयं तमिलनाडु में महासभा अध्यक्ष श्री सेठी जी की तमिलों से यशोगाथा सुनी है और उन तीर्थों को देखा है। अभी-अभी भिण्ड जिले के बरासो, पावई, वरई तथा मुरैना जिले के टिकरौली और कालादेव जैसी दुर्गम प्राचीन पहाड़ियों पर स्थित मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य महासभा के अध्यक्ष श्री सेठी जी ने अपने हाथों में लिया है और दुर्गम पहाड़ियों पर पैदल चलकर वहां सब कुछ देखा। मैं तो अशक्त होने से वहां नहीं पहुंच सका। वास्तव में देखा जाय तो शताब्दी वर्ष अर्थात् क्रांतिवर्ष की यह सबसे बड़ी उपलब्धि है जो हमेशा हमेशा स्मरणीय रहेगी।

आर्थिक क्रान्ति में भी महासभा ने पिछले १०० वर्षों में प्रथम बार ध्रुवफण्ड स्थापित करके एक नया कीर्तिमान महासभा ने स्थापित किया।

महासभा के सुसंचालन में महासभा के एक दूसरे प्राण तथा योगाभ्यासी, मंत्र तंत्र विद श्री त्रिलोकचंद्र जी कोठारी ने भी महासभा में प्राण फूंकने का अपने समय में वृद्ध होते हुए भी काफी कर्मठता से कार्य किया। हालांकि वे अब पद छोड़ चुके हैं किन्तु खुशी की बात है कि महासभा के नये महामंत्री युवा नेता श्री गजराज गंगवाल (जो महासभा के एक वयोवृद्ध समर्पित सबलहृदयी श्री संघपति पूनमचंद्र जी गंगवाल के सुपुत्र हैं), भी श्री कोठारी जी के सही उत्तराधिकारी प्रतीत हो रहे हैं और तन, मन, धन से सक्रिय होकर जुझारू रूप से श्री सेठी जी को पूरा-पूरा सहयोग दे रहे हैं। महासभा के कोषाध्यक्ष वयोवृद्ध, दानशील, विनम्रता की मूर्ति श्री मांगीलाल जी छाबड़ा का योगदान भी कम नहीं है। वे महासभा के कोष को बढ़ाते हुए उसकी सुरक्षा का पूरा-पूरा ख्याल रख रहे हैं।

महासभा के एक संयुक्त महामंत्री श्री निर्वाणचंद्र जी लखनऊ पर काफी छाये रहे और महासभा को बढ़ाने में उनका नाम भी प्रशंसनीय रहा। ये खुशी की बात है कि अब महासभा के केन्द्रीय कार्यालय का संचालन तथा हिसाब किताब पूरी तत्परता के साथ सरल हृदयी श्री बाबूलाल जी छाबड़ा (मंत्री- तीर्थ संरक्षिणी महासभा) पूरी सक्रियता के साथ और खासतौर से तीर्थ संरक्षिणी महासभा के कार्यों में सेठी जी को पूरे भरोसे के साथ सहयोग दे रहे हैं। हमने देखा कि वे बड़े जागरूक हैं।

वैसे महासभा के वे नवरत्न भी हैं और आज भी महासभा में जगमगा रहे हैं जैसे उज्जवल व्यक्तित्व के धनी एवं मन वचन शरीर से परिपक्व श्री संघपति दानवीर उम्मेदमल पांड्या, युवा रत्न दान शिरोमणि श्री आर.के.जैन मुम्बई, कार्यकारी अध्यक्ष और दूरदृष्टा श्री चैनरूप बाकलीवाल, श्री रायबहादुर श्री हरकचंद्र जी (रांची), वयोवृद्ध संरक्षक श्री हरकचंद्र जी पांड्या (कलकत्ता), श्री शिखरचंद्र जी पहाड़िया मुम्बई, युवारत्न श्री पंडित भरत कुमार काला (मुम्बई), बैनाड़ा परिवार (आगरा) जो आज सभी क्षेत्रों में बहुत ही उल्लेखनीय कार्य कर रहा है, तत्वज्ञानी पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा जो संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी के परम भक्त हैं और जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सांगानेर गुरूकुल द्वारा एक नई क्रांति पैदा की है और इसी तरह श्री निरंजनलाल जी बैनाड़ा महासभा के तीर्थरक्षा कार्यक्रम में विनम्र भाव से काफी सहयोग दे रहे हैं और श्री मदनलाल जी बैनाड़ा तो आलराउण्ड नेता ही हैं जो तत्व ज्ञान से

ओतप्रोत स्पष्टभाषी सेठ पंडित रूपचंद्र जी कटारिया को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

सुप्रसिद्ध उद्भट विद्वान प्रखर लेखक और वक्ता विभिन्न विधाओं के पारंगत श्री नीरज जी ने भी अपनी अच्छी सेवायें महासभा को दी हैं और निरभिमानी प्रशासनिक क्षमतावान दानवीर श्री वीरेन्द्र हेगड़े के नेतृत्व में एवं आचार्य शिरोमणि परमपूज्य वर्द्धमानसागर जी महाराज के पवित्र सानिध्य में महासभा का शताब्दी समारोह धर्मस्थल में हुआ और अब आज भी सरल परिणामी, तपस्वी आचार्य श्री के सानिध्य में श्री महावीर जी जैसे अतिशयकारी तीर्थराज पर महासभा का शताब्दी समारोह बड़े प्रभावी ढंग से सम्पन्न हो रहा है।

अंत में मुझे यह लिखने में भी प्रसन्नता हो रही है कि महासभा को दिन रात देखने वाले एक युवा कर्मठ नवयुवक श्री प्रदीप पाटनी का रात दिन, युवारत्न श्री पद्मचंद धाकड़ा (मद्रास), युवा रत्न श्री पन्नालाल जी सेठी डीमापुर का कुशलता के साथ सहयोग प्राप्त है और इसी तरह महासभा के तीनों पत्रों का प्रकाशन भार मेरे ज्ञान गंगा सम्पादन में सहयोग देने वाले एक स्फूर्तिवान सुयोग्य युवक श्री सुधेश जैन का नाम भी नहीं भुलाया जा सकता जो महासभा का प्रकाशन कार्य बड़ी तत्परता के साथ निभा रहे हैं।

महासभा का परीक्षालय जो बहुत गड़बड़ा गया था। अब उसके अपने निजी के भवन में कार्यरत है। स्व. श्री नेमीचंद्र जी बाकलीवाल इंदौर ने इसकी बड़ी सेवा की और अब इसी तरह श्री नंदलाल जी टोंग्या व श्री अनिल बाकलीवाल आदि अच्छी तरह देखरेख कर रहे हैं।

महासभा को इस १०-१५ वर्ष के भीतर भरपूर सहयोग देने वाले स्वर्गीय सेठ सुमेरचन्द्र जी पाटनी का नाम इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।

हम महासभा के दिग्गजों से अपनी अन्तिम अपील कर रहे हैं कि महासभा का एक केन्द्रीय कार्यालय भवन मय अतिथि निवास के दिल्ली या उसके आसपास फरीदाबाद या गाजियाबाद में अवश्य निर्माण कराया जावे तथा जैसे पहले महासभा का महाविद्यालय चलता था अब उसी तरह श्री सेठी जी जो मुरैना महाविद्यालय के अध्यक्ष हैं, उनके सहयोग से जीवन्त रूप में आगे बढ़ रहा है। ऐसे महाविद्यालय को भी महासभा अपना संरक्षण देकर महासभा महाविद्यालय बना दे और ये दोनों संकल्प इस समापन समारोह में लिए जाएँ तो शताब्दी समारोह की एक सदैव स्मरणीय यादगार बनी रहेगी।

बहुत से अच्छे कार्यों और महासभा सेवकों के नाम मुझसे छूट गये ही हैं अतः सबसे क्षमा प्रार्थी हूं।

एक मनीषी का पत्रः सम्पादक के नाम

सेठी जी अप्रतिम हैं

जैन गजट के २४ दिसम्बर के अंक में आपके संपादकीय 'कृपया अतिरेक से बचें' के संदर्भ में आपकी संयत भाषा की जितनी प्रशंसा की जाए, कम ही होगी, मुझे स्वतंत्र जैन चिन्तन में श्री नरेन्द्र कुमार का आलेख देखने/पढ़ने का अवसर नहीं मिला है (वस्तुतः इसके पूर्व मैंने कभी इस पत्रिका के संबंध में भी कहीं सुना/पढ़ा नहीं) पर आपके संपादकीय से उक्त आलेख की विषय-वस्तु का पता तो चला ही है। साथ ही उक्त लेख के लेखक के हिन्दी भाषा संबंधी अज्ञान का भी, अन्यथा वे इस प्रकार की बेतुकी बात नहीं लिखते।

जैन बालादर्श के सम्पादक काल में सेठी जी से कुछ विषयों में रहे मेरे वैचारिक मतभेद के बावजूद मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं कि सेठी जी जैसा व्यक्ति इस समय समाज में और कोई नहीं, निश्चय ही वे समाज सेवा के प्रति पागलपन की हद तक चले गए हैं। सर्व-साधन सम्पन्न होने के बावजूद उनकी बातचीत से, उनके व्यवहार से, उनके आचरण से कभी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उन्हें किसी बात का गर्व है। वैसे यश और प्रशंसा तो मानव मात्र की कमजोरी है, हमारे कई मुनि, आचार्य आदि भी इसके अपवाद नहीं हैं, पर इसे किसी का दुर्गुण तो नहीं ही कहा जा सकता। एक और बात जो मैंने सेठी जी में विशेष रूप से देखी है, यह है कि कोई उनकी कितनी ही आलोचना करे, वे कभी पलटकर जवाब नहीं देते अन्यथा जैन गजट के माध्यम से ही वे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अपने विरोधियों का मुंह आसानी से बंद कर सकते हैं।

हमारे तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए सेठी जी ने पिछले दो वर्षों में जो कुछ और जितना किया है, समाज से जितना धन एकत्र कर उसे आवश्यकतानुसार विभिन्न क्षेत्रों को दिया है, यह केवल सेठी जी के बूते की ही बात थी। इतने कम समय में सेठी जी ने इस क्षेत्र में जितना अधिक काम किया है, उतना कोई अन्य व्यक्ति दस या पन्द्रह वर्ष में भी नहीं कर पाता।

आपकी इस बात से शायद ही कोई असहमत हो कि सेठी जी की तुलना किसी महापुरुष या भरत चक्रवर्ती से करने का अर्थ यह कदापि नहीं लिया जाना चाहिए कि सेठी जी भरत चक्रवर्ती हो गए या जो कुछ भरत चक्रवर्ती ने किया वह सब सेठी जी को करना चाहिए। भरत चक्रवर्ती तो भरत चक्रवर्ती ही रहेंगे और सेठी जी भी सेठी जी ही रहेंगे। तुलना या उपमा का अर्थ उस जैसा होता है। जब कोई कश्मीर को भारत का स्विटजरलैंड या कालिदास को हिन्दी का शेक्सपियर कहता है तो वह केवल इस बात का प्रतीक है कि दोनों में कितनी समानता है। इसके बावजूद दोनों की अपनी अलग-अलग पहचान बनी रहती है। इसी प्रकार सेठी जी की भी समाज में अपनी अलग पहचान है और यह बराबर बनी रहेगी, समाज में एक से एक संपन्न, दानी, धनी-मानी लोग हैं, कुछ लोग आर्थिक दृष्टि से निश्चय ही सेठी जी से अधिक संपन्न होंगे, पर जहां तक समाजसेवा, तीर्थोद्धार आदि कार्यों की बात है, सेठी जी अप्रतिम हैं, यह निर्विवाद है।

– महेन्द्र राजा जैन
९ ए, बन्द रोड, इलाहाबाद

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के

ऐतिहासिक क्षण

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा दिगम्बर जैन समाज की सबसे पुरानी संस्था है। सुप्त दिगम्बर जैन समाज को संगठित कर उसमें नई चेतना का संचार करने का महासभा का अभियान अत्यंत चिरस्मरणीय है। दिगम्बर जैन समाज में आज जितने भी संगठन हैं, उनकी जड़ें महासभा ही है। महासभा का अब तक का कार्यकाल जैन इतिहास का एक शानदार अध्याय है। बड़े बड़े से प्रहारों के बीच भी वह चट्टान की तरह अडिग खड़ी है। सिद्धान्तों के साथ उसने कभी कोई समझौता नहीं किया है।

ऐतिहासिक क्षण

वीर निर्वाण सं. २४०१ (इ.सं. १८७४-७५)- दिगम्बर जैन धर्म, संस्कृति, उसके आयतनों और तदनुकूल समाज की सुरक्षा, संवर्धन और संगठन को लेकर उपायों पर विचार प्रारंभ।

वीर निर्वाण सं. २४२० (इ.सं. १८९४)- जम्बूस्वामी की निर्वाण भूमि चौरासी मथुरा (उ.प्र.) पर कार्तिकी मेले पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा रूपी कल्पवृक्ष का अंकुरारोपण।

वीर निर्वाण सं. २४२२ (इ.सं. १८९६)- महासभा के मुख पत्र के रूप में 'जैन गजट' पत्रिका का शुभारंभ।

वीर निर्वाण सं. २४२४ (इ.सं. १८९८)- जम्बू स्वामी की निर्वाण भूमि चौरासी मथुरा (उ.प्र.) पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महाविद्यालय की स्थापना।

सबल, तर्क संगत एवं पुष्ट अध्ययन परम्परा के लिए धार्मिक परीक्षालय बोर्ड का निर्माण, भारतवर्ष की समस्त दिगम्बर जैन पाठशालाओं को जोड़ा इससे गया, धार्मिक पाठ्यक्रम बनाया गया जो सर्वमान्य हो गया, आज भी यही पाठ्यक्रम सर्वोत्कृष्ट माना जा रहा है।

वीर निर्वाण सं. २४२५ (इ.सं. १८९९)- अंग्रेजी शिक्षित दिगम्बर जैन विद्वानों में धर्म शिक्षा और धर्मप्रचार की प्रवृत्ति हेतु जैन यंग एसोसिएशन नामक संस्था की स्थापना।

वीर निर्वाण सं. २४२७ (इ.सं. १९०१)- देश की जनगणना में जनगणना के रजिस्टर में धर्म के खाने में जैन धर्म का भी पृथक खाना बनाया जावे और जैनी अपने को जैन ही लिखावें, का आन्दोलन चलाया गया और तबसे जनगणना में जैन धर्म पृथक लिखा जाने लगा।

वीर निर्वाण सं. २४२७ (इ.सं. १९०१)- सामाजिक संगठन के लिए देश में स्थान स्थान पर शाखाओं के निर्माण की शुरूआत, सर्वप्रथम बम्बई में बम्बई प्रांतिक दिगम्बर जैन सभा की स्थापना, इस सभा द्वारा 'जैनमित्र' नामक पत्रिका का शुभारंभ, इसी प्रकार मालवा प्रांतिक सभा, बुन्देलखंड प्रांतिक सभा, महाराष्ट्र जैन परिषद, नागपुर प्रांतिक सभा आदि अनेकों संस्थाओं का निर्माण किया गया।

वीर निर्वाण सं. २४२८ (इ.सं.१९०२)- सम्पूर्ण दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों, प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार, सुप्रबन्ध, विकास तथा झगड़ों को निपटाने के लिए श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का निर्माण, वर्तमान में कार्यरत कमेटी यही है।

वीर निर्वाण सं. २४३३ (इ.सं.१९०७-८)- तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर के मूल स्वरूप को तोड़ मरोड़ने के श्वेताम्बर जैन भाईयों के प्रयासों को कोर्ट द्वारा प्रतिबंधित कराना, पहाड़ पर नवनिर्मित सीढ़ियों को तुड़वा देने पर श्वेतांबर भाईयों को कोर्ट से हरजाना देने को लगवाना।

वीर निर्वाण सं. २४३३ (इ.सं.१९०७-८)- मुखपत्र 'जैन गजट' के माध्यम से दिगम्बर जैन धर्म के मूल स्वरूप की सुरक्षा में सफलता, अश्लील विज्ञापनों के विरोध में सबसे पहली आवाज उठाना।

वीर निर्वाण सं. २४३६ (इ.सं.१९१०-११)- तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी पर महासभा अधिवेशन में 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद' की स्थापना।

वीर निर्वाण सं. २४४० (इ.सं.१९१४)- जैन समाज का अपना स्वतंत्र कानून 'जैन लॉ' हो इस पर विचार, इन्द्रनन्दि संहिता का मूल और भद्रबाहु संहिता का अंग्रेजी अनुवाद 'जैन लॉ' के नाम से प्रकाशित किया।

वीर निर्वाण सं. २४४७ (इ.सं.१९२१-२२)- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद अंतर्गत 'जैन महिलादर्श' नामक पत्रिका का शुभारंभ।

वीर निर्वाण सं. २४४९ (इ.सं.१९२३)- सात ग्रन्थों के आधार पर 'जैन लॉ' का पुनः प्रकाशन, जैन समाज का अपना स्वयं का पृथक 'जैन लॉ' हो और सर्वमान्य होवे का प्रयास।

वीर निर्वाण सं. २४५३ (इ.सं.१९२७)- चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज का ससंघ दक्षिण भारत से उत्तर भारत की ओर विहार को निर्बाध निर्भय एवं धर्म प्रभावना पूर्वक सम्पन्न कराना, मुनिसंघों के विहार पर लगे प्रतिबंधों को प्रांतीय सरकारें व राजनेताओं से मिलकर हटाना और निर्बाध कराने में सफलता।

वीर निर्वाण सं. २४७४-२४७९ (इ.सं.१९४८-५३)- जैन संस्कृति एक स्वतंत्र व भिन्न संस्कृति है तथा उसके आयतन मंदिर-तीर्थ-जैन शास्त्र आदि जैन धर्मावलंबियों के भक्ति के आधार हैं। इस प्रकार का न्याय बम्बई हाईकोर्ट से प्राप्त कराने में सफल प्रयत्न तथा चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के अन्न त्याग सत्याग्रह को सफल बनाना।

वीर निर्वाण सं. २५१० (इ.सं.१९८४)- देव शास्त्र गुरू के अवर्णवाद को रोकने हेतु आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज द्वारा प्रतिपादित आदेश का प्रचार कर समाज जागरण में सफलता।

वीर निर्वाण सं. २५१६ (इ.सं.१९९०) 'जैन बालादर्श नामक पुस्तक

शेष पृष्ठ १०४ पर....

शताब्दी वर्ष में महासभा के महत्वपूर्ण उपक्रम

- निर्मल जैन, सतना

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए किसी संस्था को शताब्दी मना लेना एक बड़ी उपलब्धि है और संस्था की गतिशीलता का प्रमाण है। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा ने यह गौरव तो प्राप्त कर ही लिया है, साथ ही शताब्दी महोत्सव के बीच कुछ ऐसे आधार भी तैयार कर लिये हैं जिनके माध्यम से वह इक्कीसवीं सदी में भी अपने नाम में समाहित धर्म संरक्षिणी शब्द को सार्थक करती रह सकेगी।

शताब्दी महोत्सव के प्रारंभ में छोटे-छोटे ट्रेक्ट प्रकाशन का जो निर्णय महासभा ने लिया था और आद. उम्मेदमल जी पाण्ड्या ने उत्साह पूर्वक जो ट्रैक्ट प्रकाशित कराये थे वे बहु उपयोगी थे। उनके माध्यम से महासभा भी अधिक लोगों तक पहुंची थी। इसे प्रतिवर्ष की कार्यसूची में सम्मिलित करके धर्म प्रचार का अच्छा माध्यम बनाया जा सकता है।

कचनेर में आयोजित शताब्दी समारोह में सदाचारी राजनेताओं को मंच पर आमंत्रित करने और बिना किसी भेदभाव के विद्वानों को सम्मानित करने का जो कार्य श्री आर.के.जैन की सूझबूझ से महासभा ने किया था उसकी भी बहुत अच्छी प्रतिक्रिया समाज में हुई थी।

शताब्दी समारोह की सबसे बड़ी उपलब्धि तो महासभाध्यक्ष सेठी जी की तीर्थ संरक्षण और जीर्णोद्धार की मुहिम है। इसमें सेठी जी की लगनशीलता और श्रम की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। इस कार्य में सेठी जी की निष्ठा का ही यह परिणाम है कि समाज उदारता पूर्वक इस योजना में अपना सहयोग दे रही है। कम समय में जो उल्लेखनीय राशि तीर्थोद्धार के लिये एकत्रित हुई है वह भी एक रिकार्ड है। इस योजना के बहुत अच्छे दूरगामी परिणाम सामने आयेंगे। इसे सतत चलाते रहने की आवश्यकता है।

इधर ग्वालियर में आयोजित शिविर के माध्यम से धर्म शिक्षण देने और श्री महावीर जी क्षेत्र पर आयोजित तत्व गोष्ठी के माध्यम से विद्वानों को गूढ़ तत्वों पर चर्चा का अवसर देने का जो उपक्रम महासभा ने किया है वह भी बहुत उपयोगी कार्य है। इनके माध्यम से धर्म प्रचार का प्रभावक कार्य सम्पन्न हो सकेगा। इन दोनों आयोजनों के सूत्रधार प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी भी पदाधिकारियों के साथ बधाई के पात्र हैं।

शताब्दी समारोह के द्विवर्षीय कार्यकाल में जैन गजट ने भी उल्लेखनीय लोकप्रियता प्राप्त की है। इस बीच जैन गजट में प्रकाशित सामयिक और निर्भीक सम्पादकीय सम्पादन विधा के उत्कृष्ट प्रमाण हैं। लेख और सचित्र समाचारों के माध्यम से भी जैन गजट समाज का श्रेष्ठ पत्र साबित हुआ है। वैसे भी जैन गजट महासभा की रीढ़ है। इसे पूरी तरह स्वावलम्बी और निष्पक्ष बनाये रखकर महासभा अपने उद्देश्यों और कार्यों का व्यापक प्रचार कर सकेगी। महासभा के दो सुरुचिपूर्ण प्रकाशन से महासभा पूरे परिवार में जानी जाती है, चर्चा का विषय बनती है। इन पत्रों के सम्पादन प्रकाशन से जुड़े लोग साधुवाद के पात्र हैं।

आशा है यह सभी उपक्रम पूरी तत्परता से चलते रहेंगे और महासभा निरंतर गतिशील रहकर हमारी आर्ष परम्परा को दृढ़ से दृढ़तर बनाती रहेगी।

शेष पृष्ठ १०३ का ....

का शुभारंभ एवं बालकों में धर्म शिक्षा का सफल प्रयास।

उपदेशक व जीवदया विभागों के माध्यमों से भी धर्मप्रचार और पशुरक्षा के क्षेत्र में महनीय कार्य किया है।

इस प्रकार महासभा का सौ वर्ष का इतिहास है।

अनेक उतार चढ़ावों का सामना करते हुए महासभा ने अपने शानदार सौ वर्ष पूरे किए हैं।

सौभाग्यशाली हैं हम पीढ़ी जिसकी आंखों के सामने शताब्दी पूर्ति के ये अमूल्य क्षण उपस्थित हैं।

आज की बढ़ती हुई स्वेच्छाचारिता और स्वच्छंदता पर अंकुश लगाने में महासभा ही समर्थ है। हम सभी को महासभा की छत्रछाया में आकर संगठित हो धर्म व तदनुकूल आयतनों और समाज की सुरक्षा का संकल्प करना चाहिए। आइये। यही हमारा संकल्प होगा।

- संकलनकर्ता

भरत कुमार काला, बम्बई

मंत्री- श्री भारतवर्षीय दि.जैन महासभा

शताब्दी महोत्सव समिति

शुभ कामना

प्रिय भाई नरेन्द्रप्रकाश जी,

जैन गजट का महासभा शताब्दी विशेषांक निकाल रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। मेरी हार्दिक शुभ-कामनायें स्वीकार कीजिये।

महासभा का मुख पत्र होने के नाते महासभा के कार्यों का प्रचार प्रसार तो जैन गजट का दायित्व है ही, साथ ही जैन समाज का प्रमुख पत्र होने के नाते समाज की नाड़ी परखते रहने और यथा सम्भव उपचार करते रहने का दायित्व भी जैन गजट पर है।

ऐसे समय में जबकि समाज अनेक विसंगतियों/समस्याओं में फंसा है, जैन गजट का दायित्व और बढ़ जाता है। मैं आशा करता हूं कि आपके सम्पादकत्व में जैन गजट अपने दायित्व का सम्यक् निर्वहन करता रहेगा।

- नीरज जैन, सतना

आचार्य श्री विद्यासागर जी से जैन गजट के सम्पादक श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन चर्चा करते हुये।

लखनऊ नगरी में शाकाहार विशेषज्ञ डा. कल्याणमल गंगवाल का स्वागत करते हुये महासभा के संयुक्त मंत्री श्री निर्वाणचंद जैन एवं तीर्थ संरक्षिणी महासभा के मंत्री श्री बाबूलाल छाबड़ा।

श्रीमान सरसेठ हुकमचंद जी की मूर्ति को माल्यार्पण करते हुये महासभाध्यक्ष निर्मल कुमार जी सेठी।

नागपुर महासभा अधिवेशन का दृश्य पदाधिकारी श्री उम्मेदमल जी पांड्या, श्री भरतकाला, श्री कन्हैयालाल जी खेडकर आदि नागपुर वासी पदाधिकारी एवं वासी।

आचार्य विमलसागर चरित्र ग्रंथ विमोचन करते हुये पदाधिकारी श्रीमान आर.के.जैन, श्रीमान शिखरचंद जी पहाड़िया एवं महासभाध्यक्ष।

सम्मेदशिखर जी में विमलसागर ग्रंथ का विमोचन करते हुये बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमान लालूप्रसाद जी यादव एवं पदाधिकारी श्री प्रकाशचंद जी छाबड़ा, श्री आर.के.जैन, श्री शिखरचंद जी पहाड़िया, श्री निर्मलकुमार जी, श्री भरतकाला आदि।

दशलक्षण पर्व समापन समारोह में प्रधानमंत्री श्रीमान अटलबिहारी बाजपेयी।

शताब्दी समारोह प्रारंभ में दीप प्रज्वलन के बाद जैन गजट सम्पादिका डा. प्रमिला जैन प्रवचन करते हुये।

पश्चिम बंगाल महासभा शाखा की तरफ से शताब्दी समारोह पर शाकाहार एवं साहित्य पुरस्कार समारोह में उपस्थित पदाधिकारी।

पश्चिम बंगाल शाखा की राजधानी कलकत्ता नगरी में शताब्दी समारोह पर श्रीमान राजकुमार जी सेठी, श्री उम्मेदमल जी पांड्या, श्री भागचंद जी पहाड़िया सभा में पुस्तिका का विमोचन करते हुये।

महामंत्री श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी, अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी, वरिष्ठ परामर्श दाता श्री उम्मेदमल जी पांड्या।

पश्चिम बंगाल शताब्दी समारोह में पदाधिकारी गण श्री राजकुमार जी सेठी, श्री हरकचंद जी पांड्या, श्री निर्मल कुमार जी, महामंत्री श्री त्रिलोकचंद कोठारी एवं श्री पूनमचंद जी गंगवाल।

महासभा के संगठन मंत्री अजमेर निवासी श्रीमान शान्तिलाल जी बड़जात्या आचार्य शांतिसागर महाराज जी के फोटो का विमोचन करते हुये।

महासभा प्रबंधकारिणी बैठक में पंडित प्रवर श्री नरेन्द्रप्रकाश जी सभा को संबोधित करते हुये।

महासभा के उल्लेख्य कार्य

महासभा धर्म की मर्यादा की रक्षा के कार्य में अग्रणी भूमिका एक शताब्दी पूर्व से अब तक निभाती आ रही है। उसके कुछ उल्लेख्य कार्य हैं:-

(१) मोक्ष में पहुँचाने के साधन सप्त परम स्थानों के अभ्युदयों को प्राप्त कराने वाली ऐसी प्रथम स्थान रूप से जैनागम में वर्णित 'सज्जातियता' की रक्षा के बारे में महासभा प्रारम्भ से लेकर अब तक सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज का अपने प्रकाशनों एवं कार्यों से मार्गदर्शन एवं स्थितिकरण करती आ रही है। जो समाज के लिए महान उपलब्धि की बात है। जिसे आदरणीय श्रीमान निर्मलकुमार सेठी जी साहब वर्तमान महासभाध्यक्ष जी महोदय ने वर्तमान विषम परिस्थिति में भी 'सज्जातियता' की रक्षा के बारे में समय-समय पर अपने उद्बोधनों में विशेष जोर देते आ रहे हैं। जिससे धार्मिक रूप से बहुसंख्यक समाज का स्थितिकरण हो रहा है और भविष्य में भी हो सकेगा। महासभा के उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमारे धर्मगुरुओं (आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी) तथा सभी त्यागीव्रतियों एवं विद्वानों में भी सक्रियता से प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रोत्साहित करने का विशेष प्रयत्न करना चाहिये। तभी वर्तमान समय में उक्त धार्मिक नियम जो महासभा का मूल उद्देश्य है, की रक्षा हो सकती है।

(२) महासभा अपने सौ वर्ष के कार्यकाल में श्रावक एवं मुनि धर्म की आगमोक्त धार्मिक मर्यादाओं की रक्षा के लिए भी हमेशा से सजग एवं अग्रणी रही है। इन पर आने वाले आक्षेपों एवं उपसर्गों के निवारण करने हेतु भी महासभा अपनी पूरी शक्ति से प्रारंभ से अब तक कार्य करती आ रही है। जो समाज के लिए बहुत ही गर्व की बात है।

(३) महासभा पुराने मन्दिरों एवं तीर्थस्थानों (प्राचीन सांस्कृतिक धार्मिक धरोहर) के जीर्णोद्धार एवं उनकी सुरक्षा तथा उन पर होने वाले आक्रमण के निवारण के बारे में भी विशेष रुचि (अपने) प्रारंभ से अब तक लेती आ रही है। वर्तमान आदरणीय (निस्वार्थ सेवाभावी) महासभाध्यक्ष जी ने तो सारे भारतवर्ष में घूमकर हमारे प्राचीन जीर्णोद्धार योग्य मंदिर एवं क्षेत्रादि के जीर्णोद्धार कराने का महान अभियान महासभा के माध्यम से चालू कर रखा है। जो बहुत ही प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। इसमें अनेक धर्मात्माओं, श्रीमंतों ने अपनी चंचला लक्ष्मी को मुक्त हस्त से दानकर महान सराहनीय कार्य किया है। महासभा का उक्त प्रकार से संस्कृति रक्षा का कार्य भविष्य में सैकड़ों वर्षों तक याद रहेगा।

(४) महासभा ने समय समय पर सम्पूर्ण दि. जैन समाज को सच्चे देव शास्त्र गुरूओं में आगमोक्त श्रद्धा-भक्ति बनी रहे एवं गलत एवं मनगढ़ंत प्रचार से सावधान करते हुए समय-समय पर प्रस्ताव एवं प्रचुर साहित्य का प्रकाशन किया है और मुखपत्र जैन गजट द्वारा भी धर्म जाग्रति एवं धर्म-प्रभावना करने वाले सम्पादकीय एवं अनेक लेखकों के लेख तथा समाचार प्रकाशित किये हैं। निश्चयाकान्त मिथ्यात्व पोषक कानजी पंथ के गलत प्रचार का आगमोक्त प्रमाणों के साथ खंडन कर समाज को सही दिशा में स्थितिकरण किया है। कुछ महानुभावों के द्वारा कुछ समय से स्वर्गीय मुनि श्री आदिसागर जी के नाम पर (उनके संयम काल के विपरीत गलत एवं मनगढ़ंत तथा ऐतिहासिक तथ्यों के) बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य परम पूज्य प्रातः स्मरणीय चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसगर जी महाराज की सर्वोत्कृष्ट उज्जवल चारित्रिक छवि को धूमिल करने वाले साहित्य का असफल प्रयास के निराकरण के बारे में महासभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास कर जैन गजट में लेखादि प्रकाशित कर सम्पूर्ण दि. जैन समाज का आगमोक्त एवं सत्य परम्परा में स्थितिकरण करने का महान कार्य किया है और सत्य की जानकारी हेतु महासभा ने अनेक पुस्तकें भी प्रकाशित कराई हैं जो प्रशंसा योग्य हैं।

(५) महासभा ने बालक बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु एक परीक्षा बोर्ड की स्थापना कर उसके द्वारा स्वीकृत धार्मिक पाठ्य पुस्तकों के आधार पर गांव-गांव में धार्मिक संस्कार डालने वाली शिक्षा-समाज के बालक बालिकाओं को दी जा रही है और उनकी परीक्षा महासभा परीक्षा बोर्ड इन्दौर से होती चली आ रही है। इस प्रकार महासभा द्वारा नई पीढ़ी में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार निर्माण हेतु पूरा प्रयास किया जा रहा है। इसमें भी आदरणीय यशस्वी वर्तमान अध्यक्ष महोदय श्री सेठी जी ने विशेष प्रयास किया है।

(६) महासभा द्वारा समय-समय पर कार्यकर्ताओं एवं विद्वानों का सम्मान कर उनके उत्साहवर्धन का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता रहा है। इस कार्य में वर्तमान में आदरणीय श्री शांतिलाल जी बड़जात्या अजमेर संगठन मंत्री, आदरणीय टीकमचंद जी रांवका के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सम्पूर्ण भारतवर्षीय दि. जैन समाज श्री भारतवर्षीय दि. जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा को

अपनी धार्मिक संस्था मानता है। जो भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्था है।

(७) महासभा के धर्म की मर्यादा रक्षणादि कार्यों में लग्नता देखकर बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य परम पूज्य प्रातः स्मरणीय चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज सहित सभी आचार्यों, मुनिसंघों एवं आर्यिका माताजी के संघों व सभी त्यागी व्रतियों का आशीर्वाद प्राप्त करने का महासभा को महान सौभाग्य प्राप्त किया है। मैंने अपने जीवन काल में महासभा के प्रमुख महानुभावों को देखा जैसे- श्रीमान् सेठसेठ हुकमचंद जी साहब इन्दौर, श्रीमान सरसेठ भागचंद जी साहब अजमेर, श्रीमान भंवरलाल जी, श्रीमान लिखमीचंद जी साहब छाबड़ा एवं श्रीमान चांदमल जी साहब सरावगी आदि ने अपने तन मन धन से समर्पित होकर महासभा के लिये कार्य किया है। इनके अलावा और भी स्वर्गीय महानुभावों ने कार्यकर्ता एवं सहयोगी बनकर कार्य किया है तथा वर्तमान में लगभग पन्द्रह बीस वर्ष से आदरणीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी अध्यक्ष महासभा ने सभा समर्पित धर्मनिष्ठ महानुभावों को साथ लेकर कार्य किया है। वह सभी सराहनीय एवं स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। मैं महासभा के शताब्दी महोत्सव के सुअवसर पर महासभा को अपनी मंगल कामना प्रेषित करता हूं और आशा करता हूं कि महासभा धर्म संरक्षण का कार्य आगामी शताब्दी में भी करती रहे।

अन्त में उपरोक्त कार्य के अलावा महासभा ने समय-समय पर सच्चे देव शास्त्र पुरूषों की श्रद्धा-भक्ति पूर्वक धर्म संरक्षिणी, संस्कृति संरक्षण, सदाचार के प्रचार-प्रसार में समाज हित में और भी बहुत कार्य किये हैं। उनके बारे में सभी महानुभावों की सराहना करता हुआ उनके प्रति धन्यवाद प्रेषित करता हूं। साथ ही मैं श्री वीर प्रभु से मंगल कामना करता हूं कि आगामी शताब्दी में भी महासभा विशेष रूप से धर्मरक्षा, संस्कृति संरक्षण एवं सदाचार रूप आगमोक्त मर्यादाओं की सुरक्षा हेतु अपने कर्तव्य एवं दायित्व को समझकर क्रियाशील बनी रहे, ऐसी मेरी शुभकामना प्रेषित करता हूं।

-आपका शुभाकांक्षी
श्रावकरत्न पं. बाबूलाल जैन सेठियां
मु.पो. नैनवां पिन ३२३८०१ (जिला-बूंदी राजस्थान)

महासभा और विद्वत्वर्ग

- प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलकुमार जैन सोंरया, टीकमगढ़
संयुक्त महामंत्री- भा.दि.जैन महासभा

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षणी) महासभा ने अपने शताधिक जीवन काल में धर्म समाज और सिद्धान्त की रक्षा एवं सम्वृद्धि में महत्वपूर्ण अहं भूमिका का निर्वाहन किया है। किसी भी कार्य की साकारता में ज्ञान की अपनी विशेष महत्ता होती है। महासभा दिगम्बर जैन समाज की एक ऐसी सुसंगठित सभा है जिसमें श्रीमान और धीमान एक मंच पर बैठकर समाज हित, धर्मरक्षा एवं साहित्य सम्वृद्धि की प्रायोजनाऐं तैयार कर उनकी साकारता में अपना पूर्ण सहयोग देती है। यह निर्विवाद सत्य है कि महासभा ने अपने स्थापना काल से लेकर आज तक देश के गौरवपुंज विद्वानों का परिपूर्ण समादर कर महासभा के गौरवपूर्ण उद्देश्यों की साकारता में उनके ज्ञान का उपयोग किया है।

समय समय पर जहां विद्वानों की सलाह का सदुपयोग किया तो विशेष स्थितियों में जब धर्म ग्रंथों, संतों और सिद्धान्तों पर कुठाराघात होने लगा, विद्वानों की ज्ञान साधना का और श्रीमंतों की अर्थ साधना का समवेत उपयोग कर इन विकृतियों को निर्मूल करने का अथक श्रम महासभा ने किया।

जिस सभा और संस्था में विद्वानों की गरिमा का आदर नहीं होता वह सभा या संस्था जीवित होते हुए भी मृतप्राय है। दि. जैन समाज के इतिहास में भा. दि. जैन महासभा एक ऐसी सभा है जिसने अपने उद्देश्यों का सफलतापूर्वक साकारता प्रतिपादित करते हुए एक शतक का जीवन गरिमा के साथ बिताया। अपने दीर्घ जीवन में इस सभा ने जो भी कार्य किए हैं जैन समाज के इतिहास में युगों युगों तक समादरणीय रहेंगे। महासभा का इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसने निर्ग्रन्थ गुरूओं की जिस श्रद्धाविनय के साथ वन्दना की है उसी आस्था-विश्वास के साथ उत्कृष्ट विद्वानों का भी समादर किया है। यही कारण रहा कि भारत की अनेक सभा, संस्थाओं, परिषदों में महासभा का गौरव उन्नत कीर्ति वाला एवं दीर्घ जीवी है।

(प्रेरक कर्तव्य)

बिन्दु : जो आमंत्रित करते हैं

मुनियों के प्रति श्रावकों के कर्तव्य

-सुरेशचन्द्र जैन 'सरल', २९३, गढ़ाफाटक, जबलपुर (म.प्र.)

जिन श्रावकों ने ग्रन्थ 'रत्नकरंडक - श्रावकाचार' पढ़ा है, वे कहेंगे कि इस लेख को आकार देने की क्या आवश्यकता थी, सब कुछ तो पहले से ही मौजूद है उक्त ग्रन्थराज में। परन्तु आज का युग जिसमें नागरिक तो बढ़ रहे हैं, पर श्रावक कम हो रहे हैं, लेख पढ़ना चाहता है।

मेरा यह तर्क आपको सोचने पर विवश कर देगा कि मुनियों के प्रति सही कर्तव्यों का पालन श्रावक ही कर सकता है, पर जो 'सही' श्रावक है ही नहीं, वह कर्तव्यपालन के चक्कर में क्यों पड़ेगा? आज मुनियों के आसपास ऐसे ही लोगों की संख्या अधिक है जो श्रावक की पोशाक तो धारण किये हुए हैं पर भीतर से श्रावक नहीं रह गये हैं। तो जो श्रावक ही नहीं हैं उनके लिए यह लेख नहीं लिखा गया है, जिनमें अभी श्रावकत्व का अंशमात्र शेष है, है यह उनके लिए।

आज मुनियों को सबसे अधिक खतरा यदि है तो ऐसे ही श्रावकों से, जो छद्म के बल पर श्रावक हैं, चर्या के बल पर नहीं। मुनिगण पहले ऐसे लोगों से घिरे रहते थे क्योंकि वे जानते नहीं थे, तब दुख भी नहीं होता था आज कतिपय मुनि जानते हैं, फिर भी उनसे घिरे हैं, इसलिए दुख होना जायज है।

श्रावकों की जो टीम जितनी मुस्तैदी से मुनि को घेरती है, वह उतना अधिक लाभ बटोरने में सफल भी होती है और दूसरों का यशभंजन करने का शुभावसर भी प्राप्त कर लेती है।

मैं ऐसे श्रावकों को जानता हूँ, जो देश के किसी न किसी मुनि के समीप हैं पर वे केवल पोशाक के भरोसे हैं। चरित्र, भक्ति या चर्या से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं होता, अतः श्रावकोचित कर्तव्यों से भी उन्हें सरोकार नहीं रहता मगर वे शान से मुनियों के आसपास बने रहते हैं। ऐसे श्रावक 'लखपति-रेन्ज' के होते हैं, जो 'करोड़पति-रेन्ज' में जाने की तैयारी करते रहते हैं, सहारा होता है- मुनिराज का। नगर की एक संस्था से लेकर दस संस्थाओं तक में घुसे रहना उनकी जीवन शैली बन गई है, अतः केवल उन्हीं श्रावकों के लिए है यह लेख। उनका कर्तव्य है कि-

१. न कहें कि महाराज बीस दिन और रुक जावें तो हमारे-संस्थान को दस लाख मिल जावेंगे।

२.न कहें कि अमुक गजरथ महोत्सव में पधारिये, अच्छी प्रभावना करायेंगे।

३. न कहें कि आपके आगमन से हमारे अमुक तीर्थ का जीर्णोद्धार हो जावेगा।

४. न सुनायें कि अमुक महोत्सव में महाराज के चालीस फुट ऊँचे कट-आउट लगवायेंगे।

५.न सुनायें कि अमुक संस्थान पूरा करादें तो उसकी दीवालों पर एक तरफ तीर्थंकर की मूर्ति और दूसरी दिशा में 'महाराज' की मूर्ति उकेरेंगे।

६. न सुनायें "महाराज हम तो आपकी एक क्या दो किताबें प्रकाशित करा देवें, पर जरा चंदा/दान आदि तो आपके आशीष से प्राप्त हो।"

७. महाराज से वार्ता करते हुए कुछ श्रावकगण दान देने के भाव बतलाते हैं, कहते हैं- "महाराज मैं एक लाख देना चाहता हूँ, पर जहाँ आपका संकेत होगा, वहाँ।" यह दान का गलत ढंग है। श्रावक और मुनि दोनों को दोष लगता है।

८. कुछ श्रावक मुनि के अत्यन्त करीबी होने का परिचय देते हैं, जो उचित नहीं है।

९. कुछ श्रावक चातुर्मास की भारी भरकम रंगीन आमंत्रण पत्रिका, कीमती कागज पर, छपवा देने की बात करते हैं, जो अनुचित है।

१०. कुछ श्रावक उक्त प्रकार की पत्रिका में अपना नाम जुड़वाने की बात करते हैं।

११. कुछ श्रावक अधिकार पूर्वक दबाव डालते हैं कि नगर के अमुक व्यक्ति का नाम पत्रिका में न आ पावे।

१२. कुछ श्रावक किसी जीवित संत के नाम पर संस्था/पत्रिका आदि चलाते हैं जो धन्धे की दृष्टि से उचित नहीं है, पर मिशन की दृष्टि से पृथक बात है।

१३. कुछ श्रावक जो कहीं पंडित हैं तो कहीं प्रतिष्ठाचार्य, कहीं सम्पादक हैं तो कहीं प्रवक्ता, कहीं संयोजक हैं तो कहीं संचालक- मुनियों का भारी नुकसान कर रहे हैं। वे अनेक प्रकार की त्रुटियाँ, उदण्डतायें और स्वार्थ-सिद्धियाँ आये दिन करते रहते हैं, जिन्हें वे अपना कर्तव्य मान बैठे हैं, उन पर भी विचार करना होगा। उनकी त्रुटियाँ एक से स्वभाव की होती हैं, मंच पर भी विचार करना होगा। उनकी त्रुटियाँ एक से स्वभाव की होती हैं, मंच पर उपस्थित अपने किसी विरोधी या अ-मित्र की पत्ती काटना और उस कार्य पर मुनिराज की सम्मति की आशा करना। सार्वजनिक मंच पर अपनी बपौती स्थापित करना भी इन्हीं में से कुछ को करते देखा गया है।

१४. कुछ श्रावक चातुर्मास के समय अपने आश्रित उदण्ड-युवकों की सेवाएँ स्वयंसेवक के तौर पर लेते हैं और उनके माध्यम से, उन सीधे सादे मनीषियों की बेइज्जती कराते हैं जो, भीड़ से बचकर, मुनिराज से चर्चा करने पहुँचे होते हैं।

१५. कुछ श्रावक मुनि द्वारा दिये गये निर्देशों को अपने स्वार्थ से रंग देते हैं, फलतः संबंधितों के पास पहुँचते तक, निर्देशों के अर्थ बदल जाते हैं।

१६. कभी-कभी मुनि जी नगर के किसी बुद्धिजीवी से बात करना चाहते हैं, फलतः वे समीपी श्रावक से उसे बुला देने को कहते हैं। श्रावक

शेष पृष्ठ १०८ पर.....

महासभा : विकास के बढ़ते चरण

- श्री बाबूलाल जैन छाबड़ा, लखनऊ
संगठन मंत्री-उ.प्र. प्रांतीय महासभा एवं केन्द्रीय कार्यालय के संचालक

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का बहुत पुराना गौरवशाली इतिहास रहा है। वर्तमान में श्री निर्मल कुमार जी जैन (सेठी) ने इसको सन् १९८१ से अध्यक्ष पद पर रहकर अपने हाथों में इसकी बागडोर संभाली, तबसे इस सभा की प्रांतीय स्तर पर कमेटियों का गठन हुआ है। श्रीमान् सेठी जी ने हर बात को बहुत ही बारीकी से सोचा और समझा और इसका जो थोड़ा बहुत इतिहास मिल पाया, उसको लखनऊ मंगवाया। तब से लखनऊ के केन्द्रीय कार्यालय में सभा का कार्य हो रहा है।

मैंने पाया कि इतने बड़े विशाल कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जब तक कार्यालय में कोई अधिक से अधिक समय इसको नहीं देगा तब तक इसका तीव्र विकास होना संभव नहीं हो सकता, यह मैने महसूस किया।

उसके बाद ही भादों सुदी पंचमी संवत् २०५३ से यहां के कार्य को जितना संभव हो सका ठीक करने की चेष्टा की गयी फिर भी अभी आफिस में बहुत कुछ होना बाकी है। उस वक्त कार्यालय में केवल चार अल्मारी और एक रैक थी परन्तु आज कार्यालय में ३० अलमारी और ११ रैकों में सारा कार्य व्यवस्थित किया गया है। श्रीमान् सेठी जी, श्रीमान मदनलाल जी बैनाड़ा, श्री गजराज जी गंगवाल, श्री उम्मेदमल जी पाण्ड्या, श्रीमान् आर. के. जैन, श्री शिखरचंद जी पहाड़िया, पूर्वांचल श्री हुकमीचन्द जी सरावगी, से श्रीमान् नलिनराज जी कासलीवाल, प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन, श्री सुनील जी जैन मंत्री, श्री सुरेश जी जैन (प्रकाशक जैन गजट) आदि के सहयोग से समय-समय पर संबल प्रदान हुआ है और केन्द्रीय कार्यालय के सभी कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग मिला।

उसके बाद ही दिनांक २९.०६.९८ को आचार्य श्री १०८ दयासागर जी महाराज संघ, १०८ मुनि श्री वरदत्तसागर जी महाराज संघ के सानिध्य में प्राचीन तीर्थों के विकास हेतु श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा का प्रथम अधिवेशन हुआ और समाज ने अपनी स्वीकृतियां भी प्रदान की थीं।

दिनांक ३०.६.९८ को तीर्थ संरक्षिणी महासभा का रजिस्ट्रेशन विधिवत् हुआ और अब आयकर की धारा अस्सी जी के अन्तर्गत मान्यता भी प्राप्त हो गयी है। सभी समाज से मेरा अनुरोध है कि अपने-अपने क्षेत्रों में महासभा की इकाइयों का गठन करें और जो महानुभाव इसमें किसी भी प्रकार का सहयोग दे सकें वे अपना नाम, पता, फोन नम्बर भी कार्यालय को भेजें व समय-समय पर अपने मार्गदर्शन और विचारों से भी अवगत कराते रहें, ताकि सभी के सहयोग से महासभा का अधिक विकास संभव हो सके।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि प्रत्येक परिवार में जैन गजट, जैन महिलादर्श, जैन बालादर्श पहुंचे और सभी समाज अपने पूर्वजों की धरोहर व आचार विचार को सुरक्षित रखने में भी सहभागी बने रहें।

जिला, इतिहास, कस्बे में सभी जगह महासभा के संयोजक नियुक्त होवें व कमेटी का गठन हो ताकि जन-जन महासभा के विचारों से अवगत हो सके। जो भी महानुभाव महासभा के कार्य में सहयोग देना चाहें वे सादर आमंत्रित हैं।

मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री सुगनचंद जी छाबड़ा तो शुरू से ही महासभा के नियम नं. ९ का कट्टर पालन करने में अग्रणी रहते थे। उन्हीं के पद चिन्हों पर हमारा भी सदैव प्रयास रहा। सबसे पहले जब सन् १९६९ में फिरोजाबाद में इंटर कालेज की दिगम्बर जैन समाज की जमीन पर अन्य लोगों ने कब्जा करने की कोशिश की तो उस वक्त संरक्षक श्री भागचंद जी सोनी, अध्यक्ष श्री चांदमल जी पाण्ड्या सहित हजारों की तादाद में समाजसेवी व कार्यकर्ता जेल भरो आंदोलन में सम्मिलित हुये थे तब मैं भी ८ दिन रूका था। तब ही से महासभा के प्रति मेरा लगाव रहा।

सभी भाई महासभा के ९ नं. नियम का पालन करें तभी हमारा परिवार, आर्ष परंपरा, मर्यादा रक्षा से सुरक्षित रह सकेगा। यह बात १०८ परम पूज्य आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज अपनी जन्म जयंती के अवसर पर बराबर कहते थे कि महासभा के नियम नं. ९ का पालन करना ही हमारा सबसे बड़ा आशीर्वाद है।

शेष पृष्ठ १०७ का...

मुनि के समक्ष हाँ कहकर चल देता है, पर व्यक्तिगत दुर्भाव के कारण, वह वांछित बुद्धिजीवी को नहीं बुलाता, मगर लौटकर मुनि से कह देता है कि आपका संदेश उनके घर दे आया हूँ। यह घोर पाप वे श्रावक कैसे पचा पायेंगे।

१७. कतिपय श्रावक स्थानीय जैनाजैन अखबारों में महाराज के चित्र व समाचार कई दिनों तक निरन्तर छपवाने के लिए संस्था/समिति/समाज से बड़ी मात्रा में धन राशि प्राप्त कर लेते हैं, व्यय करना जरूरी बतलाते हैं और धर्म प्रचार के नाम पर घपला करते हैं।

ऐसे अनेक बिन्दु हैं जो श्रावकों को मुनियों के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनने के संकेत देते हैं, पर वे श्रावक हैं कि वे ऐसी बातों पर ध्यान ही नहीं देते और श्रावक बने रहने का ढोंग उम्र भर पालते हैं। अन्य कर्तव्य वे ही हैं जो "रत्नकरण्ड श्रावकाचार" में सैकड़ों वर्ष से पढ़े जा रहे हैं। आशा है मुनिगणों के समीप रहने वाला तथाकथित श्रावक लेख में व्याप्त आईना देखकर अपने मुँह के धब्बे धोने का प्रयास करेंगे। न करें तो क्या? कुछ बेशर्म लोगों को मंच पर उगा धब्बेदार जीवन ही प्रिय होता है। अस्तु।

महासभा का ७२ वां वार्षिक अधिवेशन
अधिवेशन स्थल- श्रवणबेलगोला, ३१ मार्च १९९७

अधिवेशन की रिपोर्ट में जैन गजट बावत सूचना

जैन गजट भारत का सर्वाधिक पुराना हिन्दी साप्ताहिक है इस प्रकार की रिपोर्ट नयी दिल्ली ८ अगस्त के रजिस्ट्रार की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 'साप्ताहिक समाचार पत्रों में अजमेर से निकलने वाला जैन गजट हिन्दी का सर्वाधिक पुराना नियतकालिक पत्र है'।

महासभा- जीव दया विभाग

अपील

उत्तर प्रदेश के समस्त दिगम्बर जैन समाज के अहिंसा एवं शाकाहार के प्रेमियों से निवेदन है कि सन् १६३० में सर सेठ हुकमचंद जी, तत्कालीन अध्यक्ष श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा जीव दया विभाग का गठन किया गया था। इस विभाग के अंतर्गत केंद्रीय स्तर पर शाकाहार एवं अहिंसा का प्रचार-प्रसार किया जाता रहा। इसी श्रृंखला में उत्तर प्रदेश में अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार-प्रसार हेतु एक अच्छी टीम का पुनः गठन किया जाना अपेक्षित है।

श्री महावीर प्रसाद जी जैन सर्राफ दिल्ली, श्री सौभाग्यमल जी काला, लखनऊ, डा. दीपचंद जी जैन दिल्ली, श्री नेमीचंद जी जैन संपादक तीर्थंकर इंदौर, डा. कल्याण जी गंगवाल, पूना द्वारा अहिंसा एवं शाकाहार के क्षेत्र में इनके सहयोग एवं परामर्श से श्री गंभीरचंद जी छाबड़ा, लखनऊ द्वारा स्थान स्थान पर शाकाहार प्रदर्शनी लगाकर इस कार्य में खूब लगन एवं दक्षता के साथ योगदान दिया गया है। आज के वातावरण में जबकि चहुं ओर हिंसा एवं मांसाहार का बोलबाला है। हम भगवान ऋषभदेव से महावीर तक के अनुयायियों का प्रथम कर्तव्य है कि हम भगवान का अहिंसा परमोधर्म का संदेश घर घर में जन जन तक पहुंचायें। अतएव श्री पुखराज जी पांड्या गोरखपुर की अध्यक्षता में श्री गंभीरचंद जी छाबड़ा लखनऊ के महामंत्रित्व में उ.प्र. शाखा के लिये जीव दया विभाग का पुनर्गठन किया गया है।

उ. प्र. के समस्त जैन समाज के कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि वे अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार-प्रसार में योगदान देने हेतु आगे आयें।

अपने पत्र तुरंत महासभा कार्यालय में भेजें जिससे कि आपकी सेवा में सदस्यता फार्म भेज दिये जायें। सदस्य बनने के उपरांत प्रचार-प्रसार सामग्री उपलब्ध करायी जायेगी।

- विनीत -

निर्मल कुमार जैन (सेठी) — राष्ट्रीय अध्यक्ष

मदनलाल जैन बैनाड़ा — प्रांतीय अध्यक्ष

चिरंजीलाल बगड़ा, कलकत्ता — केन्द्रीय महामंत्री- जीवदया विभाग

-पत्र व्यवहार
गंभीरचंद जैन छाबड़ा
महामंत्री जीवदया (विभाग), उत्तर प्रदेश प्रांतीय महासभा
सआदतगंज, लखनऊ-३ फोन नं. २६१०४० (आ.), २६६५४४ (घर)

जीव दया विभाग के पदाधिकारी मनोनीत

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा उत्तर प्रदेश शाखा के अध्यक्ष श्री मदनलाल जी बैनाड़ा आगरा ने जीव दया विभाग के कार्य में गति देने के लिए सक्रिय कदम उठाते हुये श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा उत्तर प्रदेश में निम्न महानुभावों को जीवदया विभाग का पदाधिकारी मनोनीत किया है-

१. श्री पुखराज जी जैन, गोरखपुर- — अध्यक्ष
२. श्री नरेशचंद जैन, सीतापुर- — कार्याध्यक्ष
३. श्री प्रेमचंद जैन चौक, लखनऊ- — उपाध्यक्ष
४. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, टिकैतनगर- — उपाध्यक्ष
५. श्री गंभीरचंद जैन छाबड़ा, लखनऊ- — महामंत्री
६. श्री विजय कुमार काला, सआदतगंज, लखनऊ- — संयुक्त मंत्री
७. श्री डा. विनय जैन, बाराबंकी- — संयुक्त मंत्री
८. श्रीमती लक्ष्मी जैन, सआदतगंज, लखनऊ- — महिला संयोजिका

- गंभीरचंद छाबड़ा
महामंत्री

जीव दया विभाग उ. प्र. द्वारा विभिन्न स्थानों पर लगाई गई प्रदर्शनी में दर्शकों के

शाकाहार पर विचार

- मैं आपकी बातों से काफी प्रभावित हुई हूं। पर यदि आप मांसाहार को रोक सकने में समर्थ हैं, तो भविष्य में मदिरापान जो कि समाज का एक कैंसर है उसको रोक सकने में समर्थ हों तो मैं आपकी आभारी रहूंगी व मैं आज से कोशिश करूंगी कि मांसाहार का प्रयोग अपने जीवन में न करूं।

- श्रीमती मीनू श्रीवास्तव इंदिरानगर, लखनऊ

- मैं लक्ष्मीकांत गुप्ता पुत्र श्री रामचन्द्र गुप्त सफीपुर, उन्नाव का निवासी हूं। मैं देवी मां के स्थान पर प्रथम बार आया हूं। यहां आकर मुझे मांसाहार तथा शाकाहार के बारे में तथा तम्बाकू के बारे में ज्ञात हुआ। मैं अपने यहां जाकर लोगों को भी मांसाहारी भोजन तथा तम्बाकू का सेवन करने वालों को उसको छोड़ने के लिये कहूंगा। धन्यवाद

- अहिंसा दिवस २ अक्टूबर ९७ को गंभीरचंद जी जैन द्वारा लगाई शाकाहार की प्रदर्शनी वास्तव में प्रशंसनीय है। इन्होंने शाकाहार क्यों और मांसाहार क्यों नहीं विषय से संबंधित साहित्य को तो निशुल्क वितरण किया ही साथ पुस्तकों का स्टाल लगाकर भी इस हेतु सराहनीय प्रयास किया है। मेरी केवल इतनी ही शुभकामनायें हैं कि यह अपने मिशन में पूर्ण रूप से सफल हों।

- के.के.जैन (पत्रकार) तह. फतेहपुर (बाराबंकी)

जैन गजट (हिन्दी साप्ताहिक)

जैन गजट श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का साप्ताहिक मुख पत्र है और यह विगत १०३ वर्षों से निरंतर प्रकाशित किया जा रहा है। इसे लगभग ५० हजार पाठक प्रति सप्ताह पढ़ते हैं।

जैन गजट का प्रकाशन प्रत्येक गुरुवार को लखनऊ से होता है। जैन समाचार पत्रों में यह सबसे प्राचीन प्रमुख पत्र है। जैन गजट ने समय-२ पर समस्त दिगम्बर जैन समाज को बहुत उपयोगी, धार्मिक, सामाजिक, सैद्धांतिक एवं बहुआयामी सामग्री प्रदान की है। जैन गजट के प्रत्येक वर्ष में पर्यूषण पर्व विशेषांक, भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) विशेषांक, भगवान महावीर जयंती विशेषांक के साथ समय-समय पर अन्य विशेषांक भी प्रकाशित होते रहते हैं। इसके वर्तमान में लगभग पचास हजार पाठक हैं। देश भर में इससे जैन धर्म की महती प्रभावना हो रही है। इस पत्र में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आयोजनों के समाचार, आगामी आयोजन, पूज्य मुनिराजों के प्रवचन एवं उनके द्वारा की जा रही धर्म प्रभावना के समाचार नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। प्रेरक, पठनीय एवं मननीय तथा महत्वपूर्ण विषयों पर लेख एवं कविताएं भी हर अंक में प्रकाशित की जाती हैं। यह पत्र महासभा की विचारधारा एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाता है। आर्ष परंपरा के धनी के रूप में यह समाचार पत्र समाज की महती सेवा कर रहा है।

सामाजिक संस्थाओं में जैसे महासभा सबसे प्राचीन सभा है, वैसे ही हिन्दी के जैन समाचार पत्रों में जैन गजट भी सर्वाधिक प्राचीन साप्ताहिक पत्र है। धर्म रक्षा के लिए यह पत्र सदैव कटिबद्ध रहा है।

आपसे निवेदन है कि यदि आप इसके सदस्य नहीं हैं तो अवश्य ही बनकर धर्म संरक्षण में सहयोग प्रदान करें

हम आपसे यह भी अनुरोध करते हैं कि आप अपने रिश्तेदार, मित्र, परिचितों, भाई-बहिनों आदि व जो दूर-दराज में रहते हैं उनको भी आप अपनी ओर से जैन गजट में विज्ञापन देने तथा सदस्य बनने का अनुरोध करने की कृपा करें, जिसके लिए हम आपके हृदय से आभारी रहेंगे। जैन धर्म/ संस्कृति/ सामाजिक एकता एवं धार्मिक जाग्रति के लिए इस पत्र का प्रत्येक जैन घर में होना आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आप अपने व्यवसाय/ फर्म/ संस्था का विज्ञापन प्रदान करके भी संस्था को सहयोग प्रदान कर सकते हैं। संस्था आपकी अत्यंत आभारी रहेगी। विज्ञापन शुल्क व सदस्यता शुल्क का विवरण निम्न प्रकार है:-

सदस्यता शुल्क		विज्ञापन शुल्क	
परम संरक्षक-	५१०१/-रुपये	पूरा एक पृष्ठ-	२,५००/-रुपये
संरक्षक-	२५०१/-रुपये	आधा पृष्ठ-	१,५००/-रुपये
आजीवन-	११००/-रुपये	चौथाई पृष्ठ-	८००/-रुपये
वार्षिक-	१००/-रुपये	१/८ पृष्ठ-	४००/-रुपये
विदेशों में वार्षिक (एअर मेल से)	१०००/-रुपये प्रति वर्ष	विज्ञापन दर-२०/-रुपये प्रति कालम सेंटीमीटर	

विशेष जानकारी

१. जैन गजट के वर्तमान में जगह - जगह निःशुल्क संवाददाता हैं। अन्य जगहों के लिए भी संवाददाता नियुक्त करना है। इसके लिए जो भी महानुभाव संवाददाता बनना चाहते हैं उनके लिए हम कार्यालय से एक आवेदन फार्म उनका पत्र आने पर भेजते हैं। आवेदन फार्म पूर्ण भरकर आने पर संवाददाता नियुक्त करने पर विचार किया जाता है।

२. वार्षिक सदस्यता कभी भी ग्रहण कर सकते हैं। कार्यालय में शुल्क प्राप्ति के पश्चात् एक सप्ताह के बाद वाले आगामी अंक से जैन गजट भेजना प्रारंभ कर दिया जाता है।

३. परम संरक्षकों के नाम जैन गजट के प्रत्येक अंक में प्रकाशित होते हैं तथा एक अंक में सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित होता है।

४. संरक्षक तथा आजीवन सदस्यों को जैन गजट समाचार पत्र यावज्जीवन जाता है तथा जैन गजट में एक बार नाम प्रकाशित होता है।

५. जो महानुभाव विज्ञापन के रूप में अपने व्यवसाय/ संस्थान/फर्म/ कं. का ६०००/-रुपये प्रतिवर्ष का विज्ञापन देकर सहयोग प्रदान करेंगे उनका नाम जैन गजट के प्रत्येक अंक में 'जैन गजट के विशेष सहयोगी' के रूप में प्रकाशित किया जाता है। ६०००/-रुपये प्रतिवर्ष देने पर 10x13 से. मी. साईज का विज्ञापन प्रत्येक माह के किसी एक अंक में प्रकाशित किया जाता है।

ड्राफ्ट "जैन गजट" के पक्ष में देय किसी भी बैंक का निम्न पते पर भेजें। सम्पर्क सूत्र/ पत्र व्यवहार/ पूछताछ/ सुझाव-शिकायत के लिए भी इसी पते पर संपर्क करें-

कार्यालय- जैन गजट

श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ (उ.प्र.)-२२६ ००४ फोन/ फैक्स : (०५२२) २६७२८७
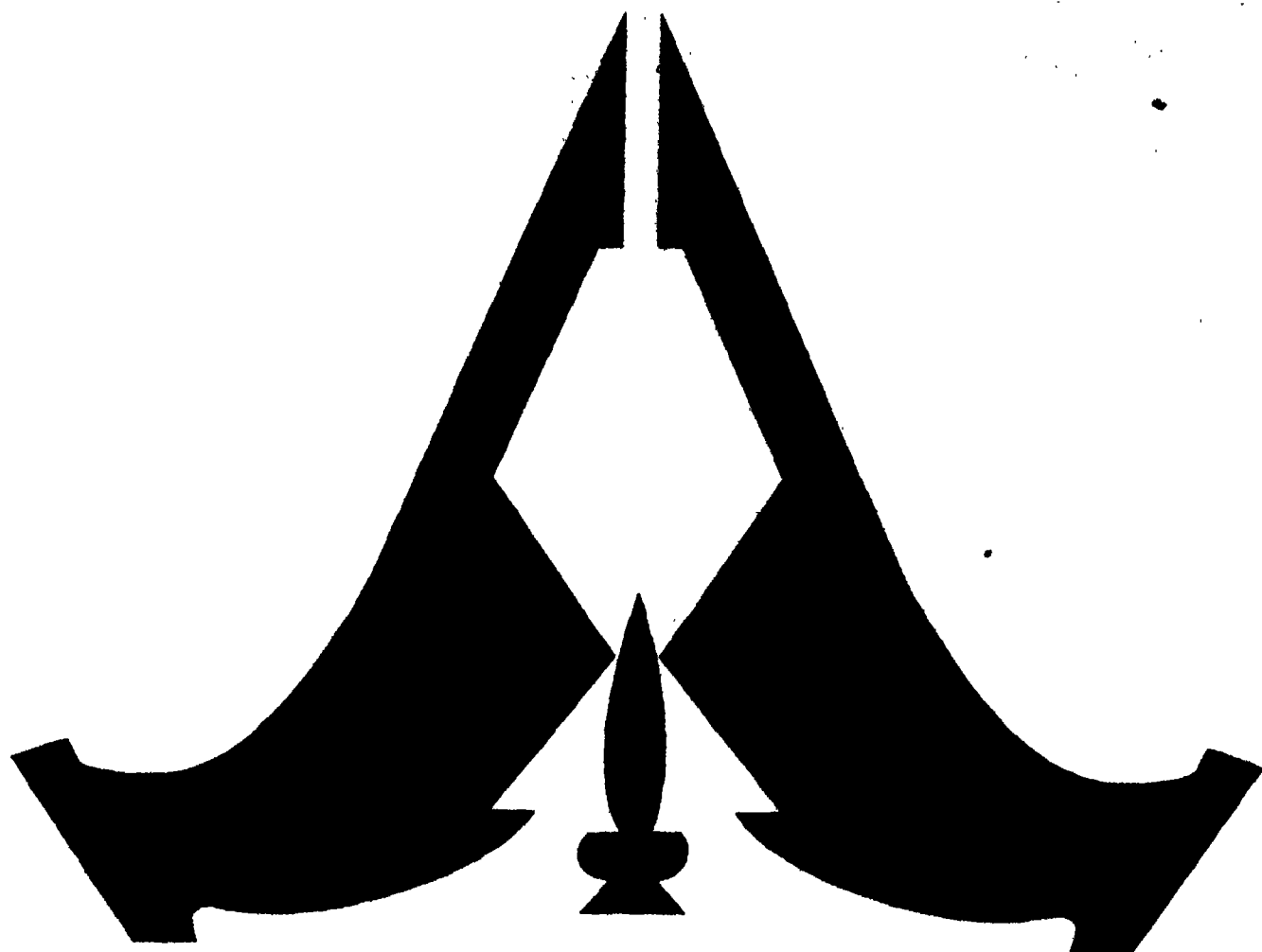
धर्म संरक्षिणी

महासभा का प्रतीक चिन्ह

तीन लोक में रह रहे जीवों का विकास धर्ममार्ग पर आरूढ़ होने से है। वह धर्म सदैव प्रकाशमान है तथा धर्म से प्रकाश प्राप्त कर यह जीव परमात्मा बने तथा वह प्रकाशमान मार्ग सुरक्षित रहे, वह ज्योत जलती रहे, उसे हाथ (संयम) रूपी पथ से सुरक्षित रखा जा सकता है। हाथ संयम के प्रतीक हैं-

उसका-उस धर्म का संरक्षण-महासभा, धर्म संरक्षिणी महासभा है-

प्रेषक- भरतकुमार काला, मुंबई

भ. श्री पार्श्वनाथ स्वामीः हाडवल्ली (कर्नाटक)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

सेठी जी की उड़ीसा यात्रा से

उड़ीसा का सांईकुड़ा ग्रामः जहां पर अन्थोनारायण व्यक्ति के घर पर दो पार्श्वनाथ की मूर्ति विराजमान हैं जो कि करीब ४०, ५० वर्षों से निकली हुई हैं। इन मूर्तियों पर कुछ लिखा हुआ है लेकिन दिखाई नहीं दे रहा है। यह मूर्तियां पद्मासन हैं। करीब साढ़े तीन फीट और ४ फीट के आसपास हैं। जहां से यह मूर्तियां निकली हैं उस जगह पर खुदाई की जाय तो और मूर्तियां निकल सकती हैं।

प्रतापनगरी जो कि कटक से करीब भुवनेश्वर रोड पर ५, ६ कि. मी. की दूरी पर बसा है जहां पर चंद्रशेखर नाम के व्यक्ति ने जो मूर्तियां उसको मिली हैं, उनको उसने क्लब घर में रखा है। वहां सात मूर्तियां रखी हैं। जिसमें चार प्रतिमायें आदिनाथ की और ३ प्रतिमायें पार्श्वनाथ की हैं। जिनकी ऊंचाई २, ढाई फीट के आसपास है। सब सुरक्षित हैं। क्लब के बाहर में ४ फीट ऊंची श्री पार्श्वनाथ भगवान की बहुत सुंदर प्रतिमा जिसका सिर कटा हुआ है।

एक खेत में पड़ी जैन प्रतिमायें

खेत में पड़ी एक जैन प्रतिमा को जल से साफ करते हुये महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी जी
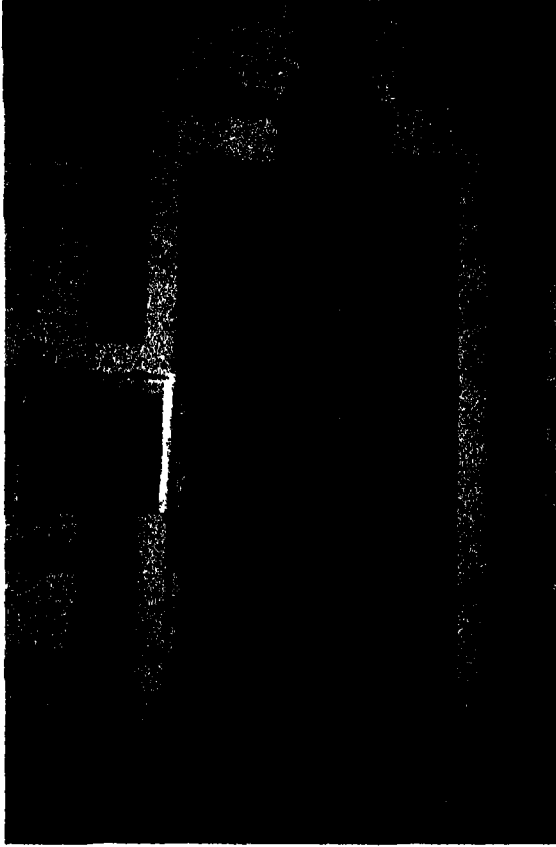
ग्राम बूढ़ीखार (जिला रायपुर म. प्र.) स्थित आदिनाथ भगवान की भव्य प्रतिमा जिसे ग्रामवासी गेरु लगाकर एवं वस्त्र पहनाकर पूजते थे

म. प्र. में जगदलपुर के पास ६० कि.मी. सोनारवाल गांव में वस्तर जिले में नारंगी नदी के किनारे सिगनागोड़ा ग्राम में बुद्धुराम कश्यप नाम के व्यक्ति के खेत से निकली मूर्ति, यह प्रतिमा भ. ऋषभनाथ की है, जिसमें नीचे बैल का चिन्ह बना हुआ है, चारों ओर तीर्थंकर बने हुए हैं। दोनों तरफ प्रतिमा में यक्ष-यक्षिणी बने हुए हैं। नीचे में दोनों तरफ शासन देवता बने हुए हैं। नीचे में ही दोनों तरफ शेर बने हुए हैं। प्रतिमा के ऊपर दो हाथी बने हुए थे। यह मूर्ति बुद्धुराम कश्यप को करीब २० वर्ष पहले मिली थी।

भगवान १००८ श्री संभवनाथ तीर्थंकर
दिगम्बर जैन मन्दिर बालांबीड जिला हावेरी (कर्नाटक)
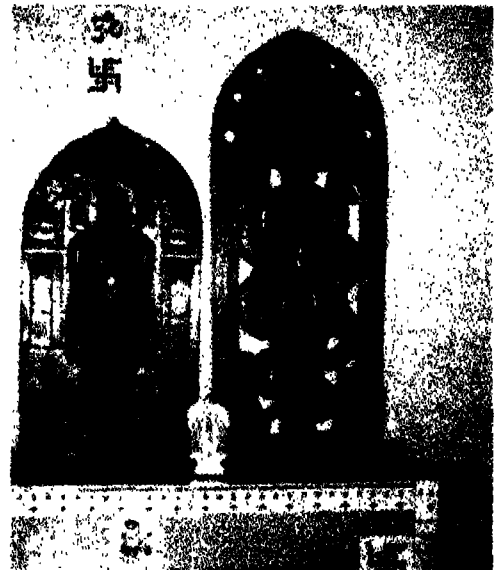
मुर्तगी (कर्नाटक) : तीर्थंकर श्री नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमायें

अतिशय क्षेत्र श्री श्रेयांसगिरि (पन्ना) म. प्र.

श्रेयांसगिरि पर पार्श्वनाथ भगवान की भव्य प्रतिमा

अतिशय क्षेत्र श्री श्रेयांसगिरि

क्षेत्र पर चल रहा गुफाओं की खुदाई का कार्य

जैन गजट
शताब्दी
महोत्सव
विशेषांक
२१ जनवरी
१९९९

अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि में परम पूज्य मुनि श्री निर्णय सागर जी महाराज, क्षुल्लक जी तथा तीर्थ संरक्षिणी महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा की संक्षिप्त परिचय व सदस्यता संबंधी जानकारी

किसी भी संस्था के जन्म के मूल में क्रांति का बीज अवश्य रहता है। बिना इस बुनियाद के संस्था का जन्म होना सम्भव नहीं होता। आज से लगभग १०३ वर्ष पूर्व भारत का दिगम्बर जैन समाज अत्यंत बिखरा हुआ समाज था, हालांकि विज्ञान के साधनों ने समय और क्षेत्र की दूरी को कम करना प्रारंभ कर दिया था। अतः समाज के साधन सम्पन्न होते हुए भी यह बात खटकती थी कि हमारा अखिल भारतीय स्तर का संगठन कैसे गठित हो? समय की मांग के अनुसार दिगम्बर जैन समुदाय में भी इस भावना का समावेश हुआ और यह भावना कार्य रूप में परिणत होने के आसार नजर आने लगे और समाज के सहयोग को पाकर महासभा ने एक विशाल वट वृक्ष का रूप लिया और समस्त दिगम्बर जैन समाज उसी की छत्र छाया में अपनी धार्मिक सामाजिक गतिविधियों को निरंतर आगे बढ़ाने में प्रगतिशील है।

दिगम्बर जैन समाज एक महत्वपूर्ण एवं अल्पसंख्यक समाज है किन्तु उसके अनुयायी पूर्व से पश्चिम और दक्षिण से उत्तर तक व्यापक रूप से फैले हुये हैं। जैन समाज एक व्यवसायिक तथा औद्योगिक क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है, वहां के देशकाल के प्रभाव से अवश्य प्रभावित होता है, परन्तु उसके धर्म के मूल सिद्धांत, रीति-रिवाज आदि उसकी संस्कृति के अनुकूल अक्षुण्ण रहते हैं, इन्हीं धर्म के मूल सिद्धांतों, रीति-रिवाजों, संस्कृतियों और उसी तत्वों की रक्षा के लिए ही इस **'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा'** का जन्म हुआ।

श्री जम्बू स्वामी भगवान की निर्वाण भूमि चौरासी मथुरा (उ.प्र.) में कार्तिक का मेला पड़ता है। इसी अवसर को मूर्तरूप देने के लिए उपयुक्त समझा गया और विक्रम सम्वत् १९४९ में महासभा की नींव डाली गयी। इसके प्रथम सभापति मथुरा के सेठ लक्ष्मण दास जी, उपसभापति सहारनपुर के लाला अग्रसेन जी रईस और मंत्री पं. छेदालाल जी चुने गये। इनके नेतृत्व में विक्रम सम्वत् १९५२ सन् १८९४ में दिगम्बर जैन समाज के प्रबुद्ध कर्णधारों द्वारा महासभा की स्थापना अंतिम केवली भगवान जम्बूस्वामी की निर्वाण स्थली चौरासी मथुरा में की गई थी।

यह सर्व सम्मत विषय है कि देश या समाज की सेवा भावी संस्थाओं के विशाल आयोजित अधिवेशन उसकी सजीवता और कार्य तत्परता के परिचायक होते हैं। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा वर्तमान प्रचलित सभी जैन संस्थाओं में सर्वाधिक प्राचीनतम संस्था है जो अपने जीवन काल के १०३ वर्ष व्यतीत कर शताब्दी वर्ष मना रही है। इतनी लम्बी अवधि में इस संस्था ने समाज के भिन्न-२ उतार-चढ़ाव देखे हैं। अनेकों सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक संघर्षों में इसने अपना सर्वस्व लगाकर सफलता ही नहीं प्राप्त की है वरन् जैन धर्म की भारी प्रभावना की है। महासभा अपने आप में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। सन् १९४१ के श्रवणबेलगोला में महामस्तकाभिषेक के अवसर पर महासभा का शानदार अधिवेशन हुआ था जिसमें भूतपूर्व अध्यक्ष श्री हुकुमचंद जी साहेब ने सर सेठ भागचंद जी सोनी साहेब को महासभा के द्वारा समाज की बागडोर संभलाई थी उसके बाद महासभा की बागडोर रायबहादुर सेठ, राजकुमार सिंह जी सेठ, भंवरीलाल जी बाकलीवाल, राय साहब चांदमल जी पाण्ड्या, सेठ लिखमीचंद जी छाबड़ा आदि के नेतृत्व में महासभा ने समाज की जो अमूल्य सेवायें की हैं वे समाज के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगी। वर्तमान में श्रावक शिरोमणि, दानवीर, तीर्थभक्त, मुनिभक्त कर्मठ युवक रत्न श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी की अध्यक्षता एवं महामंत्री श्री गजराज जी गंगवाल के महामंत्रित्व काल में यह संस्था धर्म एवं समाज हित कार्यों में निरंतर प्रयत्नशील है।

महासभा संगठन एवं विचारधारा का व्यापक समर्थन प्राप्त करने तथा महासभा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की दृष्टि से देश के प्रत्येक प्रांत में महासभा के अधिवेशन आयोजित करके प्रांतीय एवं आंचलिक समितियां गठित कर दी गई हैं जो सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। अनेक स्थानों में संभागीय एवं जिला इकाईयां भी गठित हो गई हैं।

महासभा ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तीर्थ जीर्णोद्धार विभाग, जीवदया विभाग, परीक्षालय बोर्ड, ग्रंथ प्रकाशन

विभाग, उपदेशक विभाग, वैयावृत्त विभाग, स्वत्व रक्षा विभाग, शिक्षण शिविर विभाग, जातीय संगठन विभाग, स्वाध्याय विभाग, स्थापित करके अतीत में समाज की महत्वपूर्ण सेवा की है और आज भी कर रही है।

धर्म संरक्षिणी महासभा के उद्देश्य

१. दिगम्बर जैनियों में धार्मिक तथा धर्म से अविरुद्ध विद्या का प्रचार करना।
२. सर्व देशीय जैन पाठशालाओं की परीक्षा लेकर विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाना।
३. दिगम्बर जैन शास्त्रों से अविरुद्ध धर्मोपदेश दिलाकर सभा, पाठशाला स्थापित कराना तथा व्यर्थ व्यय एवं अन्य कुरीतियों का निवारण कर सदाचार का प्रचार कराना।
नोटः (सदाचार प्रचार के लिए जातीय संगठन और प्रायश्चित प्रथा का प्रचार कराना।)
४. प्राचीन दिगम्बर जैन ग्रन्थों का संचय व जीर्णोद्धार कराना।
५. दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र व मंदिरादि धर्म-स्थानों का सुप्रबन्ध कराना।
६. चतुर्विध दानशाला व अनाथालयादि की स्थापना कराना, इनके प्रचार में यथाशक्ति सहायता करना।
७. जैनियों में वाणिज्यादि की वृद्धि का उपाय करना।
८. जैनियों में परस्पर के झगड़ों को जातीय पंचायत द्वारा निर्णय करने का उपाय करना।
६. जैन धर्म और जाति के अधिकारों की रक्षा करना।

सभासद बनने के नियम

१. ऐसा कोई भी दिगम्बर जैन पुरुष, महिला जिसकी उम्र कम से कम १८ वर्ष की हो।
२. जो इस सभा के निश्चित प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करके सभा के उद्देश्य और नियमों के अनुसार चलने और मैं आगम विरुद्ध विचारों से सर्वथा असहमत हूँ, इसकी प्रतिज्ञा करे। विधवा विवाह, जाति-पाति लोप तथा वर्ण व्यवस्था लोप आदि आगम विरुद्ध मन्तव्यों का प्रचार करने वाले इस सभा के किसी प्रकार के सभासद नहीं हो सकते, यह नियम अमर रहेगा।

महासभा की सदस्यता ग्रहण करने का शुल्क

१. आजीवन- ११००/-रुपये प्रति वर्ष
(संस्था का साप्ताहिक समाचार पत्र जैन गजट आजीवन प्राप्त होगा)
२. विशिष्ट त्रैवार्षिक- ३००/-रुपये
(संस्था का साप्ताहिक समाचार पत्र जैन गजट तीन वर्ष तक प्राप्त होगा)
३. साधारण- १००/-रुपये
(सस्था का साप्ताहिक पत्र जैन गजट एक वर्ष तक प्राप्त होगा)

नोटः- महासभा में सम्मति देने और उसके पदाधिकारी बनने का अधिकार सभासदों को प्राप्त होता है। सदस्यता राशि "श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा" के नाम का ड्राफ्ट बनवाकर निम्न पते पर भेजें-

महामंत्री- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा
केन्द्रीय कार्यालयः श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड
मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ (उ.प्र.)-४
फोन / फैक्स-(०५२२) २६७२८७

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट के ट्रस्टी

१. श्री निर्मल कुमार हुलाशचंद जी सेठी
श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स, ऐशबाग, लखनऊ (उ०प्र०)
२. श्रीमती सोहनी देवी सेठी, धर्मपत्नी स्व० श्री हरकचंद जी सेठी,
श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स, ऐशबाग, लखनऊ (उ०प्र०)
३. श्रीमान निरंजनलाल जी बैनाड़ा
'पंचशील' १/२०५ प्रोफेसर कालोनी, हरी पर्वत, आगरा (उ०प्र०)
४. श्रीमान उम्मेदमल जी पांड्या
१४, रानी झांसी रोड, दिल्ली- ११००५५
५. श्रीमान् पूनमचंद जी गंगवाल
जैन कुंज, १, गोपालबाड़ी, जयपुर (राज.)
६. श्रीमान कंवरीलाल जी बोहरा, आनन्दपुर कालू जिला-पाली (राज.)
७. स्व. श्रीमती लाड़ा देवी सेठी, मातेश्वरी श्री राजकुमार जी सेठी
रूम नं.-३०२, वुड स्ट्रीट, कलकत्ता
८. श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी
मैसर्स ओम मेटल्स एंड मिनिरल्स लि.
कोठारी भवन, ३०/३१, नई धान मण्डी, कोटा (राज.)
९. श्रीमान धनराज नथमल जी बाकलीवाल, इचलकरंजी (महा.)
१० श्रीमान आर. के. जैन
६४-आर्केडिया, नरीमन प्वाइंट, बम्बई (महा.)
११. श्रीमान सौभाग्यमल जी काला, मैसर्स लखनऊ किराना कम्पनी
८८, सुभाषमार्ग, लखनऊ (उ०प्र०)
१२. श्रीमान मदनलाल प्रकाशचंद जी सेठी
मैसर्स जैन हार्डवेयर, डीमापुर (नागालैण्ड)
१३. श्रीमान् मांगीलाल जी छाबड़ा, मै. नंदलाल मांगीलाल जैन
जी.एस.रोड, डीमापुर (नागालैण्ड)
१४. श्रीमान मेघराज जी पाटनी
मैसर्स मंगलचन्द मेघराज जी पाटनी, डीमापुर (नागालैण्ड)
१५. श्रीमान् चैनरूप जी बाकलीवाल
मैसर्स बाकलीवाल मोटर्स, डीमापुर (नागालैण्ड)
१६. श्रीमान किशनलाल जी सरावगी
मैसर्स किशनलाल मदनलाल सरावगी एंड संस, डीमापुर (नागालैण्ड)
१७. श्रीमान रामप्रताप मूलचंद जी छाबड़ा, नलबाड़ी (आसाम)
१८. श्री हुकमीचंद जी सरावगी
मैसर्स छगनमल सरावगी एंड संस, एस.आर.सी.बी.रोड, फैन्सी बाजार गुवाहाटी (आसाम)
१९. श्री रूपचंद जी विनोद कुमार कटारिया
ग्वालियर हाउस, ए-२/३७, राजपुर रोड, दिल्ली-५४
२०. श्रीमान मांगीलाल जी पहाड़िया
पहाड़े निवास, उस्मानगंज, हैदराबाद (आं.प्रा.)
२१. श्रीमान शिखरचंद जी पांचूलाल जी पहाड़िया
मैसर्स पहाड़िया सिन्थेटिक्स
जयहिंद स्टेट नं०-२ ए, दूसरा मंजिला
डा. आत्माराम मर्चेन्ट रोड, भूलेश्वर, बम्बई (महा.)
२२. श्री हजारीमल लक्ष्मीनारायण सरावगी, करीमगंज (आसाम)
२३. श्रीमान मिश्रीलाल जी बाकलीवाल
मैसर्स मिश्रीलाल निर्मल कुमार, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी (आसाम)
२४. श्रीमान मदनलाल जी बाकलीवाल, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी (आसाम)
२५. श्रीमान मोहनलाल राजेन्द्र प्रसाद जी,
साइडिंग बाजार, तिनसुकिया (आसाम)
२६. श्रीमान गुलाबचंद भंवरलाल जी गंगवाल, केदार रोड, गुवाहाटी (आसाम)
२७. श्रीमान ताराचंद, संजय कुमार, पदमचंद पाटनी, गुवाहाटी (आसाम)
२८. श्रीमान जालिमचंद धरमचंद बड़जात्या, केदार रोड, गुवाहाटी (आसाम)
२९. श्रीमान दानमल सोगानी एंड संस, गुवाहाटी (आसाम)
३०. श्रीमान हनुमान प्रसाद जी बड़जात्या
मे. संतोष कुमार एंड कम्पनी, ईस्ट बाजार, करीमगंज (आसाम)
३१. श्रीमान धन्नालाल जी बगड़ा, विजयनगर, कामरूप (आसाम)
३२. श्रीमान चांदमल, फूलचंद अजीतकुमार जी बगड़ा, इम्फाल (मणिपुर)
३३. श्रीमान अमरचंद जी भागचंद जी पहाड़िया
पी.-१४, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता- ७००००७
३४. श्रीमान कुन्दनमल जी रारा, राधा बाजार,
फैन्सी बाजार, गुवाहाटी (आसाम)
३५. श्री काशीराम हनुमान प्रसाद जी रारा
३६. श्री पन्नालाल, चांदमल, सोहनलाल जी सेठी, डीमापुर (आसाम)
३७. श्री लक्ष्मीनारायण निर्मल कुमार जी गंगवाल
विजयनगर, कामरूप (आसाम)
३८. श्रीमान पन्नालाल नरेन्द्र कुमार सेठी, सिलचर (आसाम)
३९. श्री कस्तूरचंद जौहरीमल पाटनी, थांगल बाजार, इम्फाल (मणीपुर)
४०. श्रीमान भगवान दास विजय कुमार पाटनी, इम्फाल
४१. श्री श्रीनिवास जी बड़जात्या, मद्रास

इनके अतिरिक्त ट्रस्टीशिप हेतु कई महानुभावों ने अपनी स्वीकृतियां भी प्रदान की हैं।

- जीवन में साधना से स्खलित हो जाने पर अनर्थ/अकल्याण ही प्राप्त होगा।
- जीवन में आयाम/प्रयास से डरना नहीं एवं आलस्य नहीं करना चाहिये।
- गति-प्रगति के अभाव में आशा के पद ठण्डे पड़ते हैं।
- कार्य को करते समय अनुकूलता की प्रतीक्षा करना सही पुरुषार्थ नहीं है।

महासभा के प्रान्तीय अध्यक्ष एवं महामंत्री

उत्तर प्रदेश-
अध्यक्ष-श्री मदनलाल जी बैनाड़ा
८/६, एच. आई. जी. फ्लैट्स,
संजय पैलेस, हरी पर्वत,
आगरा (उ. प्र.)
महामंत्री-श्री श्रेयांस कुमार जी जैन
१२/५४४, गाँधी रोड,
बड़ौत, मेरठ (उ. प्र.)-२५०६११

मध्य प्रदेश-
अध्यक्ष-श्री सतीश जी अजमेरा
ओ.सी. एम., गणेश कालोनी
नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
महामंत्री-नेमीचन्द जी जैन
मु०पो०- अकलतरा
जिला-बिलासपुर (मध्य प्रदेश)

आन्ध्र प्रदेश-
अध्यक्ष-श्री मांगीलाल जी पहाड़े
पहाड़े निवास, म.नं.१५-२-७५२
उस्मानगंज, हैदराबाद (आं.प्र.)
महामंत्री-श्री जय कुमार जी काला
म.न.-६३-२-६३६
कागजी गुड़ा, हैदराबाद(आ.प्र.)

गुजरात-
अध्यक्ष-श्री ओम प्रकाश जी जैन
अश्वमेघ अपार्टमेंट, पारले प्वाइन्ट
सूरत (गुजरात)
महामंत्री-श्री कमलेश जी गांधी
६, गंगा सदन, तिमबिलयाबाड़ा
जीवन भारतीय स्कूल के पीछे
नानपुरा, सूरत (गुज.)

राजस्थान-
अध्यक्ष-श्री पूनमचंद जी गंगवाल
जैन कुन्ज, १, गोपाल बाड़ी
जयपुर (राज.)-३०२००१
महामंत्री-श्री कमल बाबू जी जैन
१८, सवाई पाव की बगीची
वायरलेस क्वाटर के पास,
जनता कालोनी,
जयपुर (राज.)- ३०१००४

बिहार-
अध्यक्ष-श्री राय बहादुर
श्री हरकचंदजी पाण्ड्या
पो. बा. नं.-६५, रांची (बिहार)
महामंत्री-श्री हरिप्रसाद जी जैन
पहाड़िया, मु. पो.-कतरासगढ़
जि.-धनबाद (बिहार)-८२८११३

पूर्वांचल (आसाम)-
अध्यक्ष-श्री हुकमीचंद जी सरावगी
मै. छगनमल सरावगी एण्ड सन्स
एस.आर.सी.बी.रोड, फैन्सी बाजार,
गुवाहाटी (आसाम)-७८१००१
महामंत्री-श्रीमान् राजकुमार जी सेठी
म.नं.-३०२, १-वुड स्ट्रीट
कलकत्ता -७०००७१

तमिलनाडु-
अध्यक्ष-श्री पदमचंद जी धाकड़ा
५६, सेमबुडोस स्ट्रीट, द्वितीय तल
मद्रास-६००००१
महामंत्री-श्री राजकुमार जी जैन
बड़जात्या, सरावगी ट्रेडर्स, ८५
गोडाउन स्ट्रीट
प्रथम तल, मद्रास- ६००००१

प. बंगाल-
अध्यक्ष-श्रीमान् राजकुमार जी सेठी
म. नं.-३०२, १-वुड स्ट्रीट
कलकत्ता -७०००७१
महामंत्री- श्री महावीर प्रसाद जी
गंगवाल, ६८, नलिनी सेठ रोड,
कलकत्ता-७००००७

महाराष्ट्र-
अध्यक्ष- श्री आर. के. जैन
६४, आर्केडिया, नारीमन प्वाइन्ट
बम्बई-४०००२१
संयोजक-श्री भरत कुमार जी काला
१४/४३२, टैगोर नगर
विक्रोली, मुम्बई-८३

भूल सुधार

जैन गजट के इस 'महासभा शताब्दी विशेषांक' में समयाभाव के कारण कुछ गलतियां रह गयी हैं जो कि निम्न प्रकार हैं:

१. विशेषांक के प्रारम्भ में जो ब्लैक एन्ड व्हाइट फोटो आर्ट पेपर पर छपे हैं उसमें पूज्य आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज के फोटो के नीचे आचार्य सुमति सागर जी महाराज का नाम छप गया है, इसी प्रकार आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज के फोटो के नीचे आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज का नाम प्रकाशित हो गया है।

२. तीर्थ संरक्षिणी महासभा के परम संरक्षक के जो फोटो प्रकाशित हुये हैं उसमें श्री निरंजनलाल जी बैनाड़ा की जगह श्री निरंजनलाल जी बैनारा प्रकाशित हो गया है तथा इसी प्रकार श्री मदनलाल जी बैनाड़ा की जगह श्री मदनलाल बैनारा छप गया है तथा श्री गजराज जी गंगवाल की जगह श्री गजराज जी गंगवार छप गया है।

गलतियों के लिये हमें खेद है। - प्रकाशक

सूचना

श्री श्रीकांत चंवरे जी इस विशेषांक का कार्य देख रहे थे, उनके कार्य छोड़कर चले जाने के कारण, पाठकों को यह अंक कुछ बिलम्ब से प्राप्त हो रहा है, जिसके लिये हमें खेद है।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के संरक्षक

१. श्री हरकचन्द निर्मल कुमार जी जैन
चेरीटेबुल ट्रस्ट, सीतापुर
२. श्री हुलाशचन्द जी सेठी
सेठी ट्रस्ट, तिनसुकिया (आसाम)
३. श्री गजराज जी गंगवाल, दिल्ली
४ श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा, आगरा
५.श्री मुकेश जैन
द्वारा- एम० एम० सिल्क हाउस
एल-१०६४, सूरत टेक्सटाइल मार्केट,
सूरत (गुजरात)
६. श्री दिगम्बर जैन समाज
चैम्बर रोड, तिनसुकिया- ७८६१२२५ आसाम
द्वारा- श्री अखेचन्द जी सेठी
तिनसुकिया (आसाम)
७. श्री भोलानाथ जी जैन
(कोठी नं. १६,१७) हीरा निवास, आवागढ़
हाउस, अन्जना सिनेमा के सामने,
एम.जी. रोड, आगरा (उ०प्र०)
८. श्री शिखरचंद जी जैन पहाड़िया
द्वारा-मै. पहाड़िया सिन्थेटिक्स, जय हिन्द स्टेट,
नं.२, ए, दूसरा माला, डा. आत्माराम मर्चेन्ट
रोड, भूलेश्वर, बम्बई
९. मे. हजारीमल लक्ष्मी नारायन सरावगी
चेरिटेबुल ट्रस्ट
द्वारा लक्ष्मी नारायण अजित कुमार बड़जात्या,
ईस्ट मार्केट,
करीमगंज (आसाम)

शताब्दी वर्ष में प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार हेतु महासभा द्वारा निर्माण की गई नई संस्था

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

रजिस्टर्ड संख्या-८९६/३०-६-९८ (स्थापित, ५ फरवरी, १९९८)

संस्था को आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत छूट प्राप्त हो गई है

सारे भारतवर्ष में सैकड़ों स्थानों पर हमारे प्राचीन मंदिर/तीर्थ एवं मूर्तियों की दशा अत्यंत ही दयनीय है। कुछ तीर्थ आवागमन की असुविधा, प्रचार-प्रसार का अभाव एवं अर्थाभाव के कारण अभी भी प्रकाश में नहीं आ पाये हैं जिनका संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार होना परमावश्यक है, कुछ तीर्थ अन्य धर्मावलम्बियों के अनाधिकृत अतिक्रमण से ग्रसित होने के कारण समस्याओं से जूझ रहे हैं, कुछ तीर्थों की प्राचीन सम्पदा गर्भ ग्रहों, जमीन में दबी पड़ी है अथवा बिखरी पड़ी है जिनकी खोज आवश्यक है, कुछ तीर्थ अपनी अल्प आय साधनों के कारण अपना विकास भली प्रकार नहीं कर पा रहे हैं। भारतवर्ष में अनेक जगहों पर हमारे मंदिर तीर्थ हैं जो क्षतिग्रस्त रूप में पड़े हैं एवं लोग उन पर धीरे-धीरे कब्जा करने की चेष्टा कर रहे हैं। बहुत से तीर्थ और मंदिर पुरातत्व के अधिकार में हैं और उनकी देख-रेख ठीक से न होने के कारण वह भी निरन्तर क्षतिग्रस्त हो रहे हैं।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महासभा की ही देन है। उसके साधन सीमित होने से सर्वप्रथम श्री उम्मेदमल जी पाण्ड्या व श्री रूपचंद जी कटारिया दिल्ली को श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा में तीर्थ जीर्णोद्धार विभाग का संयोजक बनाकर तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग देने के लिए तीर्थ जीर्णोद्धार योजना लगभग १५-१६ वर्ष पहले प्रारंभ की थी। इसके अंतर्गत मुक्तागिरी, चंवलेश्वर पार्श्वनाथ, सूर्यपहाड़, ग्वालपाड़ा (आसाम) मंदारगिरी, कोल्हुआ पहाड़, जिंतूर, मांगीतुंगी, रत्नपुरी, काकन्दी, बिजौलिया, त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर, मध्यलोक शोध संस्थान मधुबन, लूणवां एवं तमिलनाडु, गुजरात तथा कर्नाटक में अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार करवाया व योगदान दिया।

इस अवस्था में इनकमटैक्स की कुछ कठिनाई आने से तथा पिछड़े हुए कार्य की विशालता को देखते हुये "श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा" द्वारा नई संस्था का गठन " श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा" के नाम से श्री महावीर जी में दिनांक ५ फरवरी, १९९८ को हुआ, जिसका प्रधान कार्यालय लखनऊ रखा गया। इस संस्था का सोसायटी एक्ट में रजिस्ट्रेशन हो चुका है तथा इनकमटैक्स में ८० जी का आवेदन विचाराधीन है।

इस संस्था द्वारा एक नई योजना समाज के सामने लाई गई जिसकी मुख्य बात है कि दान से प्राप्त राशि संचय नहीं की जायेगी, बल्कि तुरंत ही प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार में लगा दी जायेगी तथा दानदाता का बोर्ड भी उस तीर्थ पर लगा दिया जायेगा और जो रुपया आवेगा पूरी रकम ही भेजी जावेगी, ड्राफ्ट कमीशन भी नहीं काटा जावेगा। अनेक प्राचीन तीर्थों में जाकर स्थानीय लोगों का सहयोग लेकर इस कार्य में धन लगाना शुरू किया गया है।

समस्त दिगम्बर जैन समाज ने बहुत ही उत्साह के साथ इस योजना को समर्थन दिया है और इसलिए इसमें आशातीत सफलता मिली है। इसके कार्यों को देखकर समस्त आचार्य, मुनि, आर्यिकायें व त्यागीवृंद, समाज के समस्त श्रेष्ठी व संस्थाओं ने इस महान कार्य में आशीर्वाद व प्रेरणा दी है तथा आशा है कि आगे भी देते रहेंगे। इससे हमारा यह महान कार्य सफल होकर जिनशासन की प्रभावना को बढ़ायेगा। इस योजना के लिए परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज, आचार्य श्री आर्यनन्दी जी महाराज, गणधराचार्य श्री कुंथसागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज, आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज, आचार्य श्री अभिनन्दन सागर जी महाराज, आचार्य श्री पार्श्वसागर जी महाराज, आचार्य श्री देवनन्दी जी महाराज, आचार्य श्री पद्मनन्दी जी महाराज, आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज, आचार्य श्री कनकनन्दी जी महाराज, आचार्य श्री दयासागर जी महाराज, आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज, आचार्य श्री रयणसागर जी महाराज, आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी महाराज, उपाध्याय श्री ज्ञान सागर जी महाराज, मुनि श्री वरदत्त सागर जी महाराज, मुनि श्री सुधासागर जी महाराज, मुनि श्री निर्णय सागर जी महाराज, मुनि श्री नेमिसागर जी महाराज, मुनि श्री सौरभ सागर जी महाराज, मुनि श्री निजानंद सागर जी महाराज, आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी, आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी, आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी (सतना वाली), आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी (एटा वाली), आर्यिका श्री विजयमती माताजी, आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

अनेक जगहों पर जीर्णोद्धार व विकास हेतु त्वरित योजना भी बनाई है। सब जगहों पर बड़े भारी रूप में योजना बनाकर अपने प्राचीन तीर्थों की रक्षा करनी है।

इसके अलावा इसी संस्था के अंतर्गत प्राचीन शास्त्रों के संरक्षण का कार्य भी शुरू किया है। इसके लिए लखनऊ कार्यालय में सब साधन तैयार किये जा रहे हैं। प्राचीन क्षेत्रों का जीर्णोद्धार करते समय क्षेत्र की प्राचीनता तथा उसका जो प्राचीन स्वरूप है।

उसकी रक्षा करने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। सारे भारत में हर केन्द्रीय व राजकीय म्यूजियम के पीछे एक अवैतनिक पुरातत्व सम्पर्क अधिकारी नियुक्त किये जा रहे हैं जो हमारी प्राचीन सम्पदा को सुरक्षित रखने का प्रयास करेंगे। इस योजना से सब लोगों को जोड़ने व प्राचीन तीर्थों, मंदिरों, मूर्तियों व शास्त्रों का पता लगाने वास्ते समस्त राज्यों में सह-संयोजक मनोनीत किये जा रहे हैं।

इस योजना से हमारे मुनि संघों को बहुत राहत मिली है, जो प्राचीन क्षेत्रों को देखकर जीर्णोद्धार की प्रेरणा देने पर कुछ नहीं हो पाता था। सारे भारत में अभी जहां-जहां प्राचीन क्षेत्रों के पास दिगम्बर जैन समाज के लोग रहते हैं वे बहुत ही उत्साहित हैं और हमारी तरफ उन क्षेत्रों के विकास के लिये देख रहे हैं।

सदस्यता की श्रेणी	देय राशि	सदस्यता का स्वरूप
१. परम संरक्षक	२५,००,०००/-(पच्चीस लाख रु.)	तीर्थ संरक्षिणी महासभा के परम संरक्षक एवं प्रबंधकारिणी के जीवन पर्यन्त सदस्य रहेंगे, तथा उनके उत्तराधिकारियों को पीढ़ी दर पीढ़ी भी परम संरक्षक एवं प्रबंधकारिणी का सदस्य माना जायेगा।
२. संरक्षक	१,००,०००/-(एक लाख रु०)	जीवन पर्यन्त तीर्थ संरक्षिणी महासभा के संरक्षक तथा प्रबंधकारिणी के जीवन पर्यन्त सदस्य रहेंगे।
३. परम सम्मानित सदस्य	५१,०००/-(इक्यावन हजार रु०)	जीवन पर्यन्त तीर्थ संरक्षिणी महासभा के परम सम्मानित सदस्य तथा प्रबंधकारिणी के जीवन पर्यन्त सदस्य रहेंगे।
४. सम्मानित सदस्य	२५,०००/-(पच्चीस हजार रु.)	जीवन पर्यन्त तीर्थ संरक्षिणी महासभा के विशिष्ट सदस्य होंगे।
५. विशिष्ट सदस्य	११,०००/-(ग्यारह हजार रु०)	जीवन पर्यन्त तीर्थ संरक्षिणी महासभा के विशिष्ट सदस्य होंगे।
६. आजीवन सदस्य	५०००/-(पांच हजार रु०)	जीवन पर्यन्त तीर्थ संरक्षिणी महासभा के आजीवन सदस्य होंगे।

नोटः- उपरोक्त रकम आप स्वयं देवें या अन्य को प्रेरित करके दिलवायें तो भी आप इसके सदस्य बन सकते हैं।

आप भी सहयोग कर सकते हैं

१ प्राचीन उपेक्षित पड़े तीर्थों / मंदिरों / मूर्तियों की जानकारी देकर।

२. धार्मिक/सामाजिक आयोजनों के शुभावसर पर प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार में सहयोग प्रदान करके।

३. विभिन्न अवसरों पर आयोजित डाक/ बोली का कुछ अंश प्राचीन तीर्थों के उद्धार के लिए देकर।

४. अपने मित्रों/ परिचितों/ रिश्तेदारों को इस योजना में सहयोग देने हेतु प्रेरित करके।

५ मंदिरों/ धर्मशालाओं में प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार में सहयोग प्राप्ति हेतु गोलक रखकर।

६. कार्यालय से ५०१/-रुपये एवं १०००/-रु० के कूपन प्राप्त करके।

७. जो महानुभाव प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार में अपना सहयोग देना चाहते हों वह कृपया अपना नाम-पता-परिचय-फोन नं. कार्यालय में भेजने की कृपा करें, ताकि उन्हें संस्था से जोड़ा जा सके।

८. प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार को गति देने के लिए जगह-जगह जिला स्तर पर संयोजक तथा जहां पर संग्रहालय हैं वहां पर एक-एक पुरातत्व संपर्क अधिकारी (अवैतनिक) नियुक्त किये जा रहे हैं। यदि कोई भी धर्मानुरागी इस कार्य में सहयोग देना चाहें तो वह अपना नाम-पता-फोन नं.- फैक्स नं.-परिचय-फोटो कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा द्वारा अब तक 57,16,504.83 रु० समाज से प्राप्त करके 49,96,149.83 रु० अभी तक व्यय किये जा चुके हैं। समस्त दिगम्बर जैन समाज से विनम्र निवेदन है कि वह उदारता पूर्वक इस प्राचीन तीर्थ सुरक्षा के कार्यमें तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें। आयकर कानून 80(g) के अन्तर्गत दातार को छूट की सुविधा उपलब्ध हो गयी है। ड्राफ्ट "S.B.D.J. (T.S.) MAHASABHA" के नाम से लखनऊ का किसी भी बैंक का बनवाकर नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें।

कार्यालय : श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा, श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड ऐशबाग, लखनऊ (उ०प्र०) फोन / फैक्स : (0522) 267287

अध्यक्ष	*महामंत्री*	*मंत्री*
निर्मल कुमार जैन सेठी	**निरंजनलाल जैन बैनाड़ा**	**बाबूलाल जैन छाबड़ा**

प्राचीन तीर्थक्षेत्र
जहाँ जीर्णोद्धार हेतु सहायता राशि भेजी गई है

महाराष्ट्र :- १- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, (प्राचीन) तीर्थक्षेत्र, अंजनेरी, नासिक (महाराष्ट्र), २- श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मूर्तिजापुर, अकोला (महाराष्ट्र), ३- श्री १००८ चंद्रप्रभु भगवान दिगम्बर जैन मंदिर, मुरूम-४१३६०४ ता. उमरगा जिला-उस्मानाबाद (महाराष्ट्र), ४- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इब्राहीमपुर (सोलापुर) महाराष्ट्र, ५- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पिपलगांव जिला:- पैठण (महाराष्ट्र), ६- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बालचंद नगर, नासिक (महाराष्ट्र), ७- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर सांवदगांव, सोलापुर (महाराष्ट्र), ८- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, राजापुर, तह०-येवला, नासिक (महाराष्ट्र), ९- श्री केशरिया नाथ दिगम्बर जैन संस्थान, जामोद, जलगांव, बुलढ़ाणा (महाराष्ट्र), १०- श्री पार्श्व प्रभु दिगम्बर जैन खण्डेलवाल मन्दिर, नागपुर (महाराष्ट्र), ११- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेमगिरि संस्थान, जिंतूर, जिला- परभणी (महाराष्ट्र), १२- श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन, अतिशय क्षेत्र, चांदुवाड़, जिला- नासिक (महाराष्ट्र)।

कर्नाटक :- १- श्री १००८ महावीर दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, मलखेड़-५८५३१७, ता. सेडम, जिला- गुलबर्गा (कर्नाटक), २- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, हडवल्ली तालुक भटकल, जिला-कारवाड़ (कर्नाटक), ३- भगवान १००८ श्री सम्भवनाथ श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बालाम्बीड, तह. हंगल जिला-हावेरी (कर्नाटक), ४- श्री अनंतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, किला, हुबली-५८० ०२४ जिला-धारवाड़ (कर्नाटक), ५- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मंटगणि ता. सबणूर पो. कलसूर जिला-हावेरी (कर्नाटक), ६- श्री भट्टाकलंक स्वामी जैन मठ (सिरसी), पो०-सोंढ़ा, (कर्नाटक), ७-श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुन्दकुन्दाद्रि (कर्नाटक), ८- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, आणन्द, गुलबर्गा (कर्नाटक)।

आन्ध्र प्रदेश :- १- श्री १००८ विघ्नहरण पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पो. कुलचारम-५०२३८१ जि. मेदक, (आं.प्र.)।

तमिलनाडु :- १- श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन ट्रस्ट, मेलसीथामुर (मद्रास) तमिलनाडु।

बिहार :- १- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, पावापुरी (नालन्दा) बिहार, २- कोल्हुवा पहाड़ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी गया (बिहार)।

राजस्थान :- १- श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मन्दिर आंतरदा जिला-बूंदी (राज.), २- श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बस्सी तह. सलुम्बर, उदयपुर (राज.), ३- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, जवास (उदयपुर) राजस्थान, ४- श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र, सावदगढ़ जिला-बूंदी (राज), ५- श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन नसियां, विराटनगर (जयपुर), ६- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इन्द्रगढ़ जिला-बूंदी (राज.), ७- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गेण्डोली,त.- केशवराय पाटन जिला-बूंदी (राज), ८- श्री आदिनाथ जैन अतिशय क्षेत्र बारह पट्टी, झालावाड़ (राज.), ९- श्री दिगम्बर जैन आंतड़ी जिनालय मंदिर, डूगंरपुर (महाराष्ट्र)।

मध्य प्रदेश :- १- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बुढ़ीखार (रायपुर) म० प्र०, २- श्री १००८ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्रेयांसगिरि (म.प्र.) पन्ना, ३- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बीना जी (बारहा) जिला-सागर (म.प्र.), ४- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुढ़ई (शिवपुरी), खनियाधाना (म.प्र.), ५- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, गोलाकोट (खनियांधाना) शिवपुरी (म.प्र.), ६- श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशयक्षेत्र, सिहौनिया, मुरैना (म.प्र.), ७- जैन म्यूजियम का निर्माण (मोहन्द्रा) पन्ना में (म.प्र.)।

उड़ीसा :- १- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, खण्डगिरि-उदयगिरि, खण्डगिरि जिला- पुरी (उड़ीसा)।

उत्तर प्रदेश :- १- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, दारानगर (इलाहाबाद) उ.प्र., २- श्री पदम- प्रभु दिगम्बर जैन अतिशयक्षेत्र, श्री प्रभाषगिरि (इलाहाबाद), पभौषा- कौशाम्बी, ३- श्री दिगम्बर जैन अतिशयक्षेत्र चांदवांड़ (फिरोजाबाद)।

नोटः- इनके अतिरिक्त कर्नाटक एवं तमिलनाडु प्रांतों में अन्य अनेक प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार व विकास कार्य हो रहा है।

सहायता राशि *'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा'* के नाम ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

कार्यालयः श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ-२२६ ००४ (उ० प्र०)

फोन - २६७२८७ ***फैक्स*** - ०५२२-२६७२८७

मील का पहला पत्थर : महासभा

कुछ झलकियाँ

- श्री रामजीत जैन, एडवोकेट
दानाओली, टकसाल गली, ग्वालियर

काल का विभाजन इस प्रकार किया जाता है कि आद्य मानव अकर्मण्य था। धीरे-धीरे प्रकृति परिवर्तनानुसार अकर्मण्यता का स्थान कर्मण्यता को लेना पड़ा। इसे विकास-काल कहा गया, परन्तु यह परिवर्तन समस्यायों से घिर गया। आवश्यकतायें समय की मांग के कारण बढ़ती गयी और बढ़ती गयीं। अनेक जातियों का निर्माण हुआ। इसमें दिगम्बर जैन समाज को संगठित करने एवं समाज में अनेक सुधारों की आवश्यकता हुई । फलस्वरूप मथुरा में जम्बूस्वामी के मेले पर, जो प्रतिबर्ष कार्तिक बदी २ से ८ तक लगता है, पंडित चुन्नीलाल मुरादाबाद व अन्य परोपकारी महानुभावों के उद्योग से एक सभा संगठित की गई। सन् १८७१ ई० में। इसके सभापति श्रीमान् सेठ राजा लक्ष्मणदास जी सी.एस.आई. मथुरा, उप सभापति रायबहादुर सेठ मूलचन्द्र जी सोनी, अजमेर व लाला उग्रसेन जी सहारनपुर वाले आदि थे। इस सभा का नाम 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' रखा गया। इस सभा का अधिवेशन सन् १९८९ में मथुरा में जम्बूस्वामी के मेले के अवसर पर आयोजित किया जाना तय हुआ ।

इस अधिवेशन के लिये मुम्बई की स्थानीय सभा ने ३१ नामों की सूची भेजी परन्तु उनमे से केवल ४ महानुभाव- १. सेठ माणिकचन्द्र जी हीराचन्द्र जी जौहरी जे०पी०, बम्बई २. सेठ गुरुमुखराय जी, ३ सेठ हीराचन्द्र नेमचन्द्र, सौलापुर एवं ४. पं० गोपालदास जी बरैया आये थे। इस बर्ष मेले में १०,१५ हजार आदमियों की भीड़ थी । इस बर्ष आगरा, अलीगढ़, हाथरस आदि १३ नगरों मे श्री जी की वेदियां जलेब सहित आईं। कार्तिक बदी सप्तमी के दिन सेठ लक्ष्मनदास जी के डेरे पर नियमावली पर विचार हुआ ।

उस सयम शास्त्र छापे नहीं जाते थे । आवश्यकता पड़ने पर अर्थ सम्पन्न महानुभाव शास्त्रों की हस्त प्रतिलिपि करा लेते थे अथवा रुचि रखने वाले व्यक्ति अपने हाथ से प्रतिलिपि कर लेते थे । आज भी काफी संख्या में हस्तलिखित गुटके पाये जाते हैं ।

बाद में धीरे-धीरे पुस्तकों का मुद्रण शुरू हुआ तो प्रकाशन के क्षेत्र में क्रान्ति ही आ गई।

संवत् १९५६ में बड़ा विकट संकट आया । इस बर्ष चारों और भारत में दुष्काल ही दुष्काल छा गया । गुजरात , काठियावाड़ , मेवाड़ भी अन्न और जल के महाकष्ट से पीड़ित हुआ । जैनियों के मुक्त हस्त से दान दिया और लोगों की सहायता की । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की आज्ञानुसार सभा की ओर से बैतूल शहर में बाबू गोबिन्द लाहनू हैडमास्टर वर्नाक्यूनर स्कूल की मारफत एक आहार दानशाला खोली गई। इसके द्वारा तारीख '७-१२-१८९९ को २५ अनाथ जैन बालक रहने गये । इनको भोजन वस्त्र के अलावा धार्मिक शिक्षा देने का भी प्रबन्ध किया गया । आकलूज व पंढरपुर में भी ऐसी दानशालाऐं खोली गई । बैतूल में ३० बालक हो गये। उनकी रक्षा सभा द्वारा बराबर होती रही । ६ लड़कों को बैतूल के नागपुर विद्याभ्यास के लिये भिजवाया गया ।

बम्बई में दि० जैन प्रान्तिक सभा का स्थापना - इसी बर्ष १८९९ में भारतवर्षीय दि० जैन महासभा का चतुर्थ अधिवेशन मिती कार्तिक बदी ५ सं० १९५६ से ७ तक तदनुसार २३ अक्टूबर १८९९ से २५ अक्टूबर १८९९ तक श्री जम्बूस्वामी निर्वाण भूमि चौरासी मथुरा में हुआ । इस समय इस सभा के महामंत्री मुंशी चम्पतराय जी डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर, कानपुर थे । उन्होंने महासभा का कार्य बड़ी रुचि से अपने जीवन पर्यन्त किया । अनेक विघ्न आने पर भी सभा को स्थिर रखा । महासभा को बकायदा महासभा बनाने में स्वर्गवासी बाबू बच्चूलाल जी, प्रयाग निवासी ने अपनी उम्र भर जी तोड़ परिश्रम किया। उन्हीं के उद्योग से इस महासभा की रजिस्ट्री सरकारी एक्ट नं० २१ सन् १९६० ई० के अनुसार हुई । इस बर्ष महासभा की रजिस्ट्री सरकारी एक्ट नं० २१ सन् १९६० ई० के अनुसार हुई । इस वर्ष महासभा ने प्रस्ताव नं० १ इस विषय में स्वीकृत किया - " तमाम भारतवर्ष में प्रान्तिक सभायें कायम की जावें, जो सर्व प्रकार इस महासभा के उद्देश्यों को प्रचलित करने में सहायता देवें" इस कार्य का भार बाबू बनारसीदास एम०ए० हैडमास्टर विक्टोरिया कालिज लश्कर के सिपुर्द किया। यह महासभा के ज्वाइन्ट जनरल सैक्रेटरी कई बर्षों तक रहे और रात दिन इसकी उन्नति में जी तोड़ परिश्रम किया । आपने ही महासभा के दो प्रभावशाली वार्षिक अधिवेशन सन् १९०४ और १९०५ में क्रम से अम्बाला, छावनी और सहारनपुर में कराये तथा बहुत सी पुस्तकों की मदद से अंग्रेजी मे एक जैन इतिहास सिरीज नं० १ पुस्तक रची, जिसके प्रचार से यह अज्ञान-अंधकार कि जैनी नास्तिक है या बौद्ध या हिन्दू धर्म की शाखा है या प्राचीन नहीं है, बिल्कुल उड़ गया । जैन इतिहास सौसाइटी कायम कर जब तक आप लश्कर रहे, बहुत काम किया ।

महासभा के प्रस्ताव से मुम्बई प्रान्तीक सभा की विधिवत स्थापना हुई और उसने बहुत कार्य किया।

कुछ कहकर चले जाते हैं

कुछ सुनकर चले जाते है

मगर वे बहुत कम है जो

कुछ करके चले जाते हैं।

श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा शताब्दी महोत्सव के युवा पदाधिकारी धर्मप्रेमी मुनिभक्त स्व० भाई कुलदीप जैन कोठारी की पावन स्मृति में

महासभा शताब्दी समापन समारोह के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

त्रिलोक चन्द कोठारी
एवं
समस्त कोठारी परिवार
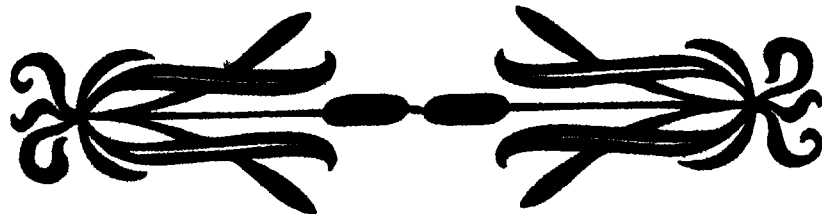
नई धान मण्डीए कोटा, राजस्थान

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

द्वेष करना, हिंसा के उपकरणों का ग्रहण करना, दुष्ट भाव से शरीर की चेष्टायें करना, अन्य को दुख पहुंचाने वाली क्रिया करना और किसी के प्राणों का घात करना, इन पांच प्रकार के प्रयोगों को हिंसा की क्रिया कहते हैं।

— *भगवान महावीर*

सुनील कुमार जैन कासलीवाल
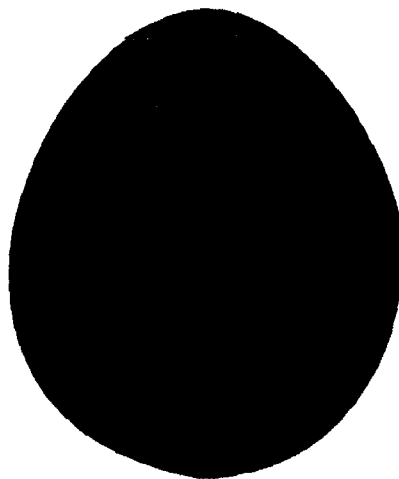
नेशनल इन्टरप्राइजेज

मोर छाप नीरू (सनला) के निर्माता

मनमाड़ (नासिक)

फोन : (02591) 22701 (R), 22001 (F)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

हरि प्रसाद जैन (पहाड़िया)

महामंत्री - बिहार प्रदेश दि. जैन महासभा
कतरासगढ़ (धनबाद)-८२३११३
बिहार

फोन : एस.टी.डी. (0326) 712315 (R.), 712781 (S)

प्रतिष्ठान

पारस कोल कम्पनी	पारस इलेक्ट्रोनिक्स	अंजली	पारस मेडिकल्स
राजगंज रोड	स्टेशन रोड	हनुमान मेन्सन	स्टेशन रोड
कतरासगढ़ (धनबाद)	कतरासगढ़ (धनबाद)	कतरासगढ़ (धनबाद)	कतरासगढ़ (धनबाद)

श्री चंद्रप्रभु भगवान दि. जैन मंदिर, मुरुम (उस्मानाबाद) महाराष्ट्र

मुनिसुव्रतनाथ भगवान की भव्य प्रतिमाः अत्यन्त जीर्ण अवस्था में है

पार्श्वनाथ भगवान की एक भव्य प्रतिमाः अत्यन्त जीर्ण अवस्था में है
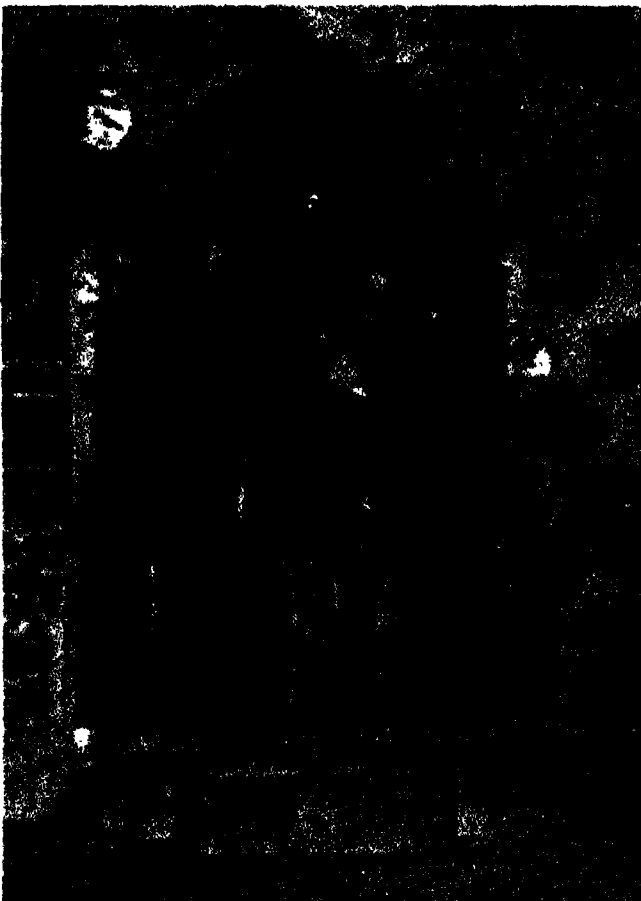
पद्मावतीदेवी की खड्गासन मूर्ति जो कि अत्यन्त जीर्ण अवस्था में है
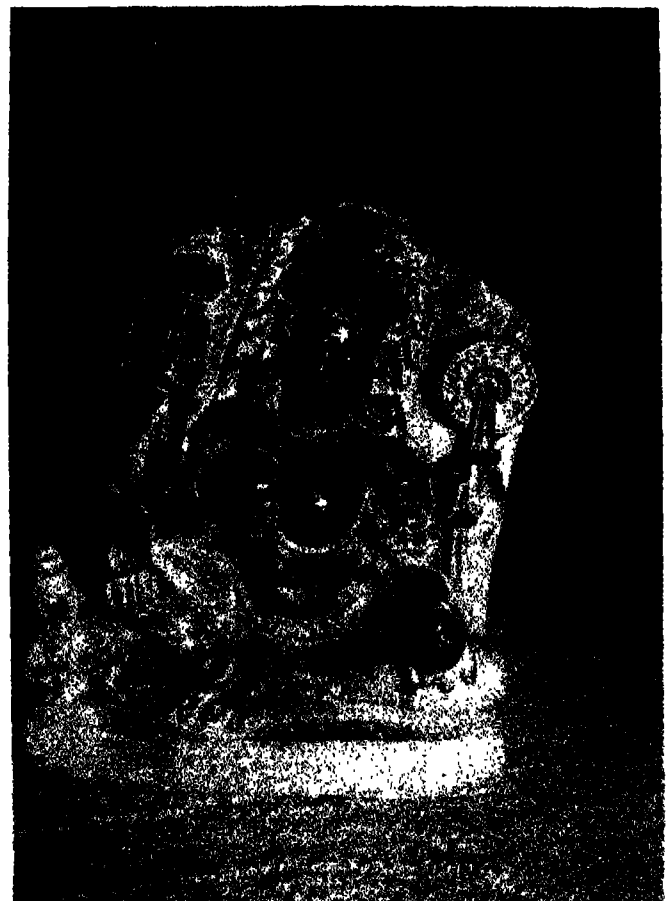
सरस्वती (जिनवाणी) की मूर्तिः जो अत्यंत जीर्ण अवस्था में है

आंध्रप्रदेशः जीर्णशीर्ण दि. जैन मन्दिर

आंध्र प्रदेशः अत्यन्त प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान भव्य प्रतिमायें

प्राचीन तीर्थः चित्रमय झलकियां

दि. जैन मंदिर, हडवल्ली (कर्नाटक)
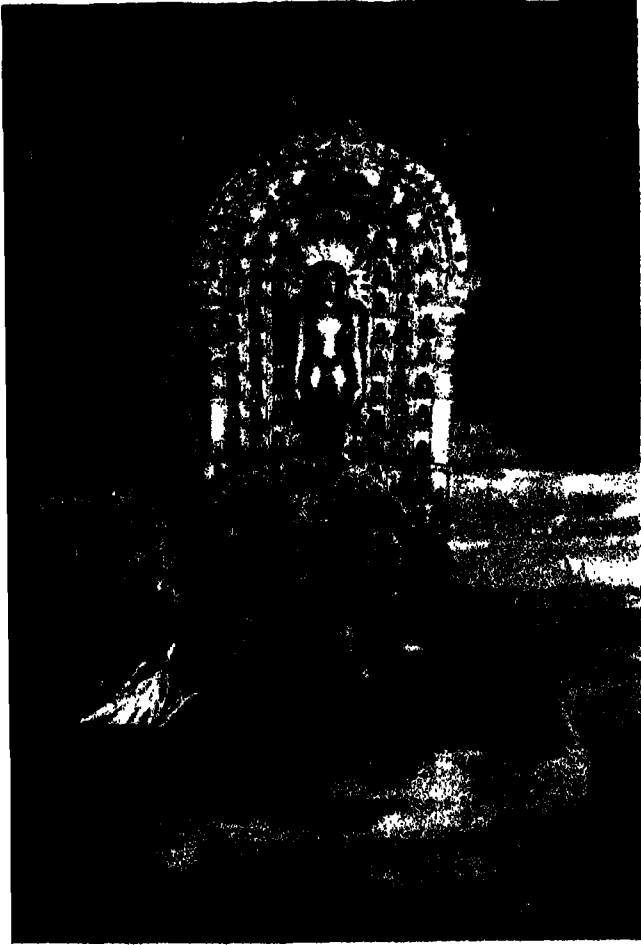
मन्दिर जी में विराजमान एक भव्य प्रतिमा
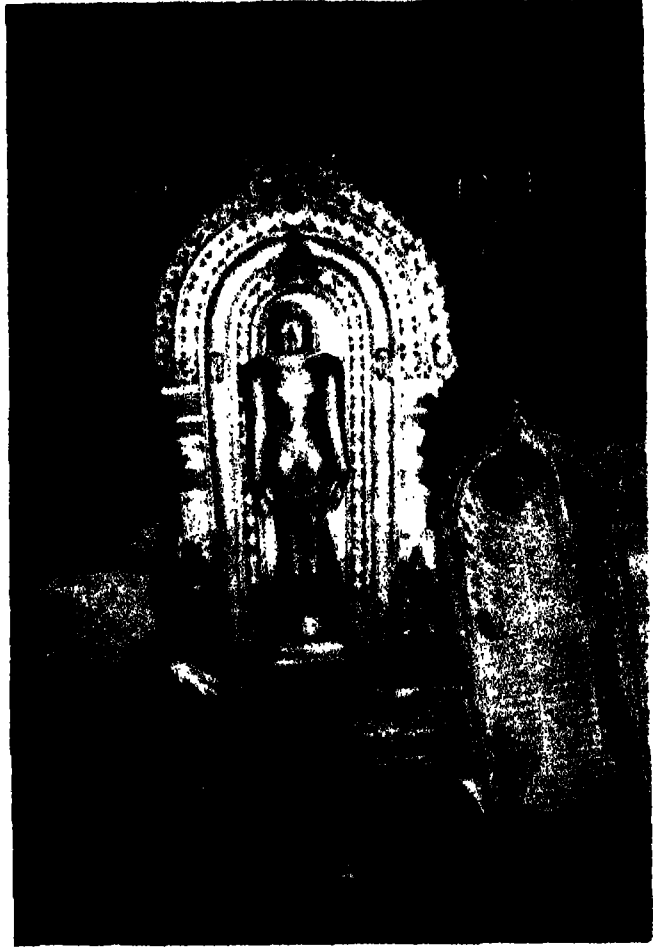
मन्दिर जी में विराजमान एक भव्य प्रतिमा
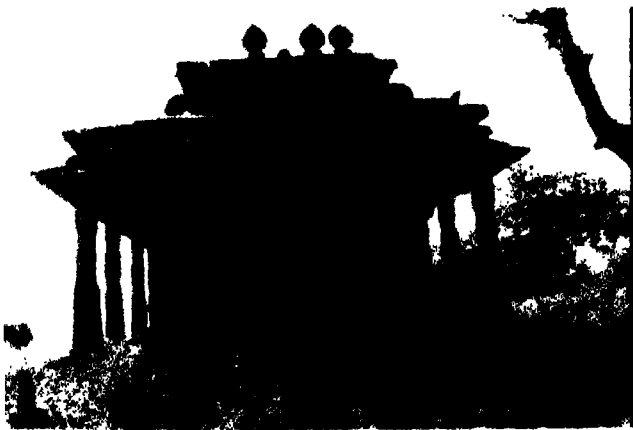
जीर्णशीर्ण जैन मंदिर जी

मन्दिर जी में चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियां

प्राचीन तीर्थ/मंदिर/मूर्तियां जैन संस्कृति की ऐतिहासिक एवं महान धरोहर हैं, इन सबकी सुरक्षा/विकास व जीर्णोद्धार करना हम सबका पुनीत कर्तव्य है

जीर्णशीर्ण
भ. आदिनाथ दि. जैन मंदिर जवास (उदयपुर)

श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर इन्द्रगढ़ (बूंदी) राज.
जीर्णशीर्ण मन्दिर जी का एक दृश्य (प्रवेश द्वार)

जैन गजट
शताब्दी
महोत्सव
विशेषांक
२१ जनवरी
१९९९

जीर्णशीर्ण
मन्दिर जी की
दीवारें: जैन
मंदिर, जवास

महासभा के प्रस्ताव से मुम्बई प्रान्तीक सभा की विधिवत स्थापना हुई और उसने बहुत कार्य किया।

इस सभा की बैठकें हर माह की सुदी १४ सं० १९४७ को मुम्बई में सेठ माणिकचन्द्र की इच्छानुसार पं० गोपालदासजी ने सब भाईयों की मरजी से मुम्बई दि० जैन सभा की स्थापना की थी, जिसके मंत्री सेठ माणिकचन्द्र जी और उपमंत्री पं० गोपालदास जी थे। यह सभा प्रति सुदी १४ को होती थी, जिसमें नाना प्रकार के व्याख्यान होते थे। इस सभा के प्रताप से बम्बई वालों ने धर्मरक्षा के अच्छे प्रशंसनीय कार्य किये थे। तीर्थों का सुधार, परीक्षालय द्वारा भारत की पठशालाओं की परीक्षा लेना व संस्कृति विद्या को उन्नति आदि कार्यों में बहुत बड़ा काम किया।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा धर्म की रक्षा, तीर्थक्षेत्रों की रक्षा, शिक्षा - प्रसार, महिला-विकास, बाल-विकास आदि कार्यों को करती हुई, कठिन परिस्थितियों से गुजरती हुई अपने १०० वर्ष पूरे कर चुकी है। इस अवसर पर समाज व धर्म की झांकी प्रस्तुत करने हेतु इस महासभा के प्रारम्भिक करने के कुछ वर्षों की तीन झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनसे इस युग में इसके कार्यों और लोकप्रियता का परिचय मिलता है।

अनुकरणीय

महासभा के विकास और उन्नयन में दिगम्बर जैन समाज, असम का अच्छा योगदान रहा है। महासभा के पिछले तीन अध्यक्ष सर्वश्री भंवरीलाल जी बाकलीवाल, चांदमल जी पाण्ड्या एवं लिखमीचंद जी छाबड़ा तथा वर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी का सम्बन्ध असम से ही रहा है। महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट की स्थापना ने गुवाहाटी में ही आकार ग्रहण किया था तथा दो वर्ष पूर्व गुवाहाटी-अधिवेशन के समय पूर्वाचल से प्रकाशित पत्र 'जैन बुलेटिन' ने 'महासभा-शताब्दी-विशेषांक' निकाल कर अनुकरणीय पहल की थी।

बिहार और महाराष्ट्र शाखा के कार्य सदैव ठोस और रचनात्मक रहे हैं। मध्यप्रदेश में ग्वालियर का शिक्षण-शिविर अपने आप में ऐतिहासिक था।

महासभा आज सम्पूर्ण भारत में फैली हुई है। देश का शायद ही कोई कोना ऐसा हो, जहां महासभा का मुखपत्र जैन गजट न पहुंचता हो।

अगली सदी के लिए हमें और भी उत्साह से महासभा के कार्य को आगे बढ़ाना है।

महासभा उत्कर्षकाल- समीक्षा

- श्री मिश्रीलाल जैन, जयपुर

जैन गजट में प्रकाशित सूचना से जैन समाज में जो हर्ष की लहर आई है, अवर्णनीय है, क्योंकि महासभा की १०० वर्ष की उपलब्धियों की, जैन समाज के गतिविधियों की, विविध प्रकार के समागमों की, प्रान्तीय केन्द्रीय पदाधिकारियों की महानतम सेवाओं व आयोजनों के निमित्त से हर्ष के वातावरण जनित प्राप्त उपलब्धियों से होने वाले मनोविनोद की साधर्मी भाइयों में चर्चायें भी सुनने को मिलेंगी।

महोत्सव में कई धर्मवत्सल श्रेष्ठी जनों के सम्मिलन, सामूहिक सम्मिलन के योग से तथा महासभा के अति प्रिय नेता महासभाध्यक्ष महोदय के अद्भुत वाणी व कार्यकलाप से श्रोताओं को अतिरंजन होगा ही होगा। महासभा की सेवायें पूर्व के रावराजा सरसेठ श्रेष्ठी परिवार द्वारा फली फूलीं, दिगन्त व्यापी यश फैला, नगर ग्रामवासियों से सहयोगी जनों द्वारा विकसित रूप होता रहा। आपके समय में ही ख्याति प्राप्त सरसेठ भागचंद जी साहब जैन समाज की उदीयमान विभूति के रूप में सभा से जुड़े। महासभा को बल मिलता रहता था। समाज में जब कभी राजकीय सामाजिक अवांछनीय हरकतें बनती, तब उक्त भाग्यविधाता महानुभावों के प्रयत्न से ही निवारण होकर सुखद मनोरंजन की स्थिति बन जाती थी। महासभा के मध्य में पुण्यात्माजनों से जैन अजैन सबको सेवायें उपलब्ध होती थीं। इसके यश में आपके समय में विद्वज्जन शास्त्रार्थी योग्यता वाली विभूतियों से भी श्लाघ्यता को स्थान था। कई शीर्षस्थ गणनीय विद्वान् चले गये। उनकी सभा सोसाइटी में उपस्थिति देखते ही सभा में हरियाली छा जाती थी। देखते ही बल प्रोत्साहन से जनता में हर्ष की लहर दौड़ जाती थी।

बीच में महासभा का स्तर वैसा नहीं रहा, पर सौभाग्य समझिये कि समाज के भाग्य से कर्मठ उदीयमान नेता श्री निर्मल कुमार जी सेठी द्वारा नेता पद को संभाल लेने से पद में गौरवान्वित हो गये। अब आप जैन समाज के हृदय के हार समझे जाते हैं। प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार से तन-मन-धन लगाकर समर्पित हो रहे हैं। समाज भी मुक्तकंठ से निधि दे रही है। संत जनों के श्रुति मधुर व्याख्यानों से खुशनुमा माहौल से उत्सव में चार चांद लग जावेंगे। इति।

महासभा शताब्दी विशेषांक के लिए शुभ-कामना संदेश

यह बड़े गौरव की बात है कि श्री भारतवर्षीय दि.जैन महासभा ने १०३ वर्ष पूर्ण किये। इन शताब्दी वर्षों में जो कार्य महासभा ने धर्म रक्षा के लिए किये वो सर्वविदित हैं। हमारी कामना है कि आने वाले वर्षों में भी महासभा सेठी जी के कुशल नेतृत्व में उत्तरोत्तर उन्नति करती चली जाय।

- पन्नालाल सेठी
सेठीवाड़ा, नागौर (राज.)

अध्यक्षीय उद्बोधन

।। श्री आदिनाथाय नमः ।।

मंगलं भगवान वीरो मंगलं, मंगलं गौतमोगणी
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो जैन धर्मोस्तु मंगलम्

परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज, मुनिगण व पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री सुपार्श्वमती माताजी एवं समस्त मुनिसंघ को त्रिबार सादर नमोस्तु।

पंचकल्याणक महोत्सव समिति के उपस्थित पदाधिकारीगण, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) एवं (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा तथा शताब्दी महोत्सव समिति के पदाधिकारीगण, महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट के ट्रस्टीगण, विद्वद्गण, दूर-दराज से पधारे धर्मप्रेमी गुरुजनो, भाइयो व बहिनो।

(धर्म संरक्षिणी) महासभा के शताब्दी वर्ष के समापन तथा इस पंचकल्याणक महोत्सव के इस शुभ अवसर पर आप सबका स्वागत करते हुये हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। हमारी प्रसन्नता व उत्साह द्विगुणित हो जाता है, जब हम यह देखते हैं कि यह समारोह अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में जहां चांदनपुर वाले बाबा विराजमान हैं और जहां पर हमारे पुण्योदय से दो प्रमुख मुनिसंघ विराजमान हैं, उनके सानिध्य में यह समारोह आयोजित हो रहा है।

यह दैवयोग ही है कि परम पूज्य १०८ आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज व उनके संघ के सान्निध्य में धर्मस्थल में, महासभा का शताब्दी समारोह धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगड़े के मार्गदर्शन से प्रारंभ हुआ और आज उन्हीं के सान्निध्य में उनका समापन हो रहा है। हम सब महासभा के समस्त पदाधिकारीगण व हितैषी इससे गौरवान्वित हुये हैं।

आगम व आर्ष परम्परा के अनुसार चलने वाली इस संस्था को उसी मार्ग पर चलने वाले दिगम्बर परम्परा के सर्वोच्च आचार्य व परम पूज्य आचार्य श्री वीरसागरजी की सुशिष्या गणिनी आर्यिकारत्न श्री सुपार्श्वमती माताजी का भी सान्निध्य प्राप्त होना एक ऐतिहासिक घटना है। हमें आशा है कि इनके मिलन से इनके द्वारा समस्त श्रावकों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त होगा, जिससे वे अपने जीवन को मोक्ष-मार्ग की ओर अग्रसर कर सकेंगे।

मथुरा चौरासी में राजा लक्ष्मणदास जी आदि से जन्म पाकर महासभा ने गत सौ वर्ष तक दिगम्बर जैन समाज की अनवरत सेवा आगम के अनुसार की है। इसको अपने समय में कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा परन्तु उस सबके बाद भी महासभा ने इस महान् दिगम्बर परम्परा की रक्षा की और आज तक वह अपनी धर्मसम्मत नीतियों पर दृढ़तापूर्वक कायम रहते हुए सफलता प्राप्त कर रही है। अपनी दिगम्बर परम्परा में हमने तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित मार्ग का अनुगमन किया है। हमारे प्रतिभापुंज महान् आचार्य एवं साधुजनों द्वारा प्रणीत ग्रन्थ सदैव से हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं किन्तु कुछ संस्थायें एक अति महत्वाकांक्षी असंयमी गृहस्थ द्वारा रचित ग्रन्थों की दुहाई देकर आर्ष परम्परा को आघात पहुँचा रही हैं। जिन कार्यों से एकान्तवाद का पोषण और धर्म का आवर्णवाद होतो हो, वे कार्य महासभा को स्वीकार्य नहीं है। इन एकान्तपोषकों ने अपनी एक स्वतन्त्र और पृथक पहचान बना ली है। इनका केवल एक ही कार्य है कि जैसे बने वैसे आर्ष परम्परा के अनुयायियों में अधिक से अधिक भ्रम उत्पन्न कर उन्हें अपने पक्ष में लाना। इससे श्वेताम्बरों की तरह एक अन्य ही परम्परा स्थापित हो रही है, जो मूलाम्नाय पर एक संकट की तरह ही है। मेरे सभी संतों, विद्वानों एवं दिगम्बर समाज की संस्थाओं के कार्णधारों से यह विनम्र अपील है कि वे आगम विरूद्ध कोई कार्य न तो स्वयं करें, न करने की किसी को प्रेरणा दें और न ऐसा कार्य करने वालों का अनुमोदन ही करें। किसी के चिकने-चुपड़े मायाचारी भरे भाषण या लेखन से प्रभावित होकर मूलाम्नाय का समर्थन न छोड़ें।

संसार के सब जीव सुख चाहते हैं, दुख से घबराते हैं। प्रत्येक जीवधारी के कल्याण के लिये एवं जन्म-मरण के दुख से छुटकारा पाने के लिये, मोक्ष-प्राप्ति के लिये तीर्थंकरों के द्वारा प्रणीत जैन धर्म है। अनादिकाल से और विशेषकर वर्तमान काल में जैनधर्म के सिद्धान्तों का विशेष महत्व है। वर्तमान युग में संसारी जीव एटम बम, हाइड्रोजन बम तथा रासायनिक हथियारों से आतंकित है। ऐसे समय में जैन धर्म के मूल आधार अहिंसा के प्रचार-प्रसार की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। साथ ही प्राणियों में सद्भाव कायम रहने हेतु क्रोधादि कषायों में मन्दता आवे, इस हेतु परिग्रह परिमाण अचौर्य व्रत आदि के परिपालन पर बल देना हमारा सभी का परम कर्तव्य है। जैन धर्म के अनुपालन में

शिथिलता नहीं आवे और हमारी आने वाली पीढ़ी आगम सिद्धान्त के अनुसार चले, यह हमें सुनिश्चित करना है।

इसी भूमिका को निभाने के लिये भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का जन्म मथुरा में श्री १००८ केवली जम्बूस्वामी की निर्वाणभूमि चौरासी क्षेत्र पर श्रीमान् सेठ राजा लक्ष्मणदास जी द्वारा हुआ। उसके बाद महासभा ने गत पूरी शताब्दी में हर एक अध्यक्ष के काल में समय-समय पर धर्म-प्रभावना, धर्म की रक्षा सज्जातित्व की रक्षा, मुनिसंघ की रक्षा, सत्य की रक्षा आदि कार्यों से समाज की उन्नति के समर्पण-भाव का ही परिचय दिया है।

दिगम्बर जैन समाज ने महासभा की स्थापना कर समाज को संगठित करने का महान कार्य किया तथा धर्म के प्रचार-प्रसार में गति आने हेतु **जैन गजट** समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया। कुछ वर्ष तक अंग्रेजी में भी जैन गजट का प्रकाशन हुआ। आज इसी श्रृंखला में महासभा द्वारा हिन्दी जैन गजट, मराठी जैन गजट, जैन महिलादर्श, जैन बालादर्श समाचार पत्रों का प्रकाशन हो रहा है। कुछ समय बाद धर्म-प्रभावना हेतु धर्म संरक्षिणी की महत्ता ध्यान में रखते हुये शिक्षा नीति निश्चित की गयी। उस समय दानवीर सेठ माणिकचंद पानाचंद द्वारा परीक्षा बोर्ड गठित किया गया। जगह-जगह उपदेशकों की नियुक्ति की गयी। उपदेशक विद्वान गांव-गांव में जाकर धर्म शिक्षा हेतु प्रवचन करते रहे।

महासभा ने सदैव मुनिराजों और विद्वानों का समाज में सम्मान कायम रखा। पूरी शताब्दी में हम समाज के आशानुरूप सभी कार्य नहीं कर सके परन्तु फिर भी जो कुछ थोड़ा बहुत कार्य किया है, उसका संक्षिप्त ब्यौरा आपको मैं दे रहा हूं-

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार- प्राचीन तीर्थों की रक्षा में महासभा का वर्चस्व रहा है। शताब्दी के महान् श्रावक दानवीर सेठ माणिकचंद पानाचंद मुम्बई वालों ने तीर्थक्षेत्रों की पूरी सूची सन् १९११ में विशाल विवरण के साथ प्रकाशित कर देश का ध्यान इस ओर आकर्षित किया तथा तीर्थों की आवश्यकताओं पर काबू पाने के लिये और अन्य लोगों से तीर्थों पर किसी प्रकार का अतिक्रमण न हो, इस हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी का गठन किया गया। इस तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा वर्तमान में साहू अशोक कुमार जी जैन, भाई श्री अरविंद दोषी, श्री उम्मेदमलजी पांड्या आदि के नेतृत्व में विभिन्न तीर्थों में महत्वपूर्ण योगदान हो रहा है। प्राचीन तीर्थों के विशाल कार्य को देखते हुये तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग देने की भावना से सन् १९८२ में महासभा द्वारा "तीर्थ जीर्णोद्धार योजना" आरंभ की गयी। इस योजना के अंतर्गत सर्वप्रथम मुक्तागिरि, चम्बलेश्वर पार्श्वनाथ, गुजरात में ईडर के पास में प्राचीन क्षेत्र, गिरनार, लूणवा, हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप), नेमगिर, (जिंतूर) अयोध्या, रतनपुरी, खुखन्दु (देवरिया), कहाऊं पावानगर, सम्मेदशिखरजी (मध्यलोक), श्रावस्ती, आहार जी, देवगढ़ आदि अनेक क्षेत्रों में जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण में योगदान दिया।

जीर्णोद्धार के कार्य की विशालता तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी की सीमा एवं नीति को देखते हुये श्री महावीर जी में कार्यकारिणी की मीटिंग में चर्चा होकर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा का गठन अनेक मुनि महाराजों के आशीर्वाद लेकर किया गया। शैशवकाल में ही तीर्थ संरक्षिणी महासभा द्वारा अभी तक लगभग ५७ लाख रूपये इकट्ठा किये और भारत के विभिन्न प्रान्तों में तीर्थ जीर्णोद्धार में खर्च किये गए, जिसकी रिपोर्ट समाज के समक्ष रखी गयी।

भविष्य में तीर्थ जीर्णोद्धार हेतु इस वर्ष में हमारा लक्ष्य एक करोड़ रूपये खर्च करने का है और अगले वर्ष में लगभग पाँच करोड़ रूपया तीर्थ जीर्णोद्धार में खर्च करने का संकल्प है। इस कार्य में समाज से हमें सहयोग मिला, इस हेतु समस्त मुनिसंघ से हमारी नम्र प्रार्थना है कि कुछ समय के लिये अन्य योजनाओं को गौण करके इस योजना के प्रति समस्त समाज को प्रेरित करें तो और भी विशाल रूप में इस क्षेत्र में काम किया जा सकेगा। शांतिवीर नगर में इस संस्था के गठन के बाद महाराष्ट्र मुरूम में कर्नाटक में मलखेड़, आंध्र में कुलचारम, मध्यप्रदेश में बूढ़ीखार, कर्नाटक में हाडवल्ली, तमिलनाडु में मेलसीथामुर, सोलापुर के पास इब्राहिमपुर, कुन्दकुन्दाद्रि, उदयपुर के पास जवास, सावदगढ़, मटंगणि, उ.प्र. में दारानगर, जयपुर के पास विराटनगर, कर्नाटक में सोंधा मठ, राजस्थान में इन्द्रगढ़, मध्यप्रदेश में बीना बारहा, गुड़ई, गोलाकोटा श्रेयांसगिरी आदि कई क्षेत्रों में जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है।

<u>जातीय संगठन -</u>

महासभा ने हमेशा ही अपने-अपने जाति के संगठन को मजबूत करने की प्रेरणा दी है, इसीलिये हमारे आचार्य मुनियों के मतभेद होते हुये भी तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं से विपरीत प्रेरणा देने पर भी जातीय संगठन अभी तक मजबूत हैं। कोई भी जाति अपने अस्तित्व को खत्म करने के लिये तैयार नहीं है। भविष्य में भी हम इसी नीति पर चलेंगे और जातीय संगठन मजबूत करने में हम सभी को सहयोग देंगे।

<u>स्वत्व-रक्षा -</u>

महासभा ने प्रारंभ से ही स्वत्व-रक्षा हेतु काफी कार्य किया

है। बैरिस्टर चंपतरायजी ने जैनों के स्वरूप की रक्षा के लिये शासन से जैन लॉ पास करवाया। उनके प्रयास से अनेक अदालतों में जैन परम्परा के अनुसार जज लोगों ने निर्णय दिये और आज भी महासभा ये मानती है कि जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है। उसके अनुयायियों को जैन लॉ ही लागू होना चाहिये। हम सबको श्रीमान बैरिस्टर चम्पतराय द्वारा बनाये गये जैन लॉ पर अमल करना चाहिये।

<u>जीव दया -</u>

तत्कालीन अध्यक्ष महासभा सर सेठ हुकमचंद जी इंदौर वाले ने समय की आवश्यकता को देखते हुये **जीव दया विभाग** का गठन सन् १९५० में किया और तब से यह विभाग काम कर रहा है। अनेक बार सरकार के द्वारा गलत नीति का निर्धारण होने पर उसका विरोध महासभा ने किया। देश में कट्टीखाने खोलने के विरोध में आवाज उठायी और कई जगहों पर कट्टीखाने खुलने से रुकवाये। शाकाहार के प्रचार और प्रसार के लिये एक लाख रुपये के आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज पुरस्कार की स्थापना की। जीवों की रक्षा के साथ-साथ में शाकाहार के प्रचार और प्रसार में भी यह विभाग देश विदेश में काम कर रहा है। परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के द्वारा मांस निर्यात को रोकने की जो आवाज उठायी है उसमें यह विभाग अपना पूरा सहयोग दे रहा है। अब यह विभाग श्री चिरंजीलाल जी बगड़ा के नेतृत्व में कार्य कर रहा है।

<u>परीक्षा बोर्डः शिक्षण शिविर -</u>

महासभा के परीक्षा बोर्ड ने भी लाखों बच्चों की परीक्षा का आयोजन करके उन्हें धार्मिक संस्कार देने का कार्य किया है और अनेक जिलों में धार्मिक स्कूल खुलवाने में योगदान दिया है। इंदौर में इसके लिये भवन आदि खरीद लिया गया है।

<u>पत्रिका प्रकाशन -</u>

महासभा में अभी तक चार पत्रिकायें प्रकाशित हुयी हैं। ये हैं जैन गजट हिन्दी, जैन गजट मराठी, जैन महिलादर्श एवं जैन बालादर्श। जैन समाज में यह पत्रिकायें अत्यंत ही लोकप्रिय हैं और निरंतर इनकी सदस्यता बढ़ रही है। समाज के विचारों में एकरूपता लाने के लिये इन पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है और मुझे आशा है कि ज्यादा-से-ज्यादा लोग इन पत्रिकाओं को मंगाकर लाभ लेंगे। महासभा का प्रकाशन विभाग श्रीमान् राजकुमार जी सेठी के मंत्रित्व में चल रहा है। उन्होंने अनेक पुस्तकों को प्रकाशित करके इस विभाग को उपयोगी बनाया है।

१९८१ में जब मुझे महासभा का अध्यक्ष बनाया गया था और श्रीमान् त्रिलोकचंद जी कोठारी को महामंत्री, उस समय महासभा की स्थिति अत्यंत कठिन थी। धन की कमी के कारण जैन गजट बंद हो गया था और महासभा का परीक्षा बोर्ड भी कठिनाइयों में था। प्रबंध कार्यकारिणी की मीटिंग भी काफी दिनों से नहीं हुई थी और केवल केन्द्र में ही संस्था की प्रमुख कार्यकारिणी थी। जब मुझे अध्यक्ष बनाकर कार्य सौंपा गया, तब हम लोगों ने समाज का सहयोग लेकर के उसी दिन स्टेट लेबल कमेटी का गठन करने का निर्णय लिया और संयोजना बनीं। राज्य स्तर पर कमेटी सभी जगह जाकर की बनायी गयी और गत १६-१७ वर्षों में अपना अद्भुत योगदान महासभा ने दिया है। अनेक जगहों पर गांव, शहर, जिले लेबिल पर भी महासभा की शाखायें गठित हुई हैं और हो रही हैं। हम लोगों ने हाल ही में तीर्थ संरक्षिणी महासभा का गठन किया है। उसके माध्यम से तीर्थ जीर्णोद्धार योजना में महासभा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही शास्त्रों के संरक्षण का कार्य भी शुरू कर रहे हैं।

हमारा यह पूरा प्रयास है कि बच्चों को धार्मिक संस्कार देने में हम लोग ज्यादा-से-ज्यादा प्रयत्न करें और शिक्षण शिविर लगायें।

इस शताब्दी की महान् घटना आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के मुनि दीक्षा लेने और उनके द्वारा आचार्य पद ग्रहण करके समस्त भारत में पद विहार करने, जिनधर्म की प्रभावना करने तथा मुनि परम्परा को पुनः स्थापित करने एवं श्रावकों के चरित्र उन्नयन की दिशा में मार्गदर्शन देना रहा है। मुझे आशा है कि उनके द्वारा स्थापित मुनियों के चरित्र में उच्चतम मानदंडों को वर्तमान मुनिसंघ पालन करते रहेंगे और इस महान मुनि परम्परा में किसी भी तरह का दोष आने नहीं देंगे। मुझे विशेष करके श्रावकों से निवेदन करना है कि वे ऐसा कोई भी कार्य न करें, जिससे मुनि संस्था में किसी भी तरह का शिथिलाचार फैले और उससे हमारे धर्म की हानि हो।

आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज ने शुद्ध जल ग्रहण करने का जो नियम दिलाया था, उसके पीछी श्रावकों में उच्चतम नैतिक आदर्शों का पालन हो सके तथा वर्तमान की होटल-पद्धतियों से जनित दुष्प्रभावों से बचने के लिये तथा दिगम्बर जैन धर्म के स्वरूप की रक्षा करने के लिये उन्होंने यह कदम उठाये थे। उसके द्वारा सज्जातित्व की भी रक्षा हुयी थी, परन्तु आज उनकी दूरदृष्टि को अनदेखा करके अनेक संघों ने इस नियम के पालन में भूल कर दी और उसके दुष्परिणाम हमें सामने दिख रहे हैं। आज उनकी दूरदृष्टि की याद करके हम उनके प्रति नतमस्तक होते हैं और सौभाग्य से हम जिस संघ के सान्निध्य में यह समापन आयोजित कर रहे हैं, वे इस महान परम्परा को अभी भी निर्वाह

करवा रहे हैं, यह सौभाग्य की बात है।

विद्वानों के बारे में -

आचार्य शान्तिसागरजी महाराज ने आचार्य महावीरकीर्ति महाराज, क्षुल्लक गणेशप्रसाद जी, आचार्य विमलसागर जी महाराज, आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य शिवसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज, श्री अजितसागर जी महाराज ने तथा अनेकों आचार्यों की प्रेरणा से अनेक संस्थाओं ने, जिसमें महासभा भी सम्मिलित है, महासभा ने विद्वानों को सम्मान व आश्रय दिया, जिससे इस शताब्दी में विद्वत्ता की गरिमा बढ़ी। अनेक विद्वानों ने श्रावकों को जैन धर्म का ज्ञान देकर इस दिगम्बर जैन समाज की महान सेवा की है, जिसको हम कभी भी विस्मृत नहीं कर सकते। आज भी विद्वतगण जैन धर्म के इतिहास में अनेक गवेषणायें करके, पुरातत्व के प्रति अनेक चीजों का पता लगा करके, अनेक प्राचीन ग्रंथों का सम्पादन व टीका करके, जगह-जगह देश और विदेश में विहार करके, श्रावक धर्म के प्रति लोगों को जागृत करके इस महान् दिगम्बर जैन धर्म की महती सेवा कर रहे हैं जिसकी मैं हृदय से प्रशंसा करता हूं। मुझे आशा है कि ये विद्वान् एकान्त के पोषण करने वालों से दूर रहकर तथा साधु संघ एवं जैन धर्म की परम्परा की रक्षा एवं व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर कर सकेंगे।

पं. सुमेरचंद जी दिवाकर एवं पं. मक्खनलाल जी शास्त्री व डा. लालबहादुर शास्त्री के आदर्शों को हम नहीं भुलायेंगे। सभी विद्वानों ने महासभा को अपना जो निःस्वार्थ सहयोग सिद्धान्तों की रक्षा करने के लिये दिया, उसके लिये मैं इस शताब्दी समारोह में अपना आभार प्रस्तुत करता हूं।

हिंसा, असत्य, चोरी आदि पाप हैं। महासभा कभी भी अपनी संस्था की पत्र-पत्रिकाओं में पापों का समर्थन या अनुमोदन नहीं करती और न ही वह अपने सदस्यों को प्रेरणा देती है कि वे ऐसे निन्दनीय कार्य करें। इसी भांति भारतवर्ष की समस्त संस्थाओं को चाहिये कि वे आगम के अनुसार ही लोगों को प्रेरणा करके और उसके अनुसार लोगों को चलने के लिये मार्गदर्शन देवें, परन्तु आजकल इसके विपरीत कुछ संस्थायें आगम में मान्य सज्जातित्व का खंडन करती हैं। अनेक लोगों ने अन्तर्जातीय एवं विजातीय विवाह कर लिया है। पत्र-पत्रिकाओं में युवा मेलों के माध्यम से जातीय संगठन को कमजोर करने के लिये प्रेरणा दी जाती है, जोकि सर्वथा आगम-विरुद्ध है। मेरा समस्त संस्थाओं के ऐसे पदाधिकारियों से निवेदन है कि कम-से-कम आगम के विरोध में कोई भी प्रचार और प्रसार किसी भांति का न करें।

महिलाओं के बारे में -

समाज रूपी रथ के महिला और पुरुष दो पहिये होते हैं। एक भी पहिया यदि कमजोर होता है तो रथ ठीक से नहीं चल पाता है। हमारे दिगम्बर जैन समाज की महिलायें एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। महासभा ने हमेशा ही महिलाओं को उचित आदर दिया है और अपने हर एक कार्यक्रमों में उनको साथ में लिया है। मां चन्दाबाई के स्वप्नों को साकार करने के लिये महिलादर्श को पुनः स्थापित/प्रकाशित किया। मुझे पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न विजयमती माताजी की बतायी हुई बात याद आती है। सम्मेदशिखर जी के पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर समाज को एक सुविख्यात महिला नेत्री को श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद के समारोह का उद्घाटन करना था। मां चन्दाबाई ने विजयमती माताजी, जो कि उस समय ब्रह्मचारिणी थीं, को शिखर जी में उन महिला नेत्री के पास भेजा और उनसे जो भाषण देने वाली थी, उसकी कापी मांगी। उस कापी को चन्दाबाई ने जब पढ़ा तो उसमें आगम के विरूद्ध कई बातें लिखी हुई थीं। मां चन्दाबाई ने उस भाषण का वितरण होने से उनको पढ़ने से रोक दिया और उनकी राय के अनुसार ही उन महिला नेत्री ने बाद में अपना भाषण दिया। ऐसी कट्टर चन्दाबाई मां की याद को संजोये रखने के लिये और आगम के प्रति निष्ठा बनाए रखने के उद्देश्य से हम लोग आने वाले समय में यह प्रयास करेंगे कि महिलादर्श की प्रतियां सारे भारतवर्ष में जायें। उसे अन्य भाषाओं में भी छापने की व्यवस्था के बारे में सोचेंगे। हमारा यह उद्देश्य होगा कि जिसके बारे में भारत सरकार ने राजनीति में महिलाओं को ज्यादा प्रश्रय देने का निर्णय लिया है तो हमारे समाज में भी ऐसी महिलायें तैयार हैं, जो राजनीति में भी भाग लेकर जिनशासन की प्रभावना बढ़ायें।

हमारा आज परम सौभाग्य है कि ब्रह्मचारिणी मां कमलाबाई का सम्मान उनकी समर्पित सेवाओं को देखते हुये रोटरी इन्टरनेशनल ने किया और वह इसी क्षेत्र से संबंध रखती हैं। हम उनका सान्निध्य पाकर के अपने को गौरवान्वित समझते हैं और हम यही आशा करते हैं कि उनके द्वारा यह दिगम्बर महिला विद्यालय खूब प्रगति करे और वे इस विद्यालय की अनेक शाखायें सारे भारतवर्ष में खोल करके महिला शिक्षा कार्यक्रम को आगे बढ़ायें।

अनेक संस्थायें जो आगम विरोधी विधवा-विवाह के पोषण की बात सोचती है, परन्तु हमारी पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न सुपार्श्वमती माताजी का कहना है कि विधवा-विवाह करना तो दूर उसकी चर्चा करने वाला भी पाप का भागीदार होता है। छोटी सी उम्र में वैधव्य को पाकर के आर्यिकारत्न सुपार्श्वमती माताजी ने

आर्यिकारत्न इन्दुमती माताजी के सानिध्य में रहकर अनेक विद्याओं का अभ्यास करके अनेकों ग्रंथों की रचना की। ऐसा करके उन्होंने एक महान आदर्श महिला समाज के समक्ष उपस्थित किया। इस तरह से सुपार्श्वमती माता की प्रेरणा से शिखर जी में भव्य त्रिलोक संस्थान का भवन निर्माण हुआ।

इसी तरह से आचार्य वीरसागरजी महाराज की महान् शिष्या गणिनी आर्यिकारत्न ज्ञानमती मातजी ने अनेक ग्रंथों की रचना की और आज भी कर रही हैं। उनकी प्रेरणा से त्रिलोक संस्थान के माध्यम से आर्ष परम्परा की महान् संस्था त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीप का निर्माण हुआ और आज हस्तिनापुर को भारत के नक्शे में लाने का महान् कार्य हुआ। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है। आज के दिन हम लोग परम पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न विशुद्धमती माताजी (लश्कर वाली) का जन्म दिन मना रहे हैं, जिन्होंने ५० वर्ष पूर्ण किये हैं। उनका महान् योगदान अविस्मरणीय हैं।

शिवसागर महाराज जी की सुशिष्या आर्यिकारत्न विशुद्धमती माताजी (सतना) ने प्रधान अध्यापिका के पद को छोड़कर आर्यिका-धर्म स्वीकार किया और अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया। अपने अतुलनीय वैदुष्य से उन्होंने दिशाबोध दिया है।

भट्टारक परम्परा ने इस दिगम्बर जैन शासन की रक्षा में एक महान् योगदान दिया है, जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, कम है। उनके द्वारा हमारे शास्त्रों का संरक्षण, जिनायतनों, मूर्तियों व तीर्थों का संरक्षण, जैन धर्मावलम्बियों के स्थितिकरण, जिनशासन की प्रभावना, इतिहास का संरक्षण आदि अनेक महान् कार्य हुए हैं। आज भी जहां-जहां भट्टारक हैं, वे इसी भांति योगदान देते हैं, जिसके लिये हम सब उनके प्रति कृतज्ञ हैं। मेरा चतुर्विधि संघ से निवेदन है कि वे किसी भी रूप से इसकी प्रतिष्ठा को बनाये रखें, उसी में ही जिनशासन का हित है।

चतुर्विधि संघ में अनेक लोग आगम के विषय में प्रयोग करने के प्रयास करते हैं। कई दफे ऐसे प्रयोगकर्ताओं को समाज के संगठन के बारे में आत्मानुभूति नहीं होती, इसलिये वे समाज के संगठन को अनदेखा करके आगम के विरुद्ध प्रयोगात्मक व्याख्या दे देते हैं। इस संबंध में मुझे श्रीमान् रूपचंदजी कटारिया की बात बहुत ही याद आती है। उनका मुझसे हमेशा यह कहना रहता है कि हमारे शास्त्रों में आचार्यों की बात प्रमाणिक होती है, क्योंकि उन्होंने अनेक वर्षों तक ब्रह्मचारी, क्षुल्लक, ऐलक, मुनि, उपाध्याय और आचार्य रह करके जो आगम के आधार पर अनुभव प्राप्त कि‌ये हैं, उसको उन्हें श्रावकों को बताने का अधिकार है, क्योंकि उन्होंने आगम को अनुभव के आधार पर परखा है। इसी तरह से ही हमारे चतुर्विध संघ को प्रयोग करने के बजाये हमारे आचार्य शान्तिसागर जी महाराज एवं आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज की नीतियों के साथ समन्वय स्थापित करके और उनके अनुभव को जान करके अपने कार्य की शैली बनानी चाहिये। हमारा धर्म आगम के अनुसार चलने का है, अतः प्रयोग जैसी बातें या अपनी इच्छा अनुसार धर्म पर चलने की बातें करके हमारे पूर्वाचार्यों की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये।

बच्चों में धार्मिक संस्कार देने के लिये परम पूज्य आचार्य धर्मसागर जी महाराज एवं आचार्यकल्प श्रुतसागर महाराज की हमें बहुत ही प्रेरणा रही। उन्हीं की प्रेरणा से महासभा ने श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन चेरिटेबुल ट्रस्ट का गठन किया और बालादर्श पत्रिका का प्रकाशन हमारे आदरणीय श्री प्रेमचंद जी जैन इलाहाबाद ने शुरू किया। बच्चों में यह पत्रिका लोकप्रिय है। हमारी तीव्र इच्छा है कि हम सारे भारतवर्ष में बच्चों में धार्मिक शिक्षा के बारे में संयोजित रूप से कदम उठायें।

युवावर्ग किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। वे भविष्य के निर्माता हैं। आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज एवं आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के द्वारा श्री रवीन्द्रकुमार जी जैन उपाध्यक्ष महासभा बहुत ही उपयोगी कार्य कर रहे हैं। मुनियों के आशीर्वाद एवं श्री लखमीचंद जी की प्रेरणा से स्थापित इस परिषद का उद्देश्य था एकान्तवादियों का डटकर विरोध करना एवं उनके शास्त्रों को किसी भी रूप से प्रश्रय न देना और जिनशासन की रक्षा करना और जैन धर्म की रक्षा करना। इस उद्देश्य को यह युवा परिषद अपने समस्त युवा साथियों के साथ बहुत ही दक्षता के साथ पूरा कर रही है।

वर्तमान में महासभा के सभी प्रांतीय अध्यक्ष- पूर्वांचल के श्री हुकमीचंद जी पाण्ड्या, बंगाल के अध्यक्ष श्रीमान राजकुमार जी सेठी, बिहार के अध्यक्ष रायबहादुर हरकचंद जी पांड्या, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्रीमान मदनलाल जी बैनाड़ा, दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री उम्मेदमल जी पांड्या, राजस्थान के अध्यक्ष श्री पूनमचंद जी गंगवाल, गुजरात के अध्यक्ष श्रीमान ओमप्रकाश जी जैन, महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्रीमान आर.के.जैन साहब, मध्यप्रदेश के अध्यक्ष श्री सतीश जी अजमेरा, तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री पदमचंद जी धाकड़ा, आंध्रप्रदेश के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी पहाड़े तथा उनके सहयोगियों ने महासभा के समस्त कार्यक्रमों को तथा उद्देश्यों को सफल करने एवं मेरी अध्यक्षता के १७ सालों में जो अपार सहयोग दिया है, उसके लिये मैं हृदय से उनका आभार प्रकट करता हूं।

जबसे शताब्दी समारोह समिति बनी, तबसे हमारे श्री उम्मेदमलजी पांड्या और श्री आर.के.जैन ने सभी कामों को बहुत ही उत्साह,

समर्पित भाव एवं सूझबूझ से किया है, उसके लिये मैं समस्त महासभा की तरफ से उनको बारम्बार धन्यवाद देता हूं और उनके मंगल जीवन की कामना करता हूं। उनके इस अद्भुत सहयोग से ही इस महासभा का शताब्दी समापन समारोह हम इतने गौरवशाली ढंग से मना सके हैं।

हमारे संरक्षक माननीय श्री त्रिलोकचंद जी कोठारी ने महामंत्री पद के रूप में गत १७ वर्ष तक अपनी महत्वपूर्ण सेवायें प्रदान की हैं और उनके अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्होंने सारा भार श्री गजराज जी गंगवाल के सबल कन्धों पर दिया है और हम सभी श्रीमान गजराज जी गंगवाल से बहुत बड़ी अपेक्षायें करते हैं।

हमारे संरक्षक परम आदरणीय श्रीमान त्रिलोकचंद जी कोठारी, श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य, श्री अमरचंद जी पहाड़िया एवं पं. श्री रतनलाल जी पाटनी किशनगढ़ हैं। हम इनके बताये हुये ही मार्ग पर चल रहे हैं, यह हमारे लिये प्रेरणास्त्रोत हैं।

हमारी महासभा द्वारा प्रकाशित तीनों पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की निष्काम/निःस्वार्थ सेवाओं के प्रति भी हम अपना आभार व्यक्त करते हैं। यही पत्र-पत्रिकायें तो महासभा का मुख हैं, जिससे निकली हुई बात दूर-दूर तक असर करती है।

महासभा द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में जैन गजट के हमारे सम्पादक प्रा० नरेन्द्रप्रकाश जी जिस कुशलता से समायोजन करते रहे हैं, उसके लिए हम उनके प्रति अपना हार्दिक साधुवाद व्यक्त करते हैं।

इसी तरह से हमारे केन्द्रीय कार्यालय में स्व. सुमेरचंद जी जैन पाटनी, श्री निर्वाणचंद जी जैन, श्री अजितप्रसाद जी जैन, श्री बाबूलाल जी जैन, श्री नरेन्द्रकुमार जी सौंरया, पं. मूलचंद जी शास्त्री, श्री सेढ़मल जी जैन, श्रीकान्त जी चंवरे, श्री नलिन राज जी कासलीवाल, श्री प्रदीप पाटनी, श्री विमलचंद जी जैन, श्री सुधेश जैन, श्री कमलकुमार जी रांवका, श्री टीकमचंद जी जैन, श्री गंभीरचंद जी जैन ने केन्द्रीय कार्यालय के हमारे सभी कार्यों को सम्पन्न कराने में जो अद्भुत और समर्पित भाव से सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका आभार प्रकट करता हूं।

भविष्य में भी सबका ऐसा ही सहयोग बना रहे, यही अपेक्षा है, धन्यवाद।

-निर्मल कुमार जैन सेठी
अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

श्रीमान् उम्मेदमल जी,

धर्म संरक्षिणी महासभा के शताब्दी महोत्सव का निमंत्रण पाकर प्रसन्नता है। महासभा ने अब तक जो कार्य किये हैं वे धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से प्रशंसनीय हैं। प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार को जो अपना अंग बनाया है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- पन्नालाल साहित्याचार्य, जबलपुर, संरक्षक- महासभा

महासभा की मंगल कामना

फूल से मुस्करायें वह सदा

जैन जगत के अपने समय के प्रख्यात नेता माननीय श्रीमान् साहू शांति प्रसाद जी एवं साहू श्रेयांस प्रसाद जी की समाजसेवा की श्रेष्ठ परंपरा को साहू अशोक कुमार जैन ने निरंतर गति दी है, हम सबके लिए यह प्रसन्नता की बात है। दिगम्बर जैनों के सर्वमान्य तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी पर अपने स्वत्व और अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने सबको साथ लेकर जिस जीवट और उत्साह के साथ आन्दोलन का नेतृत्व किया, उसके सुखद परिणाम समाज के सामने आने लगे हैं। पिछले दिनों भारत सरकार की प्रत्यक्ष या परोक्ष राह पर राजनीतिक दुर्भावनावश विदेशी मुद्रा विनिमय के नाम पर उन्हें जिस तरह अकारण प्रताड़ित किया गया, उससे पहले से ही रुग्ण उनके हृदय पर बहुत दबाव पड़े और दो बार हृदय की बाईपास सर्जरी होने के बाद भी उन्हें इलाज के लिए अमेरिका जाना पड़ा। वहां क्लीवलैण्ड स्थित हॉस्पिटल में विविध परीक्षणों के बाद डाक्टर ने यह निर्णय लिया कि नये हृदय का प्रत्यारोपण आवश्यक है। खुशी है कि गत सप्ताह उनका यह मेजर आपरेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ और अब यह आशा है कि वह शीघ्र स्वस्थ्य होकर भारत लौटेंगे और पूर्ववत् समाज का नेतृत्व करते रहेंगे। क्लीवलैण्ड से उनके पारिवारिक मित्र एवं विद्वान नीरज जी ने यह सूचना गत ११ जनवरी को फोन पर हमारे सम्पादक प्राचार्य जी को दी है। महासभा की यह मंगल कामना है कि साहू जी शीघ्र स्वस्थ्य हों और सदा फूल से मुस्कराते रहें।

निर्मल कुमार सेठी — **उम्मेदमल पाण्ड्या**
गजराज गंगवाल — **आर. के. जैन**
एवं समस्त महासभा परिवार

विशेष समाचार

उड़ीसा के मुख्यमंत्री से श्री सेठी जी की वार्ता

दिनांक १८ दिसम्बर, ९८ को राजधानी में उड़ीसा भवन में उडीसा के मुख्यमंत्री श्री जे.बी.पटनायक से महासभा अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी की खंडगिरी-उदयगिरी एवं जैन सम्राट खारवेल महोत्सव बावत श्री हृदयराज जी जैन के साथ में मुख्यमंत्री से वार्तालाप हुआ। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि खंडगिरी, उदयगिरी क्षेत्र के विकास में एवं सम्राट खारवेल महोत्सव में शासन की तरफ से पूरा सहयोग मिलेगा। खंडगिरी, उदयगिरी गुफाओं की सुरक्षा की सरकार पूरी व्यवस्था करेंगी। श्री सेठी जी ने प्रश्न उठाया कि इस क्षेत्र के आसपास में अतिक्रमण हुआ है। तब श्री मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यह अतिक्रमण हटाने का भी पूरा प्रयास शासन की ओर से होगा। उन्होंने श्री हृदयराज जी जैन के मार्गदर्शन में भुवनेश्वर में आयोजित खारवेल समारोह हेतु समिति का भी चयन किया गया। इस महोत्सव हेतु देश विदेश से विद्वान लोग शामिल होंगे। महासभा अध्यक्ष जी ने मुख्यमंत्री को बधाई दी।

वे गौरवशाली व्यक्तित्व

जिनके माध्यम से तीर्थ संरक्षण के लिए मिल रहा है एक करोड़ रुपया

(प्रत्येक के प्रयत्न से पच्चीस-पच्चीस लाख)

१. सेठी-ट्रस्ट, गुवाहाटी- श्री निर्मलकुमार जी सेठी, श्री हुलाशचंद जी सेठी, श्री महावीर प्रसाद सेठी, श्री दिनेश कुमार सेठी

२. बैनाड़ा-परिवार, आगरा- श्री निरंजनलाल जी बैनाड़ा, श्री रतनलाल जी बैनाड़ा, श्री मदनलाल जी बैनाड़ा, श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा, श्री हीरालाल जी बैनाड़ा, आगरा

३. आर.के.मार्बल्स, किशनगढ़- श्री रतनलाल जी पाटनी, श्री कंवरीलाल जी पाटनी, श्री अशोक कुमार जी पाटनी, श्री विमल पाटनी एवं श्री सुरेश कुमार पाटनी

४. श्री सुरेश बज, कलकत्ता- समस्त परिवार

श्री भारतवर्षीय (धर्म संरक्षिणी) महासभा शताब्दी-समापन-समारोह के ऐतिहासिक अवसर पर इन सबके स्पृहणीय और धर्म के प्रति अपना विनम्र नमन प्रस्तुत करती है। कृतज्ञता व्यक्त करती है उन सबके प्रति भी, जिन्होंने इसे पुष्ट और समृद्ध करने में त्रियोगपूर्व व उल्लेख्य अवदान दिया है।

तीर्थ संरक्षिणी को दान देकर तीर्थों की सुरक्षा सुनिश्चित करें

विनीत-

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

ऐश बाग, लखनऊ

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

शुभकामनाओं सहित

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा

के शताब्दी समापन महोत्सव पर

शुभकामनाओं सहित
सौजन्य से

लाडा देवी ग्रन्थ माला की आरे से

राजकुमार सेठी

कमरा नं० – ३०२
१–वूड स्ट्रीट कलकत्ता
फोन : २४०८४३४, २८७००४४३

सौजन्य से

हंसराज सेठी

कलकत्ता

सौजन्य से

कन्हैयालाल पन्नालाल जैन सेठी

डीमापुर, नागालैण्ड
२३०/१७ जे रेलवे कालोनी
कल्याण मार्ग, मेररोड मण्डावली, नई दिल्ली – ११० ०९२
फोन : ०११–२४४३७६८, २२२३५६६

सौजन्य से

माणिक चन्द जैन

एम. आर. मार्केट, महावीर चौक अपर बाजार
राची – ८३४ ००१
फोन आफिस – २०४१२०, ३०७०२०२
फैक्स – ०६५१–२०६७४२

सौजन्य से

सुरेश चन्द जैन

ए–५२०, लाजपतनगर
मुरादाबाद
फोन : निवास – ३१६६११, ३१२१२२,
कार्यालय – ३१६६४४, ३१६६५८, ३२४६३१

सौजन्य से

श्री दिगम्बर जैन समाज, बनारस
द्वारा श्री देवेन्द्र पांडया

आयकर अधिकारी
बनारस

लखनऊ नगर के महासभा के सहयोगी महानुभाव

श्री बाबूलाल जी छाबड़ा

श्री गंभीरचंद जी जैन

श्री टीकमचंद जी जैन

श्री सौभाग्यमल जी जैन
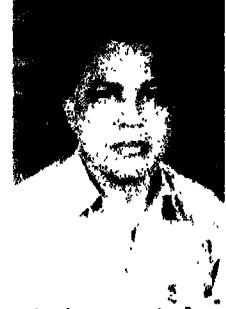
श्री कमलकुमार जी गंधका
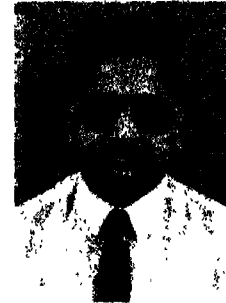
श्री प्रदीप जी पाटनी

श्री नलिनराज जी कासलीवाल

श्री धर्मवीर जी जैन

श्रीमान आशु जी जैन

श्री विमल कुमार पाटोदी

श्री सुनील कुमार जैन

श्री प्रभात कुमार जी कासलीवाल

श्री विनोद कुमार गंगवाल

श्री उत्तम चन्द जी छाबड़ा

श्री वाई. के. जैन
(अभियन्ता)

श्री सेढ़मल जैन

श्री संजय जी कागजी

श्री आर.के. जैन

श्री वीरेन्द्र कुमार जी गंगवाल

श्री प्रेमचन्द जी जैन

श्री पी. के. जैन
(आयकर अधिकारी)

श्री रूपचन्द्र जी गंगवाल

श्री रोहित कुमार जी जैन

श्री सुभाष चन्द जी जैन

श्री प्रमोद कुमार जी गंगवाल

श्री वीर कुमार जी जैन

महासभा के केन्द्रीय कार्यालय का सेवाभावी स्टाफ एवं कार्यकर्ता
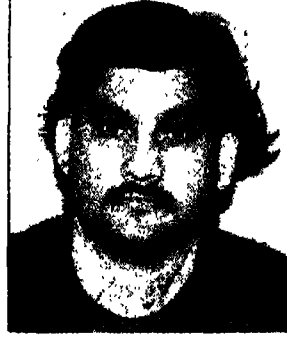
श्री सुधेश जैन
प्रकाशक, जैन गजट जैन महिला दर्श

श्री देवेन्द्र कुमार अग्रवाल

श्री अखिल कुमार मिश्र

श्री जयशंकर शुक्ला

कु० स्वर्णलता श्रीवास्तव

श्री पवन जैन
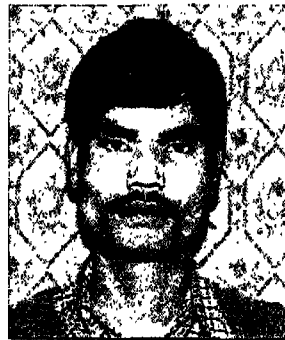
श्री सुरेश पाल सिंह

श्री जमीर अहमद

श्री प्रकाशभानु द्विवेदी

श्री मनन सिंह यादव

श्री नरेन्द्र कुमार मिश्र

श्री विकास जैन

श्री सुशील कुमार तिवारी

धर्म संरक्षिणी महासभा कार्यालय लखनऊ में महासभा के पदाधिकारी, दानदाता आदि के सूचना पट

धर्म संरक्षिणी व तीर्थ संरक्षिणी महासभा के लखनऊ स्थित केन्द्रीय कार्यालय की झलकियां
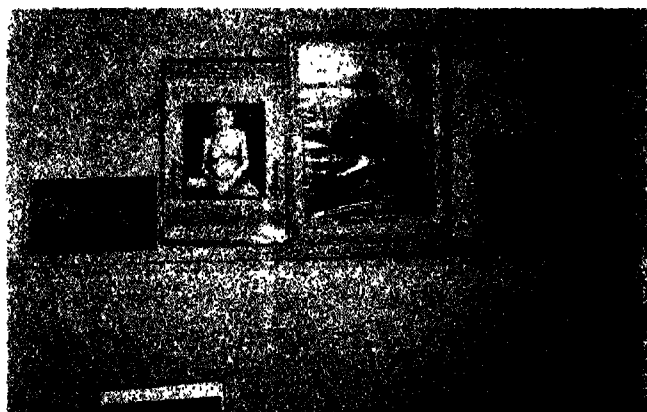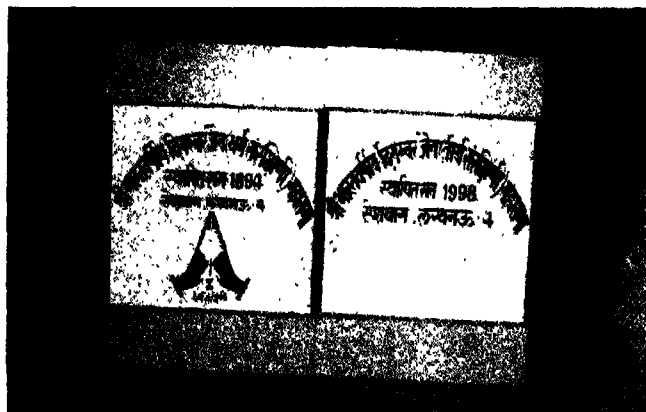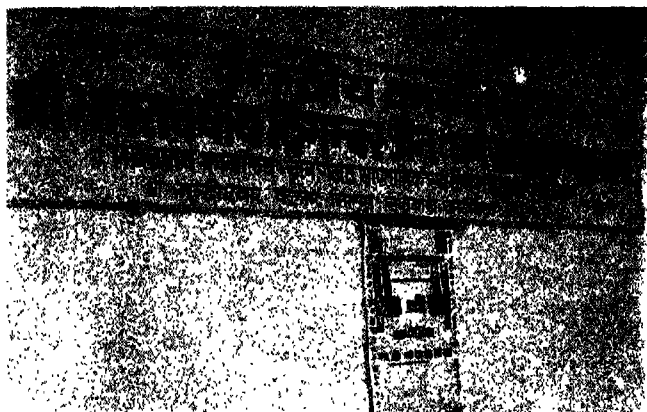
धर्म संरक्षिणी व तीर्थ संरक्षिणी महासभा के लखनऊ कार्यालय में प्राचीन क्षेत्रों के कलात्मक फोटो एवं प्रकाशन साहित्य सूची झलकियां आदि
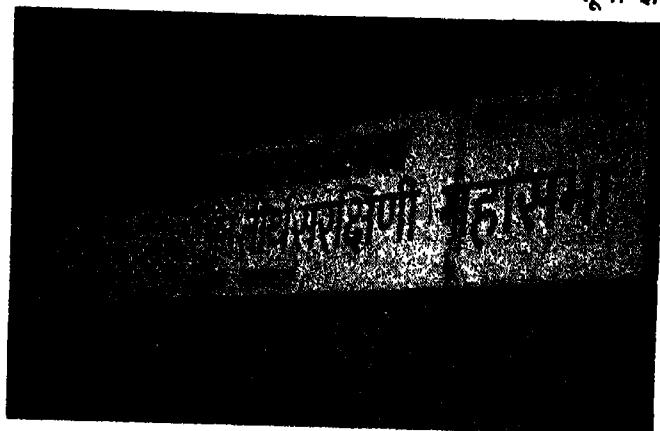
तीर्थ संरक्षिणी कार्यालय का बोर्ड
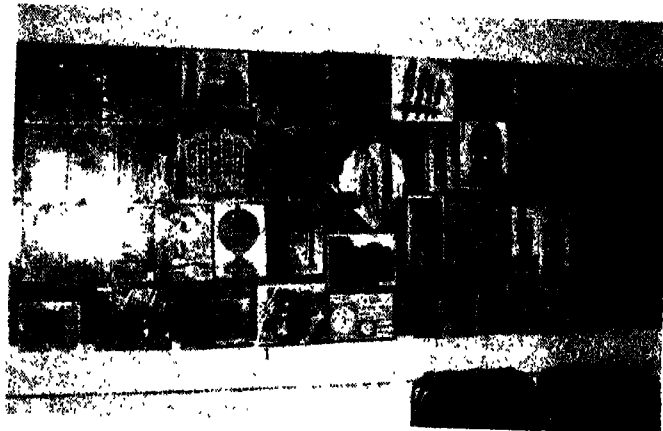
प्राचीन क्षेत्रों के कलात्मक फोटो
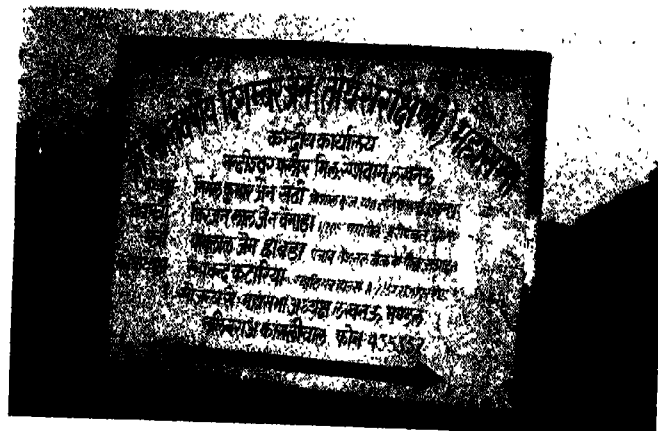
मिल रोड मार्ग पर कार्यालय का बोर्ड

श्रीमान बाबूलाल छाबड़ा सेवाभावी पदाधिकारी कार्यालय कर्मचारियों के साथ में

महासभा द्वारा प्रकाशित साहित्य सूची

महासभा के समाचार पत्र

जैन गजट हिन्दी साप्ताहिक, जैन गजट मराठी पत्रक, जैन महिला दर्श मासिक पत्रिका, जैन बालादर्श मासिक पत्रिका आपके परिवारिक सदस्य

धर्म संरक्षिणी व तीर्थ संरक्षिणी महासभा के सदस्य बनकर पुण्यबन्ध प्राप्त करें।

गौरवशाली व्यक्तित्व परिचय

पुरस्कार प्रवर्तक संस्थान

सेठी ट्रस्ट- दो दशकों की यात्रा

पूज्य आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की पावन स्मृति में स्थापित शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए राष्ट्रीय स्तर के आचार्य श्री शान्तिसागर स्मृति पुरस्कार का प्रवर्तन असम के ख्याति प्राप्त सार्वजनिक पारमार्थिक न्यास सेठी ट्रस्ट ने किया है।

सेठी ट्रस्ट की स्थापना स्व० हरकचंद जी सेठी (जैन) ने सिलचर (असम) में दिनांक ६ अप्रैल १९७३ को पंजीकृत न्यास पत्र द्वारा की थी। उक्त न्यास पत्र में उल्लिखित न्यास के प्रमुख उद्देश्य संक्षेप में इस प्रकार हैं।

(१) विद्यालयों, पाठशालाओं अन्य शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों, वाचनालयों शोध-संस्थाओं, अनुसंधान केन्द्रों आदि की स्थापना, संचालन, सहायता।

(२) चिकित्सालयों, प्रसूति गृहों, स्वास्थ्य केन्द्रों आदि की स्थापना, सचालन सहायता।

(३) अनाथों, परित्यक्तों, विधवाओं, वृद्धों के आश्रय के लिए अनाथालयों, आश्रमों आदि की स्थापना, संचालन सहायता।

(४) भूकम्प, बाढ़, दुर्भिक्ष, महामारी जैसी प्राकृतिक विपदाओं के समय पीड़ितों के लिए राहत कार्य और पुनर्स्थापना में सहायता।

(५) जन साधारण के सामान्य हितवर्धन के लिए बिना किसी जाति सम्प्रदाय भेद के समय और आवश्यकता के अनुसार अन्य गतिविधियां।

पिछले २५ वर्षों में सेठी ट्रस्ट ने अपने कार्य क्षेत्र में व्यापक विस्तार किया है। उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद में ट्रस्ट के संस्थापक स्व० हरकचंद जी सेठी की स्मृति में अनेक विद्यालय चल रहे हैं। ठेठ ग्रामीण क्षेत्र में चल रहे इन शिक्षण संस्थाओं का सीधा लाभ गांवों के जरूरतमंद परिवारों के बालक-बालिकाओं को मिलता है।

वर्तमान में स्व० हरकचन्द जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री निर्मलकुमार जैन इस ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। असम में सिलचर में ट्रस्ट का मुख्य कार्यालय है, जहां स्व० सेठीजी के तृतीय पुत्र श्री महावीर प्रसाद जी ट्रस्ट की गतिविधियों का संचालन करते हैं।

ट्रस्ट को दिये गये दान पर आयकर अधिनियम की धारा *80G* अन्तर्गत छूट प्राप्त है और ट्रस्ट की आय आयकर अधिनियम की धारा ११ के अंतर्गत कर मुक्त है।

बैनाड़ा-बन्धु

आगरा के श्री निरंजनलाल बैनाड़ा और उनके सहोदरों का आज समाज में विशिष्ट स्थान है। करोड़ों का व्यापार करते हुए भी धन के कुप्रभाव से बचे रहना किसी प्रशस्त पुण्यकर्म के उदय में ही संभव है। प्रतिदिन देवपूजा और स्वाध्याय करना वह नित्य/नियमित भोजन की तरह ही आवश्यक समझते हैं। उन्होंने अनेक साधर्मियों को पूजा करना सिखाया है। हरीपर्वत स्थित जैन मंदिर में वह प्रातः एवं सायं स्वाध्याय गोष्ठी चलाते हैं। अनके शिक्षण शिविरों के आयोजन भी उन्होंने किए हैं। उनके निष्काम एवं प्रशंसनीय प्रयासों से पंडित प्रवर स्व० बनारसीदास के समय में चलने वाली शैलियां (ज्ञानावार्ता-गोष्ठियां) आज पुनः पल्लवित और विकसित होती हुई दिखाई देने लगी हैं। व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद सभी बैनाड़ा बन्धु धार्मिक-सामाजिक कार्यों के लिए काफी समय देते हैं।

श्री निरंजनलाल बैनाड़ा के लघुभ्राता श्री मदनलाल बैनाड़ा सम्प्रति उत्तर प्रदेश महासभा के अध्यक्ष हैं तथा सभी सामाजिक कार्यों में उनकी सक्रियता से नवयुवकों में उत्साह का संचार होने लगता है।

श्री रतनलाल बैनाड़ा ने तो अब स्वयं को व्यावसायिक दायित्व से मुक्त कर लिया है और अपना पूरा समय उन्होंने धर्म प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित किया हुआ है। वह आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अनन्य भक्त हैं और उनकी प्रशस्त प्रेरणा से पूरे देश में सर्वोदय शिक्षण शिविरों का संचालन कर रहे हैं। आगरा में रहते हुए भी वे पूजा, उपासना स्वाध्याय और धर्म-शिक्षण का क्रम जारी रखते हैं। अपने घर-परिवार के बेटे और बहुओं को भी नियमित धर्म शिक्षा देने और दिलाने के संस्कार इस परिवार की एक अनुकरणीय विशेषता है।

बैनाड़ा बंधुओं ने आगरा में एक ऐसी टीम तैयार कर ली है। जो हर समय धर्म प्रचार और प्रभावना के लिए सन्नद्ध खड़ी रहती है।

तीर्थ जीर्णोद्धार और साहित्य-प्रकाशन में यह परिवार प्रतिवर्ष उदारतापूर्वक मुक्त हस्त से दान देने में भी अग्रणी हैं। मौजमाबाद, पपौरा, थूबौन, कुण्डलगिरि, नैनागिरी, मढ़िया जी आदि क्षेत्रों पर उन्होंने अनेक निर्माणादि कराए हैं। अनेक ग्रंथों का प्रकाशन भी उनकी ओर से हुआ है। उनका परिवार एक सुसंस्कृत परिवार है।

पाटनी परिवार, मदनगंज-किशनगढ़

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक समाजभूषण श्रेष्ठी श्री रतनलाल जी साहब पाटनी के प्रथम सुपौत्र तथा अमितभद्र श्रीमान कंवरीलाल जी पाटनी किशनगढ़ के प्रथम सुपुत्र अपनी दानवीरता हेतु सकल राष्ट्र में सुप्रख्यात युवारत्न श्री अशोक कुमार जी पाटनी चेयरमैन आर.के.मार्बल्स लिमिटेड मदनगंज के नाम से आज समाज में ऐसा कौन है जो परिचित नहीं है।

इस धर्मनिष्ठ परिवार द्वारा संस्थापित उद्योग "आर.के.मार्बल्स लिमिटेड" ने विश्व के मार्बल उद्योग में सर्वाधिक उत्पादन का कीर्तिमान स्थापित किया तत्स्वरूप 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' में यशस्वी नाम स्वर्णांकित हुआ। इतिहास में यह प्रथम अवसर है जब किसी जैन व्यक्ति ने इतनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त की हो।

भारतवर्ष के उदारमनाओं की पंक्ति में अग्रणी आपके परिवार के साहित्य, समाज और संस्कृति संरक्षण एवं संवर्द्धन के अनेक कार्यों में उदारता दिखाई है। महाकवि आ. ज्ञानसागर एवं आचार्य विद्यासागर वांङ्मय प्रकाशन कुन्डलपुर, भाग्योदय सागर, ज्ञानोदय नारेली, सांगानेर, तारंगा-सिद्धोदय आदि तीर्थों/संस्थानों के संस्थापन/जीर्णोद्धार आ. ज्ञानसागर वागर्थ केन्द्र, श्रावक संस्कार शिविर, अखिल भारतीय संगोष्ठियों आदि अनेक उपक्रमों के विकास एवं साफल्य में योगदान कर अपने यश को दिग्दिगन्त में सदा गुंजायमान किया है।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा को पच्चीस लाख का दान देकर आपने जो अनुकरणीय कार्य किया है, उससे आपकी धर्मनिष्ठा और तीर्थ भक्ति चिरस्मरणीय बन गई है। महासभा को निष्काम और निस्पृह व्यक्तित्व के धनी पाटनी-परिवार से अनेक अपेक्षायें हैं।

श्री उम्मेदमल जी जैन पाण्ड्या

श्री उम्मेदमल जैन पाण्ड्या का जन्म ३ नवम्बर, १९३२ को धार्मिक पाण्ड्या परिवार कुचामन में हुआ। आपके पिता स्व. छगनलाल जी पाण्ड्या एवं माता श्रीमती भंवरी देवी पाण्ड्या बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति एवं सरल स्वभाव के थे। दिगम्बर साधु-सन्तों की सेवा करने में भी सदा तत्पर रहते थे। आपका विवाह कुचामन में कालूराम जी पहाड़िया की सुपुत्री शरबती देवी से हुआ। आपकी एक पुत्री श्रीमती हेमलता जैन का विवाह श्री पंकज सेठी कलकत्ता से हुआ। आपने मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद आप व्यापार कार्य सीखने हेतु अपने ही परिवार के रायबहादुर श्री हरकचंद जी पाण्ड्या रांची के पास चले गये। वहां करीब ६ माह रहने पर आपके मन में ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के प्रति रूझान पैदा हुआ और उसके बाद कलकत्ता में रहकर इस व्यवसाय में कार्य करने की योजना बनाई। सर्वप्रथम आप जैन ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन में रहे और उसके बाद अन्य तीन लोगों के साथ मिलकर शांति रोडवेज की स्थापना की। उसका कार्यालय करीब-करीब सभी राज्यों में स्थापित किया। कलकत्ता से फिर कानपुर आ गये और वहां अपने कार्य का विस्तार किया। ट्रांसपोर्ट व्यवसाय की प्रगति हेतु आपने कानपुर में उत्तर प्रदेश ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की स्थापना कर १३ वर्षों तक उसके जनरल सेक्रेटरी रहे। आपने ही सर्वप्रथम ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के हित के लिये पूरे भारतवर्ष में ट्रांसपोर्ट नगर बनाने की योजना शुरू की। सर्वप्रथम इस योजना को कानपुर में मूर्तरूप दिया। उसी की प्रेरणा से विभिन्न राज्यों में ट्रांसपोर्ट नगर की स्थापना हुई। आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट यूनियन कांग्रेस, आसफअली रोड, दिल्ली द्वारा अपने विशिष्ट समारोह में आपको "ट्रांसपोर्ट सम्राट" के एवार्ड से विभूषित किया। ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के विस्तार हेतु आप कानपुर से दिल्ली आ गये। इसके बाद आप धार्मिक और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। धर्म और समाज की सेवा करने के संस्कार आपको अपने ही परिवार के स्व. गम्भीरमल जी पाण्ड्या और रायबहादुर हरकचंद जी पाण्ड्या के कार्यों को देखकर मिले। आपके निर्देश में अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें हुई हैं जिनमें प्रमुख कुचामन, श्री महावीर जी कांच मंदिर एवं आचार्य धर्मसागर जी के सानिध्य में मदनगंज-किशनगढ़ प्रमुख थी। अनेक धार्मिक कार्यों एवं संस्थाओं में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। सन् १९८१ के बाहुबली मस्तकाभिषेक के ऐतिहासिक अवसर पर एक हजार यात्रियों के संघ का नेतृत्व किया। इसी प्रकार १९९३ में आयोजित बाहुबली मस्तकाभिषेक में आप कलश आवंटन समिति के अध्यक्ष थे और आपके नेतृत्व में कलश आवंटन का कार्य अत्यन्त ही सुचारू रूप से हुआ जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। इसी प्रकार १९९८ में आयोजित श्री महावीर जी सहस्राब्दी समारोह के कलश आवंटन समिति के अध्यक्ष के रूप में अत्यन्त स्मरणीय कार्य किया है। श्री महावीर जी में श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय (ब्र. कमलाबाई आश्रम) श्री महावीर जी के आप १९७८ से ही मानद मंत्री हैं। आपके मंत्रित्व काल में विद्यालय ने महाविद्यालय का रूप धारण कर लिया है जिसके भवन का निर्माण एक विशाल क्षेत्र में हो रहा है।

श्री पाण्ड्या भारतवर्ष की अनेक दिगम्बर जैन संस्थाओं और तीर्थक्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सम्मेदशिखर आन्दोलन समिति के कार्याध्यक्ष, सराक ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष, सम्मेदशिखर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष हैं। पदमपुरी अतिशय क्षेत्र के संरक्षक, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र लूणवां के कार्याध्यक्ष एवं अनेकानेक तीर्थ समितियों के सदस्य के रूप में संबंधित हैं। आप दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बिजौलिया के अध्यक्ष रहे हैं। आपका दिगम्बर जैन समाज के सभी कार्यों में सहयोग रहता है चूंकि आपके नेतृत्व में सभी कार्यक्रमों का कार्यान्वयन सफलतापूर्वक हुआ है। इसलिए दिगम्बर जैन समाज में आपकी एक अलग ही पहचान है। सभी लोग आपको अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

श्रीमान् आर.के.जैन, बंबई

एक सृजनशील व्यक्तित्व

एक सीधे-सादे व्यक्तित्व का धनी होते हुए भी अपने महान कार्य से समाज के सामने एक आदर्श कैसे बन सकता है। इसका जीता जागता उदाहरण है गुरूभक्त श्रीमान् आर.के.जैन के अत्यन्त विनयशील, आदरपूर्वक बोलने से और आतिथ्यशील स्वभाव के कारण उनके संपर्क में आया हुआ व्यक्ति अत्यंत विनयशील हो सकता है क्या? इतना आतिथ्यशील हो सकता है?

धर्मानुरागी श्रीमान् सेठ आर.के.जैन का जन्म सन् १९४२ में दिल्ली में हुआ। श्रीमान् आर.के.जैन ने सन् १९६४ में वाराणसी के सुप्रसिद्ध बनारस इंजीनियरिंग कालेज से बी.एस.सी. इंजीनियरिंग (मेक.) की पदवी हासिल की। पदवी मिलने के बाद जे.के. सिंथेटिक्स और वोल्टास जैसी बड़ी बड़ी कंपनी में करीब ११ साल तक सीनियर मैनेजर की हैसियत से काम किया। इस दरम्यान सीनियर मैनेजर की हैसियत के कारण श्री आर.के.जैन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संपर्क में आये और इसके कारण उनको अनेक बार यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

११ साल के अनुभव की पूंजी को लेकर श्रीमान् सेठ आर.के.जैन ने सन् १९८० में सोनिया इंटरनेशनल के नाम से अपनी खुद की इकाई का शुभारंभ किया। और देखते ही देखते केवल दो साल में ही उन्होंने अपने कार्य को उन्होंने अपनी निपुणता से सोनिया इंटरनेशनल का सोनिया इंटरनेशनल प्रा.लि. कर दिया। अपनी इस इकाई द्वारा वे विदेश से मशीनरीज् मंगवाकर यहां के उद्योगपति को सप्लाई करते हैं। इसी फर्म द्वारा केमिकल का और वित्त सहाय का काम भी करते हैं।

श्रीमान् आर.के.जैन कई सार्वजनिक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुये हैं और इन संस्थाओं में कोई भी बड़ा कार्यक्रम हो वह श्रीमान् आर.के.जैन के बिना नहीं होता है।

सार्वजनिक और व्यावसायिक जिम्मेदारियां निभाते-निभाते उनका उतना ही ध्यान अपने समाज के प्रति भी जितना सार्वजनिक और व्यावसाय के प्रति है।

ऐसे श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा के आप उपाध्यक्ष, महासभा के महाराष्ट्र समिति के अध्यक्ष हैं और महासभा ने जो इस वर्ष के जो शताब्दी महोत्सव मनाने का जो कार्यक्रम लिया है, उस कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष हैं। ।

श्री त्रिलोकचन्द कोठारी

श्री त्रिलोकचंद कोठारी, कोटा ने अपनी स्वयं के अथक परिश्रम एवं सूझबूझ से औद्योगिक क्षेत्र में भारी प्रतिष्ठा प्राप्त की है तथा अपने कर्मठ व्यक्तित्व से सभी को प्रभावित किया है। देश में विशाल बांधों के गेट्स निर्माण में आपको जो अद्वितीय सफलता प्राप्त की है, वह एक ऐसी कहानी है, जिसको सुनने से किसी को सहसा विश्वास नहीं होता। आप ओम कोठारी ग्रुप के चेयरमैन हैं और जब आप चेयरमैन की कुर्सी पर बैठ कर बड़े बड़े इंजीनियरों एवं टेक्निकल व्यक्तियों से चर्चा करते हैं तथा उनको सभी तरह का दिशा निर्देश देते हैं तो बड़े बड़े इंजीनियर भी आपके टेक्निकल ज्ञान पर आश्चर्य करने लगते हैं। वास्तव में श्री कोठारी जी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी हैं। ऐसे व्यक्तित्व पर हम सबको गर्व है।

श्री कोठारी जी उद्योगपति के साथ साथ सामाजिक क्षेत्र में भी तहलका मचा देने वाले व्यक्ति हैं। जब से आपने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के महामंत्री का पद संभाला, तब से महासभा एवं समस्त समाज में जो क्रांति का शंखनाद फूंका, वह आपके अद्भुत कार्य शैली का परिचायक है। महासभा के लिये आपने देश के विभिन्न मार्गों में भ्रमण किया और उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक समाज को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया और उसमें आपने सफलता प्राप्त की।

कोठारी जी महासभा के महामंत्री (अब संरक्षक) ही नहीं रहे हैं किन्तु ओजस्वी वक्ता भी हैं। जब आप बोलने लगते हैं तो धारा प्रवाह से बोलते हैं और श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। आपकी लेखनी का प्रसाद तो जैन गजट के पाठकों को मिलता ही रहता है। आपके आर्शीवाद की आकांक्षा महासभा-परिवार को सदैव रहती है।

श्री गजराज जी गंगवाल

श्री गजराज जी गंगवाल उत्साही युवक है जिनका योगदान सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में है। आप प्रसिद्ध धर्म और समाजसेवी महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा राजस्थान प्रांतीय महासभा के अध्यक्ष श्री पूनमचंद जी गंगवाल, जयपुर के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स्थल हजारीबाग जिला है। आपकी शादी श्रीमती हेमलता जैन (कोडरमा) के साथ हुई। श्रीमती हेमलता जैन धर्म परायण महिला हैं।

श्री गजराज जी गंगवाल ने ही सर्वप्रथम यात्रियों की तीर्थक्षेत्रों में भोजन सम्बन्धी कठिनाईयों को ध्यान से देखा और आपने यात्रियों की सुविधा हेतु निःशुल्क भोजनालय श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में चालू किया। इस कार्य में अत्यधिक सफलता मिली। इससे प्रेरित होकर आपने अहिच्क्षेत्र, अयोध्या, चम्पापुर जैसे तीर्थक्षेत्रों में भी निःशुल्क भोजनालय प्रारंभ किये। इस व्यवस्था से समाज के अन्य श्रेष्ठियों ने भी प्रेरणा प्राप्त कर अन्य क्षेत्रों में निःशुल्क भोजनालय प्रारंभ किये।

वर्तमान में आप श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट के उपाध्यक्ष, शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष, विश्व जैन संघ के अध्यक्ष, खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष हैं। श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय श्री महावीर जी में भी आपका विशेष सहयोग है। इसके अतिरिक्त समाज की विभिन्न शीर्ष संस्थाओं से आप जुड़े हुये हैं।

आप मुनिभक्त हैं तथा सभी आचार्यों के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति रखते हैं। समाज को आपसे बहुत आशायें हैं।

संक्षिप्त परिचय

नाम- गजराज जैन (गंगवाल)
पिता का नाम- श्री पूनमचंद जी गंगवाल
जाति-गोत्र- जाति- पहाडया, गोत्र- गंगवाल
जन्म-तिथि- ११.०४.१९५४
शैक्षणिक विवरण- बी.काम
व्यापार/सर्विस- व्यापार
धर्मपत्नी का नाम, शिक्षा एवं मायके का पता- श्रीमती हेमलता जैन-मैट्रिक
स्व. जीतमल छाबड़ा, कोडरमा, बिहार
पुत्र- श्री विकास जैन (विवाहित) विवाहित
ससुराल का नाम, गोत्र व पता- श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा-आगरा
अविवाहित पुत्रों की उम्र तथा शिक्षा/व्यापार/सर्विस का ब्यौरा-
१. श्री आकाश जैन- बी.काम.-२२
२. श्री आभास जैन- बी.काम आनर्स (द्वितीय वर्ष)- २०
३. श्री पीयूष जैन- ग्यारहवीं- १७
मूल निवासी एवं पता- पचार, राजस्थान
वर्तमान पता- गजराज जैन (गंगवाल), ७ ए, राजपुर रोड, फोन- ३९६९७२३
विशिष्ट उपलब्धि- युवावस्था में ही उद्योगों की स्थापना एवं धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष योग्यता.
महामंत्री- महासभा
अध्यक्ष- खंडेलवाल जैन समाज दिल्ली
उपाध्यक्ष- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट
कोषाध्यक्ष- श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट
उपाध्यक्ष- दिल्ली सिटीजन्स एसोसिऐशन
कार्याध्यक्ष- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा
वरिष्ठ अध्यक्ष- श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन स्याद्वाद ट्रस्ट (उ०प्र०)

संस्थाओं के आधार स्तंभ

श्री शिखरचन्द जी पहाड़िया

किसी मंदिर का नवनिर्माण हो, किसी मंदिर का जीर्णोद्धार हो, कोई पूजा-विधान महोत्सव हो, या कोई धार्मिक परिषद हो, कोई धार्मिक ज्ञान- ध्यान का शिविर हो हर जगह प्रचुर मात्रा में धन की आवश्यकता होती है और यह धन इकट्ठा करना सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए बहुत ही कठिन कार्य होता है। ऐस समय में इन कार्यकर्ताओं के सामने एक ऐसी प्रतिभा खड़ी हो जाती है जहां से आज तक पूरे भारतवर्ष के कोई भी संस्था का मंदिर का या संगठन का कार्यकर्ता रिक्त हाथों से वापस नहीं आया और वह नाम है धर्मानुरागी, गुरूभक्त परायण, दानवीर श्रीमान् सेठ शिखरचद जी पहाड़िया। दानशूर श्रीमान् शिखरचंद जी के पास पहुंचने के बाद उन कार्यकर्ता को अपेक्षा से कई ज्यादा सहायता श्रीमान् शिखरचंद जी से मिल जाती है। वह कार्यकर्ताओं का गुट श्रीमान् शिखरचंद्र जी को शतशः धन्यवाद और शुभकामनाएं देता चला जाता है।

श्री शिखरचंद जी का जन्म १९४८ में कुचामन सिटी, राजस्थान में हुआ। पिताश्री मोहनलाल जी और माता श्री लाडीदेवी के सुपुत्र। अपनी बी.काम तक पढ़ाई पूरी करके १९६८ में पिताजी द्वारा बताये गये व्यावसायिक मार्ग पर चलना प्रारम्भ कर दिया। प्रथम छोटी सी सिल्क मिल से शुरूआत करके आज वे भारत के कपड़ा क्षेत्र में मशहूर पहाड़िया टेक्सटाईल मिल्स प्रा.लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर बन गये हैं।

श्रीमान् सेठ शिखरचंद जी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा महाराष्ट्र के उपाध्यक्ष हैं तथा महासभा शताब्दी समारोह समिति के वित्त अध्यक्ष है। खण्डेलवाल दि.जैन समाज शाखा महाराष्ट्र के उपाध्यक्ष हैं। जैन सेवा समिति महाराष्ट्र शाखा के वे अध्यक्ष हैं। दिगम्बर जैन युवा संघ बंबई के वे ट्रस्टी हैं और सबसे महत्वपूर्ण पद है शिखरजी आन्दोलन का, महाराष्ट्र शाखा के अध्यक्ष हैं।

यहां पर उल्लेखनीय बात यह है कि आचार्य १०५ श्री विमलसागर जी महाराज का समाधिस्थल, सम्मेदशिखर जी के ट्रस्ट के वे अध्यक्ष हैं इसका महाराष्ट्र दिगंबर जैन समाज गर्व महसूस करता है। ऑल इंडिया सम्मेदशिखर जी संघर्ष समिति के वे उपाध्यक्ष हैं। बंबई के भीवंडी दिगंबर जैन समाज के वे अध्यक्ष हैं। बंबई के नालासोपारा में जो दिगंबर जैन मंदिर है उस संस्था के वे अध्यक्ष हैं। उनके धार्मिक एवं सामाजिक अवदान की प्रशंसा में जो भी कहा जाए, कम ही है।

सूचना

जैन गजट का आगामी दिनांक २८ जनवरी का अंक बंद रहेगा। इसके पश्चात दिनांक ४ फरवरी का अंक महासभा शताब्दी समापन समारोह परिशिष्ट के रुप में प्रकाशित होगा। - प्रकाशक

श्री हरकचंद जी पांड्या, रांची

रायबहादुर साहब का जीवन एक खुली पुस्तक है। उनके जीवन में सादगी, मिलन सारिता, विनम्रता एवं उत्साह को जो सतत् प्रवाह रहा है वह सभी के लिए अनुकरणीय है। उनका जीवन कर्मठ एवं अनवरत कार्यरत रहा है। संकल्प के धनी एवं ठोस कार्यों के सम्पादन में रायबहादुर साहब के जीवन से युवकों एवं सभी को ठोस प्रेरणा मिलती है। सम्प्रति रायबहादुर साहब धर्म और समाज की अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। उन्होंने अनेक संस्थाओं को जन्म दिया तथा कई संस्थाओं के राष्ट्रीय, प्रान्तीय और स्थानीय पदधारी वर्षों से हैं।

रायबहादुर साहब अभी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं इसकी बिहार शाखा के अध्यक्ष हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम संरक्षक पद को गौरवान्वित कर रहे हैं। प्राचीन सराक जैन जाति के क्षेत्र में कार्यरत भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट के उपाध्यक्ष हैं। यह ट्रस्ट बंगाल और बिहार में निवास कर रही प्राचीन सराक जैन जाति की सर्वांगीण उन्नति के लिये कार्य कर रहा है। रायबहादुर साहब बिहार चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष एवं छोटानागपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्रीज, रांची के संस्थापक अध्यक्ष रहे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बिहार शाखा के उपाध्यक्ष के अलावा इसके अखिल भारतवर्षीय अधिवेशन के रांची में सम्पन्न अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष रहे।

जैन तीर्थों के विकास और सुरक्षा में आपका अनुकरणीय योगदान बराबर रहा है। धर्म और समाज की गौरवपूर्ण सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने की भी तैयारी चल रही है। इसके लिए आप वास्तविक अधिकारी हैं। पिछले एक-डेढ़ वर्ष से आप अस्वस्थ हो गये थे जिसमें अभी काफी सुधार है। आप एकाएक हल्के पक्षाघात से पीड़ित हो गये थे तथा आपकी वाणी पर भी उसका असर पड़ा।

आपके कर कमलों द्वारा सन् १६७३ के अप्रैल मास में 'अहिंसा-संदेश' का उद्घाटन हुआ था। आपने इस पत्र के लिये अनवरत योगदान दिया तथा बराबर रचनात्मक और ठोस सुझाव देते रहे। आपके आशीर्वाद से यह पत्र अपनी रजत-जयन्ती मना रहा है।

हम अपने महान् हितैषी की स्वास्थ्य लाभ की कामना जिनेन्द्रदेव से कर रहे हैं।

शुभकामना

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा अपना एक शतक पूरा कर चुकी है। दिगम्बर जैन समाज में एक मात्र संस्था महासभा ही है, जिसने १०३ वर्ष पूर्ण किये हैं। धर्मरक्षा, देव-शास्त्र गुरू को समर्पण, शिक्षण शिविर, समाज की गतिविधियों के बारे में जैन गजट का संचालन, महिलाओं के लिए आदर्श पत्रिका महिलादर्श, बच्चों को जैन धर्म का ज्ञान प्रदान करने वाली पत्रिका बालादर्श आदि ऐसे अनेक कार्य महासभा द्वारा संचालित हो रहे हैं, यही कारण है कि महासभा अपने १०३ वर्षों तक समाज की आवश्यकताओं को पूरा करती है प्रभावशाली ढंग से जीवन्त है।

सज्जातित्व की रक्षा करने वाली महासभा के शताब्दी महोत्सव पर हमारी हार्दिक शुभकमनाएं प्रेषित हैं।

शताब्दी समारोह की उपलब्धि स्वरूप शताब्दी महोत्सव काल में धर्मप्रेमी, श्रावकश्रेष्ठी महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के अथक प्रयत्न एवं प्रेरणा से महासभा से संबंधित तीर्थ-संरक्षिणी महासभा का निर्माण होने से अनेकों प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार का कार्य भी महासभा द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहा है। अतः इस ओर सभी को ध्यान देना चाहिए, जिससे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरूषार्थों को बल मिलेगा। महासभा के पावन कार्यों हेतु आचार्यों का पुनीत आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है और जीर्णोद्धार, नव निर्माण, जिनवाणी प्रकाशन आदि में निरंतर जुड़ाव रहा है।

हम आशा करते हैं कि यदि समाज का पूर्व की भांति सहयोग प्राप्त हुआ तो प्रगति दिनों-दिन वृद्धिंगत होती रहेगी। सभी परम पूज्य गुरूवर आचार्य, उपाध्याय एवं साधुओं को सादर नमन एवं आशीर्वाद की आकांक्षाओं के साथ पुनः महासभा के क्षेत्र में दृढ़ता के साथ कदम बढ़ाने के लिए आप सभी का आह्वान और इस पुनीत स्मारिका के प्रकाशन में आप सभी के सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद।

आपके परिवार का ही एक सदस्य

- मदनलाल जैन बैनाड़ा
अध्यक्ष
महासभा उत्तर प्रदेश शाखा

मंगल कामना

धन या धर्म में से जीवन के लिए प्राथमिकता पूर्वक किसे चुनें, यदि इसका निर्णय करना हो तो महासभा के यशस्वी अध्यक्ष श्रीमान् निर्मलकुमार सेठी के व्यक्तित्व को अपनी आंखों के सामने रखना चाहिए। यदि वह समाज और धर्म की सेवा के क्षेत्र में न उतरे होते तो आज देश के 'टॉप टेन' उद्योगपतियों में उनका नाम होता, किन्तु लाखों लोगों का प्यार और सद्भावना, जो उन्हें आज प्राप्त हैं, उससे वह वंचित ही रह जाते। सचमुच भाग्यशाली तो वही है, जिसकी कीर्ति-कौमुदी चारों ओर विकीर्ण हो रही होती है।

श्री सेठीजी ने महासभा को नया जीवन दिया है। श्री बाबूलाल जी छाबड़ा के सौजन्य और प्रेरणा से मुझे यहां लखनऊ में महासभा-कार्यालय को देखने के कुछ अवसर मिले हैं। वहां की चौकस व्यवस्था प्रशंसनीय है। किसी संस्था के कार्यपटु लोगों के कृतित्व का आइना होता है उस संस्था का कार्यालय।

शताब्दी-समारोह की सफल सम्पूर्ति पर मेरी मंगल कामनायें स्वीकार करें।

- आशू जैन
उपायुक्त आयकर (जांच), लखनऊ

तीर्थ संरक्षिणी महासभा

प्रान्त वार आय का विवरण

(दिनांक- २३.०५.९७ से ०६.११.९८ तक)

क्र.सं.	प्रान्त का नाम		रकम
१.	पूर्वांचल प्रान्त		
	सेठी ट्रस्ट	-२०,९३,७८५.८३	
	अन्य	- ९,१६,१२१.००	
	मणिपुर	- ९७,९२१.००	
			३०,९७,८२७.८३
२.	उत्तर प्रदेश	-	७,९५,१६५.००
३.	बिहार	-	४२,३०१.००
४.	पश्चिम बंगाल	-	२,७१,११८.००
५.	कर्नाटक	-	३१,०००.००
६.	दिल्ली	-	१,२५,५०१.००
७.	गुजरात	-	१,०६,१५१.००
८.	महाराष्ट्र	-	४,८३,६५२.००
९.	मध्यप्रदेश	-	१,३३,०९३.००
१०.	पंजाब	-	५,०००.००
११.	हरियाणा	-	५,५००.००
१२.	मेघालय	-	१,५०२.००
१३	नागालैण्ड	-	४४,५०५.००
१४.	उड़ीसा	-	७१,४००.००
१५	राजस्थान	-	६,५५,६४०.००
१६.	विदेश (यू.एस.ए.)	-	२५,०००.००
		कुल -	५८,१४,३५५.८३

प्राचीन तीर्थ मंदिरों को भेजी गयी राशि का प्रान्त वार विवरण

(दिनांक २३.५.९७ से ९.१.९९)

क्र.सं.	प्रान्त का नाम	रकम
१	उड़ीसा	३,३८,४००.००
२	बिहार	१,१७,०००.००
३	मध्यप्रदेश	५,२०.०२४.००
४	तमिलनाडु	२५,०००.००
५	राजस्थान	४,७७,६०८.००
६	उत्तर प्रदेश (गाड़ी इत्यादि)	६,७२,६३२.८३
७	आन्ध्र प्रदेश	३,३४,०००.००
[illegible]	कर्नाटक	१३,५३,३४३.००
[illegible]	महाराष्ट्र	१०,३३,१६५.००
[illegible]	गुजरात	२५,०००.००
	टोटल-	५१,९६,९७२.८३
[illegible]	स्टेट बैंक आफ इण्डिया में शेष	१,४०,८२५.५०
[illegible]	कार्यालय खर्च	२,७८,१६८.४६
	श्री भा.दि. जैन धर्म संरक्षिणी महासभा बाकी	८७,६४५.००
[illegible]	कार्यालय खर्च एडवांस	९९,६०१.००
[illegible]	शेष रोकड़	११,६४३.०१
	टोटल	५८,१४,३५५.८३

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी पर आर्यिका १०५ श्री विचित्रमती (ब्र. चित्राबाई) माताजी यम संल्लेखना पर

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्य श्री १०८ भरतसागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका १०५ श्री विचित्रमती माताजी (ब्र. संघपति चित्राबाई) ने अपने गुरू-आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज के निर्देशन में यम संल्लेखना को ग्रहण कर लिया है और अपने आत्मस्वरूप की ओर सारा ध्यान लगाने का प्रयास कर रही है। शरीर अत्यंत क्षीण एवं थक गया होने से आर्यिका माता ने वर्तमान शरीर को स्वेच्छा से त्याग करने का मनोबल बनाया तथा आचार्य श्री ने भी शरीर की अवस्था को ध्यान में लेकर वर्तमान पर्याय को शुभ बनाकर भविष्य को उज्जवल बनाने की दृष्टि से आर्यिका माता का मनोबल बढ़ाया और शनैः-शनैः समाधि की ओर अग्रसर कराया।

४०/४२ वर्षों से संघपति के रूप में वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के संघ की सेवा में रत ब्र. चित्राबाई जी ने इसी पद पर विराजमान आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज की ससंघ सेवा में समर्पित कर दिया था। वर्तमान शरीर की नश्वरता का भान हो आने पर आदरणीया चित्राबाई ने इसी तीर्थ पर श्रावण वदी ११ विक्रम सं. २०४४ ३० जुलाई को आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर अपने आत्म परिणामों को निर्मल व शुद्ध बनाने का प्रयास प्रारंभ किया और अब जीवन का सार यम सल्लेखना पर अग्रसर हो गई हैं। आठ दिन पूर्व से आहार पानी का त्याग कर दिया है। (सम्मेदशिखर जी से फोन द्वारा प्राप्त समाचार)

- भरतकुमार काला, मुम्बई

आपकी अद्‌भुत सफलता अर्जुन जैसी लगन का ही फल है

परम आदरणीय सेठी जी, जयजिनेन्द्र!

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा की पत्रिका प्राप्त हुई। रु. ४८ लाख से अधिक विभिन्न तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार के लिये भेजे गये हैं। ऐसी अद्‌भुत सफलता आपकी अर्जुन जैसी लगन का ही फल है। आपने अकलंक स्वामी के समाधि स्थल सौंधा मठ की दयनीय दशा देखकर नियम लिया कि जब तक बाउन्ड्रीवाल का निर्माण पूर्ण न होगा, आप घी नहीं खायेंगे। पुनः गोनाकोट तीर्थक्षेत्र पर नियम लिया कि जब तक ईशान कोण में द्वार नहीं बन जायेगा, आप तेल नहीं खायेंगे। आपने अपना सब कारोबार परिवार के सदस्यों पर छोड़कर, अपना पूरा समय पुराने तीर्थक्षेत्रों को अर्पित किया है। आपके त्याग की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। आपकी इस लगन, निष्ठा एवं त्याग का प्रभाव आपकी टीम- श्री निरंजनलाल जी बैनाड़ा महामंत्री, श्री बाबूलाल जी छाबड़ा मंत्री, श्री रूपचन्द जी कटारिया कोषाध्यक्ष- पर पड़ना भी स्वाभाविक था। आपकी पूरी महासभा ही बधाई की पात्र है।

कृपया परम पूज्य आचार्यों से भी अनुरोध करें कि वह समाज को प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिये अधिक से अधिक दान देने के लिये प्रेरित करें।

जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना है कि आपको जीर्णोद्धार में दिन प्रतिदिन अधिकाधिक सफलता मिले।

- धर्मवीर जैन, लखनऊ

अब एक नजर इधर भी

प्रिय पाठकवृन्द!

जैन गजट के इस दो सौ पृष्ठीय शताब्दी-विशेषांक की संरचना, संयोजन, सम्पादन और समायोजन के लिए हमारे महासभा-परिवार को मात्र बीस दिन का समय ही मिल सका है। हमारी अपनी व्यस्तता और विवशता ही थी कि हम इस कार्य के सम्पादन हेतु लखनऊ नहीं आ पा रहे थे। ऐसी स्थिति में धुन के धनी भाई श्रीकान्तजी चवरे श्री प्रकाश भानु द्विवेदी के साथ २८ दिसम्बर को हमारे आवास पर ही आ गए और वहां हम तीनों ने मिलकर तीन दिनों तक उपलब्ध सामग्री का मंथन खाने-पीने तक की सुधि-बुध भूलकर किया। कुछ लेख चंवरे जी देखते थे और कुछ हम। आवश्यक या अपेक्षित संशोधन-परिवर्द्धन के बाद उन्हें स्टेनो-टाइपिस्ट श्री द्विवेदी को दे देते थे और वह उन्हें टाइप करते जाते थे। बहत्तर घण्टों के अखण्ड कीर्तन का परिणाम है यह अंक! हमें तो यह भरोसा ही नहीं हो रहा था कि २० जनवरी तक छप-छपाकर यह आपके हाथों तक पहुंच पायेगा, पर यह हुआ है। इसका प्रथम श्रेय मैं भाई श्रीकान्त चंवरे को देना चाहूंगा। सचमुच वह बड़े ही जीवट के व्यक्ति हैं। एक बार जो मन में ठान लेते हैं, उसे कभी अधूरा नहीं छोड़ते। घनघोर परिश्रम करना शायद मराठों का स्वभाव ही है। वह भी तो कारंजा (महाराष्ट्र) से सम्बद्ध हैं न!

सम्पादित सामग्री लेकर नववर्ष के प्रथम दिन वह लखनऊ आ गए। अब उसे कम्प्यूटर में फीड कराना, कम्पोज हुए मैटर के प्रूफ देखना, उसे प्रेस तक पहुंचाना, चित्रों की स्केनिंग कराना, उनका क्रम निर्धारित करना आदि-आदि कितने कार्य सामने थे। कोई कमजोर व्यक्ति होता तो हाथ-पैर फूल जाते और वह सब कुछ रामभरोसे छोड़कर चुप्पी साधकर बैठ जाता किन्तु शुक्र है कि महासभा-कार्यालय की पूरी टीम ने उनके साथ एकजुटता दिखाकर उन्हें बड़ा साहस प्रदान किया और यह असम्भव-सा लगने वाला कार्य येन-केन-प्रकारेण पूरा हो सका।

जैन गजट के प्रकाशक भाई सुधेश जैन मृदुभाषी और सौम्य तो हैं ही, कर्मठ भी हैं। उन्होंने भी गत एक-डेढ़ सप्ताह से अपनी मेज पर बैठकर सामग्री-संयोजन, प्रूफ-रीडिंग आदि का निष्पादन जिस तत्परता से किया है, उसक लिए उनकी प्रशंसा करना अपनी ही पीठ थपथपाने जैसा होगा। धूनी रमाकर अखण्ड जप करने वाले ऐसे युवक के प्रति मैं अपनी हार्दिक मंगल कामना व्यक्त करता हूं।

श्री बाबूलाल जी छाबड़ा एक कुशल व्यवसायी व्यक्ति हैं और यहां सआदतगंज में किराना का थोक व्यापार करते हैं। किसी धन कमाने में संलग्न व्यक्ति से यह आशा करना कि वह धर्म और समाज के काम में लग सकेगा, जरा मुश्किल ही है, पर इनकी बात ही अ... है। ये भी अपना धन्धा इन दिनों अपने बच्चों के हाथों में सौंपकर ऐशबाग में ही बैठे रहे हैं। कमाऊ पूत तो हैं ही, इस अंक के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने में भी इसका सहयोग प्रशंसनीय रहा है। कमाल की बात यह है कि ये फोन की सहायता से ही लोगों की जेब हल्की करने में दक्ष हैं। इनकी लगन की जितनी प्रशंसा की जाए, कम ही है। वर्तमान में भी केन्द्रीय कार्यालय का कुशल संचालन करते हुये गतिविधियां तीव्रगति से बढ़ा रहे हैं। इससे पूर्व भाई निर्वाणचंद जी भी समर्पण भाव से कार्य करते रहे हैं।

जैन गजट-कम्प्यूटर के आपरेटर-द्वय श्री विकास जैन और मनन यादव साहब को धन्यवाद देना भी हमारा कर्तव्य बनता है, जिन्होंने बिना मन मैला किए इस कार्य को अपना ही कार्य समझकर दिन-रात कठिन परिश्रम किया है।
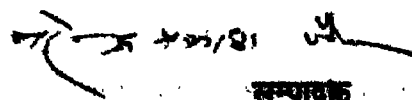
ड्राइवर सुशीलकुमार तिवारी (गुड्डू) से लेकर कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने भी इधर खूब ओवरटाइम कार्य किया है और वह भी बिना किसी प्रत्याशा के। इन सबको पुरस्कृत किया जाना चाहिए, ऐसी मेरी भावना है।

श्री अशोक जैन (अखिल पेपट मार्ट) का सौजन्य और सहयोग भी उल्लेखनीय है। नीलम प्रेस और अनु ग्राफिक्स के प्रोपरायटर और कर्मचारी भी धन्यवादार्ह हैं, जिन्होंने अल्प समय में हमारे स्वप्नदृष्टा महासभाध्यक्ष श्रीमान सेठीजी की भावना को साकार कर दिया। सेठीजी ने स्वयं अपनी व्यस्तताओं के बाद भी लखनऊ में पांच दिन का समय दिया और हमें फोन पर सजग करते रहे। आभारी हूं उनके प्रति।

अन्त में अपने पाठकों से मैं ये निवेदन अवश्य करना चाहूंगा कि इस अंक का मूल्यांकन करते समय वह इन परिस्थितियों को अपने ध्यान में अवश्य रखें। समयाभाव से प्रूफ सम्बन्धी अनेक भूलें रह गई हैं तथा लेखों आदि में तारतम्य सम्बन्धी कुछ कमियां भी उन्हें खटक सकती हैं। समय-सीमा की अल्पता के कारण अनेक आलेखों को संक्षिप्त करना पड़ा है तथा १२ जनवरी के बाद प्राप्त सामग्री का तो उपयोग ही नहीं हो सका है। सभी पाठक सहृदय हैं। आशा है, इनको नजरन्दाज कर अपना अनुगृह निरन्तर बनाए रहेंगे।

एक दिवसीय प्रवास, लखनऊ

दिनांक- १३ जनवरी, ९९

सम्पादक